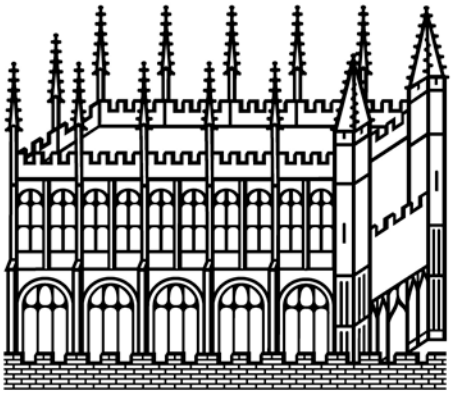

Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

13. E. 37. Hindi Puran Var 1/2

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.



1/0 C I.

Vārāhapurāṇa. - Uttarārddha.

Barah Puran

अष्टादश महा पुराणा मध्ये

श्रीमद्वाराह पुराणा

उत्तरार्द्ध का

भाषानुवाद

بارہ پوران

जिसको श्री भगवान् वाराह नारायणा ने धरणी से चौवीस हज़ार श्लोक में धर्म्म · अर्थ · काम · मोक्ष ये चारों पुरुषार्थ सिद्ध होने के लिये भली भाँति नाना भाँति के इतिहास कथा प्रबन्ध में वर्णन किया है॥

जिस्के मध्य में

सृष्टि वर्णन · द्वीप विभाग · आद्यकल्प · तिथियों के स्वामी की उत्पत्ति · धर्म्म व्याध की कथा · सत्यतपा ऋषि का चरित्र · बारहों द्वादशी का वर्णन · अगस्त्य व्रत आदि अनेक व्रत · रुद्र गीता · प्रकृति निर्णय · भुवनकोश · जम्बूद्वीपमर्य्यादा · भरतखण्ड सृष्टि विभाग शक्ति माहात्म्य · महिषासुर वध · शर्करा धेनु आदि दश विध धेनुदान · विष्णु भक्त का लक्षणा · विष्णु पूजन में बत्तीस अपराध कथन · भक्ष्य अभक्ष्य निर्णय · सन्ध्योपासन · कोका मुख · माया चक्र · कुब्जाम्रक तीर्थ माहात्म्य · वैष्णवी दीक्षा · अनेक भाँति के अनाचार होने का प्रायश्चित्त · लोहार्गल · शूकर आदि क्षेत्रों का माहात्म्य · गरुड की माहात्म्य · द्वारका · मथुरा आदि पुरियों का माहात्म्य · सब भाँति की प्रतिमा का स्थापन · श्राद्ध की उत्पत्ति · पितृयज्ञ में ब्राह्मणा का निर्णय · नाचिकेत के मुख से यमपुर का वर्णन पतिव्रता स्त्री का चरित्र · नन्दीश्वर जी कों शिव जी का वरदान · गोकर्णा शिव की उत्पत्ति आदि अनेक विचित्र कथा जिसमें बड़ी मनोहरता से वर्णन किया है · जिसके पढ़न श्री श्रवणा करने से वर्णा श्री आश्रम का धर्म्म ज्ञान होकर चित्त को बहुत आनन्द मिलता है श्री पुराय भी प्राप्ति होती है

जिसकों

सजुणा गणा ग्राहक · पण्डित जन सुखदायक · भरतखण्ड के परम हितैषी · आर्य्यजनों के अभ्युदय में दिन रात्रि सर्व्वोपाय से सहाय करने में बद्धकक्ष अति दक्ष अवध समाचार पत्र सम्पादक दूसर वंशावतंस श्रीयुत मुन्शी नवलकिशोर साहब ने निज यंत्रालय स्थान लखनऊ में अति शुद्धता पूर्व्वक छपवाया॥

श्री पण्डित माधवप्रसाद शर्म्मा जयपुर स्थायी ने संस्कृत भाषा से आर्य्य भाषा में किया श्री श्री मत्पण्डित वर दुर्गा प्रसाद श्रीसरयू प्रसाद ने परिश्रम पूर्व्वक शुद्ध किया

अप्रैल सन १८८४ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् अप्रैल सन् १८८४ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्योपार की इच्छा हो वह छापेख़ाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें ॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
भाषा इतिहास	लेहदा भी हैं-	३- वन पर्व	२-अयोध्या काराड
महाभारत	१- आदि पर्व	४- विराट पर्व	३-आरण्य काराड
१-पहिले हिस्सा में	२- सभा पर्व	५- उद्योग पर्व	४-किष्किन्धा काराड
आदि पर्व सभा पर्व	३- वन पर्व	६- भीष्म पर्व	५-सुन्दर काराड
वन पर्व	४- विराट पर्व	७- द्रोण पर्व	६-लंका काराड
२-दूसरे हिस्सा में	५- उद्योग पर्व	८- कर्ण पर्व	७-उत्तर काराड
विराट पर्व उद्योग	६- भीष्म पर्व	९- शल्य पर्व	रामायण शब्दार्थकोष
पर्व भीष्म पर्व द्रो-	७- द्रोण पर्व	१०- गदा पर्व	रामायण का इतिहास
ण पर्व	८- कर्ण पर्व	११- स्त्री पर्व	रामायण मानस दी-
३- तीसरे हिस्सा में	९- शल्य पर्व व गदा	१२-स्वर्गारोहण पर्व	रामायण कवितावली
कर्ण पर्व शल्य पर्व	पर्व सौप्तिक पर्व मय	रामायण रामविलास	रामायण गीतावली
गदा पर्व सौप्तिक प-	योशिक व विशोक	रामायण तुलसीकृत	सटीक
र्व योशिक पर्व वि-	व स्त्री पर्व	रामायण सटीक मय	विनय पत्रिका बाबू
शोक पर्व स्त्री पर्व	१०-शान्ति पर्व राज	मानस दीपिका कोष	मोहनलाल कृ०
शान्ति पर्व में राज	धर्म मोक्ष धर्म व	आदि	विनय पत्रिका बाबू
धर्म आपद धर्म	दान धर्म	तथा जिल्दबन्धी	शिवप्रसाद कृ०
मोक्ष धर्म	११-अश्वमेध आश्रम	तथा मोटे अक्षरों की	विष्णु पुराण भाषा
४- चौथे हिस्सा में	वासिक मुशल पर्व	मय तसवीर व क्षेपक	लिंग पुराण
शान्ति पर्व दान धर्म	महा प्रस्थान स्वर्गा	रामायण तुलसी कृ०	ब्रह्मोत्तर खराड
अश्वमेध आश्रम	रोहण पर्व	टीका सुखदेवलालकृ०	शुक्रनीति
वासिक पर्व व मो-	१२-हरिवंश पर्व	रामायण तु० कृ० टी०	भविष्योत्तर पुराण
शल पर्व व वाण प्र-	महाभारत सबलसिंह	युगुलानन्दस्वामिकृ०	स्कन्द पुराण
स्थान स्वर्गारोहण	चौहान कृत-	रामायण तुलसी कृत	वाल्मीकीय रामायण
पर्व हरिवंश पर्व	१- आदि पर्व	अलेहदा भी हैं-	अद्भुत रामायण
महाभारत पर्व अ-	२- सभा पर्व	१-बालकाराड	सुखसागर छापे दैय

पूर्वार्द्ध वाराहपुराण का सूचीपत्र ॥

अध्याय	पदार्थ	पृष्ठ	पृष्ठ
१	ग्रन्थ भूमिका वर्णन, ...	१	६
२	सृष्टि क्रमकथन, ...	६	११
३	नारदजी के पूर्व जन्मका वृत्तान्त, ...	११	१३
४	अत्रिगिरानैगीषव्यसंवाद, ...	१३	१७
५	माया माहात्म्य, ...	१७	२१
६	धर्म्मव्याध मुनिकथा, ...	२१	२४
७	वैश्यमुनिचरित्र, ...	२४	२७
८	धर्म्मव्याध औ मतंग मुनिकथा, ...	२७	३१
९	सृष्टिवर्णन, ...	३१	३३
१०	सुप्रतीक राजाकी कथा, ...	३३	३८
११	राजादुर्जय औ गौरमुखकी कथा, ...	३८	४४
१२	राजादुर्जयका तपकरना, ...	४४	४६
१३	गौरमुखमार्कण्डेय संवाद मिश्रकल्प, ...	४६	५०
१४	आहमेयोग्यअयोग्यब्राह्मण, ...	५०	५४
१५	गौरमुखसे नारायणका मिलना, ...	५४	५५
१६	इन्द्रका दैत्योंसे राज्यलाभ, ...	५५	५८
१७	अग्निके उत्पन्नवीरोंकीकथा, ...	५८	६३
१८	तिथियोंके स्वामीदेवता:, ...	६३	६५
१९	प्रतिपदातिथि कथा, ...	६५	६६
२०	अश्वनी कुमारकी उत्पत्ति, ...	६६	६८
२१	दक्षोत्पत्तिगौरीविवाह, ...	६८	७४
२२	गौरीकादेहत्यागहिमालयमें जन्म, ...	७४	७८
२३	गणेशजीकाजन्म औरअभिषेक, ...	७८	८१
२४	ग्रहोंकी उत्पत्ति स्थानलाभ, ...	८१	८३
२५	स्वामिकार्त्तिक जन्महोना, ...	८३	८७
२६	सूकरकाजन्महोना, ...	८७	८८
२७	मातृगणकी उत्पत्ति, ...	८८	९१
२८	देवीजीकी उत्पत्ति, ...	९१	९६

अध्याय	पदार्थ	प्रारम्भ पृष्ठ	समाप्त पृष्ठ
२८	दिशाओं की उत्पत्ति, ...	९६	९७
३०	कुबेरकीउत्पत्ति, ...	९७	९८
३१	विष्णुकी उत्पत्ति, ...	९८	९९
३२	धर्म्म की उत्पत्ति, ...	९९	१०२
३३	शिवजीकी उत्पत्ति, ...	१०२	१०४
३४	पितरोंकी उत्पत्ति, ...	१०४	१०५
३५	चंद्रमाकी उत्पत्ति, ...	१०५	१०७
३६	मणिजवीरों की कथा, ...	१०७	१०९
३७	आरुणिऋषिव्याधसंवाद, ...	१०९	११३
३८	व्याधकातप वर्णन, ...	११३	११६
३९	दुर्वासाजीसे सत्यतपाकोउपदेश, ...	११६	१२२
४०	पौषएकादशीकी विधि, ...	१२२	१२३
४१	माघएकादशीकीविधि, ...	१२३	१२६
४२	फाल्गुन एकादशी विधि, ...	१२६	१२८
४३	चैत्रएकादशी माहात्म्य, ...	१२८	१२९
४४	वैशाखएकादशी माहात्म्य, ...	१३०	१३१
४५	ज्येष्ठ एकादशी विधान, ...	१३१	१३२
४६	आषाढ़ एकादशीविधि, ...	१३२	१३३
४७	श्रावणएकादशी विधि, ...	१३४	१३६
४८	भाद्रएकादशी विधान, ...	१३६	१३८
४९	आश्विनिएकादशीविधि, ...	१३८	१४१
५०	कार्त्तिक एकादशीविधि, ...	१४१	१४३
५१	ज्ञानकथन, ...	१४३	१४६
५२	ज्ञानवर्णन, ...	१४६	१४७
५३	अभीष्ट प्रतिलाभ व्रत, ...	१४७	१४९
५४	मुक्तिप्राप्तिव्रत, ...	१४९	१५३
५५	धन्यव्रत, ...	१५३	१५५
५६	कांतिव्रत, ...	१५५	१५६
५७	सौभाग्यप्राप्तव्रत, ...	१५६	१५७
५८	अविघ्नव्रत, ...	१५७	१५८
५९	शांतिव्रत, ...	१५८	१५९

अध्याय	पदार्थ	पृष्ठ	पृष्ठ
६०	कामव्रत,	१५८	१६०
६१	आरोग्यव्रत,	१६०	१६२
६२	पुत्रप्राप्तिव्रत,	१६२	१६३
६३	सौख्यव्रत,	१६३	१६३
६४	सार्वभौमव्रत,	१६३	१६५
६५	अगस्त्यगीता,	१६५	१६७
६६	अगस्त्यगीताकूट,	१६७	१६८
६७	अगस्त्याकृपन,	१६८	१६९
६८	आश्चर्य्यदर्शन,	१६९	१७१
६९	रुद्रगीता,	१७१	१७४
७०	गौतमसप्तर्षियोंकाकूल,	१७४	१७९
७१	देवप्राधान्य निर्णय,	१८०	१८१
७२	प्रियव्रतवंश वर्णन,	१८१	१८५
७३	भूगोलवर्णन,	१८५	१८७
७४	भूगोलवर्णन,	१८७	१८९
७५	इन्द्रआदि अष्टलोकपालकीपुरी,	१९०	१९०
७६	द्वीपऔपर्वतवर्णन,	१९१	१९३
७७	मेरुसमीपभूमि वर्णन,	१९३	१९५
७८	वन पर्वत का वर्णन,	१९५	१९८
७९	देवपर्वत वर्णन,	१९८	१९९
८०	नदियोंका वर्णन,	२००	२०१
८१	नदियों औ देशोंका वर्णन,	२०१	२०२
८२	खंडोंका वर्णन,	२०२	२०३
८३	भारतखंडकी नदियोंका वर्णन,	२०३	२०४
८४	खंडवर्णन,	२०४	२०५
८५	खंड वर्णन,	२०५	२०५
८६	खंड वर्णन,	२०५	२०६
८७	खंडवर्णन,	२०६	२०७
८८	त्रिशक्ति वर्णन,	२०७	२१०
८९	सृष्टिशक्तिस्तुति,	२१०	२११
९०	पालनशक्ति चरित्र,	२११	२१४

अध्याय	पदार्थ		पृष्ठ	पृष्ठ
९१	महिषासुरसे देवताओंकी पराजय,	...	२१४	२१७
९२	महिषवध देवीस्तुति,	... ...	२१७	२२३
९३	रौद्री शक्ति चरित्र,	... ...	२२३	२२८
९४	कपालमोचन तीर्थ इतिहास,	... ...	२२८	२३०
९५	सत्यतपाख्यानचरित्र,	... ...	२३०	२३३
९६	दीक्षाविधान औ तिलधेनुदान,	... ...	२३३	२३९
९७	जलधेनुदानविधि,	... ...	२३९	२४०
९८	रसधेनु दान विधि,	... ..	२४०	२४१
९९	गुडधेनु दानविधि,	... ...	२४१	२४२
१००	शर्करधेनुविधि,	... ...	२४३	२४३
१०१	मधुधेनुदानविधि,	... ...	२४३	२४५
१०२	दुग्धधेनुदान विधि,	... ...	२४५	२४६
१०३	दधिधेनुदानविधि,	... ...	२४६	२४७
१०४	नेनूधेनुदानविधि,	... ...	२४७	२४८
१०५	लवणधेनुदानविधि,	... ...	२४८	२४९
१०६	कपासधेनु दानविधि,	... ...	२४९	२५०
१०७	धान्यधेनुदान विधि,	... ...	२५०	२५१
१०८	कपिलामाहात्म्य,	... ...	२५१	२५२
१०९	उभयमुखीगोदान ब्रह्माण्डदानम्,	...	२५२	२५६
११०	धरणी करकेविष्णुस्तुति,	... ...	२५६	२५७
१११	धरणी का प्रश्न,	... ...	२५७	२५९
११२	चारो वर्ण का धर्म्म,	... ...	२५९	२६१
११३	शुभ अशुभधर्म्म वर्णन,	... ...	२६२	२६५
११४	विष्णुपूजन विधान,	... ...	२६५	२६८
११५	अनेक भांतिके नैवेद्य,	... ...	२६८	२६९
११६	त्रिसंध्यस्तोत्र,	... ...	२६९	२७०
११७	सदाचारवर्णन,	... ...	२७०	२७१
११८	लोकामुखत्वेच माहात्म्य,	... ...	२७२	२७९
११९	वैशाखद्वादशीमाहात्म्य,	... ...	२७९	२८१
१२०	मासपुष्पोत्सवपूजन,	... ...	२८१	२८२
१२१	मायाविभववर्णन,	... ...	२८२	२९१

अध्याय	पदार्थ	पृष्ठम्	पृष्ठतक
१२२	कुब्जाम्बक तीर्थमाहात्म्य, ...	२९१	३०२
१२३	ब्राह्मणकोवैष्णवीदीक्षा, ...	३०२	३०६
१२४	विष्णुपूजा विधान, ...	३०६	३०८
१२५	ताम्रकी उत्पत्ति औ वैष्णवीसंध्या, ...	३०८	३११
१२६	अनेकपापोंका प्रायश्चित्त, ...	३११	३१२
१२७	मृतकस्पर्श प्रायश्चित्त, ...	३१२	३१४
१२८	नानापाप प्रायश्चित्त, ...	३१४	३१७
१२९	दीपस्पर्श श्मशान गमनप्रायश्चित्त, ...	३१७	३२१
१३०	अनेकविधि प्रायश्चित्त, ...	३२१	३२४

इतिपूर्वार्द्धवाराहपुराणभाषासूचीपत्रंसमाप्तम्।

उत्तरार्द्ध वाराहपुराणका सूचीपत्र ॥

१३०	शूकरक्षेत्र औसोमतीर्थ माहात्म्य, ...	३२५	३२७
१३१	गीध औ सियारीकी कथा, ...	३२८	३३९
१३२	वैश्यपुत्र की कथा, ...	३३९	३४१
१३३	चांडाल औब्रह्मराक्षसकी कथा, ...	३४१	३४७
१३४	कोकामुखके तीर्थोंका वर्णन, ...	३४७	३५३
१३५	बदरीक्षेत्र माहात्म्य, ...	३५३	३५५
१३६	स्त्रियोंके पवित्रता का कथन, ...	३५५	३५९
१३७	मंदारक्षेत्र वर्णन, ...	३५९	३६२
१३८	गंडकी औ नर्म्मदा आदिकीकथा, ...	३६२	३७३
१३९	शालग्रामक्षेत्र माहात्म्य, ...	३७३	३८०
१४०	तरुनामकन्या का तपवर्णन, ...	३८१	३८६
१४१	गोनिष्क्रमण आदितीर्थवर्णन, ...	३८६	३९०
१४२	सुतस्वामी तीर्थ माहात्म्य, ...	३९०	३९३
१४३	द्वारका के तीर्थोंका माहात्म्य, ...	३९३	४००
१४४	सानंदूर तीर्थ माहात्म्य, ...	४००	४०३
१४५	लोहार्गलतीर्थ माहात्म्य, ...	४०३	४०७

अध्याय	पदार्थ	प्रारंभ पृष्ठ	समाप्त पृष्ठ
१४६	मथुरा माहात्म्य,	४०७	४१२
१४७	मथुरामें द्वादश वनमाहात्म्य,	४१२	४१५
१४८	मथुराके मध्यतीर्थका वर्णन,	४१५	४१७
१४९	मथुरामें अक्रूरतीर्थ वर्णन,	४१७	४२२
१५०	वृन्दावनका माहात्म्य,	४२१	४२३
१५१	मथुराकेमध्यतीर्थों का वर्णन,	४२३	४२५
१५२	मथुराके मध्यतीर्थोंका वर्णन,	४२५	४२८
१५३	मथुरा परिक्रमा वर्णन,	४२८	४२९
१५४	मथुरा परिक्रमा की रीति,	४२९	४३४
१५५	मथुरामाहात्म्य,	४३४	४३४
१५६	मथुरामेंचक्र तीर्थ माहात्म्य,	४३४	४३९
१५७	मथुरामें कपिलवाराह माहात्म्य,	४३९	४४३
१५८	अन्नकूट परिक्रमाकी रीति,	४४३	४४५
१५९	मथुरामें चतुस्सागरकूप माहात्म्य,	४४५	४४९
१६०	मथुरामेंअसिकुंड तीर्थमाहात्म्य,	४४९	४५२
१६१	मथुरामेंविश्राम तीर्थ माहात्म्य,	४५२	४५४
१६२	मथुरामेंचेचपाल माहात्म्य,	४५५	४५६
१६३	मथुराकी प्रशंसा,	४५६	४५८
१६४	मथुरामें संगमतीर्थ गोकर्ण माहात्म्य,	४५८	४६६
१६५	मथुरामें गोकर्णवैश्य शुकपक्षीकीकथा,	४६६	४७०
१६६	पूर्त्तपुण्यका फलगोकर्णके वर्णनमें,	४७१	४७६
१६७	मथुरामेंशुकपक्षीकी औरगोकर्णकीमुक्ति,	४७६	४७७
१६८	मथुरामेंसरस्वती संगममाहात्म्य,	४७९	४८५
१६९	मथुरामेंअर्द्ध चंद्र औ कृष्णगंगा माहात्म्य,	४८५	४८६
१७०	मथुरामेंकृष्णगंगा औकालंजर तीर्थवर्णन,	४८६	४९२
१७१	शांवजीकीसूर्य्योपासना मथुरामें,	४९२	४९६
१७२	शुचिव्रत चरित्र मथुरामें,	४९६	४९७
१७३	वैष्णवके अपराधोंका वर्णन,	४९७	५००
१७४	मथुरामेंध्रुवतीर्थ माहात्म्य,	५००	५०८
१७५	काष्टकी प्रतिमास्थापनविधि,	५०८	५०९
१७६	पाषाण प्रतिमास्थापनविधि,	५०९	१५१

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ बाराहपुराणस्य ॥

उत्तरार्द्धारम्भः ॥



एकसौतीसकाअध्याय ॥

सूतजी कहते हैं हे शौनक इसभांति श्रीबाराहजी भगवान् के मुखारबिन्दसे अनेक भांतिके प्रायश्चित्तों का बर्णन सुनि अति प्रसन्न हो हाथ जोड़ बिनयपूर्बक पृथवी कहनेलगी कि हे भगवन् आपने मुझ पै बड़ीही अनुग्रहकी जो जीवोंके उद्धारकेलिये अनेक भांति के पापोंका प्रायश्चित वर्णन किया अब आप कृपा करके यह बर्णन करें कि जिसके सुननेसे सब भांतिके पातक दूरहों औ आप एभी कथन करें कि पृथिवी में कौन २ तीर्थ वा क्षेत्र आपको प्रीति देने वाला है औ गुप्त है प्रथम जिस भांति आपने कुब्जाश्रकका वर्णन किया वैसेही और जो आपका परम प्रिय कोई स्थान हो उसका वर्णन करें यह सुन श्री बाराह जी कहनेलगे कि हे धरणिजो पूछतीहो तो सावधान हो श्रवण करो मेरा अति प्रिय कोकामुख नाम क्षेत्र है जिस भांति कुब्जाश्रक है उससे न्यून किंचित् भी नहींहै जिसे शूकरक्षेत्र भी कहते हैं सो क्षेत्र श्रीभागीरथी गंगाजीके निकट सब बांक्षाके पूर्णकरने हारा औ मुक्तिको दाता है यह बाराहभगवान् का बचन सुन धरणी कहनेलगी हेभगवन् आपकृपाकरके उसक्षेत्रका माहात्म्य वर्णन करें कि उसका जल पान करने से वा वहां निवास करने

से वा उस स्थान में शरीर त्याग करने से जो २ फल प्राप्तहो-ताहै सो २ आप वर्णन करैं कि जिसके श्रवण से मेरा संदेहदूर होय यह सुन बाराहजी कहने लगे कि हे धरणि वहां शरीर त्याग करनेसे अथवा उसके सेवन से जो २ फल प्राप्त होताहै सो २ हम वर्णन करतेहैं सावधान हो सुनो औ उस शूकरक्षेत्र में जो २ और भी तीर्थहैं सो २ भी श्रवण करो कि जहां प्राण त्याग करनेसे इक्कीश कुलोंके साथ पुरुष मुक्त होताहै औ जिस के दर्शन मात्र से सात जन्मका किया हुवा पाप निवृत्त होताहै औ मरकरके सात जन्मतक धनाढ्य और गुणकरके युक्त उत्तम कुलमें जन्म पाताहै और जो वहां ज्ञानपूर्वक प्राण त्यागकरते हैं वेतो चतुर्भुज शंख चक्र गदा पद्म धारण कर साक्षात् हमा-राही रूपहो श्वेतदीपको जातेहैं और भी हे धरणि सुनों उस स्थान में जो चक्रतीर्थ नाम तीर्थ है तिसमें बैशाखमास के शुक्ल द्वादशीको स्नान करनेसे दश हज़ार दशसौ बर्षतक पुरुष उत्तम कुल में धन धान्य करके युक्त उत्तम स्वरूप धार जन्म पाताहै औ अन्तमें बैष्णवीदीक्षाको प्राप्तहो सब पापोंको त्याग करहमारे रूपको धारणकर चक्रतीर्थ के प्रभावसे हमारे लोकको जाताहै जिस चक्रतीर्थ में अति उग्रतप करके चन्द्रमा ने हमको प्रसन्न किया यह सुन बड़े हर्षसे हाथ जोड़ धरणी बोली हे भगवन् किस कामना के लिये चन्द्रमा जी आपका आराधन किया सो वर्णन कीजिये यह सुन बाराहजी कहनेलगे कि हे धरणि अब चन्द्रमा का अति पवित्र वृत्तांत श्रवण करो जिस लिये उन्होंने तप किया औ हमारे अनुग्रह से जो फल उनको प्राप्त हुवा चन्द्रमाका जब जन्म हुवा तब जाय कोकामुखक्षेत्र में ब्रह्माजी की आज्ञासे तप करनेलगा उसके शुद्ध तप करनेसे हम प्रसन्न हो चन्द्रमाके समीप प्रकट भये तबतो हमको देख हमारे उग्र तेजसे मूर्छितहो भूमि में गिरगया औ बड़े २ नेत्र मूंदि करके

हाथजोड़ भयभीतहो स्तुति करनेलगा तबतौ उसकीदीनता औ बिनय देख हम प्रसन्नहो बोले कि हे सोम डर त्याग सावधान हो बरमांगो जिस निमित्त इतना क्लेश सहके तुमने तपकिया अब तुम्हारे तपसे हम प्रसन्नहैं जो इच्छाहो सो मांगो यहसुन अतिप्रसन्नहो चन्द्रमाबोला कि हे स्वामिन् यदि आप प्रसन्नहैं औ बरदेतेहैं तौ यही बरदीजिये कि जौलौ यह सृष्टि रहै तौलौ आपके चरणारबिंदमें मेरी अचल भक्तिहो औ यह मेरा रूप सातों द्वीपमें सबके समीपही दीखै औ मेरे नामसे यज्ञो में ब्राह्मण सोमपान करें औ उनकी उत्तमगतिहो औ हे भगवन् मेरे क्षीण होनेसे पितरनिज २ भागको ग्रहणकर तृप्तहों औ अधर्ममें मेरीबुद्धि कभीनहो औ नक्षत्र औषधी औ ब्राह्मणनका मैं राजा होऊं यह सोमकी प्रार्थना सुन हमने तथास्तु करके अन्तर्द्धान भये औ चन्द्रमा बांछित बरपाय अपने लोक जाय निवास करनेलगा हे धरणि जिस स्थानमें चन्द्रमा तपकरके सिद्धहुवा वह अति पुनीत तीर्थ औ सब मनोरथ सिद्ध करनेहाराह उस तीर्थमें जो तप करते हैं अथवा निज पितरों को पिण्डदान तर्पण करते हैं उनके पितर यमबाधासे मुक्त हो उत्तम गतिको जातेहैं औ करनेवाला शरीर त्याग करनेसे तीस हज़ार बर्ष पर्य्यंत बेद बिद उत्तम ब्राह्मण धान्यधन करकेपूरण होताहै हे धरणि औ अन्तमें उसकी मुक्तिहोतीहै अब हम उस तीर्थ का चिन्ह वर्णन करते हैं सो सुनो जिससे सोमतीर्थ का ज्ञान हो बैशाख महीनेके कृष्णपक्षकी द्वादशी तिथिको अति अन्धकार होनेसे सर्बत्र कुछ पदार्थ नहीं दीखता औ उस क्षेत्रमें तौबिना चन्द्रमाहीके प्रकाश पूर्बक सब भूमि दीखतीहै हे धरणि यह सोमतीर्थका चिन्ह हमने वर्णन किया ॥

एकसौयकतीसका अध्याय॥

बाराहजी कहते हैं हे धरणि अब हम शूकरक्षेत्रका माहात्म्य वर्णन करतेहैं सो श्रवणकरो हे धरणि जिस स्थानके प्राणत्याग करनेसे शृगालीमनुष्य योनिमें अति सुन्दरी औ सबगुणोंकरके युक्त राजकन्याहुई औ गृध्रभी मरकरके मनुष्यरूप अतिरमणीय धारणकर राजपुत्रहुआ कि जिसके श्रवणसे अतिआश्चर्य्यहोता है सो सुनों यहसुन धरणी बिनयपूर्वक पूंछनेलगी कि हे भगवन् आपने बड़ी आश्चर्य्यकी बात कही कि शृगाली औ गीध दोनों मरनेमात्रसे राजघरमें जन्मपाया अब आप उन दोनोंका वृत्तांत कथनकरैं कि किसकारण उन्होंने प्राणत्यागकिया औ किसराजा के पुत्र औ कन्याभये औ अंतमें फिर वे दोनों किसगतिको प्राप्त भये सो वर्णनकरें यहसुन बाराहजी कहनेलगे कि हे धरणि अब हम दोनोंका वृत्तांत वर्णन करतेहैं सो श्रवणकरो त्रेतायुग के अंतमें औ द्वापरके आदिमें कम्पिलानाम नगरमें ब्रह्मदत्तना-मक राजाहुआ तिसराजाके सोमदत्तक नाम सबगुणों करके युक्त सुशील औ धर्म्मात्मा पुत्रहुआ जिसके गुणोंको सबकालमें शत्रु भी प्रशंसा कियाकरतेथे सो सोमदत्त किसीसमय पिताकी आज्ञा से पितृकार्य्यके लिये आखेट करनेको बनमें गया वहां दैवयोग जीव तो उस जंगलमें अनेकथे परंतु हाथ कोई न लगे औ वह सोमदत्त इधर उधर घूमरहा था कि दृष्टिमें एक शृगाली आई उसे देख सोमदत्तने बाणचलाया सो बाण उसकेलगा औ पीड़ा से दुःखीहो भगी जाय गंगाजीमें जलपिया औ पीतेही जलके गिरी औ प्राण छुटगया सो हे धरणि उस शृगाली का प्राण सोमतीर्थमें छुटा औ सोमदत्त भी क्षुधा तृषाकरके पीड़ित उसी जंगलमें एक बटवृक्षथा वहां जाय पहुंचा तो क्या देखता है कि बटके शाखापर एक गृध्र सुखपूर्वक निवास कररहाहै उसे देख

एकबाण ऐसामारा कि उस बाणके साथही वह गृध्र तड़फड़ाय के भूमिमें गिरा औ गिरतेही प्राण त्यागदिया तबतो सोमदत्तने उस गृध्रका पंख बाणमें लगानेके बिचार से औ घर पहुंचा आय पिताको सारा वृत्तांत सुनाय अपने काममें प्रवृत्त हुआ हे धरणि उस शूकरक्षेत्र के प्राण त्यागकरने से गृध्र तो जाय कलिंगराजका पुत्र अतिरमणीय गुणोंकरकें युक्तहुआ औ शृंगाली तौ अतिरूपवती कांतिसेन नाम राजाकी कन्याहुई औ दैवयोग राजा कांति सेनसे औ कलिंगराजसे पहलेही मैत्री बनरहीथी इसलिये दोनोंपरस्पर स्नेहबशहो बिवाहका सम्बन्ध करलिया जब बिवाहहुआ तो हे धरणि कांतिसेन राजा की कन्या औ कलिंगराजका पुत्र ऐसे परस्पर स्नेही भये कि मानों अनेक जन्मोंसे मैत्री चली आतीहै दोनों परस्पर ऐसे प्रेमरसमें मग्नहुये कि क्षणमात्र भी त्याग न सके यदि एकको एक नदेखे तौ ऐसे व्याकुल हों कि वह बियोग सहा न जाय कलिंगराज ने भी निज पुत्रको गुणवान औ प्रजामें अनुराग देख अपनी अवस्थाको वृद्ध देख यह बिचार किया कि पुत्रको राज्यदे बनमें जाय ईश्वरका आराधन करें यह बिचार उत्तम मुहूर्तमें पुत्रको राज्याभिषेक कर आप साधुहो बनको सिधारा औ पुत्रभी राज्य पाय नीति पूर्वक प्रजापालन करनेलगा समय २ में उसराजाके पांच पुत्र बड़े रूपवान औ गुणकेआगर उत्पन्नभये पुत्रोंको देख राजाऔ रानी दोनों बड़ेहर्षसे प्रीतियुक्तराज्यभोग कियाकरतेथे कि एक दिन रानी राजाको एकान्तमें हाथ जोड़ बड़े बिनयसे यह कहनेलगी कि हे महाराज आप हमारे पति औईश्वरहैं इस लिये मैं आपसे कछु बिनय किया चाहितीहूं सो आप क्षमाकरके अंगीकार करें तो मैं कहूं यह निज रानीकी बिनय सुन राजा बड़े हर्षसे कहनेलगा कि हे प्रिये ऐसी कौनबात दुर्लभहै जिसलिये बिनय तुम करतीहौजो इच्छाहोसोकथनकरो औ बिश्वास

रक्खो तुम्हारी प्रार्थना कभी भंग न होगी जो चाहोगी सोई करूंगा हमनेआजतक कभी मिथ्याभाषण नहींकिया औ तुम्हारे लिये तौ कौनसी बात कठिनहै जो न होसकै यह निजपतिके मुख के बचनसुन रानी दोनों हाथोंसे निजपतिके चरणोंको पकड़ यह कहनेलगी कि मैं यही चाहतीहूं कि हेमहाराज जब दोपहरका समयहो तबमैं एकांत जाय इकल्ली शयन करूं उससमय मेरेको कोई न देखै यहबर मैं चाहतीहूं औमेरी बांछा किसीराजभोगमें अब नहींरही जोजो सुख करनाथा सोसो सब करलिया यहरानी का बचनसुन राजपुत्र हँसकरके कहनेलगा कि यह कौनसी बड़ी बातहै जहां तुम्हारा चित्तचाहै वहांखुशीसे शयनकरौ जो तुम्हारे बेहुकुम जायगा सो दण्डभागी होगा यह सुन रानी तौ जाय मध्याह्नसमयमें एकांत शयन करने लगी बाराहजी कहतेहैं हे धरणि इसीभांति सतहत्तरबर्ष व्यतीत हुये जब अठहत्तरवां बर्ष लगा तो अकस्मात् राजाको यहबुद्धि उत्पन्न हुई कि देखो कई दिनोंसे रानीका औ हमारा दिनमें बियोग रहताहै सो बिचार करनाचाहिये कि यहहमारी रानी दिनमेंमध्याह्नसमय एकांतमें कौनसा ब्रत्त ध्यान योग समाधि करतीहै जिसलियेएकांत सेवन करतीहै औ धर्म्मशास्त्रमेंभी आचार्य्योंने यह धर्मकहींनहीं कथन किया कि मध्याह्नमें स्त्री एकांत इकल्लीशयनकरे और मनुप्रभृति धर्म शास्त्र केआचार्य्योंके प्रतिकूल कौनसाधर्मअथवा जादू टोना क्या नित्यकिया करतीहै जो मनुष्य ब्रतकरतेहैं वे रक्तबस्त्रशृङ्गार औ ताम्बूल आदि गन्ध द्रव्य नहीं धारण करते यह रानी सब कुछ धारणकरतीहै त्यागभी किसी पदार्थका नहीं रखती इसमें कुछ बिचार करना चाहिये इसलिये और तौ क्या बिचारकरना छिपकरके इसेदेखें कि किस अवस्थामें है यह शोच बिचार कर राजा रात्रितो रानी के साथ व्यतीत किया प्रभात होतेही निज आवस्यक कर्म्मों से निवृत्त हो छिपि करके जहां रानी नित्य

मध्याह्नमें निवास करतीथी वहां जाय उसकीशय्या के नीचे राजा देखनेलगा तौ रानी होतेहीमध्याह्नवहांआय अतिक्लेशसे निजशय्या मेंपड़के ऊंचीश्वास दुःखकीमारीलेती हुईयह कहने लगीकिहे परमेश्वर मैंनेपूर्वजन्ममेंकौनसापापकिया किजिसका फल मैं भोग रहीहूं देखो मेरा पति भी यह मेरी दुर्दशा नहीं जानता औ औरभी कोई इसमेरे दुःखको नहीं जानते मेराशिर फटा जाताहै इस क्लेशसेतौ मरनाही ठीकहै परंतु नहीं जानती कि मेरी मृत्यु क्यों नहीं होती देखो पतिकी सेवा त्याग एकांत में इकल्ली रहना मेरेको अयोग्यहै परंतु क्या करूं अभी तौजब तक मेरा वृत्त कोई नहीं जानता तबतक तौ मैंही दुखीहौं यदि यह किसीने मालूम किया तौहमसेभी अधिक हमारा प्राणनाथ राजाभी दुःखी होगा अब किसी उपायसे यदि मैं शूकरक्षेत्र को जाऊंतौ यह क्लेश मेरा निवृतहो इस भांति रानी शिरकेबिषम वेदना से पीड़ित कहरहीथी किराजाभी पलंगके नीचे से प्रकट हो औबड़े प्रीतिसे निजरानीको उठाय हृदयमें लगाय आश्वाशन पूर्वक मधुर वाणीसे कहने लगा किहे प्रिये क्यों इतनाक्लेशसह दुःखी होरहीहो आज हमने तुम्हारा क्लेश जाना आजतकतुमने दुःख सहलिया औ हमसेनिवेदन क्योंनकिया कि जोहमउत्तम२ वैद्यों को बुलाय औषध आदि उपाय करते यह सबदुःख दूर होजाता परंतु अब हमने जाना इसका उपाय औषध मंत्र यंत्र आदि करके दूरकरेंगे अथवा जिसभांति बनेगा सोईउपाय किया जायगा जिस में तुम सुखी होवोगी औरजो तुम शूकरक्षेत्रका यात्रा कहतीहै सोभी दुर्लभ नहींहै परंतु तुमने तौव्रत के बहाने इतना क्लेश भोगाइतना निज प्राणप्यारे पतिका बचन सुनरानी बहुत हर्ष में हो कहने लगी कि हे महाराज आपजो पूछतहैंसो अवश्य हमकोकहना चाहिये परन्तुठीक ठीकहमारे कहनेसेआपको क्लेशहोगा इसलिये आजतकहमने अपनावृतांत कथननहीं

किया औ आपराजपुत्रहैं आजतक केवलसुखहीमें रहे दुःखदेखा नहीं औ यहभीहै किआपके अन्तःपुरमें अनकसुन्दरी अप्सरावों कोभी लज्जित करनेवाली अनेक स्त्रियांहैं अकेली हम क्लेशमें भी रहैं तौरहने दीजिये जिसमें आपक्लेशितहोंसो न करें आपहमारे पति रूपसाक्षात् परमेश्वर हैं हमको सदापूछनेसेभी वहीकहना चाहिये जिसमेंआपका मन प्रसन्नहो औपतिव्रता स्त्रियों का यही सनातन धर्म्महै कि सदापतिको सुखदें दुःख देनेवालीस्त्री नरक जातीहै यहधर्म्म युक्त निजप्राण प्रियारानीका बचन सुन राजा कलिंगाधिप कहने लगा किहे प्रियेचाहे हमको शुभहो वा अशुभ होपरंतु यथार्थहमारे पूछनेसेतुमको कहनाउचितहैपतिव्रतास्त्रियों का यही धर्म्महै जोधर्म्म होवा अधर्म्महो निजपतिसे सब सत्य सत्य प्रकटकरे यह सनातन धर्म्म बिचार के गुप्त रखना तुमको योग्य नहींहै यहनिज पतिका बचन सुनिऔ धर्म्मबिचार रानी यह बोलीकि हे महाराज यदिआप बारम्बार पूछते हैं तौ प्रथम यह कीजिये कि निज बड़े पुत्रको बुलाय राज्याभिषेक कर उसे राज्य सौंप मुझे साथले आप शूकरक्षेत्र को चलें तौ मैं कहूंगी अन्यथा नहीं कहसक्ती यहसुन राजाने निज मंत्रियोंको औ पुरोहितको आज्ञादी कि शीघ्र बिधान पूर्वक सब सामग्री इकट्ठीकरो बड़ेपुत्रका अभिषेक करना होगा यह सुन मंत्रियोंने बड़े प्रीतसे राजआज्ञा मान सबपदार्थ इकट्ठे कर राजाको बिदित किया उसे सुन राजा बड़ी प्रीतिसे उत्साह पूर्बक निज जेष्ठ पुत्रका उत्तम मुहूर्तमें अभिषेक कर औ राज्यदे प्रधानों को शूकरक्षेत्र जाने की आज्ञादी सो सुन मंत्रियोंने राजाके आज्ञानुसार सब तैयारीकर राजा से निबेदन किया सो सुन राजा साथ रानी को ले और थोरेसे शिष्ट वृद्ध पुर बासियोंके साथ मंगल पूर्बक शूकरक्षेत्रकी यात्राकी औ पुत्रको बुलायबड़ेप्रीतिसे मस्तकको सूंघ यह बोला कि हेपुत्र यदि बहुत कालसुख पूर्बक राज्य किया चाहते हौ तौ

यह हमारा बचन कभी न भूलना कि किसी समय दान न बंध करना औ सुपात्र में दान देते रहना औ बालक स्त्री वृद्ध जो शरणागत आयेहों उनकी सदा रक्षा रखनी जो चोरलुटेरे अधर्म्मी परस्त्रीगामीहों उनको दंड देना औ परस्त्री कैसहो सुंदरीहो उसमें लोभ नहींकरना परंतु ब्राह्मणी तौ बिशेष करके त्यागना औ हेपुत्र परधन में लोभ न करना अन्यायसे जोधन आयाहो उसे स्पर्श नहीं करना औ शिष्ट वृद्धोंकी आज्ञामानना आदर भी उनका सदा करते रहना औ सबकाल में प्रमाद न करना शरीर की सदा रक्षा रखना औ बिचार करके दंडदेना जल्दी किसी के बिश्वास में नहीं आना जो ब्राह्मण कहें उसे अंगीकार करना औ आश्रितों का पोषण भलीभांतिकरना जिसमें वो दुःखी न रहैं हेपुत्र यदि हमारा प्यार चाहतेहो तौ इनबातों को भूलना नहीं इसभांति हे रन्ति निज पिता कलिंगाधिप का बचन सुन राजपुत्र मोहसे बिबसहो निज पिता के दोनों चरण पकड़ कहनेलगा कि हेमहाराज मैंतो बालक हूं आजतक खेल में औ स्वतंत्र रहनेके सिवाय और कुछभी नहींजाना आप यहभार मुझे क्यों देतेहौ सर्वथा इसमें मेरी अरुचि है इसलिये आपतो राजकी औ मेरी रक्षाकरें औ मैं बालकपनेका क्रीड़ा औ आनंद करूं यहसुन मधुरबचनों से कलिंगाधिप कहनेलगा कि हेपुत्र जो कहतेहो सोसब ठीकहै परंतु हमारीभी आज्ञा तुमको माननीयहै इससे जो हम कहें सो प्रीतिसे करो पिताका धर्म्म यही है जो पुत्रकादे यह कह कलिंगाधिप तौ शूकरक्षेत्रकी यात्रा की औ राजा के साथ पुरवासी औ आश्रित बाल वृद्धस्त्री पुरुष बहुतसाथ होलिये कलिंग देशसे चलते २ कोई दिनोंमें आय सुखपूर्वक शूकरक्षेत्र में पहुंचे औ पहुंचि यथास्थान में निवास कर रानीसे बोला राजा कि हेप्रिये जो तुमने कहा कि शूकर क्षेत्रमें गुप्त कथन करेंगे सो आय पहुंचे अब अपना वृत्तांत

कथन करौ यहसुन कांतिसेन राजाकी कन्या मुसकुराय राजा के चरणों को निज हाथोंसे पकड़ कहनेलगी कि हेप्राणनाथ अब यहां आयेहो हम औ आप तीन दिन व्रतकर गंगासेवन करलें पीछेसें कहैंगे यहसुन राजाने आदरसे रानीका वचनस्वीकार कर संकल्पपूर्वक तीन दिन का व्रतकिया औ त्रिकालगंगा स्नान दान ब्राह्मण भोजन आदि सत्कर्म्मों से व्रतको समाप्त कर चौथे दिन निज रानी से कहनेलगा कि अब क्याकरना चाहिये जो उचितहो सो निज मनका वृत्तांत औ अपना क्लेश कह सुनावो तबतौ रानी हेधरणी हमारा स्मरण कर औ निज भूषणों को उतार ब्राह्मणों को दे राजाके चरणों में प्रणाम कर औ हाथजोड़ एकांतमें बड़े प्रीतिसे राजा के हाथको पकड़ यह कहनेलगी कि हेमहाराज मैं पूर्वजन्मकी सृगालीथी औ इसी क्षेत्रमें सदा रहा करती थी सो दैवयोग राजा ब्रह्मदत्त का पुत्र सोमदत्त आखेट को आया उसने भावीवश मेरे शिरमें एक ऐसा बाण मारा कि जिसके लगतेही हमारी मृत्यु हुई सो आप अपने हाथोंसे हमारे शिरमें घावका चिन्ह देखें हेमहाराज इसतीर्थ के प्रभावसे हम राजकुमारीहो आपकी पत्नी भई औ यहांके प्राणत्याग होनेसे हमारा स्मरणभी पूर्व जन्म का नहीं भूला सो आप निश्चय करें औ अबयह शरीर भी हमारा त्याग होता है सो आप देखेंगे बाराहजी कहते हैं हेधरणि निज स्त्रीके मुखसे इतनी बात सुनतेही राजाकोभी पूर्व जन्मका भलीभांति स्मरण हुआ औ बड़े हर्षमेंहो कलिंगराज निज रानीसे कहनेलगा कि हेप्रिये अबतुमने तौ निज वृत्तांत कह सुनाया हमारा भी वृत्तांत सुनो इतना कह कहने लगा कि यह जो गृध्रवट दिखाताहै इसमें रहनेवाला मैं गृध्रहूं उसी सोमदत्त के बाणसे मैं भी प्राणत्याग कियाहूं औ इसतीर्थ के प्रभाव से राजपुत्रहो तुम्हारा पतिहुआ अबमेरा पूर्वजन्म सब स्मरणहुआ अब तुम्हारे साथहीमेंभी प्राण

त्याग करताहूं इतना कहतेही हेधरणी हमारे दूत उत्तम बिमान लाय उसी स्थान में प्रकट भये उसे देख राजा औ रानी दोनों हमारा स्मरण करते शरीर त्यागकर दिव्य देह धारणकर उसी बिमान में बैठ बड़े आनंदसे दोनों जाय श्वेतद्वीप में पहुंचे यह आश्चर्य्य देख जो राजा के साथ पुरबासी आयेथे वोभी प्रेमश्रद्धा युक्त दान पुण्य कर निज निज शरीर को त्याग २ उसी भांति उत्तम बिमानों पर बैठ वोभी सब श्वेतद्वीप निवास पाया इसलिये हेधरणि इस शूकरक्षेत्र में जो प्राण त्याग करते हैं वेसब श्वेतद्वीपनिवासी होत हैं जो पुरुष वा स्त्री जन्म भरमें कभीएक बारभी शूकरक्षेत्र में स्नानभी किया है वोचाहै जहां शरीर छोड़ै परंतु दशहजार बर्ष स्वर्गबास कर जंबू द्वीप में जन्म लेकर उत्तम हमारा भक्त होताहै औ हेधरणि जो पुरुष वा स्त्री गृध्रवट नाम तीर्थमें स्नान जन्म भरमें एकबार भी करते हैं वेचौदह हजार बर्ष इंद्रके साथ देवलोक में सुख भोग अंतमें भारतखंडमें जन्मले हमारे भक्त होते हैं इसभांति श्रीबाराह भगवान् के मुखारबिंदकी बाणी सुन नम्रहो हाथ जोड़ धरणी कहनेलगी कि हेभगवन् अब आपकृपाकरके यहभी कथनकरें कि यहतीर्थकौन सी पुण्य करनेसे मिलता है औ कौनसी पुण्य से मनुष्य तीर्थमें प्राणत्याग करताहै यह धरणीका प्रश्न सुन बाराहजी कहनेलगे कि हेधरणि जो पूर्वजन्म में धर्म्मात्मा औ बिचारवान् मनुष्य हैं वे पूर्व पुण्य के प्रभाव से उत्तमक्षेत्रमें ज्ञानपूर्वक शरीर त्याग करतेहैं औ यदि कोई प्रबल पातकभीहै उसके प्रभावसे मनुष्य देह नहीं पाते हेधरणि जैसे सृगाली औगृध्र इसभांतिके तिर्य्यक् योनिमें रहे परंतु पुण्य के प्रभाव से बास तीर्थही का मिला औ अन्तमें जिस किसीभांति शरीर त्यागहुआ तो भी उत्तमकुल में जन्मले संसारके सब सुख भोग अंतमें ज्ञानपूर्वक शरीरत्याग कर उत्तमलोक में भी प्राप्त हुये हे धरणि औरभी एक वृत्तांत

कथन करतेहैं सो सावधानहो प्रीतिसे श्रवणकरो इसीशूकरक्षेत्र में सूर्य जीने पुत्र कामना करके दशहजार बर्ष चांद्रायण व्रत करके तप किया उस तपसे हम प्रसन्नहो सूर्य्यको दर्शन दै बर देनेलगे तबतो सूर्य्यजीने यह कहा कि हे भगवन् यदि आपमुझे बरदेतेहैं तो संतानबर दीजिये कि जिसमें मेरे को बड़ा प्रतापी पुत्र मिले हे धरणि तबतो हम प्रसन्न हो बर दिया उस बरके प्रभावसे यम नामपुत्र औ यमुनानामकन्या दोसंतान सूर्य्यकेहुये हे धरणि जहां सूर्य्यजीने तपकिया उसस्थानमें एकाहार करके जो प्राण त्यागकरतेहैं वे दशहजार बर्ष सूर्य्यलोकमें निवासकर अंतमें भूमण्डल के महाराजहो अनन्त सुख भोग अंतमें तीर्थमें प्राण त्यागकर हमारे लोकको आतेहैं हेधरणि यह कोकामुख शूकरक्षेत्र का माहात्म्य हमने वर्णनकिया इस अतिपबित्र कथा को उत्तम कर्मनिष्ठ विवेकी वैष्णव को श्रवण कराने से हमारी प्रसन्नता होतीहै और कर्महीन नास्तिक धूर्त्त कृतघ्न इसकेश्रवण योग्य नहींहैं इसलिये उनको श्रवण करानेसे पातक होताहै औ श्रोता बक्ता दोनों अधिकारी होतो दोनोंके सात२ कुल इस कथा के प्रभाव से उत्तमगति पातेहैं॥

एकसौबत्तीसका अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं हे शौनक इसभांति कोकामुख शूकरक्षेत्र का बिचित्र माहात्म्य सुन हाथजोड़ नम्रहो धरणी कहनलगी कि हे भगवन् आपने बड़े आश्चर्य्यका शूकरक्षेत्र माहात्म्य वर्णनकिया कि जो गृध्र औ सृगाली अपमृत्यु सेभी प्राणत्यागकर राजारानी भये औ अन्तमें पूर्व जन्मका स्मरणभी हुआ जो योगियों कोभी दुर्ल्लभ है औ फिर ज्ञानपूर्वक प्राण त्यागकर श्वेतद्वीप में प्राप्त हो आपके पार्षद भये अब आपयह बर्णन करें कि शूकरक्षेत्रमें गोदान अन्नदान आदि अनेक भांति के दान करने से औ बिष्णु

मन्दिरके सेवाकरनेसे अथवा पंचोपचार षोडशोपचारकरके आप की सेवा करनेसे क्याफलहोता है सो आप कृपाकरके वर्णनकरें जिससे आपके सेवक आपकी सेवाको कर परमपद को प्राप्त हों यह सुन वाराहजी महाराज मधुरवाणी से कहनेलगे कि हे धरणि जोतुम पूंछतीहो सोहम कथन करतेहैं सावधानहो श्रवण करो किसी समय में शूकरक्षेत्र मध्य जो सूर्य्य तीर्थ कह आये हैं जहां सूर्य्यजी तपकरके सिद्धहुये वहांही एकखंजरीटनामकपक्षी रहा करताथा सो किसी दिन क्षुधा से व्याकुल हो कीड़े ढूंढ़ २ खाने लगा औ सदावही कीड़े उसके आहार थे परन्तु दैवयोग उसदिन इतने कीड़े उसपक्षीको मिले कि जिसकोखाते २ अजीर्ण ऐसा हुआ किजगहसे उड़नातो कौनकहै दोचार कदम चलनाभी दुर्लभ हुआ उसीसमय बहुते बालक इकट्ठे हो क्रीड़ा करते २ वहां आय पहुंचे जहांवह पक्षी अजीर्ण से व्याकुल पड़ाथा उसे देख बड़े कौतुकमें हो परस्पर कहनेलगे कियह पक्षी हम लेंगे दूसरेने कहा हमलेंगे इसीभांति रौला मचा रहेथे किउनमेंसेएक बालक बड़ेवेगसे जाय उसे उठाय सूर्य्यतीर्थमें फेंकके कहनेलगा कि तुम सब इसे लो मरेहुये पक्षीको हम नहींलेंगे हेधरणि जब उस पक्षीको बालक ने उठाया तब तक तो थोड़ासा प्राण थाभी परन्तु उसनेजो बेगसे फेंका औजलमेंगिरा उसीसमयमृतहोगया औ उसक्षेत्र औतीर्थके प्रभावसे प्राणत्यागि जाय किसी धनाढ्य वैश्यके घरमें पुत्रहो जन्मलिया तबतो जन्म लेतेही सुंदरस्वरूप औसब गुणों करके युक्त बारह बर्षके मध्यमेंहीहो निज मातापिता को बड़ेहर्ष को देनेलगा किसीदिन बड़े हर्षमें उसके माता पिता बैठेथे औ परस्पर पुत्रकी प्रशंसा कर रहेथे कि वह पुत्रभी आय हाथ जोड़ बड़े नम्रता से पिता माताको प्रणामकर औकहनेलगा कि आप मेरे गुरूहो इसलिये मैंआपसे कुछ यांचा करताहूं सो आप कृपा करके मेरा मनोरथ सफल करें औ मैंने आजतक भी

कुछमांगानहीं इसलिये मेरी बांछा आप भंग न करें इस भांति दोनोंने निज पुत्रकी बाणीसुन बड़े प्रेम से पुत्रको उठाय हृदयमें लगाय आदरसे कहनेलगेकि हेपुत्र सत्यकरके जानो कि तुम्हारे से दूसरा कौनहमको प्रियहै कि तुम्हारा बचन न मानेंगे तुमतौ जो कुछ कहनाहै सो कहो अवश्य तुम्हारा मनोरथ पूर्ण होगा हे पुत्र हमारे घरमें तीसहजार गौ उत्तम२ हैं औ हमारा बणिज व्योपार सबहै और जो धन धान्य रत्न बस्त्र आदि उत्तम २ पदार्थ हैं सो तुम्हारे आधीनहैं जो चाहो सो करो चाहो किसी मित्रको धनदिया चाहतेहो सोदो अथवा कोई उत्तम कन्याका बिवाह चाहतेहो सोभी दुर्लभ नहीं है और यदि कोई यज्ञदान ब्राह्मण भोजन आदि सत्कर्म्म किया चाहते हो सो इच्छापूर्वक करो इसभाँति प्रेमसंयुक्त पिता माता की बाणी सुन पुत्र हाथ जोड़ नम्रहो बिनयपूर्वक कहने लगा कि हेपितः नतो मैं दान करना अथवा कन्या का बिवाह वा मित्रका उपकार वा बणिज अथवा ब्राह्मण भोजन यज्ञ याग आदि कोई कर्म्म मैंनहीं चाहता हूं मेरीतौ यह प्रार्थना है कि आपदोनों कृपा करके शूकर क्षेत्र जानेकी आज्ञा देवें तौ मेरी बांछा सफलहो इसभांति पिता माता पुत्र का बचन सुन मोंहसे विवसहो कहने लगे कि हेपुत्र अभी तक तुम्हारी अवस्था बारहबर्षकी भी नहींभई यह क्या बिचार किया जो संसार सुख छोड़ तीर्थ बास किया चाहतेहौ अभीतक तुमको भोजन करना औ बालक्रीड़ा करना चाहिये यह बिचारौ कि आजतक हमारे गोदसे बाहर कभी नहीं हुये औ दूध पीवना नहीं छुटा बगैर माबाप के इकल्ले कहीं न गये आज यह कौन बुद्धि उत्पन्न हुई और यह बुद्धि किसने दिया औ आज तक कोई मानभंगभी तुम्हारा नहीं भया किसलिये यह बिचार तुमने किया इतना कह उस बालक के माता पिता धीरज त्याग रोदन करनेलगे तबतौ ढेधरणि इसअवस्थामें मातापिताको देख

वैश्यपुत्र यह कहनेलगा कि आपदोनों मिथ्याशोक क्यों कररहे हौ हमने जबसे जन्म लिया तबसे आजतक जो कुछ उचित रहा सो तुमने पालन कियाजीवों की जैसी प्रारब्ध जिससमयमें होती है उसमें शोचकरना निष्फल है शरीरधारण करतेही माता पिता गोत्र कुटुंब संबंध होताही है औ मरनेबाद पूर्व संबंध छूटना क्या आश्चर्य्य है यह संसार अगमसमुद्र है इसमें अनेक जन्महुये औ अनेकहोंगे उनमें अनेकोंके हममाता पिताभये औ अनेक हमारे माता पिता भये किसकिस का मोह करें इसभांति पुत्रके बचन सुनके माता पिता बड़े बिस्मय को प्राप्तहोकहनेलगे कि हेपुत्र यह क्या बचन कहते हौ हमारे समुझमें भी नहीं आती औ सत्यभी है यह सुन वैश्यपुत्र कहनेलगा कि हेमाता हेपिता जोयह स्फुट सुना चाहते हौ तौ शूकर क्षेत्रके यात्राकी आज्ञादो वहां सूर्य्य तीर्थमें जाकर निज हृदय की वार्त्ता सब गुप्त भी कहूंगा यह सुन मातापिताने शूकरक्षेत्र जानेको निज पुत्रको आज्ञादी और निज कर्माधिकारियोंसे कहा कि सब प्रकार के उपस्कर अर्थात् दान सामग्रीके साथ बीश हजार गौ लेकर शूकरक्षेत्र को चलो यह कहकर निज स्थानसे माघशुक्ल १३ त्रयोदशी को अति आनन्द मेंहोकर निज पुत्रको साथ ले पद्माक्ष नामक अमीरोंका स्वामी और सब कुटुम्ब सेवक साथ शूकरक्षेत्रकी यात्राकी ओर चलते २ जाय बैशाख शुक्ल द्वादशी को हे धरणी हमारे क्षेत्र में पहुंचे वहां पहुँचि विधिपूर्वक स्नान कर क्षौमवस्त्र से वेष्टितकर बीशह-जार गौओं का दान किया और वस्त्र भूषण शय्या आदि अनेक भांति के दानोंकी कर नानाभांतिके व्यंजनोंसे ब्राह्मणोंको तृप्ति कर सहित पुत्रके वहांही निवास करनेलगा इसीभांति निवास करतेही ग्रीष्मऋतु व्यतीत होतेही वर्षा का प्रारम्भ हुआ कि चारों ओरसे बड़े २ कारे २ घटा और बिद्युत की छटा हो हो कर२ ग्रीष्म ऋतुके ताप करके संतप्त पृथिवीको ठंढ़ीकर औ हरित

तृणोंसे औशस्योंसे मनुष्य औ पशुआदि सब जीवोंको आनन्दित करती हुई शरदऋतु आय प्राप्त भई तबतौ कार्तिकमास के शुक्ल एकादशी का व्रत करके पुत्रसे अभीर औ अभीरी दोनों कहनेलगे कि हेपुत्र अब यहां आये बहुतदिन भये आपको जो कुछ कहना है सो कथन करो यह सुन पुत्र कहनेलगा किहेमाता हेपिता बहुत उत्तम बात आपने स्मरण कराई परंतु आजव्रतका दिनहै कल द्वादशी तिथि परमेश्वरकी अतिप्यारी होगी तबमें अपने चित्तका वृत्तांत कहूंगा यह कहकर उस रात्र व्रत जागरण आदि नियमों से व्यतीतकर प्रातःकाल उठ शौच स्नान आदि नियमोंसे निवृत्त हो परमेश्वरको प्रणाम कर पिता माता के चरणों को प्रणामकर हाथजोड़ अतिनम्रहो कहनेलगा कि हेपिता हेमाता जिसलिये हम यहां को आयेहैं सो सावधानहो श्रवण करो हेपिता पूर्व जन्म हमारा खंजरीट जाति पक्षीकाहै उस जन्ममें हमने किसी दिन निज आहार जानि बहुतसे कीड़े खानेसे अजीर्ण हुआ उस अजीर्णता होनेसे उड़ना तोकौनकहै पर एक पगभी चलनेका सामर्थ्य न रहा तबतौ इस अवस्थाको देख एक बालकने मुझे उठायके देखनेलगा तबतौ दूसरे बालक ने कहा कि क्यातुम्हीं देखोगे इतनाकहि बड़ेवेगसे उस पक्षीको अपनेहाथमेंलिया इसीभांति परस्पर कइकबालकोंने हाथसेहाथ पर लेले देखनेलगे इसीसमय किसीबालकनेहाथमेंले दूसरे बालकके भयसे बड़ीजल्दीसे जलमें गेरदिया औ कहनेलगा कि लो तुम हम मरेहुये पक्षीकोनहींलेते सो हेमाता वो खंजरीटपक्षीजल में पड़तेही प्राण त्यागकर पुण्य तीर्थके प्रभावसे तुम्हारे उदरमें जन्मलिया सो मैंहूंयह तुम्हारे घरमें रहते२ त्रयोदशवर्ष व्यतीत भये हेपिता हेमाता यह हमारा गुप्त वृत्तांतहैं अबतुमदोनों यहांसे इच्छापूर्वक घरकोपधारो हम नारायणके प्रसन्न होनेका सत्कर्म करेंगे यहपुत्रका बचनसुनदोनोंकहनेलगे कि हेपुत्र जिसकर्म्मको

करके नारायणको प्रसन्नकिया चाहतेहो सोकर्म हमसेभी कथन करो कि जिसके करनेसे हमभी परमेश्वरके प्रियहोके परमधाम श्वेतद्वीपको प्राप्तहोवें यहसुन औ पिता माताका सावधान चित्त देख पुत्रने सन्मार्ग उपदेशकर आप श्रीनारायण परायण हो कालव्यतीत करनेलगा औ उसके पिता माताभी पुत्रोपदेशमार्ग से परमेश्वरको भजनेलगे उन्हेंदेख जोकोई और भी साथआयेथे वेभी विषयबासना से निवृत्तहो नारायण के भजनमें तत्पर भये इसीप्रकार भजन करते २ कछुक दिनमें निजशरीर त्याग कर२ जाय श्वेतद्वीप में प्राप्तहो परमेश्वरके पार्श्ववर्त्ती भये जो गति योगियोंको भी दुर्ल्लभहै उसगतिको हे धरणि उस तीर्थकेप्रभाव से संस्कार औ बिद्याहीन बैश्यजाति भी प्राप्तभये यह शूकरक्षेत्र का माहात्म्य हमने बर्णनकिया इस माहात्म्यको जो हमारे भक्त पुरुष दिनमें अथवा नित्यसुनें वा सुनावें वो सब पातकोंसे मुक्तहो श्वेतद्वीप जो हमारा धामहै वहां निवास पावें॥

एकसौतेंतीसका अध्याय॥

श्रीवाराहजी कहतेहैं हे धरणि यह सावधानहो श्रवण करो कि जो मनुष्य हमारे मन्दिरमें लेपन करते हैं तिनको जो फल प्राप्तहोताहै जो मनुष्य गोमयलेकर हमारे मन्दिरमें लेपनकरतेहैं उसमें जितने पद हमारे भक्तोंके पड़ते हैं उतनेही हजारबर्ष उस लेपनदेनेहारे पुरुषको स्वर्गबास होताहै औ यदि नियमसे बारह बर्ष पर्य्यन्त निरन्तर हमारे मन्दिरमें लेपनकरे वहमनुष्यउत्तम कुलमें जन्मले धनधान्ययुक्त हो संसार में नानाभांति सुखभोगि अन्तमें शरीर त्याग करनेसे कुशद्वीप में जन्म पाताहै औ वहां हजारों बर्ष नानाभांति के सुख भोगि पुण्यक्षीण होनेपर उत्तम-भूमिमेंआय धर्म्मनिष्ठ अखण्डमण्डलेश्वर राजाहोताहै हेधरणि और तौ कहांतक लेपकरने का माहात्म्य बर्णन करें जो मनुष्य

हमारे मंदिर में लेपकरनेके लिये गोमय ल्यादेताहै वो जितनेपद गोमय लेकरके चलताहै उतनेही हजारबर्ष स्वर्गबासकर पुण्य क्षीण होनेपर शाल्मलीद्वीपमें जाय जन्मलेकर ग्यारहहजारबर्ष बासकर वहांका सुख भोगि पृथिवी में धर्म्मात्मा राजा होताहै और जो अखंड बारहबर्ष इसीभांति गोमय लीपनेवास्ते ल्यादेताहै हे धरणि वो पुरुष अवश्य हमारालोक पाताहै हे धरणि हमारे स्नानके निमित्त वा लेपनके निमित्त जो पुरुष उत्तम वो पबित्र जल ल्यादेता है वहजल जितने बिन्दु होते हैं उतनेही हजारबर्ष स्वर्गलोकमें बासपाताहै और पुण्यक्षीण होनेपर क्रौंच नाम द्वीपमें जन्मले वहांका अखंडसुख भोगि फिर पृथिवीपर उत्तम राजाओंके कुलमें जन्मले औ अखंडपृथिवीका राजभोगि अंतमें श्वेतद्वीपमें बास पाताहै और हे धरणि जो मनुष्य हमारे मंदिर का मार्जन करतेहैं वे मनुष्य जितनी रेणु बाहर गेरते हैं उतने सौबर्ष स्वर्गमें बास पाते हैं औ अंतमें स्वर्गसे भ्रष्टहोके शाकद्वीप में जन्म पाय वहां का सुख भोगि अंतमें सागर-मेखला पृथिवीका महाराज हो अनेक भांतिके सुख भोगि अंत में श्वेतद्वीपमें बास पातेहैं और हे धरणि जो मनुष्य हमारे मन्दिर में गान करतेहैं उनका पुण्य सावधान हो श्रवण करो गानके समय में उसराग के जितने अक्षर मुखते निकलते हैं उतनेही हजार बर्ष गान करनेवाला पुरुष इन्द्रके समीप देवलोक में बासकर औ नानाभांति का सुख नंदन आदि बिहारभूमिमें भोगि पुण्य क्षीण होनेपर भारतखंड में जन्मले सुख संपत्ति करके युक्त बिष्णुभक्त होता है औ पृथिवी में हमारा यश गान करता परमानंद में मग्न हुआ २ नाना भांतिके सुख संपत्ति को भोगि शरीर अंतमें हेधरणि हमारा परमप्रिय जो श्वेतद्वीप नाम स्थान है वहां जाय प्राप्त होताहै सूतजी कहते हैं हेशौनक इसभांति श्रीबाराहजी का बचन सुन धरणी पूंछनेलगी कि हे भगवन्

आपने गानविद्या का बड़ाही माहात्म्य वर्णन किया अब आप यह वर्णन करैं कि इसगान के प्रभाव से कौनसा पुरुष मुक्तहुआ औ सद्गति को प्राप्त भया इसभांति धरणी का बचन सुन बाराह जी कहने लगे कि हेधरणि जो पूछतीहौ सो सावधानहो श्रवण करो किसी एक बनमें बिष्णुमंदिरथा उस मंदिर के समीप गान विद्यामें निपुण एक चांडाल रहा करता सो चांडाल नियम से नित्य२ जायकर बिष्णु भगवान के सन्मुख दूर बैठि प्रेमसे उत्तम२ बिष्णुपद गाताथा सो किसीसमय कार्तिक मासके शुक्ल पक्षकी जो देवोत्थानी एकादशी है उसदिन जागरण औ गानके लिये अपने घरसे सावधान हो कछुक रात्रि बीतनेसे चला तबतौ क्या देखताहै कि एकबड़ा बलवान् औ भयंकर ब्रह्मराक्षसरास्ता रोंकके खड़ाहै उसे देख भयभीतहो चांडाल कहनेलगा कि हम अधमजाति हैं इसलिये रास्तादो यहसुन ब्रह्मराक्षस उसके खानेके बिचार में बहुत प्रसन्न हुवा कहनेलगा कि हे चांडाल हम मानुषाहारी दश दिनके भूखे क्षुधा करके पीडित ब्रह्मराक्षस हैं आज ब्रह्माजीने तुमको हमारे आहार के लिये भेजा है सो आज तुम्हारे मांस औ रुधिर से अपनी क्षुधा औ तृषा दूरि कर आनंद औ तृप्तिको प्राप्तहोंगे यह राक्षस की बाणी सुन गीतके गाने औ एकादशी व्रत जागरणका उत्साह आदि भंगहोता देख हाथ जोड़ बिनयपूर्वक यह कहनेलगा कि हे राक्षस हैं तौ यथार्थ कि दैवने हमको तुम्हारे भोजनके लिये भेजा है औ यह ऐसाही होना चाहिये परंतु इससमयमें मेरीयह अभिलाषा है कि आजके दिन यदि आप मुझे छोड़ देवैं तौ अपूर्व पुण्य दिन यहकार्तिक शुक्ल एकादशी को मैं इस बिष्णुमंदिरमें जाय जागरण औ गान करि बिष्णुको रिझाय नियम पूराकर कलि आऊं तौ आप मुझे भलीभांति भक्षण करैं यह चांडाल का बचन सुन क्षुधा करके पीड़ित बड़े क्रोधसे यह कहनेलगा कि रेमूर्ख मिथ्याभाषण

क्यों करता है कि मैं फिर आऊंगा जोकि एकवार मृत्युके मुखसे किसी भांति कोई बच जाता है तौ वह फिरि उसमृत्यु के मुख क्यों आवेगा यह राक्षस का बचन सुन चांडाल कहनेलगा कि आपतो सत्य कहते हैं परंतु यह देखो कि जन्मांतर में कोई ऐसा पापमुझसे बनपड़ाहै कि जिसका फल यह हुआ जो अति निंदित चांडाल योनिमें जन्म पाया अब मैं मिथ्याकथन का पाप जान बूझिकै किसभांति करूंगा इसलिये मेरा बचन सत्य मानों औ बिचार करौ कि सत्यही के आधार सारा बिश्व है औसूर्य्य चंद्रमा ऋषि मुनि पृथिवी जल आदि सब पदार्थ सत्यही से निज २ स्थान में टिके हैं देखो हेराक्षस ऐसा पदार्थ सत्यहै जिससे निज कन्या को सत्य के भरोसे दूसरे को देदेते हैं और सत्यही से स्वर्ग औमोक्ष प्राप्तहोता है और यदिहम असत्यभाषण करें तौ यह पाप हमको प्राप्तहो जोपाप गुरुपत्नी राजपत्नी कन्यागमन में होताहै औ जिसलोक को ब्राह्मण के बध करनेहारे गोबध करनेहारे औ मद्यप ब्रत भंग करनेहारे जाते हैं वे लोक हमको हों इस भांतिकी प्रतिज्ञाबचन चांडाल की सुन ब्रह्मराक्षस बड़ा प्रसन्नहो कहने लगा कि हे चांडाल तू धन्य है औ इच्छापूर्वक जावो तुमारे प्रणाम हैं इतना कहि ब्रह्मराक्षस तौ अंतर्द्धान हुआ औ चांडाल हमारे मंदिर में आय हेधरणि बड़ेहर्षसे वहरात्रि तौ बैष्णवों के साथ जागता हुआ गान करत व्यतीत किया होत प्रातःकाल आवश्यकों से निवृत्तहो नारायण को प्रणामकर परिक्रमा कर बड़े आनन्दसे ब्रह्मराक्षस के समीप जाय पहुंचा औ बड़े प्रसन्नसे मरण निश्चयकर मधुरबचनसे ब्रह्मराक्षस से कहनेलगा कि हेराक्षस अब हमसबआवश्यकोंसेनिवृत्तहो तुम्हारे समीप आये अब इस हमारे शरीर को इच्छापूर्बक भोजन करो तृप्तहो औ बिलंब न करो तुम्हारी कृपासे हम बिष्णु भगवान् का ध्यानकर यह निन्दित शरीर त्यागकर उत्तम बैष्णव स्थान

को जायँगे यह चाण्डाल की बाणी सुन ब्रह्मराक्षस बिस्मित होकर अतिमीठी बाणीसे कहनेलगा कि हे चाण्डाल तू धन्यहै औ तेरी साधुता औ सत्यता देख हम अतिप्रसन्न भये कि जो तेरीबुद्धि चांडालयोनिमें भी न चलितहुई अर्थात् सत्यताका त्याग तुमने न किया यह ब्रह्मराक्षसकी बाणीसुन चांडाल कहनेलगा कि यद्यपि हम नीचजाति हैं तथापि सत्य नहीं त्यागते क्योंकि असत्यभाषणके तुल्य पातक चाण्डालमें भी नहींहै क्योंकि जो चांडालको अन्तमें नरकग्रहण करतेहैं औ असत्यबादी से नरक भी डरतेहैं इतना सुन ब्रह्मराक्षस बिकट बाणीसे डेरावता हुआ गर्जिके कहनेलगा कि हे चांडाल जोतूअपनेप्राणकी रक्षाचाहता है तो बिष्णुमन्दिरमें जागरण कियेका औ नित्य गान करनेकी पुण्य देदेवै तौ तेरेको छोड़देवैं तू सुखपूर्बक जहां इच्छा हो वहांजा अन्यथा बेभक्षणकिये न छोड़ूंगा यह ब्रह्मराक्षसकाबचन सुन चांडाल कहनेलगा कि कहते तो तुम ठीकही हो परन्तुमुझे खानेका बिचारछोड़ गीतका पुण्य क्यों मांगतेहो यहसुनब्रह्म-राक्षस कहनेलगा कि जो तुम सकुटुम्ब बचा चाहतेहो तो बेबि-चारे बिष्णुमन्दिरके गानका पुण्य हमको दो अन्यथा सकुटुम्ब तुम हमारा भोजन होगे यह राक्षसकी बाणीसुन चांडाल कहने लगा कि हे राक्षस इच्छापूर्बक हमारा व हमारे कुटुम्बका मांस खावो रुधिर पीकरके तृप्तहो परन्तु हम गानका फल नहीं देंगे यह सुन राक्षस कहनेलगा कि अच्छा सम्पूर्ण गीतोंका फल न दो तो एकही गीतका फलदो जिस करके हम इस राक्षसयोनि से छुट उत्तम गतिकोपावैं इसभांति राक्षसका बचनसुन चांडाल बिस्मित हुआ २ मधुरबाणी से कहने लगा कि हेराक्षस कौन सापाप तुमने पूर्ब जन्ममें किया कि जिसका यह फल प्राप्त भया यह सुन ब्रह्मराक्षस कहनेलगा किहे चाण्डाल जोतू पूंछताहै सो वृत्तान्त श्रवणकर पूर्ब जन्मके हम सोमशर्म्मा नाम ब्राह्मण हैं

सो लोभ बश हो के सूत्र मंत्र पद्धतियों को त्याग इच्छायज्ञ बहुत कालतक कराते रहे सो दैवयोग किसी यजमान को यज्ञ करातेही समय हमारे उदरमें शूल उठा उस घोरशूल की वेदना से प्राण त्यागभया सो हे चांडाल उस बिधिहीन यज्ञदोषकरके हमराक्षस-योनिमें प्राप्तहो नाना भांति के दुःख भोगने लगे इसलिये निज गीत पुण्यसे आज कृपा करकेइस क्लेशसे हमारी रक्षाकर उद्धार करो यह दीन औ श्रद्धायुक्त बाणी राक्षसकी श्रवणकर चांडाल ने निजगीतका पुण्य देनेको अंगीकार कर शुद्धचित्तहो कहनेलगा कि हे परमेश्वर जो गीत स्वरके साथ आपके सन्मुख कार्तिक की शुक्ल एकादशी को प्रीतिसे हमने गान कियाहै उसमें एकगीतका फल इस ब्रह्मराक्षसको होय जिससे इसकी उत्तमगति होय औ यह दुःख छूटै बाराहजी कहते हैं हे धरणि इस भांति चांडाल से एक गीतका फल पाय ब्रह्मराक्षस योनि से छुट हमारा प्रिय जो श्वेतद्वीप नाम परमपद वहांजाय प्राप्त भया हे धरणि यह गीत फल हमने बर्णन किया जो मनुष्य कार्तिक मासकी शुक्ल द्वादशी को प्रीतिपूर्वक हमारे मन्दिरमें गान करते हैं वे सब पापोंसे मुक्त हो हमारे लोकमें जाय मुक्तिभागी होतेहैं औरजो मनुष्यजागरण पूर्वक हमारे मन्दिर में गान करते हैं वे संसार सागर से पारहो परमपदको प्राप्त होतेहैं हे धरणि इस भांति गान करनेका फल हमनेबर्णनकिया अब बाद्यतालका फल सावधानहोश्रवणकरोजो मनुष्य पुण्यपर्वमें जाय हमारे समीप गातेहुये मनुष्योंके साथप्रेम से भांति२ के बाजेबजाय कर हमको रिझाते हैं वो मनुष्य शरीर त्यागकर नवहजार नौसैबर्ष कुबेरलोकमेंजाय अनेकभांतिका सुख भोगि अंतमें आय पृथिवीमें उत्तमकुलमें जन्मपायबिष्णुभक्त होते हैं हे धरणि अब नृत्यका माहात्म्य बर्णन करते हैं सो श्रवण करो जो मनुष्य हमारे मंदिरमें नियमसे प्रीतिपूर्वक नृत्य करते हैं सो हमारेप्रसाद से शरीर त्यागकर तेंतीस हजारबर्ष जाय पुष्कर-

द्वीपमें निवासले नानाभांति वहांकासुख भोगि अंतमें स्वर्ग्गबास पातेहैं और स्वर्ग्ग भोग भोगि अंतमें पृथिवीमें आय उत्तमकुल में धन बिद्या करके युक्त नानाभांति सुख भोगि शरीर छोड़ने से बैकुंठग्राम बासी होतेहैं और हे धरणि जो मनुष्य भक्ति पूर्वक हमारे मंदिर में नृत्य गानवाद्य जागरण आदि नानाभांति के उत्साह को करते हैं वे शरीर त्यागकर स्वर्ग्गमें जाय नानाभांतिके सुख भोगि अंतमें जंबूद्वीप के महाराज होते हैं और हे धरणि जो मनुष्य उत्तम सुगंधयुक्त अनेक भांतिके पुष्प हमारी मूर्त्तिपर चढ़ाते हैं वो पुष्प जितना क्षण हमारे अंगपर रहै उतनेही हजार बर्ष स्वर्ग्ग बास पातेहैं हे धरणि यह परमगुप्त वृत्तांत भक्तोंके लिये हमने बर्णन किया इस इतिहासको श्रद्धावान् जो परम बैष्णव हमारे भक्तहैं उन्हें जो श्रवण करावै सो बैकुंठफल पावै औ कृतघ्न शठ बिश्वासघाती ब्राह्मणद्रोही गुरुद्रोही ये सब इस परमपवित्र कथा के अधिकारी नहीं हैं॥

एकसौचौंतीसका अध्याय॥

सूत जी कहते हैं हे शौनक इस भांति बाराह भगवान् का बचन सुन प्रेम में मग्न हो हाथजोड़ नम्रहो धरणी कहनेलगी कि हे भगवन् आपने कृपा करके नानाभांतिका इतिहास बर्णन किया अब आप यह कथनकरें कि सर्बकालमें आप कहां निवास करतेहैं औ आपका परमप्रिय निवास स्थान कौन है और किस स्थानके उत्तम कर्म्म करने से प्रसन्न हो मनुष्योंको आप उत्तम गति देतेहैं सो सब बर्णन करें इसभांति धरणीका बचन सुन प्रसन्नहो बाराह जी कहनेलगे कि हे धरणि जो तुम पूंछतीहो सो सावधान हो श्रवण करो पृथिवीमें जो जो हमारे प्रीतिके स्थान हैं सोसो सब कथन करते हैं हे धरणि सब स्थानों से उत्तम सब कालमें हमको प्रिय जो प्रथम कहिआये हैं कोकामुख नाम

क्षेत्रहै जिसे महात्माजन वदरी भी कहतेहैं और एक लोहार्गल सक क्षेत्र भी हमको अतिप्रियहै इन स्थानोंकोहे धरणि हमक्षण-मात्रभी न त्यागकरते सदाही इनस्थानों मेंनिवास करतेहैं इस-लिये महात्माजन इनस्थानोंको हमारेस्वरूपसे किंचित्भी न्यून नहीं समझते और हे धरणि जो मनुष्य हमकोशीघ्र मिलाचाहे वे कोकामुख क्षेत्र में जाय हमारा आराधन करें इतनासुन हाथ जोड़ पृथिवी कहनेलगी कि हे भगवन् आपको परमप्यारा जो कोकामुख नाम क्षेत्रहै वो एकही है कि औरभी कोई दूसरा स्थान है सो आप वर्णन करें औरभी जोजो गुप्तस्थान कोकामुख में होंसो भी आप कथन करें यहसुनि बाराहजी कहनेलगे कि हे धरणि जोतुम पूंछती हौ सो सावधान हो श्रवण करो कोका-मुख नाम क्षेत्रमें जलबिंदु नाम तीर्थ है अत्यंत ऊंचे पर्वत से जलधारा पड़तीहै उसतीर्थमें जो मनुष्य एकबारभी स्नान करते हैं वे अवश्य हमारेलोकको जातेहैं और हे धरणिएकविष्णुधारा नाम तीर्थ कोकामुखमें बड़े ऊचे पर्वतसे मुसल समान पृथिवी में गिरतीहै उस विष्णुधारा में जो पुरुष स्नान और एक दिन रात्रि व्रत करतेहैं वे सहस्र अग्निष्टोम यज्ञके फलको प्राप्तहोते हैं और जो बिष्णुधारा में शरीर त्याग करते हैं वेहमारे समीप प्राप्त होते हैं और हे धरणि उसी कोकामुख में एक विष्णुपद नामस्थानहै जिसे बाराहशिला भी कहते हैं उस स्थानमें जो स्नान कर तीन रात्रिव्रत करते हैं वे हमारे भक्तहो क्रौंचद्वीप में जाय जन्म पाते हैं और जो विष्णुपद में शरीरत्याग करते हैं वे संसार सागरसे पारहो हमारे लोकमें निवास करतेहैं और हे धरणि जिसस्थानमें तुम्हारेसाथ हमने क्रीड़ा कियाहै वो विष्णु-सरनाम तीर्थ कोकामुखमें है उसमेंजो प्रातःकाल स्नान करतेहैं वे सब पापोंसे मुक्तहो हमारे लोकको प्राप्तहोतेहैं और हे धरणि उसी कोकामुख में सोमतीर्थ नाम स्थानहै जिस स्थानमें पंच-

शिला नाम भूमि बिष्णुनामांकित प्रसिद्ध है उसमें जो मनुष्य स्नान करते हैं औ पांचरात्रि व्रतकरते हैं वेसबपापोंसे मुक्तहोके गोमेद नाम द्वीपमें जन्म पातेहैं और जो उस सोमतीर्थ में प्राण त्याग करते हैं वे सब पापोंसे मुक्त हो परमपदको प्राप्त होते हैं और हे धरणि इस कोकामुखक्षेत्र में तुंगकूट नाम पर्वतहै जिस से चार जलधारा बड़े ऊंचेसे गिरतीहै उसमें जो स्नानऔ पितरों का तर्पण करते हैं औ पंचरात्रि व्रत करतेहैं वे सबपापोंसे मुक्तहो गोमेद नाम द्वीपमें जाय जन्म पातेहैं औरजो उसक्षेत्रमें प्राण त्याग करतेहैं वे हमारे लोकमें जाय निवास करतेहैं और हे धरणि उसी कोकामुखमें एक अनित्याश्रम नामक स्थान है जिसे मनुष्य तो कौन कहें देवता भी नहीं जानते उसी तीर्थ में जो स्नान औ एकदिन रात्रि व्रत करते हैं वे सब पापों से मुक्त हो पुष्करमें जन्मपातेहैं और इसक्षेत्रमें जो प्राणत्याग करतेहैं वे सब पापोंको त्याग परमपदको प्राप्त होतेहैं और हे धरणि उसी कोकामुखमें अग्निसरनाम तीर्थ है जहां पांचधारा पर्बतकी कंदरा से निकलतीहै जिसके स्नान करनेसे औ पांचदिन निराहार व्रत करनेसे हमारे भक्त होके कुशद्वीपमें जन्म पाते हैं और जो शरीर त्यागकरतेहैं वेसबपापोंसे मुक्तहो ब्रह्मलोकमें जातेहैं औरहेधरणि उसी कोकामुखमें ब्रह्मसरनाम अतिगुप्त तीर्थहै जहां बड़े ऊंचेसे एकधारा शिलाकेऊपर गिरतीहै जिसमें स्नान करनेसे औनिराहार एक व्रत करनेसे सब पापोंसे मुक्तहो उत्तम क्षत्रियके कुलमें जन्मले औपृथिवीका अनेक सुखभोगि औबड़ी शूरतासेप्राणत्याग करि इन्द्रलोकमें जाय अप्सराओंके साथ नन्दनबनमें बिहारकर अंतमें हमारे लोकमेंआय अनंतसुख भोगताहै और हेधरणि उसी कोकामुखमें सूर्यप्रभनाम अतिपबित्र तीर्थहै जिसमें अग्नि समान अत्यंत जलती हुई जलकीधारा गिरतीहै जिसमें स्नान औ पंचदिन निराहार व्रत करनेसे मनुष्य सब पापोंसे मुक्तहो सूर्य्यलोक

में निवास करताहै यदि वहां प्राणत्यागकरै तौ सूर्य्यलोकमें जाय वहांका सुख भोगि अंतमें हमारे समीप बास पाताहै और हेधरणि उसी कोकामुखमें धेनुवट नाम हमारा क्षेत्र परमगुप्त औ प्रियहै जिसमें एक जलधारा बड़े ऊंचेपर्बतके शिखरसे गिरती है जिस में एकदिन स्नान करनेसे औ सात दिन निराहार व्रत करने से सात समुद्रके स्नानका फल पाताहै औरजो धेनुवटमें प्राण त्याग करै वो सातोद्वीपके सुखको यथाक्रमसे भोगि अंतमें हमारे समीप बास पाताहै और हेधरणि कोकामुखमें धर्म्मोद्भव नाम हमारा परमप्रिय क्षेत्रहै जिसमें एक जलधारा पर्बत के मध्य को फोड़ बाहर निकलती है तिसमें जो स्नान औ एकरात्रि व्रत करता है वो मनुष्य फिरि शूद्रयोनिमें जन्मनहीं पाता और उस क्षेत्रमें जो प्राणत्याग करताहै वो सब पापोंसे मुक्तहो दक्षिणासहित सांग यज्ञ करनेके फलको प्राप्त होताहै और हेधरणि उसी कोकामुख में कोटिवट नाम क्षेत्र हमारा परमप्रिय अतिगुप्त क्षेत्रहै जिसमें पर्बतके शिखरसे एकबड़ी प्रबलधारा जलकी गिरके नीचे बटमूल में पड़तीहै उसमें स्नान करनेसे औ तीन रात्रि निराहार व्रतकरने से मनुष्य सब पापोंसे छुट जितने बटमें पत्रहैं उतनेही हजार बर्ष धन औ रूप करके युक्त पृथिवीमें बिहार करता है औरजो उस तीर्थमें प्राणत्याग करताहै वो सब पापोंसे मुक्तहो अग्निके समान तेजःपुंजसा शरीरधार देवलोकका सुख भोग अंतमें हमारे समीप आता है और हेधरणि उसी कोकामुखमें अतिगुप्त हमारा प्यारा पापप्रमोचन नामक्षेत्रहै जहां घटके बराबर मोटी जलधारागिरती है जिसमें स्नान करनेसे औ एकदिन रात्रिके निर्जलव्रत करने से मनुष्य चारो वेदके पढ़नेका फल पाताहै औरजो उसस्थान में शरीर त्याग करै वो उत्तमब्राह्मण के कुलमें जन्मपाय चारो वेद का जाननेवाला हमारा भक्त जन्म २ मेंहोवे और हेधरणि उसी कोकामुख में कौशिकी नाम बड़ी पुण्यदेनेवाली नदी है जो इस

नदीमें स्नान कर पांच रात्रि निराधार व्रत करताहै वोइन्द्रलोक का सुख भोगि अन्तमें हमारे समीप निवास पाताहै औरजो कौशिकीसमीप प्राण त्याग करताहै वोजन्म मरणसे मुक्तहो हमारे समीप श्वेतद्वीपमें निवास पाताहै और हे धरणि उसी स्थानमें एकमातंग नामक्षेत्रहै जिसमें एक जलकीधारा बहिकरके कौशिकी में जाय मिलतीहै तिसमें जो एकबारभी स्नान करे औ एकरात्रि व्रत करे वो सब पापोंसे मुक्तहो हमारा भक्त होताहै औरजो मातंग क्षेत्रमें प्राणत्याग करताहै वोहमारे स्वरूपको धारण कर हमारे लोकमें आय प्राप्त होताहै हेधरणि उसी स्थानमें बज्रभव नाम परमगुप्त हमारा परमप्रिय तीर्थ है जिस में एक जलकी धारा निकलके कौशिकी नाम नदीमें मिलतीहै जिसमें एकदिनस्नान करनेसे औव्रत करनेसे मनुष्य शरीरत्याग करनेसे इन्द्रकेसमान उत्तम रूप धार बज्र धारण कर स्वर्ग सुख भोगता है और जो बज्र भव तीर्थमें प्राणत्याग करताहै वो सबपापोंसे मुक्तहो इन्द्ररूप धार स्वर्गलोक का सुख भोग करता हमारे समीप बास पाताहै और हे धरणि कोकामुख शिलासे तीनकोश पूर्व दिशामें अतिगुप्त हमारा क्षेत्रहै जिसका शक्र रुद्र नामहै तिसमें जो मनुष्यस्नानकर तीन रात्रि व्रत करता है वोसब पापोंसे मुक्तहो दूसरे जन्ममें जम्बूद्वीपका राजाहो अंतमें हमारे समीप निवास पाता है और हे धरणि उसी स्थान में एक क्षेत्र हमको बड़ाही सुख देनेहारा दंष्ट्रांकुरानाम है जिसे देवता भी नहीं जानते मनुष्य की तौ कौन कहै जिसमें स्नान औ एक रात्र व्रत करने से मनुष्य सब पापोंसे छुट शाल्मलिनाम द्वीपमें जन्मले वहां का सुख भोगि अन्तमें हमारे समीप बासपाताहै और हे धरणि उसी कौकामुखमें विष्णुतीर्थ नामक अति पवित्र स्थानहै जिसमें पर्वत के ऊपर से जलकी तीनि धारा गिड़ती है उसतीर्थ में जो स्नान औ पितरोंका तर्पण करतेहैं वे सब पापोंसे मुक्तहो वायु-

लोकको प्राप्तहोते हैं और जो वहां शरीर त्याग करतेहैं वे वायु-लोकमें जाय कई कल्प वहांका सुख भोगि अंतमें बिष्णुलोकमें जाय बिष्णुपार्षद होतेहैं और हे धरणि उसी स्थानमें कोकामुख का औ कौशिकी का परमपवित्र संगम नामक तीर्थहै उस संगम में जो स्नान औ पितरों का तर्प्पण कर एकरात्र व्रत करते हैं वो शरीरत्याग करने से उत्तमकुलमें जन्म पाते हैं औ जातिस्मर होतेहैं औरभी जिसलोक की बांछा करे वहांही उसस्नानके पुण्य से प्राप्त होतेहैं और जो उस संगमतीर्थमें प्राण त्याग करें वे सब पापोंसे मुक्तहो हमारे समीप आतेहैं और हे धरणि कोका-मुखके समीप मत्स्यशिला नाम एक बड़ाही पवित्र तीर्थहै जिसमें पर्वत के ऊपर से एक जलकी धारा गिरती है उस धारामें जो स्नान कर औ पितरों का तर्प्पण कर जो मधु औ लाजा मुक्त सूर्य्यको अर्घ देते हैं औ शिलाका दर्शन करते हैं वे सब पापोंसे मुक्तहो परमपदको अर्थात् बिष्णुधामको प्राप्तहोते हैं और जो वहां प्राण त्याग करते हैं वे जिसलोकमें इच्छाहो वहां जाय इच्छासुख भोगि अंतमें हमारे समीप आते हैं और हे धरणि हमारा क्षेत्र कोकामुख पांचयोजन का बिस्तार है जिसमें एक शिला शुक्लवर्ण है उसशिलामें दक्षिणमुख हम सदा निवास करते हैं वाराहरूप धारण कर निजमुखको बामभाग नीचा कर दंष्ट्राको ऊंचाकर जगत् को देखते निजभक्तोंको दर्शन देतेहैं हेधरणि उस हमारे रूपको जो दर्शन करते हैं वे सब पापोंसे मुक्तहो संसारसागरसे पारहो मुक्तहोते हैं और जो संसार भय से निवृत्त हुआ चाहै वो किसीभांति कोकामुखमें जाय तीर्थों में स्नान कर हमारा दर्शन करै और पृथिवीमें कोई तीर्थ इसलोक वा परलोक के बांछाफल देनेहारा नहीं है कोकामुखके स्नान दर्शन करनेहारे जो पुरुष हैं उनके पितर दश प्रहलके औ दश पीछे के औ आप इसभांति इक्कीस कुल सब पापोंसे छुट उत्तम-

गतिको प्राप्तहोतेहैं और जो इसपवित्र उत्तमकथाको प्रातःकाल उठिकै सुनैं सुनावैं वा कथन करैं वे सब पापोंसे मुक्तहो उत्तम-गतिको प्राप्त होतेहैं हेधरणि जो तुमने प्रश्नकिया सो हमने बर्णन किया अब क्या सुना चाहतीहौ॥

एकसौपैंतीसका अध्याय॥

वाराहजी कहतेहैं हे धरणि उसी हिमालय नाम पर्वत में देवताओं को भी दुर्ल्लभ परमपबित्र लोकविख्यात बदरी नाम हमारा स्थान है उस विश्वके तारण करनेहारी जो बदरीहै तिसमें जो स्नान व्रत औ हमारा दर्शन करते हैं वे फिर माता के गर्भमें निवास नहीं लेते और जो ब्रह्मकुंडनाम तीर्थ है वहां हम सर्बदा निवास करते हैं उस ब्रह्मकुण्डमें जो स्नानकर तीन रात्रि व्रत करते हैं सो अग्निष्टोम नामक यज्ञके फलको प्राप्त होते हैं और जो इन्द्रियोंको जीति व्रत करके उसस्थानमें प्राण त्याग करेवो सब पापोंसेमुक्तहो सत्यलोक में जाय बहुत काल वहां निवास कर अन्तमें हमारे समीप आता है और हे धरणि उसी बदरी में अग्निसत्यपद नाम तीर्थ है जिसमें पर्वत के मध्य से उष्णोदक की धारा गिड़ती है मुसलकी बराबर जो उसमें स्नान तर्प्पण कर तीनदिन व्रत निराहार करते हैं वे सब पापोंसे मुक्तहो जन्मांतर में सत्यवादी होते हैं औ हमारे भक्त होते हैं जो वहां इंद्रियों को जीति सावधानहो व्रतकर प्राणत्याग करें वे सत्यलोक में जाय वहां का सुख भोगि अंतमें हमारे समीप आते हैं हेधरणि इंद्रने आय यहां बड़ा घोर तपकर हमको प्रसन्न किया वह इन्द्रलोकनामक तीर्थ अतिपवित्र है जिसमें जलकी धारा बड़ी भारी पर्वत के शिखरसे गिरती है उसधारा में जो स्नान कर एकरात्र व्रत करते हैं वे पबित्रहो सत्यलोक में जाय प्राप्त होते हैं और जो निरशन व्रत करके शरीर त्याग

करते हैं वे सत्यलोकका सुख भोगि अंन्तमें हमारे समीप आते हैं हेधरणि उसी बदरीमें पंचशिख नाम तीर्थ है जिसमें पर्वत के शिखर से पांच जलकी धारा गिरती हैं उस पंचधारा में जो मनुष्य स्नान करते हैं वे अश्वमेध नाम यज्ञके फलको प्राप्त होते हैं देवलोक में जाय देवियों के साथ उत्तम बिमानपर बैठि वहां का सुख भोगते हैं और पंचधारा में जो निरशन व्रत करके प्राणत्याग करें वे इंद्रके समीप जाय वहां का सुख भोगि अंतमें हमारे समीप आय प्राप्तहोते हैं और हेधरणि उसी बदरी में द्वादशादित्यकुण्ड नाम तीर्थ है यहां बारहों आदित्यों को हमने स्थापन किया है जहां पर्वत के शिखर से बारह धारा जलकी नीचेको गिड़ती हैं तिसमें जो कोई द्वादशी तिथिको स्नान करते हैं वे सब पापोंसे मुक्तहो सूर्य्यलोकमें जाय निवास करते हैं और जो वहां निरशन व्रतकरके प्राणत्याग करते हैं वे सबपापों से मुक्तहो सूर्य्यलोक का सुख भोगि अंतमें हमारे समीप आते हैं हे धरणि उसी बदरी में लोकपाल नामक तीर्थहै जहां हमने लोकपालोंको स्थापित कियाहै जिसका दूसरा नाम सोमकुंडभी है जिसमें ज्येष्ठमासकी शुक्लद्वादशीको स्नान करनेसे जन्मांतर में हमारा भक्त होताहै और जो उस तीर्थमें प्राणत्याग करते हैं वे सब पापोंसे मुक्तहो लोकपालोंके लोकका सुख भोगि अंत में हमारे समीप आतेहैं और हेधरणि उसी समीप मेरुवर नामक अतिगुप्त तीर्थ है जहां बड़े ऊंचेसे जलकी तीन धारा पीतवर्णकी गिरतीहैं परंतु भूमिमें पड़तेही वो श्वेत होजाती हैं उस तीर्थ में जो स्नानकर निराहार तीन व्रत करें वे शरीर त्यागकर सुमेरु के शिखरमें जाय निवास करें और जो वहां प्राण त्याग करें वे हमारे समीप वर्त्तीहों और हेधरणि जोमानसोद्भेद नाम तीर्थ है तिसमें यह चिन्ह है कि पर्वतके शिखरसे जल गिरता है औ पृथिवी में समाय जाताहै जो पुरुष उसतीर्थमें स्नान करें वेसब

पापोंसे छुटि हमारे भक्त होतेहैं हे धरणि औरभी उसीस्थान में पंचशिर नामक्षेत्रहैं यहां ब्रह्माजीने निजशीर्षो को काटकरके हमारे अर्पण कर घोरतप किया उसमें जो स्नान कर पांच व्रत करतेहैं वेअंतमें शरीरको त्याग ब्रह्मलोकको जातेहैं औरजो निरशन व्रत करके शरीर त्याग करें वे सब पापोंसे मुक्तहो ब्रह्मलोकमें जाय वहांका सुखभोगि अंतमें हमारे समीप आतेहैंऔर हेधरणि उसी बदरीक्षेत्रमें उर्वशीकुंड नाम तीर्थ है जहां हमारे दक्षिण ऊरूको भेदनकर उर्वशीनाम अप्सरा उत्पन्न भईहै और जहां कल्पोंसे लेकरहम उग्रतप कर रहे हैं और उसीस्थान में ब्रह्मा इंद्र आदि संपूर्ण देवता हमारे दर्शनके लिये आयें परंतु हमारी योगमायाके आवरणसे किसीने दर्शन न पाया तब हमने कहा कि हे देवताओ क्योंविस्मय करतेहो हमारा दर्शनहोचुका इसउर्वशीकोले स्वर्गको जावो और इस उर्वशीकुंडमें जोएकरात्र व्रत औ स्नान करेंगे वे सब पापोंसे मुक्तहो उर्वशीलोक में प्राप्त होंगे और जो इस क्षेत्रमें प्राण त्याग करेंगे वे उर्वशी लोकमें जाय वहांकासुखभोगि अंतमें हमारे समीपवर्तीहोंगे और हेधरणि जो बदरीमेंजाय हमारा स्मरण करेंगे वोमुक्तिको प्राप्तहोंगे जो इस बदरीमाहात्म्यको सुने या हमारे भक्तको सुनावे वेदोनों हमारे धामको प्राप्तहोंगे ॥

एकसौछतीसकाअध्याय॥

सूतजी कहतेहैं हेशौनक इसभांति वाराह भगवान्का बचन सुन धरणी हाथजोड़ नम्रहो बिनयपूर्बक धर्मके सुननेकीबांछा करके पूछनेलगी किहे भगवन् मैंस्त्रीहूं इसलिये कोमलस्वभावसे प्रश्न करतीहूं सो आप कृपाकर निजदासीजान मेरेसे यह बर्णन करें कि स्त्रियां अबला होतीहैं इसलिये क्षुधाके न सहनेसे कोई व्रत यानियम उनसे किस भांति बनि पड़ैगा और उनमें येभी

दोषहैं कि मासि मासमें ऋतुदोष करके अपबित्र रहती हैं जब हर एकमासमें अपबित्र रहना ठहरा तोकोई नियम किस भांति पार होगा इसलिये आप अनुग्रह करके कोई ऐसी रीति बतावें कि जिससे उनकाभी कल्याणहो यह बिनयवाणी धरणीकीसुन बाराह भगवान् कहनेलगे कि हे धरणि बहुत उत्तम बार्त्ता तुमने पूंछी जिसमें संसारके जीवोंका उपकारहो यहकहकर कहनेलगे कि जो स्त्री हमारी भक्तहैं वेकिसी अवस्थामेंहों सदाही पबित्रहैं औ सब भांतिकी सेवा हमारी कर सकती हैं यदि उनको निज शरीर के अशुद्धपनेका भ्रम हो तो अंजली निजमस्तकमें करके यहमंत्र पढ़िले तो रजोदोषसे निवृत्तहो हमारी सेवाके योग्यहो मंत्रः॥ (ओं अनादिमध्यांतमजंपुराणंरजस्वलादेववरंनमामि) हे धरणि इस मंत्रके उच्चारण करतेही रजस्वला पबित्रहो सबकर्मों केयोग्य होतीहै इसभांति बाराह भगवान्के मुखारबिंदकीबाणी सुन धरणी कहनेलगी कि हेभगवन् पुरुषहो वा स्त्रीहो अथवा दोनोंसे भिन्न नपुंसकहो वो किसप्रकारके कर्म करनेसे सबपापों से छुट संसार सागर से पारहो, यहसुन बाराहजी कहने लगे हेधरणि इन्द्रियोंको रोंकि निजचित्तको सावधानकर जोसंन्यास योगसे हमारा भजन करतेहैं वे पुरुष स्त्री नपुंसक कोई हो सब पापोंसेमुक्तहो परमपदकोप्राप्तहोतेहैं औरभी श्रवणकरो हेधरणि जोनिज मन बुद्धि चित्तको नहीं बश कर सकते वो सब भाव से हमारी शरण हो अनन्यवृत्तिसे हमारा स्मरणकरें तो सब पापों से मुक्त होजाते हैं भक्ष्याभक्ष्य पेयापेय अगम्यागमन आदि जितना पापकरें औ हमारी शरणहो हमारा स्मरणकरें तो उन को पाप नहीं लगसकता रात्रिका वा दिनका संध्या का सोवते जागते चलते फिरते किसीसमय जो हमारास्मरण दोघड़ी घड़ी आधीघड़ी निमिष त्रुटि लव क्षणमात्रभी करें वे सब पापोंसेमुक्त हो उत्तमगतिको प्राप्त होतेहैं हेधरणि जो हमारा चिंतन करताहै

वो ब्राह्मण क्षत्रिय शूद्र वैश्य चाण्डाल आदि किसी योनिमें हो सर्वथा पवित्रहै और हेधरणि उसपुरुषकी प्रशंसा सदा हमकरते हैं जो ज्ञानपूर्वक हमारेमें चित्तलगाकर निजहृदयमें हमाराध्यान करताहुआ हमारी सेवा करताहै उसको कहींसे भय नहींहै और हे धरणि कैसेही उत्तम कर्म करनेवाले पुरुषहैं परंतु हमसेबिमुख हैं उनकोअधमसे अधम जाननाचाहिये इसलिये ज्ञान औबैराग्य सबहमारे अर्पणकर अनन्य भावसे हमारा भजनकर हमारेसमीप आय नानाभांतिसुखभोगि मुक्तिको प्राप्तहोय हेधरणि यहमर्यादा कल्पके आदिमें हमनेही रचा जो मास२ में स्त्रियोंके ऋतुदानको पुरुष उद्यतहों जिससे सन्तति उत्पन्नहो और यदि पुरुष समर्थ होकर स्त्रीके ऋतुसमयमें न प्राप्तहो औ ऋतुदान न देवै तौ उसे एक गर्भके हत्या करनेका दोष होताहै उस दोषसे दशपहले औ दश पीछे पितर नरकबास पाते हैं इसलिये सर्बथा ऋतुसमय में स्त्रीसंग करनाचाहिये और हेधरणि निज बिवाहिता स्त्रीके बिना दूसरीके गमन करनेसे अधोगति होतीहै और जो पुरुष कामसे हितहो रजस्वला स्त्रीका गमनकरतेहैं उनकेपितर उन्हींके बीर्य्य को पानकरते हैं इसलिये जब पांचयेंदिन स्त्री रजोदोषसे निवृत्त हो स्नानकर शृङ्गारयुक्तहो तब उत्तम स्थानमें जाय कोमलशय्या पर आनन्दपूर्बक उसका संग करै फिर उसे ऋतुदान दे स्नान कर उत्तम बस्त्र धार प्रसन्नहो हमारा भजन करै हे धरणि ऋतु-कालमें स्त्रियोंका भोग पितरों के लिये कहाहै कि जिसमें पुरुष पितरोंके ऋणसे मुक्तहो इसलिये निज भार्य्या सेही भोगकरना उचितहै इस भोग करनेसे भोक्ता पुरुषका ब्रह्मचर्य्य दूर नहीं होता वो ब्रह्मचारिहीके तुल्यहै और जो पुरुष ऋतुसमयमें निज स्त्रीका संग नहीं करते किसी कारणसे वह भ्रूणहत्या दोषभागी होतेहैं भ्रूणहत्याउसे कहतेहैं जो स्त्रीके गर्भका बालक बेसमय किसी उपायसे बाहर निकालदेना और हेधरणि मनुष्योंके लिये

दोप्रकारकामार्गमुक्तहोनेकाहै एकतोतत्त्वकाबिचार दूसराकर्मयोग इन दोनोंयोगोंमें किसीएकके दृढ़सेवनसे पुरुषउत्तमगतिको प्राप्त होताहै और हे धरणि जोस्त्री हमारीभक्ता होके रजस्वला धर्मको प्राप्तहों वो तीनदिननिराहार व्रत औभूमिशयनकरती व्यतीतकर चौथेदिन शिरसों स्नानकर पबित्र बस्त्रधार दोनोंहाथोंसे मस्तक सेअंजली बांधि इस मंत्रकोपढ़ैं ॥ मंत्रः (ओंआदिर्भवान्गुप्तमनंतम ध्योरजस्वलादेववयंनमामः ॥ उपोषितात्रीणिदिनानिचैवंमुक्तोरतं वासुदेवंनमामः) इसमंत्रकोपढ़ि फिरि वहस्त्री हमारे सेवाकी औ संसारके व्यवहार कामोंकी अधिकारिणी होतीहै और हे धरणि यहभी निश्चय करो कि स्त्री पुरुष नपुंसक इनमें कोईहो संसार के बिषय बासनासे मुक्तहो रात्रिदिन भक्तिपूर्बक हमारा चिंतन करतेहैं वो किसी अवस्थामें अपबित्र नहीं होते और जो बिषयी संसारासक्तचित्तहैं उन्हें सदाही अपबित्र समझनाचाहिये औरवो अनेकों जन्मतक संसाररूपी समुद्रसे पार नहीं होते मातापिता स्त्री पुत्र आदि नानाभांतिके कुटुम्बमें मग्न हुये २ उन्हींकेपालन पोषणमें हमारी मायासेमोहितकाम क्रोध लोभ मोह मद मत्सरता रूप अग्निके संताप से व्याकुल एक श्वास लेनेको भी सावकाश नहीं पाते औ जन्म मरण बाधासे नहीं छूटते हे धरणि लोकमें जन्मले अज्ञानियों के संग दोपसे मोहजाल में फसाहुआ हमसे बिमुख घोरनरक में बेबस जाय पड़ते हैं औ जिन कुटुम्बों के लिये अनेक भांतिका अधर्म करताहै वे अन्तमें इसेत्यागिअपनी रस्ता लेते हैं और अधर्म करनेवाले पुरुष को भोगना पड़ताहै बिचार करो हेधरणि थोड़े दिनोंके वास्ते संसारमें जन्मले मोह बश ऐसे कर्म करतेहैं कि जिसमें बहुतकाल तक वो मूढ़नाना-भांतिके दुःखोंको भोगते नानायोनि में जन्म लेते हैं यह केवल हमसे बिमुख होनेका फलहै इसलिये पूर्वापर शोच बिचारकर हृदय से त्याग कर जो संन्यास योगसे हमारे शरण में प्राप्त

होतेहैं वे सब दुःखोंसे मुक्तहो उत्तमगतिको प्राप्त होतेहैं और हे धरणि जो मनुष्य प्रातःकालउठि सावधानहो इसकथाकाश्रवण करें वे भी सब पापोंसे छूटि हमारे लोकको प्राप्तहों ॥

एकसौसैंतीसकाअध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हेशौनक इसभांति कथाका बर्णनकर बाराहजी कहने लगे कि हेधरणि औरभी बड़ागुप्त परम पबित्र एकहमारा स्थानहै श्री गंगानी के दक्षिणतट बिंध्य नाम पर्वत में जिसका नाम मन्दारक्षेत्रहै जिस पृथिवीमेंसर्वकाल त्रेतायुग सम धर्म रहताहै जिसक्षेत्रमें हमारी मूर्ति २घुबंश मणि दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र श्री रामचन्द्र स्थापित करेंगे इसभांति श्री वराह भगवान्के बचनसुन हाथजोड़नम्रहोधरणीकहनेलगी किहेप्रभो मन्दार क्षेत्रकी महिमा भलीभांति आप बर्णन करैं कि मन्दार-क्षेत्रमेंकौन २ गुप्त औ पबित्र स्थान हैं और वहां क्या२ सत्कर्म करना चाहिये औ उन सत्कर्मों के करनेवाले किस लोक को प्राप्त होतेहैं सो आप कृपा करके बर्णनकरें यह धरणीकीबाणी सुन वराहजी भगवान् कहनेलगे कि हे धरणि जोतुमपूछतीहौ सोहैतौपरमगुप्त तथापितुम्हारेस्नेहसे हमबर्णन करतेहैं हेधरणि हमसदा मन्दारक्षेत्रमें निवासकरतेहैं औरउत्तमजो मन्दारपुष्पहै उसे अपने हृदयमें धारण करतेहैं और उस पर्वतसे ग्यारहजल के कुंड पर्वत से निकलते हैं औ वहांही एकमन्दारकाउत्तमवृक्ष हैं जिसकेनीचे हमसदा निवास करतेहैं औरभी वहांएकआश्चर्य्य दीखता है कि हर एक महीने के दोनों द्वादशी औ चतुर्दशीके मध्याह्न समयमें वह मंदारवृक्ष पुष्पोंकरके युक्तहोताहै औऔर दिनोंको नहीं फुलाता औउसी मन्दारवृक्षकेनीचे एक उत्तमजल से भरा हुआ कुंड है कि जिसमें स्नान कर एकरात्रि निराहार व्रत करनेसे मनुष्यसब पापोंसे मुक्तहो उत्तमगतिको प्राप्तहोताहै

और हे धरणि जो वहां तप करके प्राण त्याग करें वो हमारे लोकमें निवासपावें और हे धरणि उसमन्दारवृक्षके उत्तरदिशा में एकप्रापणनामकपर्वत है तिससे दक्षिण दिशा को तीन जल धारा गिरती हैं उस जल में सदा हम स्नान करते हैं इसलिये उसका स्नानकुंड नामहै उस स्नानकुंडमें जो मनुष्यस्नान कर एक रात्रि व्रतकर वो सब पापोंसे मुक्तहो सुमेरु पर्वतके दक्षिण शिखरपर बास पावे और जो वहांव्रत करके शरीरत्याग करें वे कर्म्मबन्धनसे छूट हमारे समीप बासपावें और हेधरणि उस मन्दार वृक्षके पूर्व दिशा में बड़े ऊंचे पर्वतसे एक जलकी धारा सुथरीसी गिरतीहै कि जिसका रंग पीतबर्णहै जो उस जलमें स्नानकर एकरात्रि व्रतकरें वे सब पापोंसेछुट देवलोक में जाय देवताओंके साथ बिहारकरें और जो उसस्थानमें किसी भांति प्राणत्यागकरें वे निज इक्कीश कुलोंके साथ हमारे लोक में बासपावें और हे धरणि उसी मन्दारवृक्षके अग्निकोणमें एक अगाध जलका कुण्डहै जिसमें एकबार स्नान औ एकव्रत करनेसे सब पापोंसे मुक्तहो सुमेरुपर्वतमें बास पातेहैं औ हमारे में चित्तलगाकर जो वहां प्राणत्याग करें वे संसार से पारहो हमारे लोकमें प्राप्तहों और हे धरणि मन्दार वृक्षके पूर्वपर्वत में एकबड़ी गहरी गुहाहै जिसमें एक जलधारा बड़ी मोटी गिरतीहै तिस जलमें जो स्नानकरपांचव्रत करते हैं वो सबपाप से मुक्तहो सुमेरुपर्वतके पूर्वदिशामें स्वर्ग्गके समीप बासपातेहैं और यदि उस तीर्थमें कोईप्राणत्यागकरें तौ हमारे लोकमेंआय प्राप्तहों और हे धरणि उसी मन्दारवृक्षके दक्षिण दिशामें बड़े ऊंचेसे जलकी पांचधारा गिरती हैं उसमें जो स्नान औ एकव्रत करतेहैं वे सबपापोंसे मुक्तहो सुमेरुपर्वतके दक्षिणशृंगमें निवास पाते हैं और जो वहां किसीभांति प्राणत्याग करें वे संसारसागरसे पारहो हमारे लोकमें निवासकरें और हे धरणि मन्दार

वृक्षके नैऋत्यकोणमें एक जलधारा बड़ी प्रकाशवती गिरती है उसमें जो स्नानकर एकव्रत करतेहैं वे सबपापोंसेछुटजाय ध्रुव लोकमें बास करतेहैं और जो प्राणत्यागकरें उसतीर्थमें सो जन्म मृत्यु भयसे मुक्तहो हमारे लोकमें जातेहैं और हे धरणि उस मन्दारवृक्षके पश्चिम दिशामें एक बड़ा गम्भीर जलका कुण्ड है कि जिसका नाम चक्रावर्त्त तीर्थहै उसमें जो स्नानकर पांच रात्रि व्रत करतेहैं वे सब पापोंसे मुक्तहो मेरुपर्वतआदि देवताओं के बिहारभूमि में जाय अप्सराओं के साथ भांति २ के सुख भोगते हैं और जो उस तीर्थमें बिधिपूर्व्वक प्राण त्याग करें वे सब पापोंसे मुक्तहो हमारे लोकमें बासपावें और हे धरणि उस मन्दार वृक्षके बायु दिशामें एक तीर्थहै जिसमें बड़ीमोटी जलकी तीन धारा गिरती हैं उसमें जो स्नानकर तीनि व्रतकरें वे सब दुःखोंसे मुक्तहो देवलोक में प्राप्त होते हैं और हेधरणि जोउस तीर्थमें प्राणत्याग करते हैं वे संसारसागरसे पारहो बिष्णुलोक को जातेहैं और मन्दारवृक्ष के दक्षिण दिशा में दो कोश एक अगाध जलकुंड अति पवित्रहै कि जिसके स्नान करने से औ आठदिन व्रत करने से देवलोक प्राप्त होताहै यदि कोई उस स्थानमें प्राणत्यागकरै तौ सब पापोंसे मुक्तहो बैकुंठको जाय हेधरणि उस मन्दारवृक्षके पश्चिम एकबड़ा गुप्ततीर्थ है जिसमें सात जलकी धारा गिरतीहैं उसमें जो स्नान औ एकरात्रि व्रत करताहै वो स्वर्गमें जाय अप्सराओं के साथ बिहार कर अंतमें आय भारतखंडका राजा होताहै और यदि उस स्थानमें प्राण त्यागकरै तौ संसारसें मुक्तहो बैकुंठ बासपावै बाराहजी कहतेहैं हेधरणि इसभांति मन्दारक्षेत्रके चारो दिशाओंमें पांच २ कोश केमानसब पुण्यतीर्थहैं जहां हमारा सब कालमें निवासहै औरभी एकअतिगुप्त बार्ता बर्णन करते हैं सो श्रवणकरो हेधरणि मंदार वृक्षके दक्षिणभागमें चक्र निवास करताहै औ बामभागमें गदा

लांगल मुसल औ शंख ये अग्रभागमें मन्दारके सर्वदा निवास करते हैं हेधरणि इस मन्दार माहात्म्य को जो नित्य सुनैं औ कथन करें वे दोनों सबपापोंसे मुक्तहो हमारे निकट बासपावें॥

एकसौअडतीसकाअध्याय॥

सूतजी कहते हैं हेशौनक इसभांति बाराह भगवान् की बिचित्रबाणी सुन हर्षितहो धरणी कहनेलगी कि हेभगवन् आप ने परमपबित्र मन्दारक्षेत्रका बर्णनकिया कि जिसके श्रवण से हमारा अनेक भ्रम निवृत्त हुआ अब आपमुझे दीन औ श्रद्धालु जान और भी तीर्थ बर्णनकरैं जो मन्दारकी तुल्य अथवा न्यून अधिक तीर्थहै जिसके श्रवणसे आत्माकी तृप्ति औ आपकी प्रसन्नताहो यह धरणी की बिनयबाणी सुन श्रीबाराह भगवान् कहनेलगे कि हेधरणि जोतुम पूंछतीहौ सो सावधानहो श्रवण करो इतना कहि कहनेलगे कि शालग्राम नामक अतिपुण्यक्षेत्र है कि जिसकी महिमा सुननेसे अनेक जन्मोंके पातक निवृत्त होतेहैं हेधरणि भावी द्वापरयुग में यदुबंशमें शूरनाम अति बिख्यात राजा होगा तिसका पुत्र यदुबंशका सुख देनेहार अतियशी बसुदेव नाम होगा तिस बसुदेव के परमसुन्दरी देवकी नाम स्त्री तिसके गर्भमें हम किसीकारणसे जन्मलेंगे तबहमारा नाम लोकबिख्यात बासुदेवहोगा तब यदुबंशको शोभितकरते हमारे बर्त्तमानसमयमें एक शालंकायन नामक ब्रह्मऋषि हमारे आराधनमें युक्त हुआ २ चारोओर पृथिवीमेंघूमते तप करनेलगा औ इस बिचारसे कि बिष्णुके तुल्य हमारे पुत्रहोय सो शालंकायनऋषि बहुतकाल सुमरुपर्बत में तपकर पिंडारक नाम अतिपबित्र जो हमारा क्षेत्रहै उसमें जाय बड़ा उग्र तपकर फिर लोहार्गल नामक तीर्थमें तपकरता औ हमारेही खोज में रातदिन लगाभया जाय शालग्राम नाम पर्बतमें पहुंचा जहां

हमारा सर्वदा निवासहै और हेधरणि जिसपर्वतमें हमशिला रूप धारणकर नित्य निवास करतेहैं और जहां की सब छोटी बड़ी शिला पूजनीयहैं यदि चक्रकेचिन्ह करके युक्तहो तौ फिर क्या कथन करना वो शिलातो सर्वोत्तमाहै और हेधरणि उसी स्थानमें शिवजीभी लिंगरूपधारणकर बिराजमान रहतेहैं इसलिये लिंगचिन्ह देख शालग्राम को शिवनामकरके कथनकरते हैं और जहां सोमने अपने नामसे शिवलिंग स्थापित कर बड़ी उग्र तपस्या किया दशहजार बर्ष दक्ष प्रजापतिके शाप निवृत्त होनेके लिये और जब सोमका तप सिद्धभया तब उक्त शापसे मुक्तहो निजकलाको प्राप्तहो औ शिवजीकी स्तुति करनेलगे स्तुतिः॥ सोमउवाच॥ शिवंसौम्यमुमाकांतंभक्तानुग्रहकारकम्। नतोऽस्मिपंचवदनंनीलकंठंत्रिलोचनम् १शशांकशेखरंदिव्यंसर्वलोकनमस्कृतम्। पिनाकपाणिदेवेशंभक्तानामभयप्रदम् २ त्रिशूलडमरुभ्यांचलसद्धस्तंवृषध्वजम्। नानामुखैर्गणैर्जुष्टंनानारूपैर्भयानकैः ३ त्रिपुरघ्नंमहाकालमंधकादिनिषूदनम्। गजाजिनावृतंस्थाणुंव्याघ्रचर्म्मविभूषितम् ४ नागयज्ञोपवीतंचमुण्डमालाधरंप्रभुम्। अरूपमपिसर्वेशंभक्तेच्छोपात्तविग्रहम् ५ वह्निसोमार्कनयनंमनोवाचामगोचरम्। जटाजूटप्रकटितगंगासंमार्जितांहसम् ६ कैलासनिलयंशम्भुंहिमाचलकृताश्रयम्॥ इति॥ इसभांति सोमकी स्तुति श्रवणकरि प्रसन्नहो शिवजी कहने लगे कि हे सोम जो बरदान इच्छाहो सो मांगो हे चन्द्र यह हमारा दर्शन बहुत दुर्लभहै इतना सुन अति हर्षित हो सोम कहने लगा कि हेभगवन् यदि आपप्रसन्नहैं औ मुझेबरदेतेहैं तो कृपाकरके इस मेरे पूजनकिये लिंगमें आप सर्वदा निवासकरें और जोभक्तइस लिंगका पूजन करें उसका सब मनोरथ आप पूर्णकरें यह सोम की याचनासुन बहुत प्रसन्नहो शिवजीकहनेलगे कि हेसोम इहां श्रीबिष्णु भगवान्का निवासहै इसलिये उनकेस्नेहसे हमसदा

निवास करतेहैं परन्तु अब तुम्हारे प्रीतिकेलिये आजसे हमइस लिंगमें रात्रि दिन निवास करेंगे क्योंकि हेसोम तुमभी आठ मूर्तियोंमें हमारीही मूर्तिहो इसलिये तुम्हारी बांछा पूरा करना हमको सर्वथा उचितहै और जो प्रीतिसों इसतुम्हारे स्थापित लिंगकी पूजा करेंगे उनके हम सम्पूर्ण मनोरथ सिद्धि करेंगे और हे सोम शालंकायन मुनिके उग्रतपोबल से औ बिष्णु के सम्मतिसे इस तुम्हारे स्थापित लिंगमें निवास करने से हमारा सोमेश्वर ऐसा नाम लोकमें बिख्यात होगा और इस पर्बत में जोशिलाहै वो बिष्णुके औ हमारे आज्ञासे तपके सिद्धि देनेहारी है हे सोम सालंकायनऋषि तौ तप इसीलिये करताथा कि बिष्णुके अथवा रुद्रके तुल्य हमारे पुत्रहो परन्तु आज तक हम किसीके पुत्र भये नहीं और हमारीतुल्य दूसरा कौनहै वे हमारे और सालकायन को बांछा तौ किसीभांति पूरा किया चाहिये और दूसरा यह वृतान्तहै कि नर्म्मदाजी ने निज पुत्र होने के लिये हमारा बड़ा तपकिया कि शिवतुल्य हमारे पुत्रहो सो उसे भी बरदेना उचित समुझ प्रसन्न हो हमने यह बरदिया कि हे नर्म्मदे हम लिंगरूपीहो सर्बदा तुम्हारे गर्भमें सहित गणेश के तुम्हारे पुत्रहो निवास करेंगे हे नर्म्मदे तुम साक्षात् जलरूपा हमारी मूर्तिहो हे सोम शिवशक्तिमयी मूर्ति रेवाकी इसलिये जानना चाहिये औ उसी समयसे रेवाखण्ड ऐसाशब्द उसभूमि का नाम प्रसिद्ध हुआ और हे सोम अबगण्डकीका वृत्तान्तश्रवण करो जिसने पूर्बकालमें देवताओंके दशहजार बर्ष सूरे पत्ते औ जल बायु भोजनकरके बिष्णु भगवान्को चिंतनकरतोहुई गंडकी ने बड़ाघोर तप किया उस तपसे प्रसन्नहो बिष्णुभगवान् प्रकट हो मधुरबाणी से कहनेलगे कि हेगंडकि तुम्हार इस उग्र तप से हम अतिप्रसन्न भये तुमने हमारी बड़ीही भक्तिकी इसलिये जो तुम्हारी बांछा हो सो बर मांगो इसभांति प्रसन्न शंख चक्र

गदा पद्म धारण मन्द हास करके शोभित बिष्णुभगवान्‌कोदेख बड़ेहर्षसे दण्डवत्‌प्रणामकर गंडकी स्तुति करनेलगी ॥ स्तुतिः॥ अहोदेवमयादृष्टोयोदुर्दर्शःकुयोगिनाम् । त्वयासर्वमिदंसृष्टंजगत्स्थावरजंगमम् १ तदनुत्वंप्रविष्टोसिपुरुषस्तेनचोच्यसे। त्वल्लीलोन्मीलितेविश्वेकःस्वतंत्रोऽस्तिवैपुमान् २ अनाद्यन्तमपर्य्यन्तं यद्ब्रह्मश्रुतिवोधितम्। तदेवत्वंमहाविष्णोयस्त्वांवेदसवेदवित् ३ तवैवाद्याजगन्मातायाशक्तिःपरमास्मृता । तांयोगमायांप्रकृतिंप्रधानमितिचक्षते ४ निर्गुणःपुरुषोऽव्यक्तश्चित्स्वरूपीनिरंजनः। आनन्दरूपःशुद्धात्माह्यकर्त्तानिर्विकारकः ५ स्वांयोगमायामाविश्यकर्तृत्वंप्राप्तवानसि। प्रकृत्यासृज्यमानेऽस्मिन्द्रष्टासाक्षीनिगद्यसे ६ प्रकृतेस्त्रिगुणैरस्मिन्सृज्यमानेऽपिनान्यथा। सान्निध्यमात्रतोदेवत्वयिस्फुरतिकारणे ७ स्फटिकेहियथास्वच्छेजपाकुसुमरागतः। प्रकाश्यतेत्वत्प्रकाशाज्ज्योतीरूपनतास्मितत् ८ब्रह्मादयोपिकवयोनविदन्तियथार्थतः। तंकथंवेद्म्यहंमूढातवरूपंनिरंजनम् मूढस्यजगतोमध्येस्थिताकिंचिदजानती । त्वयाधृष्टाकृताचास्मि योग्यायोग्यमविन्दती १० तेनलोकेमहत्वंचइच्छामित्वत्प्रसादतः। ज्ञात्युदारफलंयाचेतन्मेत्वंदातुमर्हसि ११ इसभांति गंडकीकी स्तुति सुनि अति प्रसन्नहो हँसकर श्रीबिष्णुभगवान् कहनेलगे कि हे गंडकि जो तुम बर मांगती हो सो अतिदुर्लभ है तथापि हमारे दर्शन को पायकर मनुष्य किसीबातका दुःखीनहीं रहता शिवजी कहतेहैं हे सोम इस भांति बिष्णुभगवान्‌की बाणीसुन हाथ जोड़ शिर झुकाय मधुरबाणीसे गंडकी कहनेलगी कि हे भगवन् यही बर चाहतीहूं कि मेरे गर्भमें आय पुत्रहो निवास करो हे सोम तबतो गंडकीका बचनसुन बिष्णुभगवान् बिचारनेलगे कि देखो यह नदी हमारे संगके लोभसे यह बरयाचती है इसलिये इसे यही बर देना योग्य है जिससे लोकका पाप निवृत्त हो औ उत्तमगति को प्राप्तहो यह शोच बिचार बिष्णु

भगवान्प्रसन्नहो गंडकीसेयह कहनेलगे किहेगंडकि यहहमारा बचन सुन कि निज भक्तोंके अनुग्रह कारण शालग्राम शिलारूप हो पुत्रतुल्य हम सर्बदा तुम्हारे उदर में निवास करेंगे इसलिये सबनदियोंमें तुम श्रेष्ठा होगी औरजो जीव तुम्हारे जलकोस्नान बा दर्शन पान आदिकरेंगे वेनिष्पापहो उत्तमलोक को प्राप्तहोंगे और जो तुम्हारे जल में स्नान कर निज पितरोंका तर्पण करेंगे उनके पितर स्वर्गबास पावेंगे और वे तीनप्रकारके पापोंसेमुक्तहो ब्रह्मलोकको जायँगे और हेगंडकि जो मनुष्य व्रतकरके तुम्हारे समीप शरीर त्याग करेंगे वे भवसागरसे पारहो हमारेलोक में आयनिवासकरेंगे शिवजीकहतेहैं हेसोम इसभांति गंडकीकोबर-दानदे बिष्णुभगवान् अन्तर्द्धान होगये तबसे लेकर हम इसक्षेत्र में निवास करते हैं हे सोम बिष्णुभगवान् औ हमदोनों भक्तोंके लिये नानारूप धारणकरते हैं बाराहजी कहतेहैं हेधरणि इतना कह शिवजी सोमके अंगों को गंगाजलसे मार्ज्जन किया उसी-समय शिवजीके स्पर्श करतेही चन्द्रमा दक्षके शापसे मुक्तहो निज तेजसे प्रकाशितहो जो शिवजी की तरफ़ देखने लगे तो देखतेही देखते शिवजी अन्तर्द्धान होगये हे धरणि सोमेश्वर महादेवके दक्षिणभागमें बाणकरके रावणनेपर्बतका भेदनकिया उसी स्थानसे जलकी धारा अतिपबित्र प्रकटभई जिसकानाम लोक में बाणगंगा करके प्रसिद्ध है और हेधरणि सोमेश्वर के पूर्व भागमें रावण का तपोबनहै जहां तीन रात्रि ब्रह्मचर्य्य हो व्रतपूर्वक निवास करने से तपका फल प्राप्त होताहै जहांनृत्य करके रावणने शिवजी को प्रसन्न किया इसलिये उस भूमिका नामलोक में नर्त्तनाचल करके बिख्यातहै हे धरणि जो पुरुष बाणगंगामें स्नानकर बाणेश्वर नामकशिवलिंगका दर्शन करते हैं उन्हें गंगास्नानके तुल्य फलप्राप्तहोताहै औ अंतमें स्वर्गबास पातेहैं और उसीसमीप शालंकायननाम तीर्थहै जहां शालग्राम

जीप्रकट होतेहैं हेधरणि औरभी अत्यंत गुप्त एक वृत्तांत श्रवण करो कि शालंकायन मुनिने पुत्रकामना करके जहां बड़ा तप किया औ यह मनमें चिंतनकरतारहा कि परमेश्वरके तुल्य मेरे पुत्र हो यह जानि मुनिके समीपशिवजी परमसुन्दर रूपधारण कर मुनिजीके दक्षिणभागमें जाखड़ेभये परन्तु मुनितो यहवृत्तांत नजानि तपहीमें लगारहा तबतो यहवृतान्तदेखिशिवजीकीआज्ञा से हँस करके नंदीश्वर कहनेलगे हेमुनीश्वर तुम्हारा तपसिद्ध भया उठो देखो तुम्हारे दक्षिणभागमें पुत्र होके हम खड़ेहैं जो आज्ञा होसो करें तुमने यह प्रतिज्ञाकिया कि ईश्वरके तुल्य मेरे पुत्र हो सो मेरे तुल्य मैंहीहूं यह जानि मैं तुम्हारा पुत्र हुआ अब तुम्हारा तपसिद्धभया किजो हम तुम्हारे पुत्रभये यहनन्दी का बचनसुन अतिप्रसन्न हो मुनि बिस्मित हो कहनेलगा कि हमतौ तुमको देखते नहीं किस भांति हम निजतपका फलमानैं औ कैसे तपसे निवृत्तहों इसलिये हम यहांही तप करेंगे जब तक परमेश्वर का दर्शन न होगा औरतुम हमारी आज्ञासे मथुरा में जाय हमारे आश्रममें सामुख्यायन नाम हमारा शिष्यहै उसे शीघ्र यहां को ल्यावो यह शालंकायन ऋषिका बचनसुन नंदी जाय मथुरामें ऋषिके आश्रममें सामुख्यायननामक ऋषिशिष्य को देख औ कुशलप्रश्न पूंछ गुरूकी आज्ञाकहि सुनाया यह सुन बड़े हर्षसे आदरपूर्बक सामुख्यायन मुनि नंदीजीसे निज गुरूका वृत्तांत सबपूंछ कहनेलगा कि आपयहां किसलियेआये हो और श्रीगुरू महाराज क्या आज्ञा देतेहैं यहसुन नंदीजीने सब वृत्तांत कहसुनाया सो सुन बड़ेहर्षसे गुरूकी गौवों को ले औ सबधनले साथनंदीके मथुरा से चलकुछुही दिनमें गंडकीके तट जहां शालंकायनजी तपकररहे थे वहां आय पहुंचे औरपहुंच निजगुरूजीको भक्ति से प्रणामकर बड़े हर्षसे क्षेम वृत्तांत सुनाय निजगुरूकी आज्ञापाय तप करनेलगे औ नंदी तौ वहां

सेजाय त्रिबेणीजीमें पहुंचे वहां कुछदिन निवासकर देविकातीर्थ को जाय स्नानकर वहांसे पुलहाश्रम में जाय त्रिजलेश्वर शिव का दर्शनकर फिर प्रयागमें आये वहां त्रिबेणीतीर त्रिकंटकेश्वर नाम शिवका दर्शनकर शूलकंटक सोमेश आदि शिवलिंग को पूजि बेणीमाधव नाम बिष्णुभगवान् का पूजनकर सब देवताओं का दर्शन कर औ ऋषियोंका दर्शनकर कैलासको चलेगये और हे देवि त्रिबेणीक्षेत्र पृथिवीमंडल में सबतीर्थोंसे उत्तमहै जिसमें पृथिवीमंडलके सबदेवता औ तीर्थोंका समाज होताहै यहांस्नान करने से मरकरके मुक्तिहोतीहै इसीलिये इसका तीर्थराज नामहै औ बिष्णुका प्यारा है हेधरणि एकअत्यंतगुप्तवृत्तांत बर्णनकरते हैं सोसावधानहो श्रवणकरो कि एक समय में बिष्णुभगवान् संसारके कल्याण करनेकेलिये हिमाचल नामपर्वतमें जायबड़ी उग्रतप करनेलगे उसतपके करनेसे ऐसातेज उत्पन्न भया कि जिसतेजसे चराचर तीनोंलोक घबड़ाके उसका कारण पूंछनेके लिये सबदेवता एकत्रहो ब्रह्माजीके समीप जायपहुंचे औरदंड-प्रणाम कर बिनयपूर्बक कहनेलगे कि हे ब्रह्मन् यहक्लेश नहीं जानते कि किसके तेजसे हमसब भस्महोरहेहैं औ किसकाघोर तपहोरहा है इसलिये हमआपके शरण में आये हैं हमारा क्लेश आपदूरकरें यहसुन ब्रह्माजी कहनेलगे कि हे देवताओं जिस-करके तुमसब दुःखी होरहेहो सो हमभी नहीं जानते इसलिये हमारेसाथ शिवजी के समीपचलो इतनाकहि सब देवताओ को साथले ब्रह्माजी जायकैलास में शिवजीके समीप पहुंचे तबतो ब्रह्माजी सहित सब देवताओं को देख सत्कारपूर्बक शिवजीने कुशलवृत्तांत पूछ आगमनका कारण पूंछा तबतो ब्रह्माजीनेसब वृत्तांत कहिसुनायासोसुन ध्यानकर थोड़ीसी देरमें शिवजीब्रह्मा से कहनेलगे कि जिसतेजको देख तुमसब व्याकुल होरहेहो सो हमारे साथचलो हमदेखातेहैं यहकहि सहित ब्रह्माजीके सब

देवताओं को साथले जहांविष्णुभगवान् तपकररहेथे वहांजाय पहुंचे औ बिष्णुको तपकरते देख बड़ीप्रीतिसे कहनेलगे किआप जगत्के कर्त्ता प्रभु सबकेआधार सबकेस्वामी किसलियेऐसेमहा-घोर तपमें युक्तहोरहेहो औ आपकेतपोमय तेजसे चराचरप्रजा सब व्याकुलहोरहीहै सो कृपाकरके कथनकरें यह शिवजी का बचनसुन अतिप्रसन्नहो हर्षसे बिष्णुभगवान् शिवजीको प्रणाम करहाथजोड़ कहनेलगे कि हेभगवन् यहहमारा तपलोकके क-ल्याण निमित्तहै औआपके दर्शननिमित्तहै हमआपके दर्शनपाने से कृतार्थभये औ हमारा परिश्रम सफलभया यह बिष्णुभगवान् का बचनसुन शिवजीबोले कि हेदेवदेव आजसे इसस्थानकामुक्ति-क्षेत्रनामहोगा औरआपके गंडस्थानसे अर्थात्कपोलसे तपकरते समय स्वेद उत्पन्नभयाहै इसीसे इस स्वेदरूपजलगंडकी नाम नदीहो लोकको पवित्रकरती प्रसिद्धहोगी और आपइस गंडकी के गर्भमें सदानिवासकरोगे औहम औब्रह्मा औसबदेवता इस तीर्थमें सबकालनिवासकरेंगे इसलिये हे बिष्णो जोमनुष्यसंपूर्ण कार्तिकमास स्नानकरें वो सबपापोंसे मुक्तहो सबसुखको भोगि मुक्ति फलको प्राप्त हों इसलिये हे धरणि यहस्थान तीर्थों में परमतीर्थ औ मंगलोंमें परममंगलहै कि जिसके स्नानसे गंगा-स्नान तुल्य फलहोताहै जिसके स्मरणसे वा दर्शनसे वा स्पर्श करने से मनुष्य सब पापों से मुक्तहो उत्तमगतिको प्राप्तहोते हैं और जिस गण्डकी की समता को गंगाके बिना और दूसरी नदी नहीं कर सकती और भी इसीके तुल्य एक नदीहै कि जिसका नाम देविका है जिसके तटपर पूर्व समय में पुलस्त्य औ पुलहमुनिने सृष्टि करनेके लिये बड़ा तपकिया और वहां हीनिज आश्रम बनाया इसलिये उस दिनसे देविका नदीका लोक में ब्रह्मतनया नाम प्रसिद्ध भया शिवजी कहते हैं कि हे बिष्णो वहांही पुलह औ पुलस्त्य मुनिके दोपुत्र उत्पन्नभये जिन

का नाम जय औ बिजय सो वेद वेदान्तमें निपुणहो औ बिष्णु भगवान् के पूजनको करते तपस्वी इंद्रियजित होतेभये और जिनके भक्ति वशहो विष्णुभगवान् पूजा समयमें नित्यदर्शन देते थे सो किसीसमय जयबिजयको राजा मरुत्त ने यज्ञ कराने के लिये बुलाया वहां जाय दोनों ने बिधिपूर्बक राजा मरुत्त का यज्ञकराय अंतमें राजा मरुत्तने प्रीतिपूर्बक दोनों ऋषियों को दक्षिणा दे बिदा किया तब तो दोनों ऋषि आय घरमें धन का बिभाग करनेलगे उससमय जय बोला कि सम भागकरके आधा तुमलो आधा हमलें यह सुन बिजय ने कहा कि ऐसा नहीं जिसने जो पाया हो सो ले यह सुनि जयने बिजयकोशाप दिया कि तुमग्राह होजावो तबतो जयका शाप सुन बिजयक्रुद्ध हो बोला कि जो तुमने हमको निरपराध शापदियाहै इसलिये तुमभी मदांध हस्ती हो यह दोनों परस्पर शापदे भावीवश जय तो गंडकी नदी में ग्राह भया औ बिजय उसीसमीप बनमें हस्ती भया सो दोनों अपने २ स्थान में निज २ स्वभाव बश निज २ साथियों के साथ क्रीड़ा करते काल व्यतीतकर रहेथे कि बहुतकाल व्यतीत होनेपर भावीबश तृषा करके व्याकुल वही हाथी और बहुत गजके गणों करकेयुक्त गंडकी में जहां वो ग्राह रहताथा वहां जाय जलपानकर और निज गणों के साथ जलक्रीड़ा करनेलगा तबतो पूर्व बैर बश हो ग्राह आय उस हाथीके पैरको पकड़लिया तब तो गजने यथा सामर्थ्य छुड़ाने का उपाय बहुतसा किया परंतु किसीभांति छुटि न सका इसी भांति दोनों बड़ेपराक्रम करते गज औ ग्राह जलमें युद्ध कररहेथे कि दोनोंके पराक्रमसे व्याकुल जितने जलजीवहैं सो सब प्राणांत कष्ट मानिके ईश्वर का स्मरण करनेलगे कि हे ईश्वर निरपराध हमलोगों के ऊपर यह बिपत्ति होरही है इसे अपनी करुणासे क्षमाकर दूरकीजिये इसीभांतिलड़ते २

जब बहुतकाल व्यतीत भये तब तौ जलके स्वामी वरुणजी महराज को बड़ा दुःखभया उसदुःख करके व्याकुल वरुण ने बिष्णु भगवान्को सबवृत्तान्त निबेदन किया उससुन वहांआय सुदर्शन चक्र से ग्राहका मुख फाड़ गजको जलसे बाहर किया उस समय चक्रके वेगसे गंडकी की शिला बहुतही चिन्हितहा-गई और उन्हीं चिन्होंसे बज्रकीट नामक कृमिबिशेष भावीबश उत्पन्न भया उसी चिन्हसे गंडकीमें चक्र उत्पन्न होतेहैं इस-भांति हमने गंडकीकी महिमा बर्णन किया और ऋषभकापुत्र भरत नाम राजा जब पुलहाश्रममें तपकरने आया औ बहुत काल वहां तप किया तबसे उस स्थानका भरतेश नाम लोक में बिख्यात भया फिर किसी निमित्त भरत निज देह त्यागि के मृगयोनिमें उत्पन्न भया तब भी परमेश्वराराधन योगसे स्मरणपूर्वक मृगशरीर त्यागि ब्राह्मणहुआ परंतु लोकके व्यव-हार न करनेसे उसका जड़भरतनाम बिख्यात भया सोईभरत निज स्थान में जल में बिष्णुका पूजन बहुतकाल किया उससे जलेश्वर नामक स्थान कहाया जिसके भक्तिपूर्बक पूजन से योगसिद्धि होतीहै बाराहजी कहते हैं हे धरणि शालग्रामना-मकजोहमारा प्रिय क्षेत्र है तिसमें प्रथमजलेश के स्तुति करने से सबजीवोंके रक्षा के लिये यहां सुदर्शनचक्र को छोड़ा वहां ही चक्रतीर्थ नाम तीर्थ भया हे धरणि उसतीर्थके स्नान करने से सब पापोंसे मुक्त होते जो मयरूपधार मनुष्य सूर्यलोक में प्राप्त होताहै और भक्तों के रक्षा निमित्त हमारी आज्ञासे सु-दर्शन गंडकी नदी में जहां जहां भ्रमणकिया तहां तहां सब पाषाणों में सुदर्शन का चिन्ह होगया इसलिये वह चक्रतीर्थ कहाया जहां स्नान मात्र करनेसे मनुष्य अतितेजस्वीहो सूर्य-लोक में निवास करतेहैं बाराहजी कहते हैं हे धरणि भक्तों के उपकार के लिये सुदर्शनचक्र जहां भ्रमणकिया वहांहीशिला

में चिन्ह होने से पाषाणोंका गंडकीचक्र नाम हुआ इसलिये वह क्षेत्र सदा पूज्य है और जिस दिनसे नंदी शालंकायनके शिष्य ऋमुष्यायणको औ गोधन सहित मथुरासेल्याये उसदिन से उसका हरिहर नाम क्षेत्र भया और देवताओं के घूमनेसे उस क्षेत्रका देवाटभी नाम भया हे धरणि इसलिये शिवजी की महिमा का बर्णन कौन करसक्ता है जिनकी सेवा सब काल में निज निज कल्याण के लिये देव मुनि गन्धर्ब यक्ष राक्षस आदिसब करतेहैं हे धरणि तिस स्थान में शालंकायन ऋषिकी बांछा पूरी करनेके लिये शिवकी आज्ञा से साक्षात् नंदीपुत्रभाव होके प्राप्त भये और शिवजी तो उसी चक्रतीर्थके समीप निवासकर निज जटासे तीन जलकी धारा प्रकट किया जिससे एक का नाम गंगा दूसरी धारा यमुना औ तीसरी सरस्वती नाम लोकमेंबिख्यातभई जिस जगे ये तीनोंधारा उत्पन्नभई हैं उस को त्रैधारिक तीर्थ कहते हैं और हे धरणि योगियों के सिद्धि देनेहारे योगीराज शिवजी जहां शालग्रामक्षेत्रमें निवासलिया और बिष्णु भगवान् को बरदिया उस क्षेत्रमें जो स्नानकरपितरोंका तर्पण करतेहैं उनके पितर अनंतकालपर्यन्त तृप्तहोस्वर्गबासी होतेहैं और जो त्रिधारेश्वर शिवका पूजनकरताहै वो मुक्त होताहै हे धरणि जिस त्रिधारेश्वर के पूर्व दिशा में अतिपुण्य देनेहारा हंसनाम तीर्थ है जहां एकबड़ी आश्चर्य्यकी बातहै सो हेधरणि सावधानहो श्रवण करो किसी समय शिवरात्रिके दिन शिवजी के भक्त हंसतीर्थ में स्नानकर त्रिधारेश्वरजी का पूजन करनेलगेजब स्नान चंदन बिल्वपत्र पुष्पमाला धूप दीपआदिसे पूजन करचुके औ नैवेद्य भी अर्पणकिया उसीसमय अकस्मात् बहुतकालक्षुधाकरकेव्याकुल प्रकटहो उस नैवेद्यको चारोतरफसे खानेलगेऔर कुछतो खाया औ कुछनिज२ चोंचमेंलेकरउड़िगये उन्हेंऔर काकोंने मुखमेंचारालियेदेखउसकेलोभसेयुद्धकरनेलगे

निज२ टोंटोंसे औ पगोंसे परस्पर युद्धकरते हुये मूर्च्छित हो २ भावीबश हंसतीर्थमें गिरे औ गिरतेही उनकाकोंका शुक्ल वर्णहो चंद्रमा के समान प्रकाशमानहो निज बैरको भूलि यथेच्छित दिशाकोउड़ करके चले गये यह आश्चर्य्य वहां के शिवभक्तों ने देख औ बिस्मितहो हंसतीर्थ की महिमा वर्णन करतेनिज२ स्थान को पधारे तब से लेकर लोक में उसका हंसतीर्थ नाम बिख्यात भया यहां स्नान मात्र करने से पुरुष यक्ष लोकको प्राप्त होता है और हेधरणि वहां जोकोई अनशन व्रत करके प्राण त्याग करता है वह यक्ष लोकमें जाय वहांका सुख भोगि अंतमें हमारे समीप आता है हेधरणि इसभांति हंसतीर्थ का प्रभाव वर्णन किया हम औ शिवजी दोनों लोकके अनुग्रह निमित्त रात्रिदिन अनेक उपाय किया करते हैं कि जिसमें संसार का कल्याण होय हेधरणि इसभांति परम गुप्तक्षेत्र माहात्म्य औ शिवजीका प्रभाव वर्णन किया और इसक्षेत्र का प्रमाण मुक्ति क्षेत्र अर्थात् शालग्राम क्षेत्रके चारों दिशा में बारह २ योजन है जहांहम शालग्राम रूपहो निजभक्तों के कल्याण निमित्त नित्य निवास करते हैं

एकसौउनतालीसका अध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हेशौनक इसभांति बिचित्रकथा बाराह जी के मुखारबिंद से श्रवण कर धरणी कहनेलगी कि हेभगवन् शालंकायन ऋषिने तप किया फिर उनका क्या वृत्तांत भया सो आप वर्णन करें यह सुन बाराहजी कहनेलगे कि हे धरणि जबशालंकायन ऋषिका तप करते बहुतदिन व्यतीत भये तबतो ऋषि क्या देखताहै कि एकबड़ा उत्तम छाया करके युक्त शालनामक वृक्ष प्रकाशित होरहा है और मनोहर शाखा पत्र पुष्प फल करके शोभितहोरहाहै तिसेदेखतपकेपरिश्रमसे

खेदको प्राप्त हुआ २ ऋषि उस शाल वृक्षको देख अति हर्षितहो मनमें यह बिचार करनेलगाकियहवृक्षबिश्रामके लिये बड़ा उत्तम है यहां बिश्राम करता हुआ मैं बिष्णु भगवान् का आराधन करूंगा यह बिचार उस वृक्षके समीप पूर्व दिशामें बैठि पश्चिम मुख हमारा स्मरण करनेलगा हेधरणि थे तो हमीशालरूप परन्तुहमारी मायाकरकेमोहितहमको न पहिचाना इसप्रकार भजन करते २ वैशाख मासकी शुक्ल द्वादशी को उसी शाल वृक्षके पूर्व दिशामें प्रकटहो हमने दर्शन दिया उस दर्शन को पाय कृतार्थ मान संतुष्टहो शालंकायन मुनि वेद मंत्रों से साष्टांग प्रणामकर वेद सूक्तसे स्तुति करनेलगा तबतौ स्तुति कर नेत्रोंको खोल हमको देखने लगा तबतो हम हेधरणि शाल वृक्षके दक्षिण दिशामें दीखे तबतौ ऋग्वेद मंत्रोंसे स्तुति करता हुआ हमारी तरफ को मुखकर हमको देखने लगा हेधरणि उस ऋषिके देखतेही हमपश्चिमदिशामें दिखाने फिर दक्षिणसे लौटि पश्चिमहमारी तरफ मुखकरयजुर्वेदके मंत्रोंसे स्तुति करने लगा उसस्तुति को सुनतेही मुनिकेदेखते देखते हमउत्तर दिशामें दीखे तबतौ हमको उत्तरदिशामें देख सन्मुखहो सामवेदके मंत्रों सेहमारी स्तुति करनेलगा हेधरणि इसभांति चारोंदिशामें जब हमारी स्तुति ऋषिनेकिया उसेसुनप्रसन्नहो ऋषिसेहमयहबोले हेशालाकायनजीतुमधन्यहोतुम्हारातपसिद्धहुआऔरहमतुम्हारी तपस्या औ स्तुतिसे बहुत प्रसन्न भये अब जो बांछाहो सो बर मांगो इसभांति हमारी बाणीसुन प्रसन्नहो शालंकायन हाथजोड़ नम्रहो यहकहनेलगा कि हे भगवन् आपहीके प्रसन्नहोनेको मैंने तपकिया औ सारी पृथिवीमें जो जो पुण्यस्थानहैं वहांघूमा और यही चाहतारहा कि आप कृपाकरके प्रकटहो मुझेदर्शनदे सो आपने कृपाकरके मेरी बांछा पूर्ण किया यदि आप मुझे बर देतेहैं तौ मेरी यही कामना है कि ईश्वरतुल्य मेरे पुत्रहो और मैं कुछ

नहीं चाहता इसभांति शालंकायन मुनिकी बाणी सुन प्रसन्नहो हेधरणि मीठी बाणीसों हम यह बोले कि हेशालंकायनजी यह मनोरथ तौ तुम्हारा बहुत काल हुआ सिद्ध भये जो ईश्वर की दूसरी मूर्त्ति नंदिकेश्वर नाम तुम्हारे दक्षिणअंगसे उत्पन्न भये उन्हींको तुम पुत्र जानि संतुष्टहो तपका बिश्राम करो और हे मुनीश्वरइनको जन्मलिये तुम्हारे यहां कईकल्प व्यतीत भयेऔ तुमने जाना नहीं देखो तुम्हारीही आज्ञासे नंदिकेश्वरजीतुम्हारे शिष्य अमुष्यायण के समीप मथुरामें जाय औ वहांसे गौवोंको स्याय सहित अमुष्याण के तुमको दिया औ हाथमेंत्रिशूल लिये सदा तुम्हारे समीप रहते हैं फिर तुमको ज्ञान नहींहै इसलियेहे शालंकायनजी अब प्रसन्नहो निज पुत्र नंदिकेश्वरजी के साथ इस हमारे क्षेत्रमें सदा निवास कर हमारेतुल्य प्रतिष्ठा को प्राप्तहो हे शालंकायनजी और भी गुप्त एकबात कहतेहैं सो सावधानहो श्रवणकरो आजसे तुम्हारी प्रीतिकेलिये हमारे बरदानसे इसक्षेत्रका नाम शालग्राम होगा और सबक्षेत्रोंसे पवित्र होगा हे शालंकायनजी जो यहवृक्ष शालनामक दीखता है सो हमहैं परन्तु इस वृत्तांतको शिवजीके बिना दूसरा कोई नहीं जानता हम निजमायाकरके गुप्तहोरहेहैं परन्तु तुम्हारे ऊपरदया करके बरदानदेनेको प्रकट भयेहैं हेधरणि इतनाकहि शालंकायनमुनिके देखतही हमतो अन्तर्द्धान भये तबतो हमको अन्तर्द्धान देख उस शालवृक्षका परिक्रमाकर शालंकायनमुनि निजआश्रम को सिधारा हे धरणि इसलिये यह शालग्रामक्षेत्र हमको अत्यंत प्रियहै और भक्तोंको भुक्ति औ मुक्तिको देनेहाराहै औरभी जो २ पदार्थ गुप्तहैं सो २ सावधानहो श्रवणकरो जिन्होंके श्रवणकरने से मनुष्य घोरसंसारसागरसे पारहोताहै हेधरणि इस शालग्राम क्षेत्रमें पन्द्रह तीर्थ औरभी गुप्तहैं तिन्होंमें जो बिल्वप्रभनामक तीर्थहै सो हमको बड़ा प्यारा है जिस तीर्थके चारोंदिशामें एक २

कोशपर चार जलके कुंडहैं तिन कुंडोंमें जो स्नानकरतेहैं औ व्रत करतेहैं वो चार अश्वमेधयज्ञके पुण्यको प्राप्तहोतेहैं और हे धरणि हमारी भक्तिमें युक्तहो उस तीर्थमें जो प्राण त्यागकरतेहैं वो अश्वमेधयज्ञके फलको भोगि अन्तमें हमारे समीप आतेहैं हे धरणि औरभी एकतीर्थ चक्रस्वामीनामकहै कि जहांकी शिलासब चक्रचिह्नोंकरके युक्तहैं उसके चारोंदिशामें तीन २ योजन उस चक्रस्वामी तीर्थका मानहै वहां जो मनुष्य स्नान औ व्रत करतेहैं वे सबपापोंसे मुक्तहो हमारे लोकको प्राप्तहोते हैं और यदिवहां अन्नजल त्याग हमारा ध्यानकर जो प्राणत्याग करें वे वाजपेय यज्ञके फलको भोगकर अन्तमें हमारे लोकको प्राप्तहों और हे धरणि वहांहीएक विष्णुपद नामक अत्युत्तम क्षेत्रहै जिसमें तीन जलकी धारा अतिशीतल गिरतीहैं उसतीर्थमें जो स्नानकर तीन दिन निराहार व्रतकरतेहैं उन्हे तीन अतिरात्रनाम यज्ञका फल होताहै और यदि वहां हमारा ध्यानकरनिरशन व्रतकर जो प्राण त्यागकरें वे संसारसागरसे मुक्तहो अतिरात्रकेफलको भोगि अंत में हमारेलोकको प्राप्तहों और हे धरणि उसी शालग्रामक्षेत्रमें अतिगुप्त कालीह्रदनामक अतिपवित्र तीर्थहै जो बदरीवृक्षकेमूल से उत्पन्नहुआहै उसतीर्थमें जोस्नानकर छःरात्रि व्रतकरत हैं वे नरमेधनाम यज्ञके फलको प्राप्त होतेहैं और यदि वहां संसार बासनात्यागि औ हमारा ध्यानकर जो प्राणत्यागकरें वे नरमेध फलको भोगि अंतमें हमारेलोकको प्राप्तहों हेधरणि उसीस्थान में शंखप्रभनाम अतिगुप्त हमाराक्षेत्रहै जिसजगह सदाशुक्लपक्ष के द्वादशीतिथिको अर्द्धरात्रिमें शंखका शब्दसुनाताहै और उसी क्षेत्रमें अतिमनोहर गदाकुण्डनाम तीर्थहै उसतीर्थमें जोमनुष्य स्नानकर तीनरात्रि व्रतकरै तौ तीनोंवेदके पढ़नेका फल प्राप्त हो और जो कोई उसस्थानमें हमारा ध्यानकरके प्राण त्यागकरे तो हमारास्वरूपहो गदाधारणकर हमारेलोकमें प्राप्तहोय हे ध-

रणि उसीस्थानमें अग्निप्रभनाम अतिरमणीय परमगुप्तक्षेत्र है जिसमें एकजलधारा ईशानदिशासे गिरतीहै उसधारा में स्नान कर जो चारदिन व्रतकरें वे अग्निष्टोम यज्ञ का पंचगुण अधिक फल प्राप्तहों और यदि वहां हमारा ध्यानकर प्राणत्यागकरें तो अग्निष्टोमफलको भोगकर हमारेलोकको प्राप्तहों और उस तीर्थ की यह परीक्षाहै कि ग्रीष्मऋतुमें उसका जल ठंढा औरहिमऋतु में शीतलहोताहै औरहेधरणि उसीस्थानमें सर्वायुधनाम हमारा क्षेत्रहै कि जिसमें सातधारा जलकी अत्यन्तशीतल गिरतीहैं उस धारामें स्नानकर जो सातदिवस व्रतकरतेहैं वे सबपापोंसे मुक्त हो बड़े प्रतापी राजा होत हैं और यदि वहां हमारा ध्यानकरजो प्राण त्यागकरें वे उत्तमकुलमें जन्मलें पृथिवीमण्डलका राजभोग अंतमें हमारे लोक आतेहैं हे धरणि औरभी गुप्त एकतीर्थहै जिसका देवप्रभ नामहै जिसमें पांचधारा जलकी सदा ऊंचेपर्वतसे गिरतीहैं उसधारामें स्नानकर जो छः व्रत करते हैं वे चारोंवेदके पढ़नेका फलपातेहैं यदि लोभ मोह त्यागि वहां जो प्राणत्याग करें वे हमारे लोकमें निवास पावें वाराहजी कहते हैं हेधरणि उसी स्थानमें विद्याधरनाम एकऔरभी क्षेत्रहै जिसमें अतिशीतल पांच जलधारा ऊंचेपर्वतसे गिरती हैं जिसमें जो स्नानकर एकरात्र व्रतकरते हैं वे सबपापोंसे छुट विद्याधरलोक को प्राप्त होतेहैं यदि वहां हमारा ध्यानकर प्राणत्यागकरें तो विद्याधरके लोकका सुखभोगि अंतमें हमारे लोकको प्राप्तहों हेधरणि उसी स्थानमें एक पुण्यानदी नाम अतिपवित्र रमणीय क्षेत्रहै जिसमें गन्धर्व विद्याधर आदि देवताओंके गण सदा निवास करते हैं उस तीर्थमें स्नानकर जो आठदिन व्रतकरते हैं वे सबपापोंसे मुक्तहो सातोंद्वीपमें इच्छापूर्वक द्वीपोंका सुखभोगतेहैं यदिवहां हमारा ध्यानकर प्राणत्याग करेंतो सातोंद्वीपका सुखभोगि हमारेलोकमें प्राप्तहों हे धरणि उसी स्थानमें एक गन्धर्व्वनाम परम पवित्र

तीर्थहै जिसके पश्चिमदिशामें एक जलधारा गिरतीहै तिसमें स्नानकर जो चारदिन व्रतकरतेहैं वे आठोंलोकपालोंके स्थानमें जा वहांके सुखको भोगतेहैं यदिहमारा ध्यानकरके वहां जो प्राण त्यागकरें तो लोकपालोंके स्थानोंका सुखभोगि हमारे लोकको प्राप्तहों हेधरणि उसीस्थानमें देवह्रदनाम अतिपवित्रतीर्थहै जहां हमने बलिसे तीनपद पृथिवी मांगिके तीनोंलोक मापके देवताओंको दिया वो देवह्रदनाम क्षेत्रहै जिसमें जल निर्म्मल पवित्र शीतल औ अगाधहै हे धरणि जिस देवह्रदमें चक्रचिह्न करके युक्त मत्स्य बिराजमान होरहेहैं औरभी कथन करतेहैं सो सावधानहो श्रवणकरो कि जिसदेवह्रदमें बारहोंमासकीद्वादशीतिथिको सूर्य्योदय समयमें सुवर्णवर्णका कमल दिखाताहै जिसे श्रद्धावान् हमारे भक्तदेखतेहैं औ पापात्मा नहींदेखते और वो कमल प्रातःकालसे लेकर मध्याह्नतक दिखाताहै फिर गुप्तहोजाताहै हे धरणि उस देवह्रदमें जो स्नानकर दशरात्रि व्रत करतेहैं वो दश अश्वमेधके फलको प्राप्तहोतेहैं और यदि वहां हमाराध्यान करके प्राणत्यागकरें तो दशाश्वमेधफल भोगकर अंतमें हमारे सारूप्यमुक्तिको प्राप्तहों हेधरणि औरभी बिलक्षण परमगुप्त एकतीर्थ बर्णन करते हैं जिसके समीप नित्य इन्द्रादिक देवता निज २ स्त्रियोंके साथ गंधर्व अप्सरा नाग नागकन्या देवर्षि राजर्षि मुनि सिद्ध औ किन्नर आदि समस्त देवगण प्राप्तहोतेहैं हे धरणि नेपालनामक स्थानमें जो पशुपतिनाम शिवजीहैं उन नीलकंठजीके जटाजूटसे श्वेतगंगानाम तीर्थ प्रकटभया तिससे छोटी २ अनेक नदियां कोई प्रकट औ कोई गुप्त निकलीं सो जायर२ गण्डकी कृष्णाआदि नदियोंमें मिलीं और एक त्रिशूलगंगानाम नदी जिसमें अनेक पवित्र नदियां आकर मिलीं इसभांति हेधरणि सबनदियोंका संगम ऐसा पवित्रहै जो देवताओंकोभी दुर्ल्लभहै और जो सिद्धाश्रमनाम लोकबिख्यात पुण्यका

देनेहारा तीर्थहै जिसमें भृगुनाम ऋषीश्वरका तपोवनहै वो सब पवित्रोंसे पवित्रहै जहां छवोऋतु निज २ शोभाको देरही हैं हे धरणि उस स्थानकी शोभावर्णनकरतेहैं सो श्रवणकरो किजिस स्थानमें वृक्ष औ लता सब फल पुष्पकरके शोभित औ कदली-वृंदोंकरके बिराजमान निचोल नाग पुंनाग केसर खजूर अशोक बकुल चूत प्रियाल नारिकेल पूग चम्पा जम्बू नारंग जम्बीर मातुलिंग इनवृक्षोंकरके शोभित औ केतकी मल्लिका मालती यूथी राजी कुंद कुरवक नाग कुटज दाड़िम आदि अनेक पुष्प वृक्ष शोभाको देरहेहैं हे धरणि यहां शृङ्गाररसमें मग्नहो देवताओंके मिथुन अर्थात् स्त्री पुरुष आयके सदा बिहार करतेहैं हे धरणि उस पुण्यक्षेत्र में जो पुरुष स्नानकरे वो शतअश्वमेधयज्ञ के फलको प्राप्तहो और जो बैशाखमास में स्नानकरें वे सहस्र गोदानके फलभागीहों और जो माघमासमें स्नान करें वे प्रयाग स्नानके तुल्य फलको प्राप्तहों और हे धरणि जो कार्तिक मासमेंतुलाके सूर्य्योंमें नियमसे एकमास नित्य स्नान करें वे अवश्य मुक्तिफलको प्राप्तहों और जो किसीमासमें तीनदिन स्नान औव्रतकरें वे राजसूयनामक यज्ञके फलको प्राप्तहों देव लोकमें देवताओंके साथ बिहार करें और हे धरणि उस पवित्र तीर्थमें जो पुरुष यज्ञ तप दान श्राद्ध तर्पण देवपूजन आदि सत्कर्म्म थोराभी करेतो अनंत फलको प्राप्तहो हे धरणि इस तीर्थकेसेवन करनेहारे मनुष्यके अनेक अपराध हमक्षमाकरतेहैं इसीलिये यहतीर्थ सबतीर्थोंसे उत्तमहै जैसेश्रीगंगाजीकायमुना जीके संगम होनेका फल अर्थात् प्रयाग त्रिवेणी तीर्थका प्रभाव अमितहै वैसही इसेभी जानो हेधरणि इसशालग्रामक्षेत्रमें हम पूर्वमुखहो निवास करतेहैं औ हमारेदक्षिणभागमें सदाशिवजी निवास करतेहैं वाराहजीकहते हैं हेधरणिलोकके कल्याणकरने हारे कैलासवासी शंकरजीकी जो सेवाकरतेहैं वेहमारेहीसेवक

हैं और जोहमारी सेवाकरते हैं वेशंकरके सेवक हैं हमारे में औ शिवजीमें कुछ भेदनहींहै जोहमारी वाशिवजीकी स्तुतिवानिन्दा करें वो हमदोनों तुल्यही समझते हैं शिव प्रिय सोहमारा प्रिय औ हमारा द्रोहीसा शिवद्रोही हेधरणि जहांहम वहांशिवजी औ जहां शिवजी तहां हमइसभांति हमारा औ शिवजीका वियोग निमेषमात्रभी नहीं होता हम दोनोंएकहीहैं जो भेद करके जानते हैं वेयमस्थानमें दंडभागी होते हैं और जो हमको औ शिवजीको एक समझते हैं वोसदा इसलोकमें तौसुखी रहतेहैं औ परलोक में सद्गति पातेहैं इसीलिये हेधरणि यहशालग्रामक्षेत्र हरिहरात्मकहै अर्थात् दोनोंका रूपहै औ रुरुखंडनाम स्थानभी हमको बहुत प्रियहै औरजो यहां प्राणत्याग करते हैं वेसनातनपदजो हमारास्थानहै वहांप्राप्त होतेहैं इसीकारण यहमुक्तिक्षेत्र कहाया इसलिये शालग्रामक्षेत्रको त्रिवेणीसे किञ्चित्भीन्यून न समझना चाहिये इसभांति हेधरणि सबनदियोंमें गंडकीनदी उत्तमगिनी जातीहै औ जहांजाय गंगाजीमें मिलीहै वहांका पुण्यकौन बर्णन करसकताहै हेधरणि इसक्षेत्रसेपरे दूसराक्षेत्रनहीं है परंचअत्यंत गुप्तयह कथाहमने बर्णनकिया यहकथा अति पवित्र योग जप तीर्थसेवन दान यज्ञ वेदपाठ औ नानाभांतिके पुण्यकर्म्मसबोंसे अधिकहै हेधरणि इसकथाके अधिकारी वोहैंजो शठ पिशुन गुरुद्रोही पंचमहापातक आदि दुष्कर्मोंसे रहितहों औहमारे भक्तहों लोभमोह अनाचार आदिसे बर्जितहों उनीपुरुषोंको यह कथा सुलभहै और हेधरणिजो प्रातःकाल उठिके सावधानहोइसकथा का पठन वाश्रवण वास्मरणकरें वे इक्कीस कुलके साथ सबपापों सेमुक्तहो हमारे स्थानमें प्राप्तहों वाराहजी भगवान् कहते हैं हे धरणि यदिइससंसारसागरसे कोई पारजायाचाहै तौ शालग्राम क्षेत्रकासेवन अथवा इसकथाको प्रीतिसे श्रवणसदाकरै इसभांति हमने पवित्रकथा बर्णनकिया अबऔर क्या सुनाचाहतीहो ॥

एकसौचालीशवांअध्याय॥

श्रीसूतजी कथनकरतेहैं हेशौनक इसभांति बाराहभगवान्के मुखारबिन्दसे बिचित्र कथासुन धरणी कहने लगी कि हेभगवन् इसक्षेत्रका माहात्म्य श्रवणकर आपकी कृपासे मेरे अनेक भ्रम दूरभये औ मैंधन्यभई हेभगवन् आपने रुरुखंडनाम वर्णनकिया है सोक्या पदार्थहै औरुरुनामक कौनथा किजिसके नामसे रुरु-खंडकहाया औकिसलिये आपकी प्रीतिउसमें अधिकभईसोआप कृपाकरके मेरेसे वर्णनकरें हेशौनक इसभांति धरणी की बाणी सुन प्रसन्नहो हँसके यहवाराहजी कहनेलगे किहेधरणिजो पूंछ तोहोसो सावधानहो श्रवणकरो इसभांति आश्वासनकर कहने लगे किहेधरणि किसी समयमें एकभृगुबंशमें उत्पन्न बेदबेदांग का जाननेवाला देवदत्तनाम ब्राह्मण हुआ सोब्राह्मण यज्ञकराने मेंनिपुण व्रतआदि नियमोंमें तत्पर औ अतिथि का प्यार करने वाला सदातप कियाकरताथा सोऋषिके तपश्चर्य्या प्रभावसेवह आश्रम अतिही रमणीयहोगया किजिसमें अनेक भांतिके वृक्ष सोनानाभांतिके लतावों करके शोभितऔ भांतिभांतिके मृग औ पक्षी परस्पर बिरोधत्यागि सुहृदहो जहांतहां बिराजमान होरहे हैं हेधरणि उसआश्रममें देवदत्तनाम ऋषि हजारोंबर्ष तपकरता रहा तबतो उसका तपदेख भयभीतहो निजइंद्रपद छूटनेकेडरसे व्याकुलहो अप्सरा कामदेव बसंतऋतु आदि गणोंको बुलायम-धुरबाणीसे इन्द्रयह कहनेलगा किहेमित्रो तुम्हारेयोग्यजोकार्य्य उपस्थितहै उसमेंमेरी सहायताकरनाउचितहै औसमयमेंमित्रही सहायहोताहै इसलिये हेहमारे सखावो इससमयमें मैं तुम्हारी शरणमेंहूं मेरेक्लेश निवृत्तहोना तुम्हारे सबके अधीनहै इसलिये मेरीनिर्भयताका बिचारशीघ्रकरो यहदेवराजका बचनसुनबिस्मि तहो हाथजोड़ बड़ीनम्रतासे सबगणोंकेसाथ कामदेव कहनेलगा

किहेमहाराज आपक्यों इतनी दीनताकररहेहो हमआपके भक्त सेवक औसबभांति अनुचरहैं जोआप आज्ञादेंगे उसमेंकिंचित्भी बिलंबनहोगा निज अभिप्राय आपप्रकट कीजिये कौनसा जितेंद्रियहै जिसकोहम स्वाधीन करें आपतोखुशीसेमुझेआज्ञादेवेंइस भांतिअप्सरा औबसंत आदिकोंकी बाणीसुन प्रसन्नहो इंद्रकहने लगाकि हे मित्रोमैंतो सबकालमें सुखीहूं जिसकेतुम्हारे ऐसेसेवकहैं तथापि इससमयमें हिमालयपर्बतमें जोहृषीकेशनामकस्थानहै वहांदेवदत्त नामक मुनितपकररहाहै उसकाबिचार यहहैकि इंद्रकापदलेवे इसलिये उसके तपकाबिध्वंसशीघ्र करो इसभांति इन्द्रजीकी आज्ञापाय हाथजोड़ शिरनवाय बसंतादिगण कामदेव को आगेकर मुनिके समीप चलनेलगे तबतोइंद्रने प्रम्लोचानाम अप्सरावोंमें परमसुंदरी उसेबुलाय भलीभांति समझाय कहने लगेकि हेप्रम्लोचे मेरेस्थानके हरनेको जो देवदत्त मुनि तपकर रहाहै वहां जाय निजबिलास हावभाव कटाक्षसुरत आदिकोंसे उसेवशमेंकर तपसे निवृत्तकर शीघ्रहमको आनंददो यहसुनबड़ हर्षसे बसंतआदि गणोंके साथप्रम्लोचा जायहिमाचल में जहां मुनि तपकररहेथे वहां पहुंची तौवहांकी शोभाक्यादेखते हैं कि वहमुनिजीका तपोबन नानाभांतिकेवृक्षऔलतावों करके शोभित होरहाहै औफूलेफले वृक्षलतावों पर मधुरबोलनेवाले भांतिभांति के पक्षियोंके जोड़े औभ्रमर बिनोदकररहेहैं औइसशोभाकोदेख गंधर्बोंके गणशीतल मंदसुगंधवायुको सुखपूर्बक सेवनकरतेकमलपंकज कलहार उत्पल शतपत्र इन्दीवर आदिअनेक भांतिके पुष्पितकमलों करके युक्तऔ बिबिध भांति जलचरजीवों करके भूषित निर्मल जलसे पूर्णतलाशय देखकामके ब्यथासेव्याकुल निजर प्रियाओंकेसाथ जहांजलक्रीडाकररहेहैं इसभांतिमुनिजी केआश्रमकोदेखहर्षितहो मधुरस्वरसेगानाप्रारंभकिया तिसमनोहरगानको सुनदेवदत्त मुनिसमाधिको त्यागप्रीतिसे श्रवणकरने

लगे तबतो औसरजानि कामदेव निजधनुषमेंपुष्परूपी बाणका संधानकर लक्ष्यरूपीमुनिके हृदयकोबेधनकियायद्यपिमुनिअतितचित्त औ बिचारवानथे तथापि उस समय इंद्रकी मायाको देख बिवशहो कामबाणसे पीडित क्यादेखतेहैं कि एकसुंदरी उत्तम२ भूषणऔ वस्त्रोंकरके शोभित स्वयंशोभाकी राशिउसी बनकेकुंज संगेंदखेलती इकल्ली औगेंदहीमें दृष्टिइधरउधरमुनिजीकेथांड़ी हीदूरिघूमिरहीहै उसमृगनयनीकोदेखदेवदत्त मुनिअत्यंतहीकाम पीड़ितहुये औवहसुन्दरीभी मुनिजीको देखकिंचित् लज्जितहो कटाक्ष रूपीबाणोंसे मुनिरूपी मृगको बेधती औ निज अंगोंकी शोभाको देखाती गेंदको खेलरहीथीकि उसीसमय मलयमारुतनेउसअप्सलोचाके वस्त्रको ऐसाझकोरदिया किवेवस्त्र उसकेअंगोंसे छुट बायुबेगसे अतिही दूरउड़गये इस अवस्थाको देख देवदत्त मुनिकामसे पीड़ितहो उसस्त्रीकेसमीप आयकहनेलगाकिहेसुंदरि तुमकौनहो औकिसकी कन्याहो क्याकियाचाहतीहो औ कहांसे आईहो हमजानतेहैं कि हमजैसे भाग्यहीनोंके भाग्योदयकेलिये दयावान् ईश्वरने तुमकोभेजाहै इसलिये हेप्रिये हमतुम्हारेआधीनहैं जो सेवकाईकी इच्छाकरोसो सबअंगीकारहै इसलियेदया दृष्टिसे देख हमारे अभिलाषको पूराकरो इतनाकह औ निजदक्षिणहाथसे उसअप्सराके बामहस्तको पकड़निजहृदयमें लगाय कामबश इच्छा पूरीकर उसके साथ निज आश्रम में निवास करनेलगा हे धरणि निज तपस्याके प्रभाव से अनेक भांति के सुखको उस अप्सलोचा के साथ भोगता बहुत काल व्यतीतकिया किसी समय उस मुनिके बिचारमें ज्ञान उत्पन्न हुआ तबतो बिषयों से बिरक्त हो यह कहने लगा कि देखो मेरी मूर्खता जो बहुत कालका किया हुआ तप इसस्त्रीकेसाथ बिषयभोगमें मैंने नष्ट किया यहकेवल परमेश्वर की मायाहै कि जिसकरकेबड़े२ ज्ञानी भी योगसे भ्रष्टहो बिषयमें लिप्तहोजाते हैं यहलोक का

कथनसत्यहै कि स्त्री अग्निकुंड समान औ पुरुषघृतकुंभसमानहै जब घृतकाऔअग्नि का संयोगहोतो क्योंन घृत ढले परंतु हम यह जानते हैं कि यह उपमा ठीकनहीं क्योंकि वे संयोगदर्शन मात्रसें अग्निघृतको ठालि नहीं सक्ती औ स्त्रीदेखनेहीसे पुरुषको स्वाधीनकरसक्ती है इतना कहि उसी समय प्रम्लोच को त्याग दियाऔ यह बिचार करनेलगा कि इसस्थानमें तपकेबिघ्नकरने कोउत्पात बहुत प्रकट होतेहैं इसलिये और जगे चल तपकरना चाहिये यह बिचार निज आश्रम को त्यागि गंडकी के तीरभृग्वाश्रमनामक स्थान में जाय पूर्व दिशामें एकांतभृगु तुंगपर्वत के समीप घोरतप में युक्त हो शिवजीका आराधन करन लगा इस भांति बहुत कालके आराधन करने से शिवजी प्रसन्न हो लिंगरूप धारणकर प्रकटहो प्रसन्न पूर्वक यह कहने लगे कि हे ऋषीश्वर जिसका तुम ध्यान औ पूजन करते हो वो शिव हमहैं जो बांछाहो सो बर मागो औ बिष्णु भगवान्से हमारेसे अंतर न देखो अर्थात् एकही रूप दोनों को देखो और जो पहले तप करते हमारे औ बिष्णु मे तुमने भेद किया ओही भेद बिघ्नहो तुम्हारा बहुत कालका किया हुआ तप बिध्वंमकिया इस लिये हमको औ बिष्णुको एक दृष्टि के देखनेसे सिद्धि को प्राप्त होगे औरदेखो तुम्हारतपके प्रभावसे अनेक शिवलिंग प्रकट भयेहैं हे मुने आज से लेकर इस स्थानका नाम समंग करके लोकमें प्रसिद्धहोगा और जो गंडकीतीर्थमें स्नानकरहमारे लिंगको पूजन करेंगे वो पूर्ण योगके फलको प्राप्तहोंगे वाराह जी कहते हैं हेधरणि इस भांति बरदान दे शिवजी उसी स्थान में अंतर्द्धान भये औ देवदत्त मुनिभी शिवजी का दर्शन औ उपदेश पाय योग युक्तहो सायुज्य मुक्तिको प्राप्त भया हे धरणि पहिले कहआये हैं जो प्रम्लोचानाम अप्सरा सो देवदत्त मुनि से गर्भ को धारणकर औ कन्या उत्पन्नकर उसी पूर्व आश्रममेंउस

कन्या को त्यागि स्वर्गको चलीगई औ कन्या रुरुनाम मृगों के मध्य उन्हीं मृगों करके सेवित थोरेहीकालमें युवावस्थाको प्राप्त भई उसे देख कइक पुरुषोंने अंगीकार करना विचारा परंतु उस कन्याके चित्त में एक न आया तबतौ निज चित्तमें निश्चय कर बिष्णु भगवान का चिंतन करती तप करनेलगी हे धरणि तप करते समय में पहला महींना फलाहार करके व्यतीतकिया औ दूसरा मास दूसरे २ दिन औ तीसरे मास पांचयें २ दिन में औ चौथे मासमें सतवें २ दिन सूखे वृक्षके पत्र खाकर तप किया औ अष्टम मास प्रारंभहोतेही सब भांतिके आहार त्यागि वायु भोजन करने लगी इस भांति बिष्णु भगवान् का ध्यान करतीहुई स्तंभके तुल्य निश्चल होकर अनेक भांति के दुःखोंको सहती हुई समाधि योग करके पूर्णशत वर्ष तप किया वाराह जी कहते हैं कि हे धरणि इसभांति उस कन्या के उग्र तप को देख चराचरजीव सहितहमारे सबविस्मयको प्राप्त भये तब तौ हम प्रकट हो उस कन्या के समीप जाय क्या देखते हैं कि सब इन्द्रियों को रोककर निजहृदय कमलमें हमारी मूर्त्ति के ध्यान में डूबी हुई बाहर हमारे आने को नहीं जाना तब तौ हे धरणि उसके हृदय का ध्यानमूर्त्ति अंतर्द्धान करके वलबाहर प्रकटहोरहे जब हृदय में हमारी मूर्त्ति न दीखी तबतौ घबड़ाकर नेत्रोंको खोलतेही वही ध्यानगम्य मनोहर मूर्त्तिनिज नेत्रों से आगे खड़ीदेख बड़े आनन्द में निमग्नहो गद्गदबाणीसे हाथ जोड़ स्तुति करनेलगी हेधरणि उसकी प्रेमयुत बाणीसुन प्रसन्न हो हमयह बोलेकि हे अंगने तुम्हारीश्रद्धा औ तप करके हमबहुत प्रसन्नहैं जो अदेय भी पदार्थहै सो मांगो हम सबभांति तुम्हारी बांछा पूरण करेंगे सूतजी कहतेहैं हे शौनक इसभांति बिष्णुभगवान्की बाणीसुन बारम्बार बिनय पूर्वक प्रणाम औ अनेक भांति की स्तुतिकर वह कन्या कहने लगी कि हे भगवान् यदि

आप प्रसन्नहैं औ मेरा मनोरथ पूर्ण किया चाहतेहैं तो इसीमनोहर मूर्त्तिसे यहां सबकाल निवासकरें इतनासुन तथास्तुकह फिर बिष्णु भगवान् बोले कि यह बरतो मैंने दिया औरभीजो बांछाहो सो मांगो हे धरणि तबतौ हमको प्रसन्नदेख बड़े हर्ष से नम्र हो कहने लगीकि हे नाथ यदि आप प्रसन्नहोमुझेदुर्लभ बर देतेहों तो मेरेको पवित्रकरो औयह क्षेत्रमेरे नामसे लोक में प्रसिद्ध होय हे धरणि तबतौ यह कन्या की प्रार्थना सुनयह बर दियाकि हे कन्ये यह तुम्हारी देह तीर्थोंमें उत्तम तीर्थ तुम्हारे ही नामसे प्रसिद्धहो औ इसतीर्थ में जो स्नानकर तीनि रात्रि व्रतकरेंगे औ हमारे इस अनुग्रह मूर्त्ति का दर्शन करेंगे वो सब पापोंसे मुक्तहोंगे इसमें संशय नहीं औ ब्रह्महत्या आदिजोबड़े२ घोर पातकहैं वो सब इस तीर्थके स्नानमात्रही से निवृत्त होंगे और ज्ञातअज्ञात जो नानाभांतिके पातकहैं उन्होंसे मुक्तहो इस तीर्थके स्नान करनेवाले पुरुषउत्तम गतिको प्राप्तहोंग इसभांति अनेक प्रकार के बरदान दे हेधरणि हमतौ अंतर्द्धानभये औ वो रुरुनाम कन्या शरीर त्यागकर तीर्थरूपा होगई इसभांतिहमने रुरु तीर्थका माहात्म्य बर्णनकिया इस माहात्म्यको जो मनुष्य पुण्य दिवसमें श्रवण औ कथनकरें वो उत्तमगतिको प्राप्तहों॥

एकसौएकतालीशकाअध्याय॥

श्री वाराह भगवान्से धरणी प्रश्न करतीहै हे भगवन् आपने परमगुप्त रुरुक्षेत्रमाहात्म्य बर्णन किया और भी जो गुप्त क्षेत्रहैं कृपाकरके उनका बर्णन कीजिये इसभांति बिनय युक्त धरणी का बचन सुन बाराह भगवान कहने लगे कि हे धरणि अब सावधानहो एक अतिगुप्त हिमालयमें गोनिष्क्रमणनामक तीर्थहै उसका श्रवण करो यहां हमने गौवोंको प्रकट किया है औ यहां और्बनाममहान् ऋषिने सत्तरिकल्प हमारातप कियाहै

हे धरणि वह और्वऋषि इतने कालनियम से हमाराध्यानकरता हुआ तपमें लगारहा परंतु वरदान कुछभी न चाहा हे धरणि सो और्वऋषि सत्तर कल्प के अनंतर किसी दिन कमलके पुष्पों से हमारे पूजन करने के लिये बिचारा परंतु हिमालयमें तौ कमल मिले नहीं तब हरिद्वार तीर्थ में कमल लेने को आया तब तौ उस और्वऋषिका स्थान से उठना जानिके महादेवजी उस और्व के स्थानको आये औ आतेही शिवजीके तेजसे वह स्थान सब भस्म होगया तब तौ शिवजी हिमालयको चलेआये हे धरणि और्वऋषिने गंगा द्वारमें आय स्नानादि कर्म्मोंसे निवृत्तहो बहुतसे अनेक भांतिके कमल पुष्पों को ले निज आश्रममें आया तबतौ क्या देखता है कि सब स्थान सहित निज कुटी के भस्म होरहाहै इसवृत्तान्तकोदेख यद्यपि हैतोमुनि सर्वथाशांतिस्वभाव तथापि कारणवशहो क्रोधयुक्त यह कहनलगा कि जिसने हमारे आश्रमको दग्धकियाहै वोभी अनेकदुःखोंसेसंतप्त संसारमेंभ्रमण करताहुआ क्षणमात्रभी सुखनपावै इसभांति शापदेकर और्वऋषि फिर तप करने लगा वाराहजी कहतेहैं हेधरणि यद्यपि शिवजी परमेश्वर हैं साक्षात् लोकके नाथ तथापि ब्राह्मण का शाप तौ धारण करतेही बना इस भांति और्वके शाप करके दग्धभये शिव इत स्ततः भ्रमण करने लगे इसभांति श्री शिवजीका भ्रमण औ और्वऋषि का तपःप्रभाव देखि सब देवताओंके गण विस्मित होकर परस्पर बिचार करने लगेकि क्या उपाय बनै जिसमें शिव जीको शांति होय परन्तु किसीके बिचार में कुछ ठीक २ उपाय न बैठा हे धरणि उससमय शिवजी के क्लेशहोने से हम भी बहुत दुःखी भये क्योंकि हमारा उनका एकही स्वरूपहै हमारे क्लेशमें वोदुःखी होतेहैं औ उनके क्लेशमें हम दुःखी होते हैं हेधरणि उस औसर में श्रीपार्वती जी हमसे यों कहने लगीं कि क्यों शिवजीऔ आप दोनों दुःखीहो रहेहो इसकेनिवृत्त होनेका

उपाय क्योंनहीं करते कि और्वमुनि के समीपजाय प्रार्थनाकर निज अपराध क्षमाकरावो क्योंकि वे उनकी कृपा यह दुःखदूर नहीं होगा इस भांति श्री पार्वतीजी की बाणी सुन यथार्थमानि हम दोनों जाय और्वऋषि के समीप विनय पूर्वक स्तुति कर क्रोध शांत कराय निज क्लेश निवृत्त होने की प्रार्थना किया तब तौ प्रसन्न हो और्व कहनेलगा कि यह क्लेश तभी शांति होगा जब सुरभी नाम गौके दुग्धों से स्नान करोगे यह सुन हेधरणि हमने अपनी माया करके गौवों को प्रकट किया तब तौ उन गौवों के दुग्ध करके शिवजी औ हम दोनों स्नान कर क्लेश से छुट सुखको प्राप्त भये उस दिन से जहां गौवें प्रकट भईं वह स्थान गोनिष्क्रमणनामक तीर्थ कहाया हेधरणि उस परमपवित्र तीर्थमें जो मनुष्य स्नानकर एकरात्र व्रतकरें वो सब पापोंसे मुक्तहो गोलोक में बास पावें और यदि निरशन व्रत करके उस तीर्थ में प्राणत्याग करे वो भवसागरसे पार हो चतुर्भुज मूर्ति धारण कर श्वेतद्वीप नामक जो हमारा लोक है वहां बास पावे हे धरणि जो मनुष्य गो निष्क्रमण तीर्थ में स्नान कर तीनि रात्रि व्रत करें वो पांच यज्ञों के फल को प्राप्त होवें और यदि वहां प्राण त्याग करें तो पंचयज्ञ के फलको भोग अन्तमें हमारे समीप बास पावें हे धरणि उसी गोनिष्क्रमण तीर्थके समीप अति पवित्र पंचपदनामक उत्तम तीर्थ है जिसकी यह पहचान है कि एक उत्तम जलका कुंड है औ उसके चारो दिशा में चार बडी विस्तीर्ण औ सुन्दर शिला हैं औ सबसे बड़ी शिला एक मध्यमें है औ उसी कुंडकेपूर्व दिशामें हमारी मूर्तिहै जिसके समीप ब्रह्मपद है हेधरणि उस पंचपद तीर्थ में स्नानकर जो पांच रात्रि व्रतकरे वो मनुष्य सब पापोंसे मुक्त हो हमारेसमीप बास पावे और यदि वहां व्रत करके प्राण त्याग करे तौ सब पापों से मुक्त हो कैवल्य नाम मोक्षको प्राप्त होय हे धरणि जो

ब्रह्मपद नामक तीर्थ कह आये हैं उसके समीप पश्चिमदिशा में एक जलकी धारा अखण्ड गिरती है उस धारामें स्नान कर जो मनुष्य एकरात्रि व्रत करे वो सबपापों से मुक्त हो ब्रह्मलोक में जाय ब्रह्माजी के समीप बासपावे और हे धरणि जो मनुष्य कार्तिक मास के शुक्ल द्वादशी को ब्रह्मतीर्थमें स्नान करे वो सब पापों से मुक्त हो तीन बाजपेय यज्ञ के फलको प्राप्त होवे और यदि ब्रह्मतीर्थ में हमारा ध्यान कर प्राण को त्याग करे वेतीन बाजपेय फल को भोग हमारे समीप बास पावे और हेधरणि उसी ब्रह्म पदके समीप कोटिबट नामक परमपवित्र तीर्थ है जिसका प्रमाण ब्रह्म पद से बायु दिशामें पांचकोशहै उसकोटि बटतीर्थ में जो स्नान कर छः दिन व्रत करते हैं वोसब पापोंसे मुक्त हो अनेक कोटि यज्ञ के फल को प्राप्त होता है और यदि वहां कोटिबटमें प्राण त्याग करे तो कोटि यज्ञफल को भोगि अंतमें हमारे समीप बास पावे और हेधरणि उस कोटि बटके ईशान दिशा में पांच कोश पर बिष्णुसर नाम उत्तम तीर्थ है जिसका बिस्तार पांचकोश तकहै औ अगाध निर्म्मलजल भरा है उस बिष्णुसर तीर्थमें स्नान कर जो परिक्रमा करता है औ तीनि रात्रि व्रत करताहै वो जितने पद पृथिवीका परिक्रम करता है उतनेही हजार बर्ष ब्रह्मलोकमें बास पाता है हेधरणि जो उस क्षेत्र में प्राणत्याग करे वो ब्रह्मलोकका सुख भोग अंत में हमारे समीप बास पावे और भी उसक्षेत्रमें एक बड़ाआश्चर्य है कि अकस्मात् ज्येष्ठ महीने की शुक्ल द्वादशी को मध्याह्न समय में प्रकट उस तीर्थ के मध्यसे गौ का शब्दस्फुट सुनपड़ताहै इसलिये उस बिष्णुसर का गोस्थल नाम भी दूसरा है हे धरणि उसके समीप जो कोई उत्तम कर्म्म करते हैं वो सब पापों से मुक्त हो उत्तमगतिको प्राप्त होते हैं हे धरणि इसभांति सब कल्याण का देने हारा औ सब पापोंका दूरकरनेहारा गो-

स्थल नाम तीर्थ हमने वर्णन किया यहतीर्थ सब तीर्थोंमें उत्तम सर्वमंगल का दाता सब श्रेष्ठों में श्रेष्ठहै इसका माहात्म्य जो श्रद्धा बिश्वासपूर्वक प्रीति से कथन करें औ भक्तोंको श्रवण करावैं वेदोनोंहमारेलोकको प्राप्तहों औरतो कहांतक इसकीप्रशंसा करैं इसतीर्थके पांच २ योजन चारो दिशामें आठोप्रहर हमारा बास रहता है इसलिये वहांकी भूमि गोलोकके तुल्यहै औ जो वहां निवास करनेहारे पशुपक्षी कीट पतंगहैं सोसबजीवन्मुक्तहैं यहइतिहासपरमगुप्त तुम्हारीप्रीतिसे हमनेबर्णनकिया औतुमने नास्तिक अविश्वासी पाषंडी इन्होंसे नहीं कथन करना इसके श्रवणपात्र केवल हमारे भक्तही हैं॥

एकसौबयालीसकाअध्याय॥

सूतजी कहते हैं हे शौनक इसभांति वाराहजीका बचन सुन प्रसन्न हो धरणी कहनेलगी कि हेभगवन् इस कथा के श्रवण करनेसे चित्त अत्यंत प्रसन्न भया औ अनेक संशय निवृत्तभये अब हे भगवन् ऐसही और भी अपूर्व कथा बर्णन कीजिये कि जिसके सुनने से चित्त प्रसन्न होय यह धरणी की बिनयबाणी सुन वाराहजी कहनेलगे कि हे धरणि हम सब धर्मके प्रभु हैं इसलिये हमको महात्माजन नारायण कहते हैं और सदाभक्तजन हमको अतिही प्रिय हैं इसलिये हम भक्तों से कुछभी गुप्त नहीं रखते हे धरणि तुम हमारी परमभक्ताहो अब सावधान हो यह मनोहरकथा श्रवण करो जिसके श्रवण करनेसे अनेकभांति के पातक दूर होतेहैं इतनाकहि वाराहजी भगवान् कहनेलगे कि हे धरणि एक सुतस्वामी नामक अतिपवित्र हमारा क्षेत्र है जिस क्षेत्रमें द्वापर युगमें देवकीके गर्भसे उत्पन्न हो बसुदेवका पुत्र सब दुष्ट दानवों के संहार करने को बासुदेव करके बिख्यात होंगे तबतो हे धरणि शांडिल्य जाजलि कपिल उप-

सायक औभृगुये पांचोऋषि हमारे भक्त ज्ञानसम्पन्न तपोमूर्त्ति उस सुतस्वामी क्षेत्र में हमारी मूर्त्ति को संकर्षण वासुदेव प्रद्युम्नअनिरुद्ध इन चारोंनामों से स्थापित करेंगे औ इस हमारी अनन्य भक्तिसे उन ऋषियोंको दृढ़ज्ञान उत्पन्न होगा जिस ज्ञान से उनकेशिष्य प्रशिष्य सब पवित्रहो हमारे परम धामको प्राप्त होंगे हे धरणि और भी सावधान हो श्रवण करो यह वाराह पुराण नाम शास्त्रहै जिसभांति बहुत से दुग्धको युक्तिसे दधि बनाय कर मथन करनेसे साररूप घृत निकलआता है वैसही हेधरणि सब शास्त्र औ पुराणोंको मथन करके इस कथाप्रबंधको सब धर्मकेप्रकाश करनेकेलिये तुमसे बर्णन किया इसहेतु इसका वाराहपुराण नामहै हे धरणि जो २ धर्म्म बिषयका अत्यंतगुप्त औ सूक्ष्म संकेतहैं सो २ हमने इसपुराणमें बर्णनकिया हेधरणि कोई महात्मा ज्ञाननिष्ठहोतेहैं कोई कर्म्मनिष्ठ कोई जपनिष्ठ कोई दाननिष्ठ कोईयागनिष्ठ औरकोईबिचारनिष्ठ येसबनिज२धारणा करके उत्तमगतिको प्राप्त होतेहैं औरजो इनउत्तमकर्म्मोंसे रहित भक्ष्याभक्ष्य करनेहारे महाअधम हैं उन भाग्यहीनोंकेलिये यह सुगममार्ग हमनेबड़ेपरिश्रम औ यत्नसेप्रकाशकिया हेधरणि और जो अनेकभांतिके पुण्यदेनेहारे पदार्थहैं उन्होंकेसेवनसेबहुतकाल में चित्तशुद्धहोताहै औ इसवाराहपुराणकेश्रवणमात्रहीसे मनुष्य सब पापों से मुक्तहो हमारा समीपवर्त्ती होताहै हे धरणि अब सुतस्वामीक्षेत्रकी महिमा सावधानहो श्रवणकरो किजिसमेंलोह की प्रतिमा ऐसी मनोहरा बिराजमान है परंतु जिसकेदेखनेसे कुछ निश्चय नहीं होता कि किसधातु कीहै सो हे धरणि मणिपूर पर्बत में उस प्रतिमा का जो दर्शन करते हैं उन्हें साक्षात् हमारा ही दर्शन होताहै और वो सबपापों से मुक्तहो परमगति को प्राप्त होतेहैं और हे धरणि उसी क्षेत्रके उत्तरदिशामें अतिगुप्त पंचारुण नाम तीर्थहै तिसमें स्नान करके जो पांचरात्रि व्रत

करते हैं वो शरीर त्याग करनेसे नंदनबनमें जाय अप्सराओं के साथ बिहारकरके अंतमें हमारेसमीप आतेहैं हेधरणि इसीक्षेत्रमें हमारे दक्षिण भाग अर्द्ध योजन प्रमाण भृगुकुंडनामक परमगुप्त तीर्थहै तिसमें स्नान करनेसे जन्मान्तर में उत्तम हमाराभक्त औ जितेन्द्रिय हो संसार के नानाभांति सुखको भोगि अन्तमें ध्रुवकेसमीप बासपातेहैं और यदि वहां अन्नजलत्यागि व्रतकरि जो शरीर त्यागकरे वो ध्रुवलोकके सुखकोभोगि हमारेलोकको प्राप्तहोय हे धरणि औरभी एक गुप्ततीर्थ उसीक्षेत्रमेंहै जिसका नाम मणिकुण्ड है जिसमें यह चमत्कारहै कि अनेक भांतिकी मणि जलके बीच दीखती हैं औ जिसमें स्नान करनेसे मनुष्य जन्मांतर में सब रत्नोंका भोग करनेवाला महाराज होताहै औ वहां व्रतकर शरीरत्याग करनेसे सबकर्म्मों से मुक्तहो हमारे लोक में बासकरै और हेधरणि इस मणिकुण्डके तीनकोश पूर्व दिशा में निर्मल औ मधुरजल करके पूर्ण अगाध अति रमणीय धूत पापनामक तीर्थहै जिसमें स्नान करनेसे मनुष्य सब पापोंसे मुक्तहो उत्तम बिमानमें बैठि हमारे लोकमें प्राप्तहोता है और धूतपापतीर्थ के पश्चिम पांचकोश पर अतिपबित्र औ मनोहर रमणीय मरकत मणिके तुल्य जिसमें भूमि अगाधजल करके पूर्ण पापशोषण नामक तीर्थ हमको अति प्रीति देनेवाला है जिसके स्नानसे मनुष्य सब पापोंसे मुक्तहो इंद्रलोककोप्राप्त होताहै और उस तीर्थ में यह आश्चर्य्य है कि एक मोटी जलधारा मणिपूर पर्वत से गिरतीहै उसमें जो स्नान करताहै जब तक उसका पापनहीं निवृत्त होता तबतब वह धारा गिरती है औ पाप छुटजानेसे धाराबद होजाती है हे धरणि उसीक्षेत्र में चारो दिशा में पांच २ कोश हमारा निवासहै और वहां एक आमलक नाम वृक्ष हमारी मायासे सदा पुष्पफल करके युक्त रहता है उसका फल पापी औ अधममनुष्य नहींपाते जबतीन-

राद्रिइंद्रियों को जीति व्रतकर उसतीर्थ में स्नानकर पापसेमुक्त होवै तौ उस फलको प्राप्त होय सूतजी कहतेहैं हे शौनक इस कथाको सुन धरणी हाथ जोड़ यह कहनेलगी कि हेप्रभो आप नें कृपा करके सुतस्वामी तीर्थ का वर्णन किया अब आप कृपा करके सुतस्वामी शब्दकी निरुक्ति अर्थात् अक्षरार्थ वर्णन करें कि जिसके श्रवण से संशयों को त्यागि चित्त प्रसन्न होय यह धरणी की विनय वाणी सुन वाराह भगवान् कहनेलगे कि हे धरणि जब हम मथुरामें बसुदेव के पुत्र हो देवताओं का कंटक कंसासुरको मारेंगे तब संपूर्ण इंद्रादिक औ ब्रह्मादिक देवता और नारद असित देवल औपर्वतादि ऋषीश्वर मणिपूरनामक पर्वत में निवास करनेवाले जो हमहैं तिनकी स्तुति करैंगे औ सुतस्वामी नाम करके हमको कथन करेंगे हेधरणि इसीलिये हमारा सुतस्वामी नामहोगा यह तुम्हारे प्रश्न करने से हमने अतिरहस्य कथन किया और मणिपूर पर्वतका महात्म्यवर्णनकिया यह हमारा अवतार अट्ठाइसवें द्वापरयुग में होगा इसभांति हे धरणि सुतस्वामी तीर्थ माहात्म्य हमने वर्णनकिया अबक्या सुनने की तुम्हारे इच्छाहै सो हम वर्णनकरें॥

एकसौतेंतालीसका अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं हे शौनक इसभांति श्रीबाराहजी भगवान् के मुख कमलसे सुतस्वामी तीर्थका माहात्म्यसुन धरणी हाथजोड़ कहनेलगी कि हेभगवन् इसतीर्थके माहात्म्य श्रवणकरनेसे मेरा अनेक भ्रम निवृत्तहुआ अब हेकृपानिधान ऐसही औरभी उत्तमवार्त्ता कथनकरें जिसमें मेराचित्त आनन्दको प्राप्तहो यह धरणी की बिनयबाणीसुन श्रीबाराह भगवान् कहनेलगे कि हेधरणि एक अत्यन्तगुप्तबार्त्ता कथन करतेहैं कि जिसके श्रवणसे अनेक भांतिका संशय दूरहोय औ अनेक पातक निवृत्तहोयँ हे धरणि

द्वापरयुगमें यादवनाम क्षत्रियकुलमें एकसौरिनाम क्षत्रियहोंगे जिनकेकईरानियोंमें देवकीनाम रानीके गर्भसे हमजन्मलेंगे तब उन्हीं शौरिका दूसरानाम लोकप्रसिद्ध बसुदेव भी होगा इसी सम्बन्ध करके हमारा नाम बासुदेव होगा और हेधरणि हमारे निवासकरनेकी पुरी बिश्वकर्मा करके रचित पंचयोजनकी चौड़ी दशयोजनकी लम्बी जिसकानाम द्वारकाहोगा उस उत्तमपुरीमें पृथिवीके भार दूरकरनेकेलिये सैकड़ोंबर्ष हम निवास करेंगे इस भांति देवताओंका क्लेश दूरकर पृथिवीका भार उतार फिरनिज लोकको प्राप्तहोंगे और ईश्वरके तुल्य जिनका प्रताप लोकबिख्यात दुर्बासानाम मुनि किसीकारण यदुबंशको शापदेंगे उनके शापसे मोहितहो परस्पर वृष्णिवंश अंधकबंश भोजबंश औ यदुबंश आपसमें युद्धकर यमलोकको प्राप्तहोंगे और चंद्रमाके तुल्य निर्म्मलप्रकाश बनमाला धारणकरनेवाले हलधर श्रीबलभद्रजी हमारे पहले भी निजधामको पधारेंगे इसभांति वाराहभगवान् की बाणीसुन हाथजोड़ नम्रहो धरणी कहनेलगी कि हे लोकनाथ हेप्रभो यदुबंशको दुर्बासाजीने क्यों शापदिया इसका आप वर्णनकरें इसभांतिधरणीकी बिनयबाणीसुनश्रीवाराहजी कहनेलगे कि हेधरणि इस दुर्बासाजीके शापका कारण यहहोगा कि उस बासुदेवावतारमें जाम्बवान् की पुत्री परमसुन्दरी नारियोंमें रत्न जिसका नाम जाम्बवती होगा वो हमारी स्त्रीहोगी जिसका पुत्र स्वामिकार्तिकका अवतार दशहजार हाथीका बल जिसमें सांबनामक हमारा पुत्रहोगा सो और भी एकउमिरके कइक बालक मिलके कुछबालक्रीड़ा बागीचेमें कररहेथे कि भावीबश उसी बागीचेमें हमारे दर्शनकेलिये मुनियोंका समूहआय किसी वृक्षकेनीचेबैठि निज२ आवश्यकोंसेनिवृत्तहोनेलगा तबतौयदुबंश कुमार सबइकट्ठे होकर मुनियोंको परीक्षाकेलिये भावीवशऐसी बुद्धिउत्पन्नभईकि हेभाइयो आजुतकमुनियोंको त्रिकालज्ञ अर्थात्

भूत भविष्य वर्त्तमानके जाननेवाले सुनते आयेहैं आज इनकी परीक्षालेनाचाहिये यहबिचार सबके मनमें आयसांबको स्त्रीवेष बनाय आगेकरदुर्बासामुनिके समीपआय बिनयपूर्वक कहनेलगे कि हेभगवन् यहस्त्री गर्भवतीहै आपनिज वृत्तान्त पूछनेमेंलज्जा करतीहै इसलिये आप कृपाकरके बिचार पूर्वक बतलादीजिये कि पुत्रअथवा कन्याकया उत्पन्नकरैगी यदिपुत्रउत्पन्नहोतौबहुत उत्तमहोगा यहसुनदुर्बासाजीक्रोधवशहो यहकहनेलगे किहेधूर्तो यदिऐसही बुद्धितुम्हारेहुई तौ लोहका मुसलउत्पन्नहोगा जिस करके तुम्हारा कुलक्षयहोगा इसभांतिदुर्बासाजीके मुखकादारुण बचनक्रोधयुक्त श्रवणकर सब बालक डरेहुये हमारे समीपआये तबतौ हेधरणि उनकुमारोंकी आतुरता देखि उन्होंका वृत्तपूछा तबयथावत् वृत्तांत सबोंने कहसुनाया उसेसुन बालकोंसे हमने भी यही कहाकि जो दुर्बासाजीनेकहा सोई होगा इसमें मिथ्या नहीं होगा हेधरणि इसभांति शापका कारण हमने बर्णनकिया अबजो २ उत्तमस्थान द्वारकाजीमें होंगे उन्होंका श्रवण करो हेधरणि हमारा प्यारा जो द्वारकाहै उसमें समुद्र निकट पंचसर नामतीर्थहै जहांशतशाख नामवृक्षका वृक्षहै तिसपंचसरमेंस्नान करजो मनुष्य छः दिन व्रतकरें सोसब पापोंसे मुक्तहो स्वर्गमें निवासपावें औयदि उसपंचसरमें प्राणत्यागकरै तो सब पापोंसे छुटि उत्तमबिमान में बैठि अप्सराओंकरके सेवाको प्राप्त हमारे लोकको आवे औ हे धरणि प्रभासनामक्षेत्र उसीस्थानमें अतिपवित्रहै उसतीर्थमें कैसहीपापात्माहो स्नानकरतेही सबपापोंसे मुक्तहो और यदिपांचदिन व्रतकरशरीर त्यागकरे वो सातोंद्वीपों मेंक्रमसे जन्मले औराजभोगकर अंतमेंहमारे समीपको प्राप्तहोय हेधरणि उसप्रभासक्षेत्र में यहबड़ा आश्चर्य्यहै कि जलमें मकर बहुतहैं परन्तुतीर्थके प्रभावसे ऐसे क्रोधमुक्त हैं कि स्नान समय में समीपही रहते हैं औ किसी को दुःख नहीं देते और यदि

वहां कोई निज पितरों को पिण्डदान करके उस जलमें छोड़ै तो उस पिंडको देखतेही लेकर मकर भोजन कर जाते हैं और येभी विलक्षण है कि धर्म्मात्मा के पिंडको तो ग्रहण करते हैं औ पापियों के दिये हुये पिंडोंको स्पर्श नहीं करते हे धरणि जिस स्थान में यह आश्चर्य्य है उसका नामनाम पंचपिण्ड है अगाध जलसे पूर्ण औ जिसका पार एककोश का विस्तार उसतीर्थ में जो मनुष्य पांच रात्रि व्रतकरैं वोशरीर त्याग करके इन्द्रके समीप निवास पावैं हे धरणि यदि उस पंचपिण्ड तीर्थमें बिधिपूर्व्वक प्राण त्याग करैं तो सब पापोंसे मुक्तहो इंद्रलोक का सुख भोगि अंतमें हमारे समीप निवासपावैं और उस पंचपिंडतीर्थके प्राणत्यागमें यह चमत्कार है कि पुण्यात्मा मनुष्यका तो प्राणशीघ्र छुटजाता है औ पापात्मा मनुष्य किसी भांतिसे प्राणत्याग करै परंतु उस भूमिमें प्राण नहीं निकलता और हेधरणि उसतीर्थ में येभी आश्चर्य्य है कि बारहो महीनोंकी चौबीसो एकादशियों को मध्याह्न समय में शुक्लवर्ण का औ पीतवर्णका कमल विकसित होता है और हे धरणि उसीके समीप एक ब्रह्मसंगम नामक उत्तम तीर्थ है जिस तीर्थमें जलकी चारि धारा बड़े ऊंचे मणिपूर नामक पर्वतसे निकल के गिरती हैं तिसमें जो चारि व्रत करके स्नान औ पितृतर्प्पण करते हैं वो बैखानस लोक में जाय निवास करते हैं और यदि वहां प्राणत्यागकरैं तो सब पापोंसे मुक्तहो बैखानस लोकमें जाय अनेक भांतिके सुखको भोगकर अंतमें हमारे समीप आवैं हेधरणि उस ब्रह्मसंगम तीर्थका चमत्कार श्रवण करो कि जो जलधारा मणिपूर पर्वत से गिरिरही है उसके नीचे यदि पुण्यमान स्नान करैं तो वहधारा गिरती है यदिपापी स्नान करने लगै तो उसी समय बंधहो जाती है और हेधरणि उसी क्षेत्रमें हंसनामक तीर्थ है जिसमें एक धारा निर्म्मल औ बड़ी मोटी मणिपूर पर्व्वतसे गिरती है

उस धारामें जो मनुष्य छःदिन व्रत करके स्नान करे तो सब पापोंसे मुक्तहो बरुणलोकमें निवास करै और यदि उसस्थानमें प्राण त्याग करे तो सब पापोंसे छूट बरुण लोकका सुख भोगि अंतमें हमारे समीपआवे हेधरणि उस हंसकुंडमें यह आश्चर्य्यहै कि चौबीसौद्वादशियों को मध्याह्न समयमें हंस पक्षीका जोड़ा देखता है उसे पुण्यात्मा तो देखते हैं पापी नहीं देखते और जो उनहंसोंका दर्शन पावे वो मनुष्य परमसिद्धि को प्राप्तहोता है हे धरणि उसी स्थानमें कदम्ब नाम क्षेत्र अतिउत्तम पुण्यका देने वालाहै जिसके प्रभावसे वृष्णि बंशके राजापवित्रहो हमारे स्थान में प्राप्त भये यदि चारि दिन व्रत करके कदम्ब तीर्थ में स्नानकरै तो वह पुण्यात्मा पुरुष ऋषिलोकको प्राप्तहोय और यदि किसी भांति वहां प्राण त्यागकरे तो ऋषिलोकमें जाय वहांका सुख भोगि अन्तमें हमारे लोकको प्राप्त होय हे धरणि उस तीर्थमें एक बड़ा चमत्कारहै सोश्रवण करो कि कदम्ब वृक्ष के पूर्व दिशामें एक उत्तम जलकी धारा गिरती है जिससे वह कदम्ब सदा हरा औ गहरी छाया करके युक्त रहताहै औरउसी कदम्बमें माघमासकी शुक्ल द्वादशीको सूर्य्योदय समयमें पुष्प उत्पन्न होतेहैं वोपुष्प यदि किसीको लाभहों तो वह पुरुष अष्ट सिद्धियों करकेयुक्त लोकमें अनेक भांतिके सुखोंको भोगि अन्त में हमारे समीप आवे हेधरणि उसी स्थानमें चक्रतीर्थ नामक परम पवित्र तीर्थहै जिसमें मणिपूर पर्वतके ऊपरसे अति प्रबल पांच जलधारा गिरतीहै औ जिसमें बारहो महीनोंकी चौबीशो द्वादशीमें अर्द्धरात्रि समय में अतिमधुर औ श्रवण इन्द्रिय को सुख देनेहारा मनोहर शब्द सुन पड़ताहै औ सुगन्धयुक्त बायु भी उसीसमय बहतीहै वह समय पापियों को सदा दुर्लभ औ पुण्यजीवों को सदा सुलभहै औ हे धरणि उस चक्र तीर्थमें जो मनुष्य पांच रात्रि व्रत करके स्नान करे वोअन्तमें दशहजार वर्ष

स्वर्गलोक में निवास करें और यदि संसारका सुख त्यागिके चक्र तीर्थमें प्राण त्यागि करे वो सब पापों से मुक्तहो औ दशहजार वर्षोंस्वर्गलोकमें सुख भोगि अन्त में हमारे समीप आवे औ हे धरणि उस चक्र तीर्थके उत्तर भागमें एक अशोक नामक उत्तम वृक्षहै सोभी द्वादशीके दिन सूर्य्योदयकालमें पुष्पित होताहै वो पुष्पजिस किसीको मिलै वो आठसिद्धियोंकरके युक्तहोताहै परंतु वो पुण्यात्माई को प्राप्तहोताहै पापीको किसीप्रकारनहीं मिलता हेधरणि उसीक्षेत्रमें रैवतकनाम पर्व्वतहैं जिसमेंहम अनेकक्रीड़ा वासुदेव शरीर से करेंगे वह रैवतक नानाभांति के वृक्ष औ लताओंकरके शोभितहै औ जिसमें नांति भांतिकी शोभित शिला औ अनेक गुहाओं करके शोभित है और हे धरणि उसमें यह आश्चर्य्यहै कि जो वहां पापी हैं उसमें अनेक भांतिके वृक्षोंकेपुष्प पत्र गिरते हैं तथापि लुप्तहोजातेहैं औ वहजल सदानिर्म्मलही रहताहै तिसवापीमें जो छःदिन व्रतकरके स्नानकरै सो सबपापों से मुक्तहो सोमलोक को प्राप्त होताहै और यदिवहां प्राणत्याग करै तो सोमलोकका सुखभोगि अन्तमें हमारे समीप आवै उसी समीप जलका एकबड़ागहरा कुण्डहै जिसमें नांतिभांतिके मीन कच्छप आदि अनेक जलजन्तुओं करके पूर्ण औ अनेक भांति के कमलोंकरकेयुक्त महारमणीय देवता ओंकरके सेवितहै तिसमेंजो मनुष्य आठदिवस व्रत करके स्नान करते हैं वेदेवलोकमें जाय अप्सराओंकेसाथ नन्दनवनमें अनन्तसुख भोगतेहैं और हे धरणि उसतीर्थमें बड़ाआश्चर्य्य है कि वह कुण्ड प्रातःकाल थोड़ाहीजल से पूर्णहोने लगता है ज्यों ज्यों सूर्य्य बढ़ताहै औ दिनकी वृद्धि होती है त्योंत्यों वो भी बढ़ते २ मध्याह्न में पूर्ण होजाताहै औ दिनके साथ घटते २ सायंकाल फिर थोड़ासा जल होताहै औ इसी भांति बढ़ते २ रात्रिहीके साथ अर्द्धरात्रिके पुनःपूर्ण होताहै औ ज्यों २ रात्रि घटतीहै त्योंही बढ़ते २ प्रातःकालके पूर्व जल

रहि जाताहै हेधरणि उसकेपश्चिम दिशामें एकबड़ा उत्तमबिल्व वृक्ष है वो वृक्ष बारहोमहीनाओंकी द्वादशीको पुष्पित होताहै उस पुष्पों को पुण्यात्मापुरुषही देखते हैं पापीनहीं देखते हैं हे धरणि यदि सूर्य्यास्त समयमें पुष्प किसीकोमिले तो वह पुरुष सब पापोंसे मुक्त हो अष्ट सिद्धिको प्राप्त होताहै हे धरणि उसी स्थानमें अतिपुण्यका देनेहारा विष्णुसंक्रमणनामक तीर्थहै जिस स्थानमें हमकोबियाधने बाणसेबेधित कियाहै वहांही एकजलका कुंडहै जिसमें बड़े वेगसे एक जलकी धारा गिरती है तहां यह आश्चर्य्यहै कि बिष्णुभगवान् इन्द्र औ गणेश आदि सब देवता प्रत्यक्ष निवास करतेहैं सो केवल पुण्यवान पुरुषों को उन्हों का दर्शन सुलभ है औ पापियों को सदाही दुर्लभ है हेधरणि उस बिष्णु संक्रमण तीर्थके दक्षिणभागमें एक पिप्पल नाम वृक्ष है कि जो बारहो महीनोंकी दोनों द्वादशियोंको मध्याह्न समयमें फलकरके युक्तहोताहै वो फल यदि किसीको प्राप्तहो तो वहपुरुष अष्टसिद्धियों करके युक्त होताहै और हे धरणि उसी क्षेत्रमें हम उत्तरदिशाको मुखकरके सदा निवास करतेहैं उस कुण्ड में जो पुरुष चारि व्रतकरके स्नानकरे वो सब पापोंसे मुक्तहो सूर्य्यलोक को जाय और यदि वहांकिसीभांति प्राणत्यागकरै तो सबपापोंसे मुक्तहो सूर्य्यलोक में जाय वहां का सुख भोगकर अंतमें हमारे समीप आवै हे धरणि हम औ बलभद्र औ एकादशी तीनों श्री द्वारिकाजीमें सदा निवास करतेहैं इसीलिये चारोंदिशामें तीसरे योजन पृथिवी पवित्र है वहां जायकर हे धरणि जो हमारा दर्शन करतेहैं वो थोड़ेहीकालमें सब पापों से मुक्तहो उत्तमगति को प्राप्त होते हैं और यह कथा सब कथाओंसे पवित्र औ उत्तम है इसलिये मृत्युसमयमें इसका भूलजाना योग्यनहींहै और जो मनुष्य अपना कल्याण चाहै सो इस कथाको प्रातःकाल उठके पवित्र होकर पाठ करै सो निज इक्कीश कुल पुरुषोंके साथ सब

पापोंसे मुक्तहो उत्तमगतिको प्राप्त होय इसभांति हे धरणि श्री द्वारकाजीका माहात्म्य हमने वर्णनकिया अब का सुननेकी बांछा है सो हे धरणि हम वर्णन करैं॥

एकसौचवालीसकाअध्याय॥

सूतजी कहतेहैं हे शौनक इसभांति श्रीवाराह भगवान्के मुखारबिंद कीं बाणी सुन अति प्रसन्न हो हाथ जोड़ माथ नवाय पृथिवी कहनेलगी कि हे भगवन् मेरे दीनके ऊपर आपने बड़ी अनुग्रह की जो श्रीद्वारकाजीका तथा उसमें और जो नानाभांति के तीर्थ औ देवहैं उन्हों का वर्णन किया अब आप कृपाकरके और भी जो कोई अतिपवित्र औ गुप्तस्थान होयँ उसका वर्णन करैं इसभांति पृथिवी की बिनयबाणी सुन प्रसन्न हो वाराह भगवान् कहनेलगे कि हे धरणि तुम्हारी प्रीति से एक अति गुप्त बार्त्ता कथन करते हैं सो सावधान हो श्रवण करो एक तीर्थ सानंदूर नामक हमारा प्यारा मलय पर्वत के दक्षिणओ समुद्र के उत्तर समीपही है जिसमें हमारा सब काल में निवास रहता है हे धरणि उसी क्षेत्र में एक मनोहर हमारी प्रतिमा देवताओं करके स्थापित है जिसका निश्चय कोई नहीं करसक्ता कि यह प्रतिमा किस पदार्थ की है अपने २ मनमें जिसकोदेखके अनेक भांतिके तर्क करते हैं कोई उसे लोहकी कहताहै औ कोई ताम्र की कांश्यकी पित्तलकी शीशकी औ शिलाकी निज निजबुद्धिके अनुसार समुझसे कहते हैं हेधरणि जिसके दर्शन करनेसे मनुष्य संसारसागरसे पार होते हैं औ उसी स्थानमें एक जलका कुण्ड निर्म्मल औ मीठे जलसे भरा भयाहै औ जिसमें यह आश्चर्य्य है कि बैशाख मास की द्वादशी को मध्याह्न समय में सुवर्ण के रंगका कमल खिला भया दीखता है औ उसीके मध्य एक उत्तम छाया करके युक्त औ लताओं से वेष्टित दिव्य वृक्ष है जो किसी

देश के मनुष्यों करके पहिचाना नहीं जाता और उस सरमें ये भी आश्चर्य्य है कि अनेक भांति की मछली छोटी बड़ी जिसमें पूर्ण होरही है औ यदि कोई पिण्डदानकरके उसमेंछोड़े तौ जो सबसे बड़ा मीन है कि जिसके देह में चक्र का चिन्ह है सो मीन जबतक वहपिण्ड न खाय तबतक कोईमीनउसे स्पर्शनहीं करता यदि वह खाताहै तो उसके पीछे सभी मीन खातेहैं और हे धरणि उसी समीप रामसर नामक अतिगुप्तहमाराक्षेत्रहै कि जो अगाध जलसे भरा हुआ औ अपार है अर्थात् कोईपारनहीं जाय सक्ता औ रक्त कमलोंकरके पूर्ण है हेधरणि जोउसमें एक व्रत करके स्नान करे वो सब पापों से मुक्त हो बुधके लोकको जाय और यदि वहां प्राण त्याग करेतो बुधके लोकका सुखभोगि अंतमें हमारे समीप आवे और हेधरणि उसी रामसरकेउत्तर दिशामें ब्रह्मसर नामक तीर्थ है कि जिसमें एक बड़ाभारी शुक्लवर्णका कमलहै सोईकमल ब्रह्माजीका स्थानहै उसमें जोमनुष्य छःदिनव्रतकरके स्नानऔ पितरोंका तर्पणकरे वोसबपापोंसेछुट ब्रह्मलोक में निवास पावे और यदिवहां प्राणत्यागकरे वो ब्रह्म लोकका सुख भोग अंतमें हमारे समीप वास पावे हेधरणिउसी ब्रह्मसरकेसमीप संगमननामक तीर्थहै जोपवित्रऔनिर्मल जलसे पूर्णहै औ अनेकभांति के वृक्ष लता औ पक्षियोंकरके शोभित है समुद्रके एक योजनदूरि अनेकभांतिके कमलोंकरके शोभित पाप का नाशकरने हाराहै कि जिसमें छःदिनव्रतकरके स्नानकर औ पितरोंका तर्पणकरे वो पुरुष सबपापों से मुक्तहो वरुणजी के लोकमें जाय वहां अनेकभांति के ऐश्वर्य्य को भोगि अंतमें हमारे समीपआवै और हेधरणि उस संगमनतीर्थका यह पहिचानहै कि जिसमें अनेकप्रकारके वृक्षजो चारोओर उसतीर्थके बिराजरहेहैं उन्होंके पत्रपड़ते हैं परन्तुफिर वो देखने में नहीं आते कि क्या होतेहैं और हेधरणि उसीकेसमीप शक्रसरनामक अतिपवित्रक्षेत्र

है उस शक्रतीर्थका यह लक्षणहै कि वहांसे पूर्वदिशा में दोकोश भूमिके पहिले चार जलकी धारा बड़ेवेगसे गिरतीहैं औ एकमें मिलकर शक्रतीर्थ में आयमिलतीहैं और यह चमत्कार उसमें है कि उनधाराओं में यदिकोई पापीस्नानकरै तो बंधहोजातीहैं औ पुण्यात्माओंके स्नानमेंनहीं और वह धाराकम व ज्यादेकभी नहीं होती बराबर सदासमान रहतीहै और माघमासकी शुक्लद्वादशी को अर्द्धरात्रि समयमें अनेकभांतिके मधुरगानयुक्त शब्दसुननेमें आतेहैं हेधरणि उसीशक्रसर में जो मनुष्य व्रतकरके स्नान करे वो क्रमसे इन्द्र यम वरुण औ कुबेरके पुरमें जाय बहुतकाल अनेकभांतिके सुखको भोगता है और यदि नियमकरके वहांप्राण त्यागकरे तो सबपापोंसे मुक्तहो उत्तमविमानमें बैठि हमारेसमीप आवै और हेधरणि उसी शक्रसरके समीप सूर्पाकर नाम महा-पवित्र औ रमणीय क्षेत्र है जहां श्री परशुरामजी का आश्रम है इसीलिये हमारा सदा वहां निवास रहता है औ हमारे समीप सन्मुख एकसेमलका वृक्ष है उस सेमलके वृक्षको पापी मनुष्य नहीं देखते उसतीर्थमें पांचदिन व्रतकरके जो मनुष्य स्नान करै वोसब पापोंसे मुक्तहो ऋषिलोक में जातहो वहां अनेकभांतिका सुख भोगता है और यदि वहां किसी भांति प्राण त्याग करै तो सब पापोंसे छुटि ऋषिलोकका सुख भोगि अन्तमें हमारेसमीप आवै हेधरणि उसी सूर्पाकरके समीप वायुदिशा में जदाकुंड नामक तीर्थ है उस तीर्थका मण्डल चारो दिशामें दश २ योजन है वहां यदि पांच व्रत करके स्नानकरे वह पुरुष अगस्त्यलोकमें जाय सांति २के सुखको अनन्तकाल भोगताहै और हेधरणिजो वहां प्राण त्यागकरै तो सब पापोंसे मुक्तहो उत्तम विमानमें बैठि अप्सराओंकरके सेवाको प्राप्त अगस्त्यलोकमें जाय वहांकासुख भोगि अंतमें हमारे समीप आताहै और हेधरणि जिस जदातीर्थ में बारहो महीनाकी द्वादशी को सूर्य्योदय समय से लेकर औ

सायंकाल तक औ संध्यासे प्रातःकाल तक जल समान निश्चल रहताहै और अन्यदिनोंमें तरङ्गों करके युक्त चंचल रहताहै हे धरणि इस भांति सानन्दूर नामक तीर्थको अतिरमणीय मनके हरणहारा वृत्तांत वर्णनकिया इसके श्रवण करनेसे भक्तिउत्पन्न होतीहै जिसके होनेसे हम प्रसन्न होके उस पुरुषको मुक्तिदेतेहैं यह अतिशुभ पाप हरनेहारी कथा वर्णन किया हे धरणि जोइस कथाका श्रवण करे वोपुरुषतो मुक्तही होताहै परन्तु जोपाठकरता है वोपुरुष अवश्य हमारे समीप आताहै इसलियेनिरन्तर इसका पाठ करै यदि मुक्ति को सुलभ चाहै इस भांति हे धरणि यह अपूर्वकथा हमने वर्णनकिया अब कथाश्रवण कियाचाहतीहो॥

एकसौपैंतालीसवांअध्याय॥

सूतजी कहते हैं कि हे शौनक इस भांति सानंदूर तीर्थ का माहात्म्य श्री बाराहजीके मुखकमलसे सुनि धरणी बड़ीभक्तिसे युक्त हो विनयपूर्वक हाथ जोर कहनेलगी कि हेभगवन् करुणासिंधो नृसिंह लोकनाथ देवदेव सहस्रनेत्र कालरूप प्रभो आपने मुझपै करुणा करके अत्युत्तम सानंदूर तीर्थका माहात्म्य वर्णनकिया कि जिसके श्रवण से मैं कृतार्थ भई अब आप और भीविलक्षण तीर्थ वाक्षेत्र वर्णनकरैं जिसकेश्रवणसे मैं आनंदको प्राप्तहोऊं इसभांति विनय गद्गदवाणी सुनि बाराह भगवान् प्रसन्नहो कहनेलगे कि हेधरणि तुम धन्यहो और हमारी प्रियाहो इसलिये हम अत्यंत गुह्य औ पवित्रतीर्थ वर्णनकरतेहैं सो सावधान हो श्रवण करो सूतजी कहते हैं हे शौनक इस भांति श्री बराहजी भगवान् जबकथनकरनेका प्रारंभकरनेलगे उसीसमय श्रीसनत्कुमारभगवान् आय प्राप्त भये उनकोदेख सहित पृथिवीकेश्रीबराह नारायण अभ्युत्थान पाद्य अर्घ इत्यादिपूजाओंको करउत्तम आसनदिये तबश्रीसनत्कुमार भगवान् बड़ेहर्षसे पूजा

को स्वीकारकर प्रसन्नहो प्रशंसापूर्वक पृथिवीसे कहनेलगेकिहे धरणितुम बड़ी धन्याहो साक्षाद्विष्णु भगवान् के मुखारविंद से नानाभांति के धर्म्मोंका निर्णय श्रवण करती हो इसलिये हम भी इसकथाके श्रवणमें श्रद्धायुक्तहोकर आयेहैं औ सावधानहैं हे शौनक इसभांति श्रीवाराहजी भगवान् सनत्कुमारजीका बचन प्रसन्नहो कहनेलगे कि हे सनत्कुमार जी आप महात्मा हो औ उत्तम अधिकारियोंमें शिरोमणि हो इसलिये अबकथन करते हैं सो श्रवणकरो यह कहि कहनेलगे कि हे धरणि जो पूछतीहो सेा श्रवणकरो पृथिवीमें एक सिद्धबटनामक हमारा बड़ा पवित्र क्षेत्रहै जेा हिमालयपर्बतमें म्लेच्छोंकेबीच सर्बदा बिराजमान है अर्थात् जिस भूमिके मनुष्य म्लेच्छप्रायहैं हेधरणि उसीभूमिमें लोहार्गलनामकतीर्थ अतिपबित्रहै जिसकाप्रमाण चारोंओर पांच पांच योजनहै औ पापियोंकरके अतिदुर्गमहै उस स्थानमें सुवर्ण की प्रतिमामें हम सदा निवास करते हैं और उसी स्थानमें हमने अपनी मायाकरके ब्रह्मा रुद्र स्कन्द इंद्र बायु आदित्य बसुओंके गण अश्विनीकुमार चन्द्रमा औ बृहस्पति आदि सबदेवताओंकी गति रोककरके निवास दियाहै हे धरणि सब देवताओंके अर्गल अर्थात् गतिबन्धहोनेसे लोहार्गलनामहै उस लोहार्गलक्षत्रमें जो मनुष्य हमारा दर्शनकरै सो सबपापोंसे मुक्तहो हमारे समीपआवै और उस लोहार्गलतीर्थमें जो स्नानकरै तीनरात्रि व्रतकरके सो पुरुष हमारे स्वरूपको धारणकर उत्तम बिमानमें बैठ देवलोकमें जाय अनेकसहस्र बर्ष नन्दनबनमें नानाभांतिके सुखको भोगे और यदि अन्नको त्यागकर उस भूमिमें प्राण त्यागकरै सो सब पापोंसे मुक्तहो बहुतकाल देवलोकका सुखभोगि अन्तमें हमारे समीपआवै हे धरणि औरभी लोकके बिस्मय करनेहारा बृत्तांत श्रवणकरो कि जोई हमाराभक्त चौबिसौ द्वादशियोंमें किसी द्वादशीको वेदके बिधानसे उसलोहार्गलमें पूजनकरै तबउसजलमें

सपेदवर्णकाघोड़ा सब शृंगारोंकरके भूषित सजाभया औ उसके ऊपर एक उत्तम कांतिकरके युक्त तेजस्वीपुरुष जो हाथमें माला औ कमंडलु लिये आनन्द पूर्व्वक बैठा एक श्वेतवर्ण के पर्व्वत पर चढ़ रहाहै यह दीखता है जिसके देखने से अनेक जन्मों के पातक निवृत्त होतेहैं उसी लोहार्गल क्षेत्रमें एकपंचसर नामजल का कुंडहै उस कुंडमें जो चार रात्रि व्रतकरके स्नान करे वह मनुष्य चैत्ररथ नाम गन्धर्बके लोक में जाय बहुत काल आनन्द करै और उसक्षेत्रमें जो अन्नको त्याग कर हमारा स्मरण करता हुआ प्राण त्यागकरे वो सब पापोंसे मुक्तहो दिव्य देहको धार उत्तम बिमानपर बैठि अप्सरावों करके सेबित जाय गन्धर्बलोक का सुखभोगि अन्तमें हमारे लोकमें आवैहे धरणि उसी लोहार्गल क्षेत्र में नारदकुंड नाम तीर्थहै जिसमें पांच धारा निर्मल जलकी गिरतीहैं उस नारदकुंड में जो मनुष्य एक रात्रि स्नान करे वो सब पापोंसे छूटि नारदजीका दर्शनपातेहैं और यदिउस भूमिमें प्राणत्याग करै तो नारदलोकमें जाय वहांका सुखभोगि अन्तमें हमारे समीप बास पावे और उसी नारदकुंडके समीप बशिष्ठकुंड नाम तीर्थ है उसमें जो पांच रात्रि व्रत करके स्नान औ पितृ तर्पण करै सोबिमान में बैठि बशिष्ठलोक कोजाय और यदि वहां प्राण त्याग करे तो सब पापोंसे मुक्तहो बशिष्ठलोकका सुख भोगि अन्तमें हमारे लोकको आवै और हे धरणि पंचकुंड नामक तीर्थहै उसी स्थानमें किजिसका जल अत्यंत शीतलरहता है यहां पंचशिख नामक मुनिने तप कियाहै उस तीर्थमें जो पांच व्रत करके स्नान करै वह सब पापों को त्यागि ऋषिलोक को प्राप्त होय और यदि वहांप्राण त्याग करैतो सब पापोंसे मुक्तहो सप्तर्षि लोकमें जाय वहांकासुख भोगि अन्त में हमारे लोक में आवै हेधरणि उसी लोहार्गल क्षेत्रमें शरभंग नाम मुनिका स्थान है जिसके नाम शरभंगकुंड तीर्थहै उसकुंडसे बाहर जलकी धारा

बहतीहै जिसका नाम शरभंगा नदीहै उस नदी में जो छः दिन व्रत करके स्नान करतेहैं वोसब पापोंसे मुक्तहो मुनिलोकमें जाय निवास करते हैं और यदि वहां संसार बासना को त्यागि व्रत करके शरीर त्यागकरे तो बिमानमें बैठि मुनिलोकमें जाय वहां बिहार कर अन्तमें हमारे समीप आवै और भी उसी स्थान में अग्निसर नाम सब पापोंके दूर करनेहारा तीर्थ है तिसमें जो मनुष्य आठ व्रत करके स्नान करे वोसब पापोंसे मुक्त हो अग्नि लोकमेंजाय और यदिउस स्थानमें किसीभांति प्राणत्यागकरे वो सब भांति के सुखको अग्नि लोकमें जाय भोगि अन्त में हमारे समीप आवै हेधरणि इसी भांति वृहस्पति कुंडनाम तीर्थहैजिस का जल बेदके तुल्यहै जिसकी धारा उत्तरको बहती है उसतीर्थ में जोपांच दिनव्रतकरके स्नानकरे वो निष्पापहो बिमानमें बैठि वृहस्पति लोकमें जाय बिहार करै और यदि वहां प्राण त्याग करै तो वृहस्पति लोकमें जाय अनन्त सुख भोगि अन्तमें हमारे समीप आवै हेधरणि उसी भूमिमें बैश्वानर नाम कुंड है जहां हिमकी तुल्य जलकी धारा गिरतीहै वहांजो छः दिन व्रतकरके स्नान करै वोसब पापों से मुक्तहो बैश्वानरलोकमें जाय बिहार करै औ यदि वहां प्राण त्याग करै तो बैश्वानरलोकमें जायवहां बिहारकर अन्तमेंहमारेसमीप आवैऔरभीउसीस्थान मेंकार्तिकेय कुंडनामतीर्थहै जिसमें पांच जलकी धारा पर्वतसे गिरतीहैं जिस में छः दिन् व्रत करके जो स्नान करै सो निष्पाप हो स्वामि-कार्त्तिकका दर्शनपावे और वहां यदि चान्द्रायणव्रत करके प्राण त्यागकरे तौ बिमानमें बैठि दिव्यरूपहो कार्त्तिकेयजीके लोकमें जाय बिहारकर अन्तमें हमारे समीपआवै हे धरणि उसी लोहा-र्गलमें उमाकुंडनाम तीर्थहै जिसमें जो मनुष्य दशरात्रि व्रतकरके स्नानकरे तो निजनेत्रोंसे प्रत्यक्ष उमादेवीका दर्शनपावै औ अनेकसुख भोगकर अन्तमें उमाजीके लोकको जाय औरयदिवहां

प्राण त्यागकरे तो देवरूप धारणकर दिव्य बिमानमें बैठि श्री उमाजीके लोकमेंजायबहुतकाल बिहारकर अन्तमें हमारेसमीप आवै हे धरणि उस उमाकुंडके समीप महेश्वरकुंडनाम तीर्थ सब पापोंका हरनेहाराहै कि जिसमें हंस सारस आदि अनेकभांति जलपक्षियोंके वृंद बिहार करतेहैं औ हिमाचल पर्बतसे जिसमें बड़ीमोटी जलकीधारा गिरतीहै उसमहेश्वरकुण्डमें जो दशरात्रि ब्रतकरके स्नानकरै वो सबपापोंसे मुक्तहो यावज्जीव सुख भोगै औ अन्तमें दिव्यरूपहो रुद्रलोकको प्राप्तहो बिहारकरै यदिवहां प्राणत्यागकरै तौ उत्तमबिमानमें बैठि रुद्रलोकमेंजायअनेकभांति के बिहारकर अन्तमें हमारेसमीपआवै हे धरणि उसी माहेश्वरकुंड के थोड़ीदूर बामभागमें ब्रह्मकुंडनाम तीर्थहै जहां ब्रह्माजीने वेदों का उद्धारकियाहै जिसमेंपांडुरंगकी जलधाराहिमालयसे गिरती है तिसमें जो मनुष्य सातरात्रि ब्रतकरके स्नानकरै सो निष्पाप हो बिमानमें बैठ ब्रह्मलोकमें जाय बिहार करै और यदि वहां प्राणत्यागकरै तौ ब्रह्मलोकमें जाय वहां बिहारकर अन्तमेंहमारे समीपआवै हे धरणि इसभांति पबित्रों में पबित्र उत्तमों में उत्तम औ सबकथाओंका सार हमने बर्णनकिया इसकथाको जो मनुष्य पढ़ै वा सुनै वो इक्कीस पीढ़ियोंको नरकसे उद्धारकर उत्तमगतिको प्राप्त करताहै इस लिये इसकथा को मृत्युसमय में बिस्मरण करनाचाहिये यदि अपना परलोकका क्षेमचाहै तौ इस कथासे बिमुख न होय इसभांति बाराहनारायणके मुखारबिन्दका बचन सुन धरणी आनन्दमें मग्नहो कृतार्थ मान नारायणकी प्रार्थना अनेकभांतिकी किया औ सनत्कुमार मुनि प्रसन्नहो बाराहजीसे बिदाहो निजस्थानको गये॥

एकसौछियालीशका अध्याय॥

सूतजी कहते हैं हे शौनक इस भांति बिस्मयका देनेवाला

लोहार्गल तीर्थका माहात्म्य सुन बिस्मित हो धरणी हाथजोड़ नम्रहो कहने लगी कि हेभगवन्हे जगत्पते हेलोकनाथ आपकी कृपासे अत्युत्तम औ गुप्त वृतांत श्रवणकिया हेभगवन् हमआप कीदासी हो आपकी शरणमें हैं औआप हमारे प्रभुहैं इसआपके बिलक्षण कृपाकरके हम निर्म्मल होगई औयह निश्चयभया कि लोहार्गल से परे दूसराक्षेत्र नहीं है तथापि आपके मुखकमलसे बचनरूपी अमृतको पानकरती तृप्तिनहींहोती इसलियेहेप्रभोसब पवित्रोंमेंपवित्र औउत्तमोंमें उत्तम सबजीओंका कल्याणदाताजो तीर्थहोय उसका आप कथनकरें इसभांति पृथिवीका बचन सुनि प्रसन्नहो श्रीबाराहभगवान् कहनेलगे कि हेधरणि अबसावधान होश्रवणकरो उसतीर्थकामाहात्म्य बर्णनकरतेहैं किजिसके तुल्य तीर्थस्वर्ग मृत्युपाताल तीनोंलोकमें तीर्थदूसरा नहींहै जैसीमथुरा नाम पुरीहै जहांसाक्षात्हमारानिवास रहताहै इसबचनको सुनि धरणी कहनेलगी कि हे लोकनाथ पुष्कर नैमिषारण्य औकाशी आदि अनेक बिधिपुण्य भूमिकों को त्यागकरके आपमथुराहीका कथनकरतेहैं तौइसमें क्याबिशेषहै इसहमारी शंकाको आपकृपा करके दूरकरें इसभांति पृथिवीका बचनसुन श्रीबाराह भगवान् कहनेलग किहेधरणि हमसंपूर्ण माहात्म्यमथुराका बर्णनकरतेहैं सोसावधानहो श्रवणकरो यहकहि कहनेलग किहेधरणि और क्षेत्रतौहमारे निवासकरनेसे पवित्रहुआ औमथुरा जन्मलेनेसेअति उत्तमभईहेधरणि पापकेदूरकरनेहारी मथुराकी जोहमस्तुतिकर-तेहैं किजो २ जीवमथुरामें बास करतेहैं सो २ सबशरीर त्याग करनेसे मुक्तिको प्राप्त होतेहैं माघमासके अमावाश्याको जो फल श्रीत्रिबेणी जीके स्नानमें होताहै सोफल मथुरामें नित्य२ होता है औपूर्ण एकहजार बर्ष काशीबासमें जो फलहोताहै सो फल हे धरणि मथुराके स्नानमात्रहीसे होताहै औ रजोफलकार्तिकमास की पूर्णमासीको पुष्करजीके स्नानमें होताहै वो फल श्रीमथुरा

जीके स्नान मात्रहीसे होताहै हेधरणि कहांतक वर्णनकरें कि यह संसार हमारीमायासे मोहित भया भ्रमताहै औमथुरा मंडल में नहीं जाता किजिसमें सब पापोंसे मुक्तिहो उत्तमगतिको प्राप्तहोय औ स्नान करना तोउत्तमहीहै जोकहीं किसी भूमिमेंकोई मथुरा इस तीन अक्षरके शब्दको उच्चारण करतेहैं वोपापोंसेमुक्त होजातेहैं हेधरणि कुब्जाम्रकमें सूकर क्षेत्रमें औमथुरा में बिना संख्ययोग निवास करनेमात्रहीसे मुक्तिहोतीहै जोमनुष्यपवित्र होउत्तम नियमाचारकरके युक्तमथुरामें निवास करतेहैं वाऔउनों को जोभोजन भिक्षा देताहै वो दोनोंमोक्ष के प्राप्तहोत हैं हेधरणि उस मथुरापुरी में ययाति नाम क्षत्रियके कुलमें चारिमूर्तिसेहम उत्पन्न होंगे ऋषियों करके स्तुतिको प्राप्तमथुरा मण्डलमें कुछ ऊपर शतवर्षनिवास करेंगे उनचारों मूर्तियोंमें प्रथममूर्तिहमारी बलभद्रनामशुक्लवर्णकीहोगी दूसरीस्वर्णकेतुल्यकांतिप्रद्युम्ननाम होगी तीसरी अशोकवृक्षके पल्लवसमान वर्ण अनिरुद्धनाम होगी और चौथी मूर्त्ति नीलकमलके तुल्य कृष्णनामहोगी उस समय पवित्र औ कल्याणके देनेहारे हमारे अनेकनाम अति गुप्तहोंगे उसचारों प्रकारके शरीरसे संसारके कुशलक्षेमके लिये धर्म्मके दूषक अधर्म्मी घोरदुःख देनेहारे अनेक दैत्योंका संहार करेंगे हे धरणि जिस मथुरामें यमुनानाम नदी सदाबहतीहै जिसकाजन्म साक्षात् सूर्य्यभगवान्‌से हुआहै औ जो धर्म्मराजकी भगिनीहै जिसभांति प्रयागमें त्रिवेणीलोकविख्यातहै वैसही मथुरामेंआय यमुनालोक विख्यात मुक्तिकी देनेहारीभई औरभी तीर्थ मथुरामण्डलमें अनेकहैं जिन्होंमें स्नानकरनेसे मनुष्य सबपापोंसे मुक्त होय हमारे लोकको जातेहैं हेधरणि उसी मथुरामें विश्रांति नाम तीर्थ तीनोंलोकमें प्रसिद्धहै जिसमें स्नानकरनेसे मनुष्य हमारे लोकको जातेहैं सर्वतीर्थोंके स्नानमें जो फलहै सोफल श्रीकृष्ण जीकी गतश्रम मूर्त्तिके दर्शनमात्रसे होताहै हेधरणि जो पुरुष

जप,यज्ञ,ध्यान,संयमआदि करनेसे नहीं प्राप्तहोता सो बिश्रांति तीर्थके स्नानमें होताहै जो पुरुष एकदिन तीनोंकालमें अर्थात् प्रातः,मध्याह्न,सायंकालमें गतश्रम हमारी मूर्त्तिका दर्शन करै औ प्रदक्षिणकरै वो सबपापोंसे मुक्तहो बिष्णुलोकको जाय और भी संसारसागरसे पारकरनेहारा प्रयागनामतीर्थहै जिसमें स्नान मात्रसे पुरुष हमारेलोकको आताहै और कनखल नामक तीर्थहै परमगुप्त जिसमें स्नान करनेसे मनुष्य स्वर्गको जाताहै और तिन्दुकनाम तीर्थहै जिसके स्नानकरनेसे मनुष्य हमारे लोकमें प्राप्तहोताहै जिस तिन्दुकनामतीर्थमें जो वृत्तांत पूर्वसमयमें भया है सो श्रवणकरौ पाञ्चालबिषयमें एक काम्पिल्यनाम नगर धन धान्य करके युक्त जिसका राजा ब्रह्मदत्तनाम भया हे धरणि उस नगरमें तिन्दुकनाम नापितहुआ सो नापित उस काम्पिल्यनगर में बहुतकालसे निवास करताथा परन्तु उसके कुटुम्बके मनुष्य क्षीण होते २ सब कालबश मरगयेतबतो निज कुटुम्बके क्षयहोने से शोक करके दुःखी हुआ २ सब नगरके लोकोंका त्यागकरके श्रीमथुराजी को चला आया वहां आय ब्राह्मण के घरमें निवास कर उसी ब्राह्मणका सेवा करता औ श्रीयमुनाजीमें नित्य नियमसे स्नान करता कालक्षेप करनेलगा इसीभांति बहुत काल के निवास करनेसे किसीदिन मृत्युकोभी प्राप्तभया सो नापित तीर्थमें मृत्यु होनेसे अच्छे उत्तम जातिधन करके संपन्नब्राह्मण कुलमें जन्मले विद्वान्योगनिष्ठ जातिस्मरब्राह्मणभयाऔरमथुरा तीर्थकेप्रभावसे हमारेमेंउत्तम भक्तिनिष्ठहोहमारा भजनकरअंतमें मुक्तहोहमारे समीपकोआया हेधरणिउसी मथुरामेंसूर्य्यतीर्थ सब पापकादूरकरनेहाराहै जिसस्थानमें विरोचनकापुत्र बलिनेसूर्य्य काआराधन कियाहै किजिसमेंछुटा भयाराज्यऔ अखंडलक्ष्मी प्राप्तहोय इसलिये निराहारहो ऊर्द्ध बाहु सवाबर्ष पर्य्यंतअखंड व्रतकरनेसे सबमनोरथकोप्राप्तभया किजिसकोसाक्षात् सूर्य्य

भगवान्प्रकटहो कहनेलगे किहेबलेकिसलिये इतनाक्लेशसहकर हमाराआराधनकरतेहौ यहसुनहाथजोड़ नम्रहोबलिकहनेलगा किहेभगवन्राज्यसे भ्रष्टभया २ धनऔकुटुंबकरके हीनपातालमें बसताहूंवहांनिर्धनहोकर असमर्थकिसभांति कुटुंबकापालनकरूं यहबलिकीदीनवाणी सुनदयाकरके युक्तहोसूर्य्य भगवान् निज मुकुटसेलेकर एकमणि बलिकोदी सोलेप्रसन्नहो सूर्य्यकोप्रणाम करबिदाहोपातालकोचलागया हेधरणिइससूर्य्यतीर्थमें जोस्नान करै सोसबपापोंसे छुटनिजवांछितको प्राप्तहोय और यदिउस तीर्थमेंप्राण त्यागकरै तौउत्तम बिमानमें बैठिहमारे लोकमेंआवै औरआदित्यवारको वाचंद्रसूर्य्यके ग्रहणमें जोमनुष्यसूर्य्य तीर्थमें स्नानकरै वोसबपापोंसे मुक्तहोराजसूय यज्ञकेफलको प्राप्तहोय औहेधरणि जहांध्रुवजीने अपनीइच्छासे तपकियाहै उसतीर्थके स्नानमात्र करनेस ध्रुवलोक प्राप्तहोताहै औप्राणत्यागकरनेसे हमारे समीप बासपाताहै औरयदि कोईध्रुव तीर्थमें निजपितरोंको पिंडदानकरे किसीसमय तौउसके पितर सबबैकुण्ठवास पातेहैं औपितृपक्षमें विशेषकरके पिंडदेनाचाहिये जिसकेकरनेसे बहुत शीघ्रपितरोंको उत्तमगति मिलतीहै हेधरणि ध्रुवतीर्थके दक्षिण ऋषितीर्थहै जिसमें स्नानकरनेवाला पुरुषऋषि लोकको जाताहै औऋषितीर्थ में प्राणत्याग करनेसे पवित्रहो हमारे लोकको आताहै हेधरणि ऋषितीर्थके दक्षिण मोक्षनामक उत्तम तीर्थहै जिसमेंस्नान मात्रहीसेमोक्षप्राप्तहोतीहै औउसीस्थानमेंदेवताओं को दुर्लभ कोटि नामक तीर्थहै जिसमें स्नान औदान करनेसे मनुष्यहमारेलोकमेंआताहैउसकोटितीर्थमें मनुष्यस्नानकरनिज पितर औदेवताका जोतर्प्पण करतेहैं उनके पितर तृप्तहोउत्तम गतिको प्राप्तहोते हैं हेधरणि कोटितीर्थके स्नान करनेसे मनुष्य ब्रह्मलोकमें जाताहै औउसी कोटितीर्थके समीप वायुनामकतीर्थ है जो पितरों को अति दुर्लभहै हे धरणि बायुतीर्थमें पिण्डदान

करनेसे पितर पितृलोकमें प्राप्तहोतेहैं औरयदि ज्येष्ठ मासमेंपिंड दानकरैतो गयाके तुल्यपितरोंकी तृप्तिहोतीहै हेधरणिइसभांति हमने बारहतीर्थका वर्णनकिया ये तीर्थ देवताओंको भी दुर्लभहैं इनोमें स्नान,दान,जप,होम जोकुछउत्तमकर्म्मकरै सोसहस्रगुण फल होताहै इनोकेस्मरण करनेसेमनुष्यसबपापोंसेछुटिजाता है औइनतीर्थोंके माहात्म्य सुननेसे सबकामनाप्राप्त होतहैं॥

एकसौसैंतालीशकाअध्याय॥

वाराहजी कहतेहैं हे धरणि मथुरामंडलमें शिवकुंडनामतीर्थ के उत्तर नवतीर्थ विराजमान हैं उस नवतीर्थसे अपरतीर्थनहुआ है न होगा जिस नव तीर्थके स्नान मात्रहीसे मनुष्य भाग्यवान् औ रूपवान होताहै और अंतमें मनुष्य स्वर्गवास पाताहै जिस तीर्थ में नित्यस्नान करनेसे मनुष्य मुक्तिभागी होताहै हे धरणि अबहम औरभीकथनकरतेहैं सोश्रवणकरो जो संयमननामतीर्थहै **तिसमें जोवृत्तांत पूर्वसमयमें भयासो कथनकरते हैं एकनिषाद** जातिकामनुष्य महापापी **औ दुराचारीनैमिषारण्यकारहनेवाला** किसीसमय कार्यवश होकर मथुरामेंआया औ आतेही यमुनाजी के तरजानेकेविचार नदीमेंहलकरके तिरताहुआ उसपारको चला परंतुभावीबश संयमनतीर्थमें जलकेआवर्त्तमें पड़ाबडाय औडूबि के मृत्तहोगया सो निषाद उसतीर्थके प्रभावसे मरकरके सौराष्ट्र देशके राजाका पुत्रहो उत्पन्नभया जिसकानाम लोकविष्यातय-क्षधन यहभया सो राजा यक्षधन काशीके महाराजकी लड़की का बिवाहकिया जिसकानाम पीवरी औरतो उस यक्षधन राजा केअनेक रानियाँथीं परंतु पीवरीनाम रानीसबस्त्रियोंमें सुंदरीऔ प्रीतिपात्र भई तिस पीवरीके साथराजा यक्षधनबनमें,उपवनमें, नदीतटमें और उत्तम वाटिकाओं में प्रजापालनकरताभया बिहार करने लगा इसभांतिभोगमें आशक्तराजाकी आयुर्बल सत्तरिवर्ष

व्यतीतभई औरउसपीवरी रानीमेंराजायक्षधनके सातपुत्रऔपांच कन्या उत्पन्नभये सो राजायक्षधन पांचोकन्याओंको उत्तम२कुलमें राजपुत्रोंके साथ बिवाहकिया औ सातोपुत्रोंकाभी समय२ परबिवाहकिया इसीभांति राज्यको पालनकरताहुआराजायक्षधन औसानी पीवरी किसीदिनशयन कररहेथे किरात्रिसमयमें राजा स्वप्नमें निद्रावशहो हा मथुरा हामथुरा इसभांति कईक ार बोल उठाउसे सुनरानी राजाको सावधानकर पूंछनेलगीकि महाराज आपबारम्बार मथुराकानाम क्योंलिया इसभांतिरानीका बचन सुनराजाकहनेलगा किहेप्रिये शयनमें निद्रावश होकरके मनुष्य असंबद्ध बोलताही हैं उसबचनको क्यापूछनायोग्यहै देखोहेप्रिये जोमद्य अदिकरके मत्तहो बिक्षिप्तहो निद्राबशहो उनमनुष्योंके बचनका कुछठिकाना नहीं रहता वो अप्रमाणबोलेते हैं इसलिये जोहमने निद्रामें कुछकहा उसको न पूंछो यह सुनरानी पीवरी हाथ जोड़नम्रहोकहनेलगी किहेस्वामिन् यदिहमको आपप्यार करते हैं औसबभांतिसे हमारामान रखतेहैं तो आपनिजचित्त के वृतांतको कथन करैं क्योंकि आजतक आपने किसीसमय यह शब्दनहींउच्चारणकिया यहबचन निद्रायुक्तकी नहींहै आपहमसे छिपातेहैं इसलिये जबतक इसकाठीक२वृत्तांतनकहोगे तबतक हमभोजननकरैंगी औ जलपानभी न करैंगी प्राणत्याग करदेंगी वाराहजी भगवान् कहतेहैं हेधरणिइसभांतिनिजरानीपीवरीका बचनसुनराजायक्षधनकहनेलगा किहेप्रियेयदितुमहठकरकेपूंछतीहोतौयह जो बड़े वृद्धोंकाबनाया राज्यहै इसे बड़ेपुत्रको दो औ औरेपुत्रोंको यथाअधिकार सबको राज्यदो और सबघरका बन्दोबस्तकरके मथुराको चलो तो वहां कथन करैंगे और हेप्रिये यह भीविचार करनाचाहिये कि राज्य औ पुत्र इत्यादि जो संसारके पदार्थहैं सो किसीदिन बिवश त्यागकरना होगा इसलिये इसी समय सब त्यागकर चलो त्यागकरनेमें बड़ाफलहै औ शास्त्रमेंभी

यही लिखाहै कि विद्याके तुल्यनेत्र दूसरा नहींहै औ नेत्रकेतुल्य बल दूसरा नहींहै औ संग्रहके परे दुःखनहीं औ त्यागके परेसुख नहीं इसलिये अब काल व्यतीतकरना योग्यनहींहै इसी समय बड़ेपुत्रको बुलाय राज्याभिषेक करना उचितहै यहबिचार अधिकारियोंको बुलाय बड़ेपुत्रके राज्याभिषेककी आज्ञादी तबतौ हे धरणि राजाकी आज्ञामाफ़िक अधिकारियोंने सब सामान इकट्ठे कर हाथजोड़ कहनेलगे कि श्री महाराजके आज्ञा माफ़िक सब तयार होरहाहै यहसुन राजा यक्षधन मंत्रियोंके औ ब्राह्मणोंके साथ यथाबिधि राज्याधिकारदे औ शिक्षादे थोड़े मनुष्योंके साथ सहित रानीपीवरीके यात्राकर कछुकदिनमें आय मथुरामें पहुंचे औ इन्द्रपुरीके तुल्य मथुराकी शोभादेख आनन्दहो मधुबनमेंजाय बिष्णुस्थानका दर्शनकर वहां निवासलिया जिस मधुबनमें भाद्र महीनेकी शुक्लपक्षकी एकादशीको स्नानकरनेसे मनुष्य मुक्तहोता है और दूसरा तालबन नाम पुण्यभूमिहै जिसमें धेनुकासुरका बध बलदेवजीने कियाहै औ तीसरा कुमुदबन नाम पुण्यभूमिहै जिसके दर्शनसे मनुष्यकृतार्थ होताहै औ भाद्रमासके शुक्लएकादशीको उस स्थानके दर्शनसे मनुष्य रुद्रलोकको जाताहै औ चौथा सब बनों में उत्तम बहुलबन नाम बनहै उसके दर्शन से मनुष्य अग्निलोकको जाताहै औ पांचवां काम्यकनाम सर्वोत्तम बनहै जिसमें बिमलकुंडनाम तीर्थहै जिसके दर्शनसे औ स्नानसे मनुष्य बिमलहो नन्दनबनमें जाताहै औ छठा यमुनाकेपार भद्र नामक उत्तमबनहै उसबनके दर्शनसे मनुष्य हमारा मक्तहोताहै औ अन्तमें नागलोकमें बास पाताहै औ हे धरणि सातवां लोक बिख्यात खादिरबनहै जिसके दर्शनसे मनुष्य हमारे लोकको आताहै औ आठवां महाबननाम बन है कि जिसके दर्शन से मनुष्य इन्द्रलोकमें बासपाताहै औ नवम बन सबपापोंका हरनेहारा लोहजंघकरके रक्षित लोहजंघनाम बनहै औ दशवां बन

देवताओंकरके पूजित बिल्वबनहै जिसके दर्शनसे मनुष्य ब्रह्मलोकको जाताहै और ग्यारहवां योगियोंका प्रियभांडीरनाम बन है जिसके दर्शनमात्रहीसे मनुष्य गर्भबास नहींजाते मोक्षकोप्राप्त होतेहैं हेधरणि भाण्डीरबनमें जाय बासुदेवजीका दर्शन करके मनुष्य मुक्तिको प्राप्तहोताहै औ बारहवां वृन्दाबन नामबनहै हे धरणि वह वृन्दाबन हमको सदा प्याराहै और जिसके दर्शनसे अनेक पाप दूरहोतेहैं हेधरणि जो मनुष्य वृंदाबनका औ गोबिंद का दर्शन करतेहैं उनकी उत्तमगति होतीहै और उनके सम्पूर्ण पातक निवृत्त होतेहैं ॥

एकसौ अड़तालीशका अध्याय॥

सूतजी कहेतेहैं हे शौनक इस भांति वृन्दाबन आदि बनोंका बर्णनकरके फिर बाराहजीकहनेलगे कि हेधरणि इनसबतीर्थोंका दर्शनऔ सेवन करताभया राजा यक्षधनऔ रानीपीवरी येदोनों एकत्र बैठे एकान्तमें रानी पीवरी कहने लगी किहे स्वामिन् अब आप मथुरामें आयेहो जिसलिये सो कृपा करके कथन करौयह सुन राजा कहने लगा कि हे प्रिये किसी दिन तुमभी सोती हुई निद्राके बश मथुरा२ कह उठीहौ सो क्योंउच्चारण कियाउसका भेद यदि तुम कहौ तो हमभी कहैं इसभांति निजपतिकीबाणी सुनपीवरी रानी हँसकरके कहनेलगी कि हेप्राणपति मैं निजवृत्तांतबर्णन करतीहूं सो आप श्रवणकरैं इतनाकह कहनेलगी कि एक समयमें मैं पीवरी गंगातीरके रहने वाली कार्तिक मासकी द्वादशीको मथुरामें आई वहां देवयात्राके लिये नावमें चढ़ीजाती थी किदैवयोग नावडूब गई औडूबतेही नावके मेंभी डूबिकेमरगई तबतो हेस्वामिन् उस यमुनाके बीच मृत्यु होनेसे काशिराजकी कन्या भई और आपने बिवाह किया इतनी अवस्था बीती और पुत्र कन्या भये तथा तीर्थके मृत्यु होनेसे पूर्व जन्मका स्मरण नहीं

गया इतना निज रानीका कथन सुन राजाने भी पूर्वजन्ममेंजैसा वृत्तांत भयाथा निषाद योनिमें सो सब आदिही से कह सुनाया तबतो दोनों परस्पर स्त्री पुरुष एक एकका वृत्तांत सुनओ बिस्मित हो हमारे भजनको कर अन्तमें कालवश होनेसे हमारे लोकको आये इस भांति हेधरणि हमने आश्चर्य्य वर्णनकिया जोमनुष्य धारापतन नामतीर्थमें निज शरीरको त्यागकरताहै सोस्वर्गलोक को प्राप्त होताहै और यमुनेश्वरके दर्शन करनेसे औ प्राणत्याग करनेसे मनुष्य बिष्णु लोकको प्राप्त होताहै हेधरणि इससे परे सबतीर्थोंमें उत्तम नागतीर्थहै जिसके स्नानकरनेवाला पुरुषस्वर्ग को जाताहै औ प्राणत्याग करनेसे हमारे लोकको आताहै और हे धरणि कंठाभरण नामक अति पबित्र तीर्थहै जिसमें स्नान करने से मनुष्य सूर्य्य लोकको प्राप्त होताहै और उस कंठाभरण के समीप प्राणत्याग करनेसे हमारेलोकमें प्राप्तहोताहै औरहेधरणि उसी भूमिमें ब्रह्मालोक नाम उत्तमोत्तम तीर्थहै जिसके जल पान से औस्नान करनेसे मनुष्य ब्रह्मलोकमेंजाय बिहार कर हमारे लोकमें आताहै और हे धरणि यमुनाके मध्यमें एक सोमतीर्थ है जहांहमारा दर्शन सोमको भया है तिस तीर्थमें जो मनुष्य स्नान करे वोसोमलोकमें जाय बिहारकरै औ यदि प्राण त्याग करै सो सोमलोकमें जाय वहांबिहार कर हमारे लोकमें आवे औरहे देवि सरस्वतीपतन नामक्षेत्र बड़ा अपूर्व है जिसके जल स्पर्शकरनेसे मनुष्यमूर्खभी होयतो योगीराज होता है और यदि तीनरात्रि ब्रतकरउस सरस्वती पतन तीर्थमें स्नानकरै वो ब्रह्महत्या नाम पातक से निवृत्तहोय औरयदि वहां प्राणत्याग करैतो उत्तम बि-मान मेंबैठ हमारे लोकमें आवै और मथुरामें हेधरणि दशाश्वमेध नामतीर्थहै जिसमें स्नानकरनेसे मनुष्य अश्वमेध फलकोप्राप्तहो देवलोकको जाताहै और हेधरणि मथुराके पश्चिम ऋषियोंकरके पूजित ब्रह्माजीका निर्माणकिया मानसनाम तीर्थहै जिसमेंस्नान

करनेसे मनुष्य सबपापोंसे मुक्तहो हमारे लोकको आता है और हेधरणि उसी समीपबिघ्नराज नामतीर्थ है संपूर्णपाप हरनेवाला उसतीर्थमें जोमनुष्य चतुर्थी को अष्टमीको वा चतुर्दशी को स्नान करतेहैं वोबिघ्नों करके पीड़ित नहीं होते उन स्नान करने वाले पुरुषोंका बिद्या, यज्ञ, व्रत, दान, आदि क्रियामें कभीभंगनहोंहो ताश्रीगणेशजी उसकामदाकुशल करते हैं सोहेधरणि उसगणेश तीर्थमें प्राणत्यागकरैतौ बिमानमें बैठिगणेशलोकमें जायबिहार करअंतमें हमारे समीपआवै औरभी मथुरामंडलमें परम पबित्र कोटितीर्थनामक्षेत्रहैं जिसकेस्नानकरनेसेही कोटिगोदानका फल होताहै और यदिउस कोटितीर्थमें प्राणत्याग करैतौ बिमान में बैठिसोमलोकमें जायबिहार करअंतमें हमारे लोकको आवै हेधरणि उसतेपरे आधेकोश परशिवक्षेत्रहै जहांबैठिकै शिवजीमथुरा की रक्षाकरतेहैं उसभूमिमें जायस्नान करशिवजीके दर्शनसेमथुरा मंडलके सब तीर्थोंका फल होताहै और वहांयदि प्राणत्याग करै तौ हमारे लोकमें आवै॥

एकसौउनचाशकाअध्याय॥

वाराहजी कहतेहैं हेधरणि औरभीएकअत्यंत दुर्लभक्षेत्रवर्णन करतेहैं सो श्रवणकरो एकमथुरामंडलमें अनंतनामतीर्थहै जिसमें अनंतभगवान् अचलध्रुवलोकके कल्याणनिमित्त वहांनित्य निवास करतेहैं जोमनुष्य अनंतभगवानकादर्शनदक्षिणायनउत्तरायण बिष्णुपदी आदि पुण्य दिनोंमें करते हैं वोसब पापोंसे मुक्तहो हमारेलोकको जातेहैं और अक्रूरनाम क्षेत्रहै हेधरणिजिसकेदर्शन करनेसे मनुष्य राजसूयअश्वमेधके फलको प्राप्तहोतेहैं इसतीर्थमें हेधरणि जो पूर्वमें वृत्तांतभयाहैसो बर्णनकरतेहैं सावधानहो श्रवणकरो एक बैश्यजाति सुधननाम हमाराभक्तधनऔ बंधुकरकेयुक्त बड़े आनंदमें रहाकरता उस सुधनभक्तके दिनसदा

हमारे भजनमें व्यतीतहोतेघरमें स्त्रीपुत्रआदिसब कुटुंबकापालन करताभया अनेकभांतिके संसार व्यवहारमें युक्तसब भांति का उद्यमकरता परन्तुमानकूटओं तुलाकूटकभीनहींकरता इसभांति बसताभयानित्यश्दिव्यचंदन,धूप,पुष्प,नैवेद्यआदि अनेकपदार्थों से हमारा पूजनकिया करता और महीनो कीदोनोंएकादशियोंको नियमसेहमारे मंदिरमें जायबिधिपूर्वकपूजाकर संपूर्णरात्रिनृत्य ओगानकरनेमेंव्यतीतकरताइसीप्रकार सदाकियाकरताथा किसी एकादशीको दिनमें व्रतकिया सायंकालमें हमारे मंदिरको जागरणके लियेजाताथा किरास्तेमें एकब्रह्मराक्षस उससुधनबणिकके पैरोंको पकड़लिया तबतोवहबणिक कहनेलगाकि तू कौनहै औ किसलिये हमारा पैरपकड़ा छोंड़दे तबतोवह राक्षस बोलाकि हे बणिक हमतौ राक्षसहैं औक्षुधा करके पीड़ितहैं अबभावीबशयहां तुममिलेहौ तुम्हारेमांसऔरुधिरसेंमैं तृप्तहूंगायहराक्षसकीबाणी सुन सुधन कहनेलगा किहेराक्षस तेराकथनतौ ठीकहीहै परन्तु जोहमारा नियमहै उसेकरकेमैंआऊंतौ यहशरीर तेरे अर्पणहै यथेच्छभोजनकर तृप्तहो यहहमारा शरीरअनेक भांतिकेपक्वान, मिठा,ईघृत करकेपलरहीहै इससेतूअधिक तृप्तहोगा अबतौहम नारायणके मंदिरमें जागरणकेलिये जातेहैं इसव्रतको भंगनकर इसव्रतकोपूराकर बड़ेप्रातःकाल अवश्यआऊंगा तोइक्षापूर्वक इस शरीरसेतृप्तहोना इसभांतिसुधनभक्तकाबचनसुनराक्षसहँसकरके बोला हेधूर्त क्योंमिथ्याभाषणकरताहै क्योंकि कौनऐसासंसारमें मनुष्यहै जोराक्षसकेमुखसे बचकरकेफिरप्राणदेनेको आवैगा इस भांतिराक्षसकाबचनसुनसुधनभक्तयहकहनेलगा किभाईहैतोसत्य परन्तु मैंतो कुछप्राणोंके मोहसे असत्य भाषण नहींकरता केवल व्रत औनियम भंगहोनेसे डरताहूं औआजतककिसीव्यवहारमें मैं असत्य भाषणनहीं किया अबभीनहीं करूंगा देख हेराक्षस यह जगत्सत्यमूलहै औसत्यहीमें टिकाहै देखो ऋषिमुनि आदि सब

सत्यहीसेसिद्धिकोप्राप्त होतेहैं यदिहम वणिकहोके अनेकभांतिके व्यभिचारकरके असत्यकथन नहींकिया तोअब क्याकरेंगे हेराक्षस हमारीप्रतिज्ञा श्रवणकर सत्यरहम रात्रिजागरणकर बिष्णुभगवान्के आगेनृत्यऔगानकरके प्रातःकालअवश्यआवेंगे देखोसत्य में जगत् टिकरहाहै औ ब्राह्मण सत्यमानिकै वेद पढ़तेहैं औराजा सत्यसेराज्यकरतेहैं औसत्यसे पृथिवीस्थितहै सत्यसे निजकन्या औरको दीजातीहै सत्यसेस्वर्ग औमोक्षहोताहै औसत्यसे सूर्य्य औ चंद्रमा प्रकाश करतेहैं इन्द्रआदि लोकपालसत्यहीमेंहैं जिससत्य कोयेसबमानते वोसत्यमेरानष्टहोजायजोमैंप्रातःकालनआऊं और भी हेराक्षस श्रवणकर जोपाप रजस्वलास्त्रीकेगमनसेहोताहै जो पापभूमिदान करके फिरहरलेनेसे होताहै जोपाप पतिव्रतास्त्रीके त्याग करनेसे होताहै जोपापएक पंक्तिमेंभोजनभेदकरनेसेहोताहै और हेराक्षस जोपाप अमावास्या को श्राद्धकरके स्त्रीसंगकरनेसे होताहै जोपाप गुरुस्त्री, भ्रातृस्त्री, पुत्रबधू, मित्रबधू, मामाकीस्त्री औ पितासेछोटे भाईकीस्त्री इनोंकेगमनमेंहोताहै औराजपत्नी, ब्राह्मण पत्नीऔबिधवाके गमनमें जोपापहोताहै सोपापहमको प्राप्तहोय जोहम प्रातःकाल तुम्हारेसमीपनआवें और जोकिसीको कुछदेने को कहकर फिरनदेवे उसकापाप औजो निजकन्यादान देनाकहै औरको देय औरको उसकापाप और राजपुरोहितका पाप ग्राम पुरोहितकापापब्राह्मण वध करनेवालेकापाप मद्यपानकरनेवालेका पाप औचोरकर्म्म करनेवालेका व्रतत्यागनेका जोपाप होताहैऔ येलोक जिसगतिकोजातेहैं उसगतिको हमजायँ औ इन्होंके पाप हमकोहोयँ जोहम तुम्हारे समीप प्रातःकालनआवें वाराह नीकहतेहैं हेधरणि इसभांति सुयनभक्तका प्रतिज्ञावचन सुनकेब्रह्मराक्षस अत्यंत हर्षहो मधुरवाणी से बोला कि इच्छापूर्वक जाओ तुम्हारे प्रणामहैं औतुमधन्यहो यहसुन सुयनब्रह्मराक्षससे मुक्त हो बड़े हर्षसे आय हमारे मन्दिरमें जागरण नृत्य औगान आदि

उत्साहसे वहरात्रिव्यतीतकर औप्रातःकाल (ओंनमोनारायणाय) इसमंत्रसे बारम्बार प्रणामकर औ श्रीयमुनाजीमें स्नानकर जो ब्रह्मराक्षस के समीप चलनेका विचार किया उसी समय मूर्ति धारणकर प्रकट हो हम बोले कि हे सुधन भक्त बड़े शीघ्रकहाँ-को चलाहै तब तो धरणि चहबणिक हमकोदेख प्रणामकर यह बोला कि ब्रह्मराक्षस के पास जाता हूं यह सुन हमने निषेध किया कि नजावो देख सब धर्म्म शरीर के साथ हैं शरीर बिना कौन धर्म होसक्ताहै इसलिये शरीर राक्षसको देना उचित नहीं है यह हमारी वाक्य सुन सुधन बोला कि महाराज उसराक्षस से सत्य साक्षी देकर आयाहूं सो क्योंनजाऊं यहकह सत्यनिष्ठ हो बड़ेशीघ्र राक्षसके समीप जाय पहुंचा औ मधुर बाणीसे रा-क्षस से कहनेलगा कि हे राक्षस हम तुम्हारे समीप आयेहैं अब देरी न करो इच्छा पूर्वक इस हमारे देहका मांस औ रुधिरसुख पूर्वक भक्षण करो श्रीलोकनाथ बिष्णु भगवान् का मैं जागरण आदि नियम समाप्ति करके आयाहूं और हे राक्षस आज तक कभी मिथ्या कथन नहीं किया उसी सत्यसे हमको भक्षण करो इसभांति सुधनका बचन सुन औ सत्यता देखि मधुर बचन से राक्षस कहनेलगा कि हे सुधन तू धन्यहै जिसकी बुद्धिइसभांति सत्यमें स्थितहै हे साधो हम तुमसे बहुत प्रसन्नहैं अब तुम स-मस्त जागरणका फल हमकोदो जिसके प्रभावसे हमारी मुक्ति होय यहराक्षसकी बाणी सुन सुधन कहनेलगा किहे राक्षससब नृत्य औ जागरण कौन देताहै हमतो एकदिन का वा आधेदिन का वाएकप्रहरका नदेंगे इच्छामें आवे सो करो इसभांति सुधन का बचन सुनब्रह्मराक्षस कहनेलगा किहे पुण्यमान एकही दिन का पुण्यदो जिसमें हम इस दुःखसे मुक्तहों उत्तम गतिको जायँ यहसुनि सुधनभक्त बोला किहेराक्षस हम तुमको कुछपुण्यनहीं देंगेजोतुम्हारीइच्छा हो सो करो परन्तु यहतो कहोकि किस

अपराध करनेसे यह योनि तुमको प्राप्तभई है यहसुन हँसकरके ब्रह्मराक्षस बोलाकिहे सुधनतुमसेक्यागुप्तहै हमतौतुम्हारेसमीपी अग्निदजनाम छंदोग्यब्राह्मणहैं नित्यबाहरसे जबघरकोआनेलगैं तब ईंट और किसी की उठाय के लावें इसीभांतिसाराघरपराई ईंटसे पूर्ण करदिया हे सुधन उस कर्मसे हम ब्रह्मराक्षस भये अब तुम मिलेहो औ हमारी तुम्हारी मैत्रीहुई इसलिये उपकार करना तुमको उचित है औरतौ क्याकहें परन्तु जोएक दिनका भी विश्रांतितीर्थ का पुण्य देंदेव तौ हमारा कल्याण होजाय यह सुनसुधन बोलाकि हेराक्षस बहुत उत्तमबात तुमनेकहा एकदिन का नृत्यफल हमने तुमको दिया यह सुनतही वो राक्षस मुक्तहो उत्तम गतिकोगया औसुधनबणिक नारायण का प्रणामकर जब आगे जानेलगा उसीसमय परमेश्वर के पार्षद आय उत्तम बिमान लेकर कहनेलगे किहे सुधन तुम धन्यहो तुम्हारी पुण्य से हम बिष्णुभगवान्के आज्ञासे बिमान लाये हैं इसपर बैठिदिव्य रूप धारणकर बैकुंठ को चलौ यहसुनसुधन प्रसन्नहो चतुर्भुज रूप धारणकर सकुटुंम्ब बैकुंठको सदेह प्राप्तभया इसभांति हे धरणि अक्रूरतीर्थका प्रभाव हमने बर्णनकिया अक्रूरतीर्थ ते परे दूसरातीर्थ न भयाहै न होगा जिसतीर्थके प्रभावसेसुधनबणिक सकुटुम्ब मुक्त हुआ हे धरणि कार्त्तिक मासके शुक्ल एकादशीको अक्रूरतीर्थ में स्नान करनेसे मनुष्य राजसूय यज्ञके फलको प्राप्त होताहै औ कार्त्तिककें अमावास्या को जो अक्रूरतीर्थमें वृषोत्सर्ग करताहै वो पितरोंको तारता है अर्थात् उसके पितर यमबाधासे छुट स्वर्गमें बासपाते हैं और जो कार्त्तिकी को पितृश्राद्ध करते हैं उनके पितर अनन्त तृप्तिको प्राप्तहो स्वर्गको जाते हैं॥

एकसौपचासकाअध्याय॥

बाराहजी भगवान् कहते हैं हेधरणि मथुरामें वत्सक्रीडनक

नाम अतिपवित्र क्षेत्रहै जहां रक्तचन्दन करके शोभित रक्तशिला है जिसके स्नानमात्रहीसे मनुष्य वायुलोक को प्राप्तहोताहै और वत्सक्रीडनकमें प्राणत्यागकरनेसे सबपापोंसे मुक्तहो हमारेलोक कोप्राप्तहोताहै हेधरणि परमउत्तम भाण्डीरकनाम तीर्थ पापोंका हरनेहाराहै जिसके चारों दिशाओंमें शाल,ताल,तमाल,अर्ज्जुन, इंगुदी,पीलु,करीर आदि अनेक वृक्ष शोभाको देरहे हैं उस भाण्डीर तीर्थमें स्नानकरनेसे मनुष्य सबपापोंसे मुक्तहो इन्द्रलोक में प्राप्तहोताहै औ प्राणत्यागकरनेसे हमारे समीप आताहै और हेधरणि जहां हम गौवोंके औ गोपबालकोंके साथ अनेकभांति की क्रीड़ा करीहै वह वृन्दाबन नाम देव दानव दुर्ल्लभक्षेत्रहै उस वृन्दाबनमें एकरात्रि व्रतकरकेजो स्नानकरे वो अन्तमें सबपापों से मुक्तहो दिव्यविमानमें बैठि अप्सरावों करके सेवित स्वर्ग में जायप्राप्तहोय औयदि वृन्दाबनमें प्राणत्याग करेवोहमारे लोक में आवै हेधरणि औरभी पापके नाशकरनेहारा तीर्थवृन्दाबनमें हैजहांहमने केशीनामदैत्यका बधकियाहै वहांजो मनुष्यएकबार स्नानकरै उनको श्रीगंगाजीके शतबार स्नानका पुण्य प्राप्तहोय और केशीतीर्थसे शतगुण पुण्य वहांहै जहां कंसका बधकरके बिश्रामकियाहै हेधरणि जो केशीतीर्थमें निजपितरोंको पिण्डदान करैंगे उनके पितरगयाक्षेत्रके तुल्यतृप्तहोकर उत्तमगतिको प्राप्त होंगे और केशीतीर्थमें स्नान,दान,जप,होम आदिकरनेसेअग्निष्टोमनाम यज्ञकोफल प्राप्तहोगा औरहेधरणि द्वादशादित्यनाम जोतीर्थहै वहअत्यंत दुर्लभहै जहांहमशीतसे व्यथितहोके सूर्य्य काआश्रयलियाहै और वहांही कालीयनाम सर्प्पका दमनकिया है औसूर्य्यको स्थापितकिया और आदित्योंसे हमनेयह कहा कि जो तुम्हारी बांछाहोय सो बरमांगोयहसुन आदित्यबोले किहेभगवन् यदिहमको आपबरदेतेहौ तौ यहतीर्थ हमारेनामसे प्रसिद्ध होय यहआदित्योंका बचनसुन हमनेयहकहा कि यहांजोस्नान

करैगावोनिष्पापहो आदित्यलोकको जायगा औरयहां यदिप्राण त्यागकरै सो महापातकोंसे मुक्तहो हमारेलोकमें प्राप्तहोगा आदित्यतीर्थके उत्तरओ कालियके दक्षिणइनदोनों तीर्थोंके मध्यजो प्राण त्याग करेंगे वो सब पापोंसे मुक्तहो मुक्तिको प्राप्त होंगे ॥

एकसौइक्यावनकाअध्याय ॥

बाराहजी भगवान् कहतेहैं हेधरणि अब यमुनाजीके पारके तीर्थोंका श्रवणकरो जो यमलार्ज्जुननाम तीर्थहै वो अति पवित्र औमुक्तिका देनेहाराहै औरजहांहमने शकटको उलटाहै जिसके उलटनेसे अनेकघीके भांडफुटगयेहैं उसभूमिमेंस्नानओ व्रतकरने से अनंतफल प्राप्तिहोताहै उसभूमिमें ज्येष्ठमासकी शुक्लद्वादशी को स्नान और दान करनेसेमहापातक दूरहोताहै औरज्येष्ठमास केशुक्लद्वादशीको शकटकुंडमें स्नानकर मथुरामें बिष्णुदर्शनकरने से मनुष्य मोक्षको प्राप्तहोताहै यमुनाजलमें स्नानकर पबित्रहो इंद्रियोंको जीत जो मनुष्य गोबिंदजीका दर्शन पूजन करतेहैंवो परमपदकोप्राप्तहोतेहैं औरहेधरणि पितृलोकमेंपितरनिज२गोत्र केमनुष्योंको सदायह आशीर्बाद देतेहैं किहेपरमेश्वर हमारेकुलमें ऐसा कोईहोयजो मथुराजीमें आययमुनामें स्नानकर ओ गोबिंद पूजाकर व्रतकरेगा कि जिसकी पुण्यसे हमारी उत्तम गतिहोगी और ज्येष्ठमहीनेकी द्वादशीको कौनसा पुरुषहमारे कुलमेंधन्य होगा जोयमुनानीरमें पिंडदान करेगा हेधरणि बहुलबननामजो पुण्यभूमिहै तहां रुद्रकुंडहै जिसमें स्नानमात्रसे मनुष्यरुद्रलोक कोजाताहै औरचैत्रमासके शुक्लद्वादशीको रुद्रकुंडमें स्नानकरने से पुरुषहमारे लोकको जाताहै इसमेंसंशय नहींकरना औरहेधरणिजो भांडहृदनाम तीर्थहै तिसमें सदा सूर्य्यका दर्शन होताहै उसअर्कस्थलकुंडमें जोपुरुषस्नान करताहै वोसबपापोंसे मुक्तहो सूर्य्यलोकको प्राप्तहोताहै ओ अर्कस्थलके समीप बिमल जलसे

पूर्णदेवताओंको दुर्लभ सप्तसमुद्रनामकतीर्थहै जिसमेंस्नानकरने से मनुष्यनिष्पापहो जिसलोकमें जानेकीइच्छाकरै वहांहीप्राप्त होताहै औरयदि सप्तसमुद्रतीर्थके समीपप्राणत्यागकरे तौ हमारे लोकमें प्राप्तहोताहै हेधरणि जो बीरस्थलनामक गुप्ततीर्थनिर्मल जलसे पूर्ण औ अनेक भांतिके कमलों करके शोभितहै उस तीर्थ मेंस्नान औ व्रतकरनेसे मनुष्यबीरलोकमें जायप्राप्तहोताहैऔर प्राणत्याग करनेसे हमारेलोकको आताहै हेधरणि वहांही कुश-स्थलनामतीर्थ पापराशिके हरनेहारा और पुण्यका देनेहारा है जिसमें स्नानकरनेसे मनुष्यपवित्रहो ब्रह्मलोकमें प्राप्तहोताहै और वहांप्राणत्यागकरनसे हमारेसमीपआताहै औउसीस्थानमें पुष्पस्थलनाम शिवक्षेत्रहै जहांकेस्नान करनेसे मनुष्यशिवलोक में जाय प्राप्तहो शिवजीके साथ बिहार करताहै औ शिवक्षेत्रमें प्राणत्यागकरनेसे हमारे समीपकोआताहै हेधरणि ये पांचस्थल पंचमहा पातकके दूरकरनेहारेहैं इनोंमें स्नानकरनेसे मनुष्य ब्रह्मलोकमें प्राप्तहोताहै औरगोपीश्वरनामजो महापातक दूर करनेहारा क्षेत्रहै जहांअनेक वृन्दगोपियोंके साथ श्रीकृष्णजीने बिहार कियाहै औरयहां यमलार्ज्जुनका निपातरूपक्रीड़ाकियाहै औजहां गाड़ीउलटिके घृतके अनेकभांड़ोंको फोड़दियाऔरजहां इंद्रका सारथीमातलि आकररत्नकेघटोंसे गोपवेषहमाराअभिषेक कियाहै वो गोपीश्वरमातलिकरके पूजितहै उसीस्थानमें सप्त सामुद्रिकनाम कूपबिमल जलसेपूर्ण जिसजलके तर्पणकोरात्रि दिनपितरबांछाकरते हैं इसलियेसप्तसामुद्रिक कूपमेंजोपिंडदान औतर्पण चंद्रबारको करते हैं उनकेपितर कोटिबर्षपर्य्यंत तृप्त रहतेहैं हेधरणि गोबिंदजी औगोपीश्वरके मध्यमेंजो निजशरीर त्यागकरे ओशक्रलोकमें जायअनंत काल बिहार करताहै और रुद्रजी गोबिंदजी ब्रह्मा औगोपीश्वर इनोंके मध्यमेंस्नान,दान, तर्पण,पिण्डदान आदि करनेवाला पुरुष निजइक्कीशपीढ़ियोंको

उत्तम गतिदेताहै और इनोंमें स्नानकरनेसे मनुष्य सबपापोंसे मुक्तहो बिष्णुलोकमें बिहारकरताहै औप्राणत्यागकरनेसे मनुष्य हमारास्वरूपहो हमारेलोकमें आताहै औरहेधरणि बसुपत्रनाम तीर्थमेंफाल्गुननाम तीर्थमें औ वृषभांजन नाम तीर्थमें स्नानदान आदिसत्कर्म्मोंके करनेसे मनुष्य देवलोकमें बिहारकरता है औ प्राणत्यागकरसे हमारे लोकको आता है और मथुराके पश्चिम आधायोजनमें धेनुकासुरकी भूमिमेंतालबन नामतीर्थ है जहांके स्नान.दान आदिकर्म्मकरनेसे मनुष्यबांछितफलको प्राप्तहोता है और वहांही संपीठक नामजो उत्तमक्षेत्रहै जिसमें कमलकरके युक्तनिर्म्मल जलका कुंडहै उसकुंडमें जो मनुष्य एक ब्रतकरके स्नानकरे औ अग्निष्टोम नामक यज्ञ के फलको प्राप्तहोता है और यदिवहां प्राणत्यागकरे वोहमारे लोकको आताहै औमथुरा केपश्चिमदिशामेंआधेयोजन परहमने पुत्रबांछा करके तपकिया है औ उसीतपके करनेसे सूर्य्यप्रसन्नहो पुत्ररूप बरदिया उस सूर्य्यतीर्थ में जो भाद्रमासके कृष्णसप्तमी को स्नान दानकरे उनका सबमनोरथ सूर्य्यभगवान्पूर्ण करते हैं और वहांही संतानके लिये राजामनु औ रानी सत्तरूपाने तप करके सूर्य्य को प्रसन्नकिया औ संतानफल को प्राप्तभये और वहांहीं सूर्य्यका आराधन संतानके बांछाकरके राजाशांतनुने किया जिसकेकरने से भीष्मनाम पुत्रप्राप्तभया इसलिये वहांजो मनुष्य सूर्य्यदेव प्रीत्यर्थ स्नान,दान,ब्रतआदिजो उत्तम करतेहैं उनकीबांछा सूर्य्य भगवान् बहुत शीघ्र सफल करतेहैं ॥

एकसौबावनकाअध्याय ॥

बाराहजी कहतेहैं हेधरणि हमारा तीर्थमथुरामंडल बीशयोजनका प्रमाणहै इसके मध्यमें जो २ तीर्थहैं उनोंके स्नानकरने से मनुष्य सबपापोंसे मुक्तहोताहै औ वर्षाकालमेंतो माथुरमंडल

केतीर्थोंमें स्नानकरनेसे अधिकफलहोताहै हेधरणि पृथिवीमेंजितनेतीर्थऔ पुण्यभूमिहैं वो सब हरिशयनके समयमथुरा मंडलमें आयप्राप्तहोतेहैं इसलिये जो मथुरामें हरि शयनकीयात्राकरता है वो अनंततीर्थोंके स्नानफलको पाताहै औरसुप्तोत्थित जोहमारा दर्शनकरतेहैं वोअनेक जन्मोंके पातकसे निवृत्तहोतेहैं जो मनुष्य मथुरामेंजाय केशवभगवान् का दर्शन करताहै औ यमुना जी में स्नानकरताहै वो अवश्य हमारे लोकमें आता है और जो मनुष्य मथुराका प्रदक्षिण करताहै औ केशवका दर्शनकरताहै उसको साताद्वीप पृथ्वीके प्रदक्षिणका फलहोताहै औरजो मनुष्यगोघृत करकेपूर्णपात्रमें दीपदान केशवजीके समीप देताहै वोपांचयोजन बिस्तारके बिमानमें बैठिदीपोंके वृक्षोंकरकेयुक्त अप्सराओं करके सेवित अनेकभांति के धनधान्य रत्नवस्त्रों करके पूर्ण सिद्ध, चारण गंधर्वोंकरके स्तुतिको प्राप्तहो असंख्य काल देवलोकमें निवास करताहै औपुण्यक्षीण होनेसे पृथिवीपर आय सर्व भौमराजाहोता हैयह बाराहजीका बचनसुन धरणी कहनेलगीकिहे भगवन् इस मथुराक्षेत्रके चारौंदिशामें कौन२देवता रक्षाकरतेहैं सोआपवर्णन करैं यहधरणीकीबिनयबाणीसुन वाराहजी कहनेलगेकिहेधरणि हमारे क्षेत्रके रक्षाकरनेकेलिये हमने पूर्वदिशामें इन्द्रको दक्षिण मेंयमको पश्चिममें बरुणको औउत्तरमें कुबेरको आज्ञादिया वेही सबकालमें रक्षाकरतेहैं औ मध्यमें सदाशिव उमापतिरक्षाकरतेहैं इसलिये जो मनुष्य यात्राकरनेको जिसदिशासेआवै वो उसदिक्पालका पूजनकरके मथुरामें प्रवेशकर शिवजीका पूजनकरने सेमथुराकी यात्रासफल होतीहै औरहेधरणिजो मथुरामें गृह वा प्रासादबनातेहैं वोसाक्षात्जीवन्मुक्त होतेहैं औअंतमें उनकोचतुर्भुजबिष्णु जाननाचहिये हेमहाभागे मथुरामेंजो निर्म्मलोदकनाम कुण्डहै उसमें साक्षाद्बिष्णुका निवासजानोऔर उससरमेंजोएक रात्रिव्रतकरके स्नानकरताहै वो सबपापोंसे मुक्तहो उत्तमगतिको

प्राप्तहोताहै यदि उसस्थानमें प्राणत्यागकरे वो उत्तम विमानमें बैठिबिष्णुलोकमें जायबिहार करताहै औरहेधरणि उसबिमलोदक कुण्डमें यहआश्चर्य्यहै कि ग्रीष्मऋतुमें ठंढाऔ हिमऋतुमें उष्णउसका जलओकभी उसकीबर्षामेंवृद्धिनहींहोती और ग्रीष्ममेंक्षीणनहीं सर्बदासम रहताहै और जो२ मथुरामेंतीर्थहैं उन्होंके स्नानकरनेसें निष्पापहो मनुष्य उत्तमगतिको जाताहै औरवृंदाबन औमथुरामें जितने पुरातनकूप,तडाग,झरने,कुंडऔनदीआदिमेंजो जलहै सोसबतीर्थरूपहै औरहेधरणि मथुरामेंपद२सबभूमि तीर्थसे किंचित्कमनहींहै अर्थात् मथुरातीर्थमयहै औपापहरनेहारीहै हेधरणि मथुरामें मुचुकुंद नामसबतीर्थोंमें उत्तमतीर्थहै उस मुचुकुन्दकुंडकेस्नानकरनसे मनुष्यअभीष्टफलकोप्राप्तहोताहैऔ प्राणत्याग करनेसे हमारेलोकको जाताहै हेधरणिइसजन्ममेंजिसनेपापकियाहोय अथवा अन्यजन्ममें वोसंपूर्णपातक गोबिंदइस नामलेनेसेदूरहोताहैऔर बहुतमंत्रोंकरकेक्याप्रयोजनहै जिसकी भक्ति जनार्दन में है जो नरक में गिड़ रहे हैं उनोंके लिये केवल जनार्दन भगवान्ही शरण हैं जो मथुरा का प्रदक्षिण करके औ जनार्दन भगवान् के समीप स्नान करते हैं उनको अनंत फल होता है हे धरणि शयनसे उठे हुये जनार्दन के दर्शन से मनुष्य सब पापोंसे मुक्तहो चतुर्भुज होता है और कार्तिक मास के शुक्ल नवमी को जो मथुराकी प्रदक्षिणा करके बिष्णुकादर्शन करताहै वो सब पापोंसे मुक्त हो उत्तम गतिको प्राप्ति होताहै हे धरणि ब्राह्मणके बधकरनेहारा,मदिरापानकरनेहारा,गोबध करनेहारा, औ व्रतका त्याग करने हारा,मनुष्य मथुरा के परिक्रमा करनेसे पवित्र होताहै जो मनुष्य कार्तिक शुक्ल अष्टमी को मथुरामेंजाय बिधि से यमुना में स्नानकर ब्रह्मचर्य हो उस रात्रिवृतकरे औ पवित्र बस्त्र धारण कर नवमीको प्रदक्षिण कर जनार्दन का दर्शनकरे वोसब पापोंसे मुक्तहो बैकुंठको जाताहै औरजोमनुष्य

प्रदक्षिणा करने वाले का स्पर्श करताहै वोभी निष्पाप होउत्तम गतिको प्राप्त होताहै श्री मथुरा में जाय स्वयंभू भगवान् का दर्शन कर विमलोदक नाम कूपमेंजो निजपितरोंको तर्प्पण औ पिंडदान करताहै उनके पितर देवलोक मेंजाय निवासकरते हैं और हे धरणि विमलोदक में स्नान करने से मनुष्य देवलोक में जाता है औ वहां प्राण त्याग करने से मनुष्य हमारे लोकमें प्राप्त होता है ॥

एकसौतिरपनका अध्याय॥

इसभांति बाराहजी का बचन सुन धरणी हाथजोड़ नम्र हो कहने लगी किहे भगवन् आपके मुखारविंदसे अनेक भांति के तीर्थोंका माहात्म्य श्रवण किया औ अनंत पुण्य देनेहारा तीर्थ औ पृथिवी का परिक्रमा माहात्म्यश्रवण कियाकि जिसके करने से मनुष्य भवसागरपारहो उत्तम गतिको जाताहै परन्तुयेदोनों अबके मनुष्योंके लिये दुर्घटहैं इससे आप कृपाकरके पृथिवीके परिक्रमा का कोई सुगम उपाय बर्णन करैं जिससे मनुष्यों का कल्याण होय यहिभांति धरणी की बिनय बाणीसुन वाराहजी कहनेलगे कि हे भद्रे पृथिवी में चारोंदिशा का परिक्रमा करना इनमनुष्योंको अत्यंत दुर्लभहै क्योंकियह भूमंडल समुद्रवलय साठि कोटि योजन प्रमाण है जिसकासाक्षी केवल आकाशही हैऔर नहींहोसकता इसलिये प्रथम इस पृथिवी मंडलकापरिक्रमा वायुने किया फिर ब्रह्माजी,लोमशमुनि, नारदजी,ध्रुवजी, जांबवान,रावण,औ हनुमान इन्होंने किया और बालि नामक किष्किंधा के रहने वाला बानर ने किया फिर सुग्रीव मार्कंडेय औ युधिष्ठिर आदि पांडवोंने प्रदक्षिणा किया और हे धरणि अब अल्प बुद्धि अल्प पराक्रम वाले मनुष्योंसे पृथिवी का परिक्रमा मनसे करना दुर्लभ है औ साक्षात् करना किसभांति हो

सकता है इसलिये हे धरणि सात द्वीपोंकरके युक्त औ समुद्रोंके साथ पृथिवी का परिक्रमा किया चाहै औ श्रीमथुराजीका परिक्रमा करै जो पुरुष मथुरामेंजायके परिक्रमा करताहै उसे सातो द्वीपके प्रदक्षिण का फल होताहै इसलिये यत्न पूर्वक मथुरापुरी का प्रदक्षिणा करना उचित है इसभांति वाराहजीका बचनसुन धरणी कहनेलगीकिहे भगवन्किस बिधान से मथुरा प्रदक्षिणा करनेसे पृथिवी मंडलके प्रदक्षिणा का फल होता है सो आप कृपा करके कथन करें यहिभांति पृथिवी की प्रार्थना सुनवाराह जी कहने लगे कि हे धरणि जो तुम प्रश्न करती हो यही प्रश्न प्रथम सप्तऋषियोंने ब्रह्माजीसे किया कि हे ब्रह्मन् पृथिवीमात्र के परिक्रमा में जो फल होताहै वोही फल किसी प्रकार थोड़ेही परिश्रम करनेसे होय सो आप बर्णनकरें यह सप्तर्षियोंकी बाणी सुन ब्रह्माजी कहनेलगे कि हे ऋषीश्वरो संपूर्ण देवताओंमें संपूर्णतीर्थोंमेंओ संपूर्ण दानओंमें जोफल होताहै औ सहितसागर पृथिवी परिक्रमामें जो फल होताहै सो मथुरामण्डलके परिक्रमा में होताहै यह हम सत्यकरके कथनकरतेहैं यहसुन निश्चयकर सप्तऋषि निज२ स्थानकोगये हे धरणि कार्तिकमासके शुक्लनवमी को जो मथुरा परिक्रम करते हैं वो सब पापोंसे मुक्तहो उत्तम गतिको प्राप्त होते हैं॥

एकसौचौवनका अध्याय॥

वाराहजी कहतेहैं हेधरणि अब परिक्रमाबिधान मथुराजीका बर्णन करते हैं सो श्रवण करो कार्तिक मासके शुक्लाष्टमीको मथुरामें जाय बिश्रांतितीर्थ में स्नान कर पितृ औ देवका पूजन कर जनार्दन जीका दर्शनकर व्रतकरे वा थोड़ा भोजनकर ब्रह्मचर्य्य से रात्रि जागरण पूर्वक व्यतीत करै प्रातःकाल उठिमौन हो स्नान कर सन्ध्या तर्पण से निवृत्त हो ताम्रपात्र में तिल

अक्षत कुशको ले संकल्पकरै कि हे परमेश्वर जिसविधानसे और जिस फलके लिये ध्रुव आदि महात्माओं ने श्री मथुराजीका प्रदक्षिण किया है उसी रीतिसे हम करते हैं यह कह सूर्योदय समय में यात्राका प्रारम्भकरै प्रथम दक्षिण कोटितीर्थमें जाय पवित्र हो श्री हनुमान्‌जी का पूजन कर प्रसन्न कर आज्ञा लेय कि हे भगवन् हम मथुरा का परिक्रम करते हैं आपकी कृपा से सफल होय और जिस भांति रामजीके यात्रामें सबभांति आपने कार्य्य सिद्धि कियाहै इसभांति आपके कृपासे हमारीयात्रा निर्विघ्न पूर्ण होय इस भांति हनुमान् औ गणेशजी की प्रार्थना कर औ चन्दन,पुष्प,माला,धूप,दीप,नैवेद्य आदिसे पूजन कर वहां से जाय पद्मनाभ भगवान् का दर्शन औ पूजन करै फिर जाय बसुमती देवी का दर्शन पूजन कर अपराजिता देवी का दर्शनकर कंसबासनिकादेवी, औग्रसेनीदेवी, चर्च्चिकादेवी,दानवोंकी संहार करने हारी वधूटीदेवी औ जयदादेवी इनोंकादर्शन औ पूजनकरै फिरगृहदेवी औवास्तुदेवीका पूजनकर आज्ञालेमोनहो दक्षिण कोटितीर्थ मेंजाय स्नानपितृ तर्पण करदेवताओं के दर्शन औ प्रणामकर बिशुद्धा नामदेवीका दर्शन करै हेधरणि फिरजो बालक्रीड़ावसरमें गोपोंक साथ श्री कृष्णजीमे जो २ क्रीड़ाकियाहै वो २ स्थानसंपूर्ण पापके दूरकरनेहारेतीर्थ हैं वहां जाय स्नानतर्पणकर अर्कस्थल,वीरस्थल,कुशस्थल,पुण्यस्थल, औमाहास्थलमें जाय पापनिवृत्ति होनेकेलिय स्नानतर्पणकरैहे धरणि इनतीर्थोंके दर्शनसे मनुष्य ब्रह्मलोकमेंजाय बिहारकरता है फिरसब पातक दूरकरने हाराहै मुक्तिनामतीर्थ मेंजाय स्नान करै जिसमें पूर्वकालमें अश्वमर करके मुक्तिकोप्राप्तहुआ उसका दर्शनकर शिवकुण्डमें जाय स्नानकर शिवपूजनकर मल्लिकाका दर्शनकरै फिरकदंबबनका दर्शनकरदक्षिणदिशामें जाय चर्च्चिका देवीका दर्शन करै जोचर्च्चिका योगिनीके गणो करके युक्तसदा

मथुरा की रक्षाकरतीहै फिरवहांसे जाय अरुष्टश्या औरुष्टश्यादो देवीलोकपूजित बालकोंके रक्षाकेलिये सदानिवासकरतीहैं उसकापूजन करपापके हरनेहारा वर्षखातनाम कुंडमें स्नानऔतर्पण करै फिरक्षेत्रपाल का दर्शनकर वहांसेजाय भूतेश्वर महादेव का दर्शनकरै तब मथुराकी प्रदक्षिणा सफलहोतीहैजहांश्रीकृष्ण जीने बालकों के साथ सेतुबंध क्रीड़ा किया है उसका दर्शनकर महा पातकदूर करने हारा बालह्रद नामतीर्थका दर्शनकरै जहां बालकों के साथ जल क्रीड़ा कृष्णजी ने किया है हे धरणिजिसके दर्शन करने से मनुष्य सब पापोंसेमुक्त होताहै वहांसेजाय सब पापोंके हरने हारा कुकुट तीर्थ का दर्शनकरै जिसके दर्शन से कैसहू पापात्मा होयवो जीवन्मुक्त होताहै वहांसे जायस्तंभोद्धव नाम कृष्ण मुक्तिके देनेहारा स्तम्भ उसका दर्शन औ परिक्रमा कर जाय उस भूमिका दर्शन करै जहां देवकी औवसुदेव दोनों गर्भ के रक्षा निमित्त शयन कियाहै जिसके दर्शनसे महा पातक निवृत्त होते हैं वहांसे चलि नारायणजी के स्थानकोजाय जहांके यात्रा करनेसेही मुक्ति होती है वहांजाय परिक्रमादर्शन पूजन आदि करि विधि विनायक का दर्शन करै फिरजायकृष्णकरके पूजित कुब्जिका औ बामनी दो ब्राह्मणियों के दर्शन करै वहांसे आज्ञा ले गरतेश्वर नाम शिवका दर्शन औ पूजन करै जिसके दर्शन औ पूजनसे यात्रा सफल होतीहै हे धरणि यात्रा सफल होने के लिये महाबिंध्येश्वरीदेवी का दर्शन करै जिसने श्रीकृष्ण का रक्षा कियाहै फिर वहांसे चलप्रावल्ली नामदेवी का पूजनऔ दर्शन करै हेधरणि जब गोपोंके साथ सहितबलभद्र कंसके मारनेके लिये संमति किया वहां देवी प्रकटहो रक्षाकर कंसको विध्वंस किया तब श्रीकृष्णजी ने संकेतेश्वरी नामकरके देवीका स्थापन किया जिसके दर्शन औ पूजनसे सबकामना सिद्धि होते हैं वहांसे चल गोकर्णेश्वर कुंड में स्नान कर

शिवजीका दर्शन करे जिसके दर्शन से सब पातक दूर होते हैं फिर सरस्वती नदीका दर्शन स्नान औ तर्पण कर बिघ्नराज नाम गणेशका दर्शन करै जिसके दर्शनसे अनेकबिघ्न दूरहोते हैं वहांसेचलकर साध्वीनाम गंगाका दर्शनकरैजिसकेदर्शनसेअनेक पातकों से निवृत्तहोकल्याण कोप्राप्त होताहै फिर रुद्र महालय नाम तीर्थमें एक रात्रि निवास करनेसे यात्रा सफल होतीहै औ वहांसे चल उत्तरकोटि में जाय गणेशजी का दर्शन औ पूजन करै जहां श्रीकृष्णजीने गोपोंके साथ द्यूत खेलके उन्होंकी स्त्री औ धनजीताहै औ अनेकभांतिके हास्यकर गोपोंसे जो २ पदार्थ जीता सोई गोप ल्याइ श्रीकृष्णजीके अर्पणकिया वहां दर्शनकर श्रीयमुनाजीमें आय स्नानकर पितरोंका तर्पणकर गार्ग्यनामतीर्थ में आय स्नानकर भद्रेश्वरका दर्शनकरसोमेश्वरतीर्थमेंजाय स्नान कर सोमेश्वरजीकादर्शकरैजिसमें यात्रा सफल होय और वहांसे चल सरस्वती संगमतीर्थमेंजाय स्नान तर्पणकरै वहां यथाशक्ति दान देनेसे विष्णु सायुज्यफल होताहै हेधरणि सरस्वती संगम से चल घंटाभरणतीर्थ, गरुड़केशवतीर्थ, धारालोपकतीर्थ, बैकुण्ठ तीर्थ, खण्डबेलकतीर्थ, मन्दाकिनीसंयमनतीर्थ, असिकुण्डतीर्थ, गो पीतीर्थ, मुक्तिकेश्वरतीर्थ, औ बैलक्ष्यगरुड़तीर्थ, इनसबतीर्थोंमें क्रम करके स्नान तर्पण दान आदि सत्कर्म्म करता बिष्णुका दर्शन कर अबिमुक्तेशनाम जो सप्तऋषियों करके स्थापितहै वहांजाय दर्शनकर हाथजोड़ यहप्रार्थनाकरै कि हेभगवन्यहजो मथुराका परिक्रमाकर रहेहैं सो हमारा सफलहोय इसभांति क्षेत्रकेस्वामी जो शिवहैं उनकी प्रार्थनाकर जाय बिश्रान्ति तीर्थमें स्नान औ तर्पणकर गतश्रम भगवान्का दर्शन औ प्रणामकर जाय सुमंगला देवीका दर्शनकर निज यात्राका सफल होना प्रार्थना कर यह मंत्र हाथ जोड़ पढ़ै (सर्वमंगलमांगल्येशिवेसर्वार्थसाधिके। यात्रेयंत्वत्प्रसादेन सफलामेभवत्विति) यह प्रार्थनाकर पिप्प-

लादेश्वर शिव पिप्पलाद मुनि करके पूजित इनका दर्शनकर फेर बिश्रान्तको जाय वहांथोरीदेर बिश्रामकर पृथिवीको गोमय से लीपि औ पार्थिव एक शिवलिंग बनाय पूजनकर वैसहीरहने देय बिसर्ज्जन न कर वहांसेजाय देवीका दर्शनकरै जिस देवी को कंसके दुर्मंत्र जाननेके लिये श्रीकृष्णजीने स्थापन कियाहै वहांसे बरके देनेहारे सुखबासनाम देवताका दर्शनकर अर्तिहरा नाम देवीका दर्शनकरै जिसको भयसे डरेभये श्रीकृष्ण जीने स्थापितकिया जिसके दर्शनसे अनेक भांतिका बिघ्नभय निवृत्त होताहै फिर हेधरणि वज्रानन जीका दर्शनकरै जो चाणूरमुष्टिक आदि दैत्योंके बध निमित्त बज्ररूप धारण कियाहै जिसकेदर्शन से कोई पदार्थ दुर्लभ नहीं जो न प्राप्तहोय अर्थात् जोइच्छाकरै सोई प्राप्त होताहै वहांसे चल माथुरमनुष्योंके कुलके स्वामी बर के देनेहारे सूर्य भगवान्का दर्शनकर यात्रा समाप्त करै हेधरणि इसभांति कार्त्तिक मासके शुक्लपक्षमें नवमीको जो मनुष्य मथुरा का परिक्रमा करतेहैं वो अपने प्रथम दश पुरुषोंको औ आगेवाले दश पुरुषोंको एकआप इसभांति इक्कीश पीढ़ियोंके साथ बिष्णु-लोकको प्राप्तहोताहै हेधरणि परिक्रमाके समयमेंमनुष्यपृथिवी में जितनेपद चलताहै उतनेही उस कुलके मनुष्य सूर्यमंडल में जाय निवास करतेहैं हे धरणि जो पुरुष ब्राह्मण बधकरनेवालेहैं औ जो मद्यपानकरतेहैं औ चोरीकरतेहैं और जिन्होंने व्रतधारण करके बे समाप्तकिये बीचहीमें त्याग दियाहै और अगम्या स्त्री के गमन करनेवाले औ क्षेत्र स्त्री हरनेवालेभी मनुष्य मथुराजी के प्रदक्षिणा यात्रा करनेसे सब पापोंसे मुक्तहो उत्तमगति को प्राप्त होतहैं हेधरणि और तो मथुराजीके प्रदक्षिणाका माहात्म्य कहांतक बर्णनकरें यदि कोईमनुष्य परिक्रमाकरके समाप्त किया है उसके दर्शन करनेसे औ स्पर्श करनेसे अन्य देशके रहनेवाले मनुष्यभी पबित्र होजातेहैं जो दूररहनेवाले मनुष्य प्रीति पूर्वक

इस प्रदक्षिण माहात्म्य को श्रवणकरें वो भी सब पापोंसे छुट उत्तम गतिको प्राप्त होतेहैं॥

एकसौपचपनकाअध्याय॥

सूतजी कहतेहैं हेशौनक इसभांति बाराहजी का बचन सुन आनन्दहो धरणी कहनेलगी कि हेभगवन जोमनुष्य धर्म्मसेबिमुख औज्ञान बर्जितमूढ़हैं उनोंकीगति किसभांतिहोगी वोअवश्य नरकभागी होंगे इसलिये आप दीनोंके ऊपर कृपाकरके बिचार पूर्बक ऐसा उपदेशदेवें कि जिसके करने से अधर्मोंकी भी सत्गति होय यह धरणीकी बाणी सुनि बाराह जी कहने लगे कि हेधरणि जो मनुष्य सब धर्म्मों करके हीन दुराचारी हैं उनोंके लिये नरकका भय हरनेहारी औ पापके दूर करनेहारी मथुरा बिराजमानहै जिसके दर्शन करनेसे अनेक भांतिके पापात्मापबित्रहो उत्तम गतिको प्राप्त होतेहैं और जो मनुष्य पापी होय वा पुण्यात्मा होय मथुरा का दर्शनकरै या मथुरामें निवासकरै वो किसीभांति नरक में नहींजाता उसको अवश्य स्वर्गही होता है और हेधरणि मधुवन आदिजो बारह बनहैं उनोंका दर्शनजो करताहै उसको स्वप्नमेंभी नरकबाधा नहींहोती और जो शास्त्र के आज्ञानुसार बिधि पूर्बक मथुराकी यात्रा करतेहैं वो सबपापों से मुक्तहो स्वर्गबास पातेहैं॥

एकसौछप्पनकाअध्याय॥

बाराहजी कहते हैं हेधरणि मथुराके उत्तरजो जंबूद्वीप का भूषणरूप चक्रतीर्थनाम तीर्थहै उसका वृत्तांत श्रवणकरो किसी समयमें महोदयनामक नगरके निवास करनेवाला बेदपाठीब्राह्मण निज पुत्रको साथले शालग्राम क्षेत्रकोगया औ वहांजाय इंद्रियोंको जीति धर्ममें तत्परहो त्रिकालस्नान औ देवताओंका

दर्शन करताभया शालग्राम तीर्थमें निवास करनेलगा वहांकुछ दिनके रहनेसे कोईएक तपःसिद्ध ब्राह्मणवहां बहुतकालसेरहता था उसके साथ प्रीति होगई तबतौवह सिद्ध कल्पग्रामकीमहिमा बर्णन कियाकरता और वो पितापुत्र दोनों श्रद्धा से सुना करते इसभांति परस्पर बहुतकालव्यतीत होनेसेकिसीदिन वो कान्यकुब्ज कुलभूषण सिद्धब्राह्मण कल्पग्राम जानेका बिचार करने लगा तबतौ पिता पुत्र दोनों ब्राह्मण प्रार्थना पूर्वक सिद्धब्राह्मण से कहनेलगे कि आप हमारे मित्रहैं हम आप के समीप आज तक बड़े आनन्दसे कालक्षेप किया अब आप निज निवास भूमि कल्पग्रामको जाना बिचारतेहैं इतनी हमारे ऊपर कृपाकरें कि हमकोभी साथहीलेचलें यह ब्राह्मणका बचनसुन सिद्धब्राह्मण बोला कि हेमित्र सिद्धोंके मार्गमें सिद्धही जाय सक्त हैं इसलिये तुम्हारा मित्रका यांचाभंग हम किसभांतिकरें अबनिज तपोबल से कल्पग्रामको लेचलते हैं इतनाकह दहनेहाथसे ब्राह्मणकोऔ बाम हस्तसे ब्राह्मणके पुत्रको ले आकाश मार्गहो पक्षियों के तुल्य आय कल्पग्राममें शीघ्रही प्राप्तभया वहां निवासले तीनों ब्राह्मण रहनेलगे इसभांति कुछकालव्यतीत होनेसे वृद्धब्राह्मण के शरीर में रोग उत्पन्न हुआ उस रोगसे पीड़ित हो घबराय मृत्युका निश्चयकर निज पुत्रसे कहनेलगा कि हेपुत्र अबशीघ्र मृत्युहोनेवाली दीखतीहै इसलिये हमको श्रीगंगाजी के समीप लेचलो बिलम्ब न करो यहपिताकी बाणी सुन पुत्र उसी समय श्रीगंगाजीके समीप लेगया औ लेजाय वहां पिताके मोहकरके पुत्र रोदन करनेलगा और पिता भी पुत्रके मोहसे रोनेलगा इस भांति दोनों मोहाबिष्टहो शोककी बार्ता करतेरहे औ जब भोजन का समय व्यतीत तब कल्पग्राममें आयपुत्र भोजन कर फिरपिता के समीप चलाजाता हे धरणि जो पहले सिद्ध ब्राह्मण को कह आयेहैं उस कान्यकुब्जके एक उत्तम कन्या थी और बिवाह के

योग्यथी परन्तु उस कन्याके रुचिका पति कोई न दीखता इस लिये कन्याने किसीको आपनी आत्मानदी इसीसमय भावीवश वह ब्राह्मणपुत्र भोजनके लिये उस सिद्धब्राह्मणके घरमें आया उस ब्राह्मणने उसके पिताका वृत्तान्त पूंछि आदर पूर्वक निज कन्याको देदिया औ यह कहा कि हेविप्रवर्य तुम यहांहीं निज स्त्रीके साथ निवासकरो यह निज श्वशुर की बाणी सुन वहांहीं सिद्धकेस्थानमें रहनेलगा औ वहांसे जायके नित्य पिताकी सेवा करआता औ वहांहीं श्वशुरकेसमीप रहाकरता इसीभांति बहुत काल बीतनेसे उसका पिता बहुत दुःखी होगया उसेदेखपुत्रभी पिताके दुःखसे दुर्बल होगया किसीदिन श्वशुरने निज यामाता को दुर्बल देख हाल पूछने लगा तबतौ दुःखीहो सिद्धश्वशुर से ब्राह्मण कहनेलगाकि हेमहाराज मैंपिताके क्लेशसे अत्यन्तदुःखी हूं इसलिये आप कृपाकरके मेरेपिता की मृत्यु कथन करैं कि कबउनका मृत्युहोगा यह निजयामाताका बचनसुन श्वशुरकहने लगा किहे ब्राह्मणोत्तम तुम्हारे पितानेनित्यशूद्रों का अन्नभोजन कियाहै उस आहार दोषसे मृत्यु बहुत दूरहै अर्थात् क्लेश भोग करना अभीतक बहुतहै सो शूद्रान्न तुम्हारे पिताके पैरोंमेंहै और ऊपर नहींहै यदि शूद्रान्न निवृत्तहोगा तब मृत्युहोगी इसभांति ब्राह्मण निजश्वशुरका बचनसुन जायसब वृत्तान्त पितासे निवेदनकिया उसको सुन आत्माको निन्दा करताहुआ बड़े खेदको प्राप्तभया जब उस वृद्ध ब्राह्मणका पुत्र पिताके समीपसे श्वशुर गृहको भोजनके लिये आया तबवह वृद्ध ब्राह्मण इकल्ला दुःख करके अत्यन्तपीड़ित अपमृत्यु करना बिचारि निजस्थानसे उठ धीरेधीरे जाय गंगाजीके तटपर बैठि इधर उधर देख एक बड़ा पाषाण ले निज दोनों पैरों को तोड़दिया औ उसी पीड़ा करके व्याकुल शरीर भी छोड़दिया तबतो हे धरणि उसकापुत्र निज श्वशुर गृहसे भोजन करके जब पिताके समीप आया वहां यह

अन्त अवस्था पिताकी देख शोक ग्रस्त हो बड़ी देरतक रोदन करतारहा पीछेसे दैव भावी अवश्य मानिकै शोचबिचार यहकहने लगा कि इनका प्रेतसंस्कार करना तौ उचितनहीं क्योंकि आप स्तम्बऋषि स्मृतिशास्त्रके आचार्य्यने कहाहै कि जिसकी मृत्यु सर्पसे होय वा शृंगवाले जीवसे वा व्याघ्र सिंहसे होय अथवा निजहस्तसे अपमृत्यु होय वो मनुष्य संस्कार योग्य नहीं होता जो आत्मघात करतेहैं वो पुरुष नरकभागी होतेहैं उनका प्रायश्चित्त करना चाहिये औ तिलांजली देना अयोग्य है यह बिचार निजपिताकी शरीर गंगाजीमें छोड़ जाय श्वसुरके पास पहुंचा उसेदेख श्वसुर उसका कहनेलगा कि हे पुत्र अब यहां आनेके योग्य तुम नहींहो ब्रह्महत्यारूप पातक तुमकोप्राप्तहुआ यहसुन वह ब्राह्मण निजश्वसुरसे कहनेलगा कि जन्मसे लेकर आजतक हमने ब्राह्मणवध नहींकिया किस अपराधसे हमको ब्रह्महत्या प्राप्तभई इसभांति यामाताका बचनसुन श्वसुर कहनेलगा कि जोतुमने निजपिता वृद्धको मरबेकि उपायबताया उसकरके ब्रह्महत्या दोषभागी भये इसलिये पापीके समीपबैठना भोजनकरना औ बोलना शयनकरना एकबर्ष अनुचितहै शास्त्रमें लिखा है कि पतितके संसर्गसे और संसर्गी भी पतित होजाताहै यहसुननिज श्वसुरसे कहनेलगा कि हे महाराज अबहमको क्याकरना उचित है यहसुन सिद्धब्राह्मण बोला कि हे बुद्धिमान् अब कल्पग्रामको छोड़ मथुराजीको जाओ बे मथुरा और भूमिमें तुम्हारी शुद्धता नहींहोगी यहसुन उसीसमय कल्पग्रामकोत्याग मथुराको गया वहांजाय कोई कुशिकब्राह्मणके समीप निवास करनेलगा जिसके यहां निरन्तर यज्ञहोताथा और दोहज़ारब्राह्मण नित्यभोजन करतेथे वहां निवासकर ब्राह्मणोंका उच्छिष्ट भोजन करता काल व्यतीत करनेलगा औ चक्रतीर्थमें नित्य त्रिकाल स्नानभी करने लगा हे धरणि औरकहीं भिक्षाको भी नहींजाता और ब्राह्मणों

का उच्छिष्ट बिना और भोजनभी नहीं करता इसभांति तौ इस ब्राह्मणने मथुरामें निवासलिया औ इसका श्वसुर कल्पग्राममें चिन्ताकरनेलगा कि मेरा यामाता मथुराको गया और कन्याघर में दुःखीहोरहीहै अब क्याकरना उचितहै यहशोच बिचार दिव्य दृष्टिसे निज यामाता का सब वृत्तांत बिचार निजकन्यासे बोला कि हे पुत्रि अब तुम्हारा पति निष्पापहै इसलिये मथुराको जाय उसको ल्यावो इसभांति निजपिताकी आज्ञामानि सिद्धकीकन्या निजपतिके समीप मथुराको चली औ जाय निजपतिसे मिल भोजनको दे सारादिन पतिके समीपरह सायंकाल पिताकेसमीप चलीजाती इसभांति कल्पग्रामसे दिन २ प्रति भोजन लेजाय पतिको दियाकरती औ वो ब्राह्मण स्त्रीका दिया भोजनकर पात्र को चक्रतीर्थमें गेर यज्ञशालामें निवास कियाकरता इसभांति छः महीने व्यतीतहोनेसे वहां यज्ञभूमिके ब्राह्मण उससे पूंछनेलगे कि हे ब्राह्मण कहांसे आयेहौ औ कहां निवास करतेहौ क्या भोजन करतेहौ यहसुन सब ब्राह्मणोंसे हाथजोड़ नम्रहो निज वृत्तान्त आदिहीसे कहसुनाया उसे सुन एकत्रहो सब ब्राह्मण कहनेलगे कि हे ब्राह्मण अबतू निष्पाप हुआ शुद्धहुआ हे द्विज इस चक्रतीर्थके प्रभावसेसबपाप तुम्हारे छुटगये औ तू सिद्धभया इसभांति यज्ञके ब्राह्मणोंका बचनसुन हर्षको प्राप्तहो जाय चक्र-तीर्थमें स्नानकर ब्राह्मणोंके समीप फिरआया कि उसी समय कल्पग्रामसे ब्राह्मणी भोजनलेकर प्राप्तभई औ आतेही प्रसन्नहो निजपतिसे कहनेलगी कि हे स्वामिन् आपकी हत्या निवृत्तहो-गई अब प्रीतिसे आप भोजनकरें इसभांति निज स्त्रीका बचनसुन ब्राह्मण कहनेलगा कि हे प्रिये आजतक यह बाक्य तुमने कभी न कहा अब किसबिचारसे कहतीहौ यह पतिका बचनसुन पति से बोली कि महाराज अपराधी मनुष्यके साथ बातचीत करनेसे संसर्गदोष होताहै इसलिये आजतक हम कभी बचन नहींबोली

अब आपको निष्पापदेख कहतीहूं हे ब्राह्मणोत्तम इस चक्रतीर्थके प्रभावसे आपका पाप निवृत्तभया अबआप कृपाकरके कल्पग्राम को शोभित कीजिये हमारे साथ चलिये यह निजप्रियाका बचन सुन अपनेको कृतकृत्यमानि स्त्रीकेसाथही कल्पग्रामकोजाय निज श्वसुरको प्रणामकर आनन्दसे रहनेलगा बाराहजी भगवान् कहतेहैं हे धरणि भद्रेश्वरजी का दर्शन औ चक्रतीर्थका स्नान अनेक भांतिके पातकोंका दूरकरने हाराहै कि जिस चक्रतीर्थ में मनुष्य एक व्रत औ स्नान करनेसे ब्रह्महत्यासे मुक्त होताहै तौ उसका माहात्म्यकौन कहनेमें समर्थहै हेधरणि औरतो कहांतक कहें चक्रतीर्थके समीप कीट पतंग भी मरैं तौ मुक्तहोते हैं ॥

एकसौसत्तावनका अध्याय ॥

श्रीवाराहजी कहतेहैं हेधरणि अबहम बैकुण्ठ तीर्थका माहात्म्य बर्णन करतेहैं सो श्रवणकरो जो पूर्वही मिथिलापुरीके ब्राह्मणका वृत्तान्तभयाहै राजाजनककरके पालित जो मिथिलापुरी है वहांके कईमनुष्य तीर्थयात्राकेलिये चले चलते २ औ तीर्थोंके दर्शन करते२ सूकरक्षेत्रमें आये औ वहांसेचले तौ रास्तेमें मथुरा जीके दर्शनकी भक्ति उत्पन्नभई तबतो चारोवर्णके लोक मथुरामें आय बैकुण्ठक्षेत्रमें निवासकिया उन यात्रियोंमें एकब्राह्मण ब्रह्महत्याकरके पीड़ितकिजिसकेहाथसे रुधिरकीधारा बहाकरती और सबमनुष्य देखते उसने तौ आतेही जो बैकुण्ठतीर्थमें स्नानकिया उसीसमय वह रुधिरधारा निवृत्तहोगई इस व्यवस्थाको देख साथके यात्रियोंने आश्चर्य्य करनेलगे कि इसीसमय कोई देव आयकरके आकाशमेंबोला कि आश्चर्य्य क्योंकरतेहौ बैकुंठतीर्थ के प्रभावसे स्नानसे इसकी ब्रह्महत्या दूरभई यहकह वो देव अन्तर्द्धानभया औ सब यात्रियोंने तीर्थका चमत्कारदेख ईश्वरके महिमाको प्रणामकर मथुरापुरीको सबतीर्थोंसे अधिकमानतेभये

कि जिसके स्नानमात्रहीसे मनुष्य सबपापोंसेमुक्तहो बिष्णुलोक को जाताहै सूतजी कहतेहैं हेशौनक वाराहजी भगवान् इसभांति बैकुंठतीर्थका महिमासुनाय कहनेलग कि हेधरणि अबहमअसि-कुण्डनाम तीर्थका माहात्म्य बर्णनकरतेहैं सो श्रवणकरो औतीर्थों में उत्तम गंधर्ब कुंड नामक तीर्थ बर्णन करते हैं जिसके स्नान करने से मनुष्य गंधर्वलोक को जाता है और वहां प्राण त्याग करने से हमारे लोकको आता है हे धरणि मथुरा मंडलका प्रमाण बीश योजन है इस मंडलका कमलका स्वरूप जानना चाहिये जिस कमल के कर्णिका स्थानमें क्लेश के दूर करनेहारे केशव भगवान् स्थितहैं इसलिये जिनमनुष्यों कि कर्णिकास्थान में मृत्युहोय औ बैकुंठ भागी होतेहैं औ आठो दिशामें जो दल है उनमें भी प्राणत्याग होनेसे मुक्ति होतीहै जिस मथुरारूपी कमल केपश्चिमदलमें गोबर्द्धन निवासी हरि भगवान् स्थितहैं जिनके दर्शनसे मुक्ति होतीहै और उत्तर दलमें श्रीगोबिंद भग-वान् हैंजिनके दर्शन करनेसे फिर संसार सागर में मनुष्यजन्म नहीं लेता औ जिस कमलके पूर्ब पत्रमें बिश्रान्ति नाम करके ईश्वर स्थित है जिनके दर्शन करनेसे मनुष्य सब पापोंसे मुक्त हो कैवल्य नाम मोक्षको प्राप्त होताहै और हे धरणि उसकमल के दक्षिण दिशाके दलमें हमारी मूर्ति है सूकराकार दिव्यमूर्ति जिसके दर्शन करनेसे मनुष्य ब्रह्मलोकमें जाय ब्रह्माजीके साथ बिहार करता है जिस प्रतिमाको हे धरणि सत्ययुग मेंमांधाता नाम राजाके बड़ा तप करनेसे हम प्रसन्न हो के हमने वह मूर्त्ति दिया औ राजा मुक्तिके बांछासे उस मूर्तिकी प्रजा हमेश किया करता जिस समय लवणासुर मारागया उस समयसे यह ह-मारी मूर्ति मथुरा में आई यह मूर्ति बड़ी बिलक्षण धातु मयीहै इसका निर्म्माण बड़े तपके प्रभाव से कपिल ऋषिने किया है औ निर्माण करके नित्य २ पूजाध्यान किया करते किसीसमय

इन्द्रजीने कपिलजी का बड़ा आराधन किया तब तौ कपिलजी प्रसन्न हो इन्द्रसे बोले कि बरमांगो यह कपिलकी प्रसन्नबाणी सुन इन्द्रने हमारी मूर्ति मांगी तबतौ एवमस्तु कह करके मूर्ति को दे दिया उसिले इन्द्र स्वर्गको गया वहां मणिमंदिरमें स्थापित कर पूजनेलगा इसीभांति बहुत काल व्यतीत होने से रावण नाम राक्षस प्रबलहो स्वर्ग जीतनेके लिये आय इन्द्र से युद्धकिया औ बड़े पराक्रम से इन्द्र को जीत स्वर्ग को लेइन्द्रके स्थान का जब संभालने लगा तब तौ मणिमंदिर में कपिल वाराह को देखा औ देखतेही मोहित हो पृथिवीमें साष्टांग दंडवत् कर हाथजोड़ कहनेलगा कि हेमाधव हे धरणीधर हे हृषीकेश हे हिरण्याक्ष बिदारण हे वेदगर्भ तुम्हारे प्रणामहैं आपने कूर्म्म मत्स्य आदि अनेकरूप धारण कर कयुकैटभ आदि दैत्यों का बध किया इसलिये आपका अमित प्रताप देखके मेरा नेत्र औ बुद्धि स्थिर नहीं होती हे भक्तों के अभय दाता हे देव देव भक्ति करके नम्र हुआ २ मैं प्रणाम करता हूं मेरे ऊपर आप प्रसन्नहोवैं इसभांति रावणकी स्तुतिसुनि सौम्यरूपधारण कर लोक बिख्यात कपिल वाराहबोले कि हे असुर तू तौ महारजो गुणीहै इसभांति निर्म्मल बुद्धि कैसेभई यह सुन राक्षस कहने लगा कि हेभगवन् यहबुद्धि आपहीके दर्शनसे उत्पन्न भईहै यह कहि औ समीपजाय साथलेजानेके बिचार मूर्त्तिको उठानेलगा तबतो बहुत पराक्रम करने से भी वहमूर्ति नहीं उठी यह देख बिस्मितहो कहनेलगा कि जिन भुजावों से शिवजी के सहित कैलास को उठाया उसी भुजसे यह मूर्ति छोटीसी नहीं उठती यह बड़ा आश्चर्य्य है हे भगवन् कृपा करकेअपनी मायानिवृत्त कर आप लघुरूप धारण करैं जिसमें मैं आपको लंकाको लेचलूं यह प्रार्थना सुन कपिल वाराह लघुमूर्ति धारण किया तब तौ हे धरणि उस मूर्तिको पुष्पक बिमान में रख रावण लंका को

ल्याया औ ल्याय निजस्थान में बड़े प्रीतिसे स्थापन कर पूजने लगा इसभांति बहुत दिन व्यतीत होनेसे अयोध्याके महाराज दशरथ के पुत्र रामचन्द्र रावण के बध करनेको लंकामें आयेऔ रावण को मार बिभीषणको लंकाका राज्यदे आ कपिल वाराह की मूर्तिले अयोध्या को ल्याये तिसके कुछकाल व्यतीत होनेसे शत्रुघ्न को लवणासुर के बध करने को रामचन्द्रने आज्ञा दिया तबतौ शत्रुघ्न आय लवणासुर का बधकर मथुरापुरी का निर्माण कर सारा वृत्तान्त जाय श्रीरामचन्द्र से निवेदन किया उसेसुन प्रसन्न हो रामचन्द्र कहनेलगे कि हे शत्रुघ्न जो तुम्हारी वांछा होय सो बरमांगो इस तुम्हारे पुरुषार्थ से हम बहुत प्रसन्न हैं यह श्रीरामचन्द्र की प्रसन्न बाणी सुन शत्रुघ्न बोल कि हे प्रभो यदि आप प्रसन्न हैं तो जो मूर्त्तिआप लंकासे कपिल वाराहकी ले आये हैं सो हमको दे हम मथुरा में स्थापन करेंगे यह सुन प्रसन्नहो रामचन्द्र बोले किहे शत्रुघ्न कपिल वाराहको लेजाय मथुरामें स्थापित करोऔ मथुरापुरी आजसेलोक विख्यातहोगी औ धन्य होगी औ औमनुष्य धन्य होंगे जो इसमूर्त्ति कादर्शन करेंगे और इस मूर्त्तिका दर्शन औ पूजाध्यान आदिजो करेंगे वो सब पापोंसे मुक्त हो वैकुंठ धामको प्राप्त होंगे यह श्रीरामचन्द्र की वाणी सुन शत्रुघ्न प्रसन्न हो कपिल वाराह को मथुरामें ले आकर दक्षिण दिशामें स्थापनकर पूजन किया हे धरणि गया में पिण्डदान करने से जो फल होताहै और ज्येठे पुष्कर के स्नान में जो फल होताहै सोई फल कपिल वाराहके दर्शन में होताहै औ सोई फल बिश्रान्ति के दर्शन में गोविंदके दर्शन में हरि भग वान्के दर्शनमें होताहै सूर्य्यके उदयमें हमारा तेज सदा बिश्रान्तिमें निवास करताहै मध्याह्न समयमें दीर्घ बिष्णु में निवास औ सायंकालमें हेधरणिहमारा तेजकेशवजीमें स्थित होताहै यह भेद हमने आज तक किसीसे कथन नहीं किया हे

धरणि तुम हमारीभक्ता हौ औ प्रियाहौ इसलिये कथनकिया॥

एकसौअट्ठावनका अध्याय॥

वाराहजी कहते हैं हे धरणि श्रीमथुराजी के पश्चिम भाग में परम दुर्लभ गोवर्द्धन नाम क्षेत्र है जो मथुरा से पश्चिम दो योजन पर विराजमान है जिसके चारोदिशावों में चारि तीर्थहैं जिसका नाम पूर्व दिशामें रौद्रतीर्थ दक्षिण दिशामें यमतीर्थ पश्चिम दिशामें बरुण तीर्थ औ जिस गोवर्द्धन के उत्तर दिशामें कुबेर तीर्थहै औ पूर्वदिशा में जो रुद्रतीर्थ है उसका दूसरानाम इन्द्रतीर्थ भी है उसमें स्नान करनेसे जोमनुष्य शरीर त्याग करनेपर इन्द्रलोकको जाताहै और इसीभांति यम तीर्थकेस्नान से यमलोक का भय निवृत्त होताहै औ बरुण कुंडके स्नान से बरुणलोक होताहै कुबेरकुंडके स्नानसे कुबेरलोक प्राप्त होताहै और इन चारो कुंडोंके समीप प्राणत्याग करै तो उन लोकों में बिहार कर अंतमें हमारे समीप में आवै हे धरणि उन चारो कुंडों में क्रम से स्नान कर अन्तकूट का दर्शन कर प्रदक्षिणा करनेसे मनुष्य सब पापोंसे मुक्तहोवै बैकुंठको जाताहै जो पुरुष मानसगंगामें स्नानकर गोवर्द्धनपर्वतमें हरिजीकादर्शन औअन्नकूटेश्वरका दर्शन प्रदक्षिणा करनेसे फिर संसारमें जन्मनहींपाता साक्षाद्विष्णुमूर्त्तिहो बिमानमें बैठ बैकुंठधामको जाताहै औरसोमवती अमावास्याको गोवर्द्धनमेंजाय पितरोंको पिण्डदान करनेसे मनुष्य राजसूययज्ञ के फलको प्राप्तहोता है हे धरणि गयामें पिण्डदान देनसे पितरोंकी जैसी तृप्तिहोतीहै औ सद्गतिकोप्राप्त होतेहैं उसीभांति गोवर्द्धनमें पिण्डदान देनेसे फलहोताहै और गोवर्द्धनकापरिक्रमा औ हरिजीभगवान्का दर्शनसेराजसूयअश्वमेधयज्ञ का फलहोना दुर्लभ नहींहै सूतजी कहतेहैं हे शौनक इस भांति श्रीवाराहजीका बचनसुन धरणी कहनेलगी कि हे भगवन्

अन्नकूटके परिक्रमाकी रीति औ माहात्म्य आप वर्णनकरैं यह सुन वाराहजी कहनेलगे कि हे धरणि भाद्रमासमें शुक्लपक्षके एकादशीको व्रतकरके गोबर्द्धनकी प्रदक्षिण करनाचाहिये इसका बिधियहहै कि प्रातःकाल निजआवश्यकोंसे निवृत्तहो सूर्य्योदय होनेसे प्रथम मानसगंगामें स्नानकर सन्ध्या तर्प्पणसे निवृत्तहो गोबर्द्धनके शिखरमें हरिजीका दर्शनकर जाय पुण्डरीककुंडमें स्नानकर बिधानपूर्वक पितर देवपूजनकर पुंडरीक भगवान्के पूजनकरनेसे सबपापोंसे मुक्तहो बिष्णुभगवान्के धामको प्राप्त होताहै फिर हेधरणि पुंडरीककुंडसे चलकर निर्म्मल जलकरके पूर्ण अप्सराकुंडमेंजाय स्नान तर्प्पणसे निवृत्तहो अप्सरेश्वरके दर्शनसे मनुष्य निष्पापहो राजसूय अश्वमेधयज्ञके फलकोप्राप्त होताहै फिर वहांसे चल सांकर्षणनाम तीर्थकोजाय जहांश्रीबलभद्रजीकी वृषभहत्या दूरभई और हेधरणि अन्नकूटकेसमीपशक्र नामक तीर्थहै जहां श्रीकृष्णजीने इन्द्रकायज्ञ भंगकियाहै जिस कारण इन्द्रने कोपकरके ब्रजबासियोंके त्रासदेनेको प्रलयकेमेघों को आज्ञादे घोरवृष्टि कराया जिसकेलिये श्रीकृष्णजीने गोबर्द्धन को उठाय ब्रजबासियोंकी रक्षाकिया उस स्थानका अन्नकूटनाम है जिसस्थानके दर्शनकरनेसे अनेकजन्मोंके पातक दूरहोते हैं हे धरणि अन्नकूटसेचल देवगिरिका दर्शनकरै जिसके दर्शनसे औ स्नानसे बाजपेययज्ञका फलहोताहै औ वहांसेचल निर्म्मलजल से पूर्ण कदम्बखण्डनाम कुंडमेंजाय स्नान औ तर्प्पणकरै जिससे मनुष्य ब्रह्मलोकको जाताहै और श्रीमहादेवजीके कुंडमें स्नान करनेसे तर्प्पणकरनेसे औ शिवजीके दर्शन करनेसे मनुष्य सब पापोंसे मुक्तहो स्वर्गको जाताहै हे धरणि मानसगंगाके उत्तर कृष्णजीका औ वृषभरूपी अरिष्टासुरका युद्धभयाहै जिसको कोप करके श्रीकृष्णजीने मारदिया उसी समयसे वृषभहत्याका भय करके श्रीकृष्णजी पीड़ित हो अरिष्टकुंड नाम तीर्थ उस हत्याके

दूरकरनेकेलिये प्रकटकिया उसवृषभकुंडमें औ राधाकुंडमेंस्नान करनेसे मनुष्य राजसूय अश्वमेधयज्ञके फलको प्राप्तहोताहै औ गोहत्या ब्रह्महत्या आदि महापातक जिसके दर्शन औ स्नानसे निवृत्तहोतेहैं औ मोक्षराजनाम जो तीर्थहै उसमें स्नानकरनेसे मुक्तिप्राप्तहोतीहै औदर्शनमात्रसे सर्वपापमुक्तहोतेहैं इंद्रजीनेयहां ध्वजारोपण कियाहै सो इन्द्रध्वजनाम बिख्यात तीर्थहै जिसके स्नानमात्रहीसे मुक्तहोतीहै फिर हे धरणि इस यात्राको हरिके निवेदनकरचक्रतीर्थमें स्नानकर औ पंचतीर्थकुंडमें स्नानकर तीर्थ यात्रा सफलहोनेकेलिये जाय गोवर्द्धनमें रात्रिका जागरण करै यहजागरण एकादशीके रात्रिको कर द्वादशीको प्रातःकाल स्नान संध्यासे निवृत्तहो पितरोंका पिण्डदानकरनेसे पितर यमबाधासे निवृत्तहो मुक्तहोतेहैं हेधरणि इसभांति अन्नकूटके परिक्रमा की रीति हमने बर्णनकिया यह तीर्थपरिक्रमा माहात्म्य जो प्रीतिसे श्रवणकरै उसे गंगास्नानका फलहोताहै॥

एकसौउनसाठका अध्याय॥

वाराहजी कहतेहैं हेधरणि अब औरभी वृत्तान्त बर्णनकरतेहैं सो सावधानहो श्रवणकरो जो वृत्तान्त दक्षिणपथ मण्डलनाम भूमिमें प्रतिष्ठानपुरमें भयाहै कि जिस प्रतिष्ठानपुरमें धनधान्य करकेयुक्त बहुकुटुम्बी पुत्र पौत्रादिकोंकरके भूषित सुशीलनामक बैश्यभया जिसका काल सदा कुटुम्बके पालन पोषणमें औ बणिजव्योपारमें व्यतीत होता और इसीभांति सम्पूर्ण अवस्था व्यतीतभई कभी भूलकरकेभी महात्माका सत्संग धर्म्मकथा का श्रवण तीर्थस्नान दानब्राह्मण औ साधुसेवा न किया इसीभांति नीचकर्म्ममें रत हुआ२ शरीरका पालन करता२ कभी कपर्दिका मात्रका दान न किया और उस नीच बणिककी यह दुर्बुद्धिकी आपको तौ कौनकहै यदिकोई उसके देखते और भी दान पुण्य

व्रतआदि उत्तमकर्म्म कियाचाहे सोभी न करसके इसभांति वह दुःशील बणिक कालबशहो शरीरको त्याग प्रेतयोनिमें प्राप्त हुआ सो प्रेत क्षुधा औ पिपासाके दुःखकरके व्याकुल खोटेकर्म्मों का फल भोगता माड़वार देशमें जाय निवासलिया वहां वह प्रेत बहुतकाल रहता कर्म्मफल भोगनेलगा किसीसमय मथुरा के निवासकरनेवाला बणिक व्योपार करनेके लिये घरसे चल जहां वहप्रेत निवास करताथा वहां पहुंचा दैवगति जिस वृक्षमें उस प्रेतका निवास था वहांही सन्ध्याकाल होजानेसे वह व्योपारी बणिक ने निवासलिया औ जब निज आवश्यकों से निवृत्तहो उसने शयन करनेका बिचारकिया तबतौ वहप्रेत बड़े हर्षसे व्योपारीके समीप भयानक रूप धारणकर आय प्रकट हुआ औ कहनेलगा कि हे मनुष्य तू हमारे भोजनकेलिये यहां आयाहै मैं अत्यंत क्षुधाकरके पीड़ित होरहाहूं इसलिये आजतेरा मांसखाय औ नवीन रुधिर पानकरके तृप्तहोंगा वाराहजी कहते हैं हे धरणि तबतौ वह व्योपारी प्रेतकी कठोरबाणी सुनबि-नय पूर्वक कहने लगाकि हेप्रेत हमकुटुंब के पालनके लियेइस कठिनदेश में आयेहैं देखो घरमें हमारे मातपिता वृद्ध हो रहे हैं उन्हींके हम एकही पुत्रहैं औ स्त्री हमारी पतिव्रताहै बालक हैं नहीं इसलिये हमारे भक्षण करनेसे सबकुटुम्ब मृत्युबशहोजाय गा यह बचन व्योपारी का सुन प्रेत कहनेलगा कि सत्य कहो तुमकहांसे आयेहो औ किस देशमें तुम्हाराघर है इसभांतिप्रेत कीबाणीसुन बणिकनम्रहो कहने लगा कि हे प्रेतलोकबिख्यात मथुरानाम नगरीहै जहां यमुनानाम नदी औ गोबर्द्धननामपर्वत है वहां हमारा निवासहै औ बिभु हमारानामहै सो हमसे घरमें पितृ पितामह आदिबड़ों का धन नष्ट होजाने से दरिद्रहो कुछ थोड़ाधन लेकर व्योपार करनेके लियेइसदेशमें आये यहांभावी बश तुम्हारे नेत्र गोचर भये हे प्रेत हमारायह वृत्तहै अब जो

तुम्हारी इच्छाहोय सो करौ इतना कहि व्योपारीतौ चुपहोगया तबतौ इस वृत्तांतको सुनि प्रेतकहनेलगाकि हे व्योपारी तुम्हारा वृत्तांत सुन हमारे दयाआई अब हमसे निर्भयहो परंतु कुछकरार करोतौ हमतुमको छोड़ैं क्योंकि यहांसे लौटिके मथुरा में जाय हमारा प्रयोजन करौ जो हमकहैं हमारा यह कथनहै कि यहां से जाय मथुरामें चतुःसमुद्रकूपमें स्नानकर हमारेनामसेपिंडदानकर स्नानका फल हमको देकर जहां इच्छा हो वहां जावो यह प्रेतका बचनसुन बिभु कहने लगा कि हे प्रेत धन के बिना हम किसीभांति मथुरामें नहीं जायसक्ते इसलिये इच्छा पूर्वक इस शरीरको भोजनकर तृप्तहो यह बिभु नामक व्योपारी का बचन सुन प्रेतकहनेलगा कि हे मित्र धनके लिये क्यों दुःखी होरहेहौ तुम्हारे घरमें बहुतसा धन तुम्हारे बड़ों का धराभया पृथिवी में गड़ाहै सो हमारा बचनमानके जावो यह सुन बिभु कहने लगा कि हे प्रेत यदि हमारे घरमें धन होता तो यहां क्यों आते अब तो केवल घरकी दीवारमात्र है कहो तो उसे खोदके वृद्धोंकानाम भी लोपकरैं यह सुन बड़ेहर्ष में युक्त हो प्रेतकहने लगा कि हे बिभु हमारे बचनका बिश्वासकर घरको जाव वहां कईभार सुवर्ण तुम्हारे बड़ों का खजाना जमीन में रक्खाहै उसे ले निज कुटुंब के साथ आनंदकरो यहसुन बिभुनाम बणिक प्रसन्नहो कहनेलगा कि हेप्रेतइस अवस्था में यह ज्ञान तुमको किसभांतिसे प्राप्तभया सो कहोजिसमें हमको प्रतीतिहोय यह बिभुका बचनसुन प्रेतनिज वृत्तांत सब आदि से कहनेलगा कि हेबिभु जिसनगरमेंहमारापूर्व जन्मथा उसप्रतिष्ठान पुरमें बड़ा उत्तम विष्णुमन्दिर था वहांचारौ बर्ण के लोक अर्थात् ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र आदि सब इकट्ठे हो पुराणकी कथा सुना करते औ उसी कथाके श्रवण को एक हमारा मित्र नित्यही जाया करतासो किसीदिन बड़ेआदरसे वहमित्र जबर-

दस्ती हमकोभी वहां लेगया वहांजाय मित्रके समीप बैठि हम-भी कथा सुनने लगे तब कथा में चतुः समुद्र कूप का प्रभाव पापके दूर करनेहारा हमने श्रवण किया औ जब कथा समाप्त भई तब सब श्रोतावों ने बक्ताका पूजनकर यथाशक्ति दानदिया तबतौ जिस मित्रके साथ हम गयेथे उसने हमसे कहाकि यहां तुमको भी कुछदेना उचित है जरूर दो यह मित्रका बचन सुन हम चुप होरहे जब बारंबार मित्र ने प्रेरणाकिया कि यथा शक्ति दो तबतौ बड़े क्लेश औ संकोचमें हो कर एकमासा सुबर्ण हमने दिया उस पौराणिक को फिर जब हम कालबश हो यमपुर को गये वहां कर्म्मोंके बशहो प्रेतयोनि में प्राप्त भये हे मित्रहमने धर्म औ अधर्म्म कुछ नहीं बिचारा जिस भांति धन मिला उस भांतिसे बहुत धन इकट्ठे किया उस धनसे दानब्राह्मण भोजन हवन तीर्थ स्नान देवपूजन औ पितृ श्राद्ध कभी नहींकिया इस लिये हम प्रेतयोनिमें रात्रिदिनघोर दुःख भोगि रहेहैं हे बिभो जो हमारा वृत्तान्त पूछते हौ सो हमने कह सुनाया अब सूधे मथुराको चले जावो यह सुनि बिभु कहने लगा किहे प्रेत इस वृक्षके मूल में तुमकिस रीतिसे प्राण रक्षण करते हो सो कथन करो तबतौ प्रेत बड़े दुःखसे उश्वासभर कहनेलगा कि हेबिभो जो हम कहिआये हैं कि एक मासा सुबर्ण पौराणिक ब्राह्मण को दिया है उसी पुण्यसे कुछ तृप्ति रहती है यह हमारे नि-ष्काम दानका फलहै औ इस प्रेत दशामें भी हमारा ज्ञाननहीं भ्रष्टहुआ यहसुनि बिश्वास कर बिभुनामक बणिक वहांसेलौटि मथुरा में आय प्राप्तभया औ जिसभांति उसे प्रेतने उपदेश दिया था वो सब करने से प्रेत तो मुक्तहो स्वर्ग को गया औ बणिक निज वृद्धों का धनपाय निज कुटुम्ब के साथ आनन्द करने लगा वाराहजी कहते हैं हे धरणि यह मथुरामें चतुःसमुद्र कूपका माहात्म्य हमने बर्णन किया जहां के पिंडदान करने से

प्रेत भी उत्तमगति को प्राप्त होते हैं हेधरणि मथुराजी में तीर्थ के समीपरास्ते में वा निज घरमें किसी प्रकारसे प्राणत्यागकरै औ सर्वथा उत्तमगतिको प्राप्तहोताहै कैसहू पातकी क्यों न होय हे धरणि जिस किसी भूमिमें पाप करनेसे वह पापतीर्थ में निवृत्त होताहै औ तीर्थ में पाप करने से वह पाप वज्रलेपकेतुल्य होताहै अर्थात् किसीभांति वहपापनिवृत्त नहींहोता औ मथुरामें कियाहुआ पाप मथुरामें प्राणत्याग करनेसेनिवृत्तहोताहै हेधरणि यहमथुरापुरी सब पुण्य भूमियोंसे उत्तमहै कि जिसमें पापकरने सेभी करताको पापस्पर्श नहीं करता इसलिये जो मनुष्य कृतघ्न मद्यपान करनेहारे चौरव्रतके त्याग करनेहारे परस्त्री गामी औ भक्ष्याभक्ष्य करनेहारे मथुराके प्राप्तहोनेसे सब पापोंसे मुक्तहो उत्तम गतिको प्राप्त होतेहैं और हेधरणि जोमनुष्य किसीतीर्थमें हजारबर्ष एकपैर से खड़ाहो तपकरै इससे अधिक फल मथुरा के निवास करनेसे होताहै और जोमथुरामें भिक्षादेतेहैं वो मरकरके उत्तम गतिको प्राप्तहोतेहैं और जोसदा मथुरामें निवासकर तीर्थ स्नानकरके शरीर व्यतीत करतेहैं वो साक्षात् देवता रूपहै औ हेधरणि और भूमिमें जोपुण्यएकहजार ब्राह्मण भोजन करानेमें होताहै सोपुण्य एक मथुरा निवासीके भोजन कराने से होताहै और भूमिमें चारों वेदके जाननेवाले ब्राह्मण से मथुरा निवासी मूर्ख उत्तम होताहै इसलिये हेधरणि मथुरा में अवश्य निवास करना चाहिये जो मनुष्य पशुपक्षी कीट पिपीलिका आदि श्रीमथुराके निवासीहैं वो सब अंतमें चतुर्भुज हमारा रूप होतेहैं इसलिये ज्ञानीलोक मथुराबासियोंको सर्वदा हमाराहीरूप देखतेहैं॥

एकसौसाठिकाअध्याय॥

सूतजी कहतेहैं हेशौनक इसभांति चतुःसागर कूपका अपूर्व माहात्म्य सुनि प्रसन्नहो वाराहभगवानसे पृथिवी कहनेलगीकि

हेभगवन् आपने कृपा करके बड़ी उत्तमकथा वर्णन किया अब असिकुंड नाम तीर्थका माहात्म्य आप कथनकरें यहसुन वाराह जी कहनेलगे कि हे वरर्षि किसी देशका रहनेवाला एक सुमति नाम राजाथा वह तीर्थयात्रा करनेका मनमें संकल्प किया फिर किसी कार्य्यबश तीर्थयात्रा तौ हुईनहीं बीचमें कालवश होगया तबतौ उसराजाका पुत्र बिमति नामक निज पिताका राज्ययथा योग्य करनेलगा जब उसको राज्य करते बहुतकाल व्यतीतभये तबतौ किसी समय नारदनाम ऋषीश्वर उस बिमति राजा के समीप आये ऋषीश्वरको देखि राजा उठिकै आसन पाद्य अर्घ आदिसे पूजनकर नारद जीकी आज्ञासे बैठा उस समय राजाके पूजनको अंगीकारकर नारदजीकहनेलगेकि हेबिमते पुत्रउसीको कहना चाहिये जोनिज पिताको ऋणसे छोड़ावै इतना कहकर वहांही नारद जी तौ अन्तर्द्धानभये औ राजा बिमति उस बाणी कोसुनबिस्मितहो समीपवर्त्ती मन्त्रियोंसे कहनेलगा कि कौनसी ऋण हमारे पिताकीहै औ क्या करनेसे हमारापिता ऋणसेमुक्त होय यह हमारे बुद्धिमें नहींआता सोआप सबलोक बुद्धि पूर्वक बिचार करके कथनकरो सो कियाजाय यहश्रवणकर मन्त्रियोंने यहकहा कि हेमहाराज आपकेपिताने तीर्थयात्राका संकल्पकिया था सो नहींभई औ महाराज स्वर्गबासी होगये यहीएक ऋणहै और तौ कोईबात बुद्धिमेंनहींआती इसबचनको मन्त्रियोंके मुखसे सुन राजाबिमति पछताय यहबिचारकिया कि औरतौ तीर्थयात्रा हमसे बनना कठिनहै परन्तुमथुराकी यात्राअवश्यकरना चाहिये क्योंकिपुराणका यहकथनहै कि मथुरामें सबतीर्थ निवासकरतेहैं यहबिचारमथुरामें चारमासवर्षा व्यतीतकरनेकेलिये जायनिवास किया तबतो उस बिमतिराजाके प्राप्तहोतेही मथुराके सब तीर्थ परस्परदुःखीहो घबराय कहनेलगे कि यह पापात्मा राजा जब तक हमको स्पर्श न करै तबतक कलापग्राममें चल श्रीबाराहजी

के शरणमें चलैं वो हमारे दुःखको दूरकरैंगे यहशोच विचार हे धरणि जहांहम कलापग्राममें निवासकरतेथे वहांआयपहुंचे औ हमको देखतेही हाथजोड़नमग्रही स्तुति करनेलगे ॥ ओं जयविष्णोजयाचिंत्यजयदेवजयाच्युत । जयविश्वेशकर्त्तेशजयदेवनमोस्तुते ॥ इसभांति हेधरणितीर्थोंने जबहमारीस्तुतिकियातबहमने कहाकि हे तीरथो हम तुम्हारे सबोंपर प्रसन्नहैं किसलिये यहां को आयेहो और क्याबर चाहतेहो जो इच्छाहोय सो मांगो इस भांति हमारी बाणीसुन सबतीर्थ कहनेलगे कि हे भगवन् हम को अभय बरदान देवो औ बिमति नाम पातकी राजा आया है स्नान करनेको उससेहमको बचावो अर्थात् जबतकहमारिमेंस्नान न करै तबतक उसका बधकरो यदि हमारी प्रसन्नता चाहते हो यह तीर्थोंका बिनय सुन आश्वासनकर मथुरा में जाय बिमति राजाके साथ युद्धकरि खड्गसे उसका शिरकाटा हे धरणि जिस समय उसके ऊपर खड्गका प्रहार किया तो नंदकनाम हमारा खड्ग उसका शिरकाट पृथिवी में प्रवेशकरगया जिसभूमिमेंवह खड्ग गिरा वहांही असिकुंडनाम सब पापोंका हरनेहारा तीर्थ लोकमें प्रसिद्ध भया जिस असिकुंड तीर्थ में पापरहित मनुष्य श्रद्धावान् जितेंद्रिय शुक्लपक्षकी द्वादशी को अपूर्व मनोहर औ मधुरफलको पातेहैं यह आश्चर्य उस तीर्थ में अबभी है और हे धरणि जिस कालहम मथुरामें आये उसी समयसे पश्चिमदिशा में सुवर्ण मूर्त्ति होकै स्थितहैं औहम मथुरामें चारिमूर्त्तिहोकैसदा निवास करतेहैं एक मूर्त्ति वाराह दूसरीमूर्त्ति नारायण तीसरी बामन औ चौथीबलभद्र इनचारो मूर्त्तियों का दर्शनजो मनुष्य असिकुंड में स्नानकरके करताहै वो चारो समुद्रों सहित पृथिवीके परिक्रमा करने के फलको प्राप्त होता है और हे धरणि जितनेतीर्थ मथुरा मंडलमेंहैं उनसब तीर्थोंसे असिकुंड तीर्थउत्तम है औरजो तीर्थोंकी संख्या परिक्रमामें कहिआयेहैं वो सब असि

कुंडमें स्नान पूर्णहोतेहैं इसलिये हे धरणि जो मनुष्य द्वादशीको प्रातःकाल उठि मौनहो असिकुंडमें स्नानकर हमारा दर्शनकरते हैं उनका भूमिमें फिरि जन्म नहीं होता हमारे स्वरूपमें लीन होजाते हैं॥

एकसौइकसठिका अध्याय॥

वाराहीजीकहतेहैं हेधरणि अब सावधानहो बिश्रांतितीर्थका माहात्म्य श्रवणकरो जिस माहात्म्यको ब्राह्मणके लिये राक्षसने उपदेश किया है इसभांति वाराहजीका बचनसुन संशयको प्राप्त हो धरणी कहनेलगी कि हेभगवन् किसलिये राक्षसने बिश्रांति तीर्थका महिमा वर्णनकिया औ वोब्राह्मण कौनहै जिसको राक्षस ने बिश्रांतिमहिमा सुनाया यह सबवृत्तान्त आप कृपाकरकेवर्णन करें यहधरणी की बाणीसुन बाराहजी कहनेलगे कि हे धरणि उज्जयिनी नामनगरीमें आचारहीन कर्मभ्रष्ट एक ब्राह्मण हुआ सोब्राह्मण कभी भूलसेभी देवपूजन न करता औशिष्टवृद्ध महात्मसाधुवोंको प्रणाम भी नकरता औकभी दैवयोग किसीतीर्थमें भी जायतो जिसलिये जाय वो कामकर लौटिआता स्नान नहीं करता और वेदपाठ अग्निहवन आदि सत्कर्म जिसने कभीएक बारभी न किया और परस्त्रीगमन जीवहिंसा परद्रोह चोरी पिशुनता औ सायंकाल प्रातःकाल शयन सदा कियाकरता इसभांति वहब्राह्मण पापकीमूर्त्ति औ सदापापियोंकेसंगरहना ऐसहीअनर्थ सदा प्रीतिसे करता देखो हेधरणि गृहस्थोंहीके भी जिसने निज धर्म्मका रक्षा न किया उसका किसभांति दोनोंलोकबनैगा क्यों कि ब्रह्मचारी गृहस्थी वानप्रस्थ संन्यासी इनचारोंमें शास्त्रगृहस्थ की महिमा सर्वोपरि कहीहै जिसभांति पशुवो में गौ उत्तमहै औकुटुंबमें माता उत्तमहै ऐसही सबधर्म्मोंसे गृहस्थधर्म्म उत्तम है देखो किसी आश्रममें क्योंनहो परन्तु आश्रित गृहस्थहीका

होताहै औ सबका सन्तोष गृहस्थहीसेहै देवता पितर अग्नि औ अभ्यागत ये चारों गृहस्थहीसे तृप्तहोतेहैं तिस गृहस्थीमें भी उस दुर्बुद्धिने अपना कल्याण न बनाया सो पापी ब्राह्मण सदा चोरोंकेसाथ चोरीकियाकरता किसीसमय चोरीकरनेको अन्धेरी रात्रिमें चोरोंकेसाथ गया वहां भावीबश राज्यके चौकीदारोंनेदेखे चोरसमुझके जब पकड़नाचाहा तबतौ निज२ प्राण रक्षाके हेतु सबचोर इतस्ततः भागे उसीसमय वह पापात्मा ब्राह्मण भी किधरको भगा औ घबरायाभया दैवयोग रास्तेमें कूपथा उसके मध्य जायगिरा औ अगाधजलके सबबसे गिरतेही मृत्युबशहो ब्रह्मराक्षसहुआ औ उसीकूपमें रहनेलगा हे धरणि किसीसमय ब्योपारियोंका यूथ निज२ मालको लिये सायंकाल होनेसे उस कूपकेसमीपआय निवासलिया उन्होंमें एकब्योपारी कुछपठित ब्राह्मणभीथा सो सबब्योपारी अपने२ सुबिस्तेको कर निद्राबश हो शयनकरनेलगे औ जो उन्होंमें ब्राह्मणथा वो निजआवश्यकों से सावधानहो रक्षोघ्न रक्षामंत्रका जपकरनेलगा तबतौवह ब्रह्म-राक्षस प्रकटहो ब्राह्मणसेबोला कि हे ब्राह्मण जो तुम्हारे मनमें होय सो हमसेमांगो हमदेंगे और यहांसे चलेजावो और कहीं निद्राकरो हम ब्रह्मराक्षसहैं यहकूप हमारास्थानहै बहुतदिनोंसे क्षुधाकरके पीड़ितहोरहेहैं आजहमारेलिये परमेश्वरने इनमनुष्यों का भेजाहै सो इनकेमांस औ रुधिरसे हमारीतृप्तिहोगी यहरा-क्षसका बचनसुन ब्राह्मण कहनेलगा कि हे राक्षस हम इन्होंको कभी न छोड़ेंगे हमारे ये सबसाथी मित्रहैं औ कुटुम्बहैं तुमयहांसे चलेजाव नहीं तौ हम निजमंत्र बलसे तुमको भस्मकरदेंगे ऐसे ब्राह्मणके भयंकरबचनसुन भयभीतहो बिनयपूर्वक राक्षसकहने लगा कि हे बिप्रोंमें श्रेष्ठदयाकरके हमारे आहारको न निषेधकरो यदिकिसीका आहारकोई छीनलेताहै तौ वह ईश्वरके घरमें पा-तकी गिनाजाताहै इसलियेदयाकरके हमकोभोजनदो यहराक्षस

की बाणीसुन ब्राह्मणकहनेलगा कि हे राक्षस तुमकौनहो औकिस कर्म्म दोषसे इसघोरयोनिमें प्राप्तभयेहो यहब्राह्मणकाबचनसुन पछितायके ऊंचीसाँसकोभर पूर्वजन्मका सारावृत्तांत कहसुनाया सो ब्राह्मण राक्षसका दुष्कर्म्म वृत्तान्त सुन मनमें दयायुक्त हो कहनेलगा कि हे राक्षस मित्रभावसे हम कहतेहैं कि जो तुम्हारी इच्छाहो सो मांगो हमतुम्हारे आत्माका उपकार कियाचाहतेहैं यहसुन ब्राह्मणका बचन राक्षस कहनेलगा कि हे ब्राह्मण यदि हमारा आप उपकारकरतेहो औ हमको कुछ दिया चाहतेहो तो यहीहम आपसे दीनहोके यांचाकरतेहैं कि आप जो मथुरापुरीमें बिश्रांतितीर्थमें स्नानकियाहै उसपुण्यको हमकोदीजिये जिससे हम इससंकटसे छुट उत्तमगतिको प्राप्तहों यहसुन ब्राह्मणकहने लगा कि हे राक्षस विश्रांतितीर्थका ज्ञान तुमको किसभांति हुआ सो हमसेकथनकरो यहसुन राक्षसकहनेलगा कि हे बिप्र हमारा निवास सदाउज्जयिनीमें रहा उसीसमय किसीकारण हमविष्णु-मन्दिरकोगये वहां ब्राह्मण बिश्रांतितीर्थका माहात्म्य बांचरहेथे वो कथाकेसुनतेही हमारे बिश्रांतितीर्थमें भक्तिउत्पन्नभई औ वो भक्ति इसअवस्थामेंभी स्थितहै औ श्रीवासुदेव भगवान् चराचर जीवोंके स्वामी जिसभूमिमें बिश्रामकरतेहैं उसेकौन अधमजीव है जो जानिसुनके भूलजाय इसभांति राक्षसका भक्तियुक्त बचन सुन ब्राह्मण बड़ेहर्षसे बोला कि हे राक्षस हमने एकदिनका बि-श्रांतितीर्थ स्नानफल तुमकोदिया इस ब्राह्मणकी बाणीसुनतेही राक्षस क्यादेखताहै कि बिष्णुके पार्षद उत्तमबिमानलिये खड़ेहैं उसबिमानके औ बिष्णुपार्षदोंके दर्शनपातेही वो राक्षसीशरीर को छोड़ प्रकाशमान दिव्यरूप धारणकर बिमानमें बैठ बिष्णु-लोकको प्राप्तभया॥

———:———

एकसौबासठिकाअध्याय॥

सूतजीकहतेहैं हेशौनक इसभांति बिश्रांतितीर्थका माहात्म्य सुन आनन्दमें हो बाराहजी से धरणी कहनेलगी कि हेभगवन् आपने कृपाकरके विश्रांतितीर्थका माहात्म्य वर्णनकिया जिसके श्रवणसे अनेकजन्मके पातक दूरहोत हैं अबआप कृपाकरके यह कथनकरैं कि श्रीमथुराजीमें क्षेत्रपाल कौनहै जो सदापुरीकीरक्षा करताहै औ उसकेदर्शनकरनेसे क्याफलहै यहबचनसुन बाराह जी कहनेलगे कि हेधरणि बड़ीउत्तमबार्त्ता पूछीहो अबसावधान हो श्रवणकरो यहउत्तममथुरापुरीके क्षेत्रपाल शिवजी हैं जिनका नाम भगवान्भूतपतिहैं जिनके दर्शनकरनेसे मनुष्य निष्पापहो मथुराकी यात्राका फलपाताहै औ न दर्शनकरनेसे तीर्थयात्रा निष्फलहोतीहै हेधरणि इसमें यहकारणहै कि पूर्वकालमें शिवजी ने हमारे प्रसन्नहोनेकेलिये बड़ा उग्रतप किया जिसके करनेसे हम प्रसन्नहो प्रकटभये औ बोले कि हेशिवजी इस पूर्ण हज़ार वर्षके तुम्हारे घोरतप करनेसे हमबहुतप्रसन्नहैं जो इच्छाहो सो बरमांगो हेधरणि इसभांति कृपायुक्त हमारेबचनकोसुन शिवजी कहनेलगे कि हेभगवन् यदिआप कृपाकरके मुझे बरदेतेहो तो यहदीजिये कि आपकी परमप्यारी मथुरापुरीमें हमारास्थानहो यहशिवजीकी बाणीसुन प्रसन्नहो हमबोले कि हेशिवजीहमारी मथुरापुरीमें आप क्षेत्रपालहो निवासकरैं जो बिना आपकेदर्शन करनेसे मथुरातीर्थकी यात्रा सफल न हो अर्थात् मथुराकी यात्रा आपहीके दर्शनसे सफलहोय जिसभांति इन्द्रकीपुरी अमरावती सब पुरियोंमें रमणीयाहै ऐसही भूमिकेमध्य हमारी मथुरापुरीहै इसजम्बूद्वीपमें हमारीप्यारी मथुरापुरी सबपुण्य भूमिसे उत्तमा है जिसका प्रमाणचारोंदिशामें बीस२ योजनहै जिसभूमिके पद पद्मात्रदर्शन औ भ्रमणकरनेसे अश्वमेधनाम यज्ञका फलदुर्ल्लभ

नहींहै हेधरणि यह माहात्म्य आजतक ब्रह्माजीसे वा शिवजीसे वा और इन्द्रादिक किसीदेवताओंसे कथन नहींकिया और इस पुरीमें असंख्यतीर्थहैं मुख्य २ तीर्थोंकी संख्या साठकरोड़ साठ हज़ार छःसौ तीर्थ हैं तिसमेंभी गोवर्द्धन औ अक्रूर ये दोनों तीर्थ दक्षिण उत्तरके कोटिमें हैं प्रस्कन्द औ भांडीरये दोनों पूर्वपश्चिम कोटिमेंहैं औ सबोंसे उत्तमप्रधान विश्रांतितीर्थहै और हे धरणि असिकुंड औ बैकुंठतीर्थ ये दोनों नेत्रकेतुल्यहैं अबिमुक्त सोमतीर्थ यमन तिन्दुक चक्रतीर्थ अक्रूरतीर्थ औ द्वादशादित्य ये छवीतीर्थ मथुराजीके षडंगहैं हे धरणि इनतीर्थोंकी महिमा कहांतकबर्णन करें इन्होंके नामलेनेसे महापातक दूरहोतेहैं और कुरुक्षेत्रआदि तीर्थोंके सेवनसे जो पुण्यहोताहै उससे शतगुण अधिक पुण्य मथुराके दर्शनसेहोताहै हेधरणि जो महात्मा श्रीमथुराजीकायह पुण्य माहात्म्य पठन वा श्रवणकरें एकचित्तहोके वो सबपापोंसे मुक्तहो उत्तमगतिको प्राप्तहोयँ औ उनके दश पूर्वके औ दशपीछे के पितरसहित अपने इसभांति इक्कीशकुल उत्तमगतिकोप्राप्तहों और जो मनुष्य इस पबित्र कथाका मरण समयमें स्मरण पठन करै वो सब पापोंसे छुट मुक्तिको प्राप्त होय हे धरणि यह सब पापोंके नाश करनेहारी कथा हमने बर्णनकिया अब क्या सुनने की इच्छा है सो कहो॥

एकसौबावनकाअध्याय॥

श्रीबाराहजी भगवान् धरणीसे कहतेहैं कि तीनोंलोकमें ऐसा कोईतीर्थनहीं जो मथुरामण्डलमें न होय औ बहुतकहनेसे क्या है जहां रात्रि दिन हमाराही निवासहै वहां कौनसा तीर्थ औदेवता नहींहै जहांसाक्षात् कृष्णजीका रूपधार हमने क्रीड़ाकिया वहां पग२में तीर्थजाननाचाहिये और वह भूमि दूसरे स्थानके तुल्य किसभांति होसकतीहै हेधरणि श्रीमथुराजीका स्वरूपअर्द्ध

चन्द्रके तुल्यहै जिसके बासकरनहारे जीव कीटपतंग श्वान शृ-
गाल भी प्राणत्याग करनेसे हमारा स्वरूप चतुर्भुज होतेहैं उस
अर्द्धचंद्रकेमध्य जो नियमसे प्राणत्याग करैं उनकी मुक्तिमें क्या
संशयहै और मथुराकी यात्रा दक्षिणकोटिसे प्रारम्भकरके उत्तर
कोटिमें समाप्तकरनीचाहिये औ यज्ञोपबीतमात्रहीसे अनेककुल
की रक्षाहोतीहै यह श्रीबाराहभगवान्की बाणीसुन धरणीकहने
लगी कि हेभगवन् यज्ञोपबीतमात्रका क्या बिधान है सो आप
कृपाकरके कथनकरें यहसुन बाराह जी कहनेलगे कि हे धरणि
अब यज्ञोपवीतमात्र की बिधि कथन करते हैं सो श्रवण करो
जो दक्षिण दिशासे प्रारम्भ करके उत्तर में समाप्त करना है
इसीको यज्ञोपबीतमात्र कहते हैं जिसके करनेसे मनुष्य कैसहू
पापात्माहोय सो मुक्तहोताहै प्रथम शयनसेउठि प्रातःकालमौन
हो स्नानकर श्रीकृष्णकीपूजाकरै फिर तीर्थयात्राकरै इसीभांति
नियमसे यात्रासमाप्तकर अन्तमें बत्सके साथ दूधदेनेवाली गौ
औ उत्तमबस्त्र सुवर्ण चांदी आदि बित्तशाठ्यबर्जितयथासामर्थ्य
दानकर ब्राह्मणोंकाभोजनकरायदक्षिणादे आज्ञालें आपभीभोजन
कर यात्रासमाप्तकरै यहयात्रा कार्त्तिक से अवश्य करनी चाहिये
और हे धरणि जो अर्द्धचन्द्रमेंप्राणत्याग करतेहैं वोहमारे लोकमें
आतेहैं और कहींभी प्राणत्यागहोता जिसकी प्रेतक्रियाअर्द्धचन्द्र
मेंहोय वोभी बहुतकाल स्वर्गमें बासपाताहै और किसी जीवका
अस्थि जबतक अर्द्धचंद्रमेंरहैं तबतक वहजीव स्वर्गबासी होताहै
और कहांतक बर्णन करें यदिगहभी होय बिश्रांति तीर्थ औ
अर्द्धचंद्रमें प्राण त्यागकरने से चतुर्भुज होताहै जिस अर्द्धचंद्र
के एक किनारे गर्तेश्वर औ दूसरे किनारे भूतेश्वर तिसकेमध्यमें
हमनिवास करतेहैं हे धरणि मथुरानिवासियों के रूपसे हम से
कुछभेद नहींहै मथुरा बासियोंके तृप्त होनेसे हमतृप्त होते हैं
अब हे धरणि गरुड़जीका वृत्तांत बर्णन करतेहैं सोसुनो किसी

समय हमारे दर्शन के लिये गरुड़जी मथुरा में आये वहां क्या देखतेहैं कि सब प्रत्येकजीव श्यामवर्ण पीतांबरधारे चतुर्भुजओं गरुड़पर सवार यह देखि चकितहो घबड़ाय हाथजोड़ हमारी स्तुति करनेलगे ॥ श्लोकः ॥ ओं विश्वरूपजयादित्यजयविष्णोजयाच्युत। जयकेशवईशानजयकृष्णनमोऽस्तुते। जयामूर्त्त जयाचिंत्यजयलोकविभूषण ॥ हेधरणि इसभांतिशब्दोंकोउच्चारण करते गरुड़जी को देख प्रकटहो आश्वासन कर हम यह बोले कि हेगरुड़जी किस निमित्त हमारी स्तुति करते हो औ मथुरा में किस निमित्त आयेहो सो यथार्थ कहिसुनावो इसभांति हमारे बचन को सुन गरुड़जी कहनेलगे कि हे भगवन् यहांतो हमकेवल आपहीके दर्शन करनेको आये हैं परंतु आपके अनंतरूप देखनेसे घबड़ायकर आपकीस्तुति करनेलगे अबआपनिज मायाको दूरकर एकरूपहो मुझे दर्शनदे कृतार्थ किया अब जो आज्ञाहोय सो करूं परंतु आपनेमुझे अनंतरूपहो क्यों दर्शन दिया इसका कारणजानना चाहताहूं इसभांति हे धरणि गरुड़जीकी संशययुक्त बाणी सुन हमने यह कहा कि हे गरुड़जी मथुरा मंडलमें जितने जीव पापी औपुण्यात्माहैं वो सबहमारेही रूपहैं इस भ्रमके दूरकरनेको हमने यह माया दिखायाहै इतना कहके हमतोअंतर्द्धानभये औ गरुड़जीनेभीवहांसे यथारुचियात्रा किया इसभांति माथुरोंके स्वरूपका हमने वर्णनकिया जिनकी पूजामात्रसे हमसदा प्रसन्न होते हैं हेधरणि यहनिश्चयकरो कि जोजीव कीटपतंगआदि मथुराजीमें प्राणत्याग करतेहैं वो सब मुक्त होतेहैं औरजो आश्विनमास की शुक्ल द्वादशी को पद्मनाभजीका दर्शनकरते हैं एकादशीका व्रतकरके उनमनुष्योंका संसार में फिर जन्मनहींहोता और जो चैत्रमासकेशुक्लएकादशीका व्रत करकेरात्रिजागरण कर प्रातःकाल यमुनामें स्नानकर चित्तसे नाम विष्णुका दर्शनकरतेहैं उनके मुक्ति होनेमें कुछ संशयनहींहै

और जो मनुष्यकिसीसमयमें बिश्रांतितीर्थमें स्नानकर एकानंशा यशोदा देवकी औ महाविद्येश्वरी इनचारो देवियों का दर्शन करते हैं वो ब्रह्महत्याआदि घोरपातकों से छुटि उत्तमगति को प्राप्तहोते हैं और जो मनुष्य मथुरा जीके पश्चिम यमधारानाम तीर्थमें स्नानकरते हैं वो ग्रहबाधासे मुक्तहो सुखी होते हैं और जिस २ बांछाको मनमेंकर बिश्रांतितीर्थमें स्नानकर केशवभगवान्का दर्शन करते हैं वो सब मनोरथ उनके सिद्ध होते हैं औ अन्तमें हमारे समीपआते हैं॥

एकसौचौंसठिका अध्याय॥

श्रीवाराहजी कहते हैं कि हे धरणि औरभी मथुराजीमें जो पहले समयमें वृत्तांत भयाहै सो सावधानहो श्रवणकरो किसी समयमथुराजीमें गुणऔधन करकेयुक्त बसुकर्ण नामएकबैश्यथा जिसकी स्त्री परमसुंदरी पतिव्रता सबगुणों करकेयुक्त सुशीला नाम भई सो सुशीलाकी उमिर व्यतीत होगई वृद्धताकाप्रारंभ भया परंतु संतानका सुखनपाया इसकारण दुखीहो दीनचित्त मलीनमुख एकांत में बिलाप किया करती सो स्त्री किसीसमय सरस्वती यमुनाके संगममें स्नान करनेको गई वहां और कइक स्त्रियां निज २ बालकों को साथलिये स्नान आदि आवश्यक कर्म्म कररहीथीं औ संगमतीर्थ के थोड़ेही दूरकिसी वृक्षकेनीचे एक मुनि बैठरहेथे इसीसमय वह बणिक की स्त्री सुशीला सब स्त्रियों को निज २ संतानों के साथ आनंद करती देख मन में दुःखीहो मुनिजी के समीप बैठि धीरज छोड़ बड़े ऊंचे स्वर से बिलाप करने लगी तब हेधरणि उसस्त्रीका बिलापदेख मुनिजी करुणायुक्त हो यहकहनेलगे कि हेपुत्री तुमकौन हो औकिसकी स्त्री हो किसके शसे पीड़ितहुई इसभांति रोदन कररहीहो जिसे देख हमारीभी आत्मा पीड़ित होरही है यदिहमारे श्रवणयोग्य

होय तौ कथन करौ यह मुनिजी का बचन सुन सुशीला कहने लगी कि हे भगवन् जो भाग्यहीन मनुष्यहैं उन्होंके क्लेश की कौनगिनतीहै तथापि यदि आप कृपाकरके पूछतेहैं तौ आपमेरे दुःखको श्रवणकर जो मेरेलायक होयसो आज्ञादें जिसके करने से मैं इसक्लेश से छुटूं श्रीमहाराजयेजो स्त्रियांयहां स्नानकेलिये आईहैं वो निज २ पुत्र औ कन्याके साथ आनंदक्रीड़ा करती प्रसन्न होरहीहैं इन भाग्यवानोंको देखिमैं अभागिनी निज किये पाप के फल से संतानसुखसे रहित दुःखी होरहीहूं कि इसदुःख समुद्रमें डूबी किसभांति पारहोंगी इसभांति उस स्त्रीकी दीन बाणीसुन दयायुक्तहो मुनिजीबोले किहेपुत्री रोदन करनेसे क्या होगा तू सावधान हो गोकर्णेश्वर नाम शिवजी का पूजन औ भजन भक्तिपूर्वककर जिसके करनेसे अवश्यसंतानका सुखपावैगी इस हमारे बचनका निश्चयकर यह मुनिजी का वचन सुन भक्तिसे प्रणामकर अंगीकार किया और निज घरमेंजाय वृत्तांत सब पतिसे निवेदनकर आज्ञालें गोकर्णेश्वर जी के समीप जाय बड़े आदर से भक्तिपूर्वक स्नान चंदन अक्षत बिल्वपत्र पुष्प माला धूपदीप नैवेद्यआदि उपचारकर नानाभांतिकी मधुरबाणी से स्तुति आदि प्रार्थना करकेदोनों स्त्रीपति शिवजीका आराधन करनलगे औमुनिजीके बचनमें ऐसी श्रद्धाभई कि हमाराअभीष्ट शीघ्र होगा औ मनोरथको प्राप्त होंगे इसभांति करते २ जब दश बर्ष व्यतीत भये तब उन्होंकी भक्तिसे उमापति भगवान् प्रसन्नहो प्रकटहोकर यह कहनलगे कि हेबसुकर्ण हेसुशीले हम तुम्हारे दोनोंके भक्ति पूर्वक सेवा करने से प्रसन्नभये अबजो तुम्हारी इच्छाहोय सो बरमांगो और जिसलिये तुमदोनों हमारे आराधनको कियेहौ सो सुंदररूप करके युक्तगुण संपन्न पुत्रतुम्हारेहोगा और आजसे जो मनुष्य इस पवित्र तीर्थका सेवन करेंगे उनकासब मनोरथ सिद्धहोगा इतना कहकर शिवजी तौ

अन्तर्द्धान भये औ स्त्री पुरुष दोनोंमनोरथपाय कृतकृत्य हो सरस्वती संगममें स्नानकर घरमें जाय बड़े हर्षसे ब्राह्मणोको बस्त्र भूषण धन धान्य दै औ नानाभांतिके व्यंजन भोजन करायआशीर्वाद लिया उसी समयसे बणिककी स्त्री सुशीला गर्भकोधारण किया हे धरणिवो गर्भ जिसभांति शुक्लपक्ष में चंद्रमा बढ़ता है वैसही बढ़ने लगा दशमहीने पूर्ण होतही चद्रबिंबके तुल्यप्रकाश मान पुत्र उत्पन्नभया उसपुत्र जन्मके उत्सव में बसुकर्ण वैश्य उत्तम२ ब्राह्मणोंको बुलाय सुबर्ण औ रेसमी बस्त्रयुक्त दशहजार गोदान किया फिर ब्राह्मणोका आशीर्वादले जातकर्म कर नामकरण गोकर्ण ऐसाकिया इसीभांति अन्नप्राशन चूड़ाकर्मगोदान बिवाह आदि सब कर्म मंगल पूर्वककिया औ वह गोकर्ण पुत्र भी युवा अवस्थामें प्राप्तभया परन्तु सन्तानपुत्रकन्या आदि कुछ न भया इस व्यवस्थाको देखि फिर पुत्रका बिवाह किया इसी भांति चार बिवाह किया परंतु सन्तान किसीस्त्रीमें न भया तब तौ प्रजा क्लेश करक पीड़ित देव पूजन दान व्रत आदि सत्कर्म करने लगे औ बापी कूप तड़ाक आदि बनवाया कई देवतावों को मंदिर बनाकर स्थापनकिया औप्रपादान अन्नदाननित्यकिया करता संसारसे उदास रहता औरगोकर्णेश्वरके पश्चिम दिशामें बिष्णु भगवान् का प्रसाद बड़ाउत्तमबनवाया और बिष्णुमंदिर के सामने भांति २ के पुष्पों करके युक्त बाटिका बनाय उत्तमऔ मधुरफल वाले वृक्षों को लगाया बाटिका के सेवा करनेके लिये मालियोंको नौकर करदिया औरचारों स्त्रियोंके साथ गोकर्णबड़े प्रीतिसे रात्रिदिन समय २ परबिष्णु भगवान्का सेवा करना पुष्पोंकी मालाबनाना धूप,दीप,नैवेद्य भांति २ के देना और जब बिष्णु भगवान् की सेवासे कुछ औसर मिलता तौ स्त्रियोंकेसाथ निज हाथोंसे जलले पुष्पों को सींचना जो उसमंदिर में कोई आवेतो उसकी सेवा ऐसी करता जिसमें उसका आत्मा प्रसन्न

होजाता इसभांति बहुत कालके करने से धन क्षीणहोगया तब गोकर्णके चित्तमें चिंता उत्पन्नभई कि अब धन बिना माता पिता आदि कुटुम्ब औ अभ्यागतकीसेवाकिसभांतिहोसकैगी इसलिये उद्यम करनाचाहिये यह बिचारि व्योपारियोंकी संमतिले मणि रत्न औ नानाभांति के बहुत मोलवाले मुक्ता ले उत्तर दिशा में जाय विक्रिय कर वहां उत्तम जातिके घोड़े पट बस्त्र क्षौम बस्त्र औ बड़े मोलकी मणि खरीद कर प्रसन्न पूर्वक निजदेश मथुरा की यात्रा गोकर्ण ने किया वाराहजी कहत हैं हे धरणि इसभांति यात्रा कर सायंकाल किसी पर्बत के समीप उत्तल जल औ पशुओं का चारा घास देख किसी वृक्षके छायामें सब व्योपारियों के साथ निवास ले वृक्षोंके डालियोंमें निज २ बैलघोड़े आदि जीवों को बांधिजल औ चारा घासदे आप भी निज २ सेवकों सहित भोजन किया फिर हे धरणि उस पर्बतकी शोभा देखने के लिये कइक व्योपारी इकट्ठे होकर शिखर के ऊपर जाय इधर उधर घूमते क्या देखते हैं कि कहींतो जलके झरने बहरहे हैं औ कहीं पुष्पफल के भारमें झुके अनेक पक्षियों करके शोभित जिनोंमें भांति २ की लता लिपटि रही हैं ऐसे अनेक भांतिके वृक्ष लग रहेहैं औ जहांतहां उत्तम २ गुहा अनेकभांति के तपस्वियों करके शोभित हो रहीहैं इसभांति पर्वत की शोभा देखते २ यदि एक गुहा के तरफ़ गोकर्ण बणिक देखने लगातो उस कंदरासे यह शब्द सुनाईदिया कि बहुतउत्तम बातभई जो तुम यहां आये आनंद से बैठो हमारे गृहस्थ के आदर सत्कार को अंगीकार कर हमको कृतार्थ करो हे धरणि इसभांति का मधुर शब्द सुनि गोकर्ण जब उस गुफाके तरफ़दृष्टिदेता है तब तो क्या देखता है कि उस गुहाके बीच द्वारमें एक पिंजर जिसके मध्य उत्तम शुक बैठाहै वह टँगिरहा है वहशुक एककहता हैकि हे अतिथे आवो इसउत्तम औ पवित्र आसन पर बैठि पाद्य

अर्घ आचमन उत्तम औ मधुर फल मांस आदि पदार्थ अंगीकार कर यह गृहस्थ धर्म्म सफल करौ और आपका सत्कार जब हमारे माता पिता आवेंगे वो करैंगे हेसुजन जिसगृहस्थकेघर में अतिथि जायकर बिमुख लौटजाय बिनासत्कारके उस पापात्मा गृहस्थ को नरक भी नहीं ग्रहण कर सकते औ वह अतिथि आपना पाप गृहस्थकोदे औ उसकापुण्यलेकर जाताहै इसलिये गृहस्थ मनुष्य को अतिथि का पूजन विष्णु भगवान् के तुल्य करना चाहिये अतिथि उसे कहते हैं कि जिसके आगमनकाकोई समय निश्चय न होय सो हे मित्र आपतौ आय करके हमको कृतार्थ किया आज आपके आगमन से हम धन्य भये इसभांति शुकका बचन धर्म्मयुक्त औ मनोहर सुन गोकर्ण बिस्मित हो हर्ष से यह बोला कि हे शुक तुम कौनहौ कि जिस भांति धर्म्म युक्त बाणी तुम कथनकरते हौ इसभांति बड़ा पुराण के जानने हारा पंडित भी नहीं कह सक्ता इसलिये शुकरूप धारण किये कोई देवयोनि हौ क्योंकि इसभांति किसी पक्षीका समर्थ उपदेश करनेमें नहीं है इसलिये हमारे मनका उत्साह पूर्णकरनेकी योग्य समुझि निज वृत्तान्त सत्य २ कथनकरो इसभांतिगोकर्ण की बाणी सुनि पूर्व जन्मका स्मरण कर शुक कहने लगा किहे मित्र पूर्व जन्ममें जो मेरेसे अनर्थ भयाहै सो सावधान होश्रवण करो किसी समय सुमेरु पर्वत के उत्तर किनारे ऋषियों करके सेवित पुण्यभूमि में श्री भगवान् वेदव्यास के पुत्र शुकदेवमुनि तपकरत रहेथ वहांहीं नैमिषारण्य निवासी मुनि असित,देवल, मार्कण्डेय,भरद्वाज ,यवक्रीत,भृगु, अंगिरा,तैतिरि, रैभ्य, कण्व मेधातिथि, कुथ,तंतु,सुमन्तु,आदित्य, बसुमान, एकत,द्वित,त्रित, बामदेव,अश्वशिरा,त्रिशीर्ष, गौतम,दर, सिद्ध,देव,पन्नग औ गुह्यक आदिसब इकट्ठे होकर धर्म्म संहिता पुराण आदि श्रवण करने के लिये आय शुकदेवजी को प्रणाम कर निज २ प्रश्नों

को पूंछने लगे हे गोकर्ण हमता बासुदेव जी के शिष्य शुकोदर नाम ढिठाई के साथ सब मुनियों के मध्य बारम्बार बे अवसर पूछने लगे इसभांति हमारी धृष्टता देख के गुरु बामदेवजी निषेध करनेलगे तबतौ गुरूकाबचन हमने न स्वीकार कियाओ तर्कयुक्त बचन बारंबार करते रहे गुरू नित्य निषेध करते रहे परंतु जब आपुस में परस्पर किसी कथाका प्रारम्भकरें तो हम सबौंकेआगेहो जीतबेकी इच्छासे बीच २मेंकठिन २ प्रश्नकिया करते इसभांति जब हमने गुरूका निषेधकिसी भांति अंगीकार न किया तबतो कोप युक्तहो शुकदेवजी ने यह शापदिया कि रे दुष्ट जिसभांति तेरानाम शुकोदर है पक्षी संबंधी इसी भांति बे समय में बोलता है तो जाशुक पक्षीके योनिमें जन्म ले हे गोकर्ण इस घोर बचन के सुनतेही हम निज स्वरूप को क्षणमात्र में शुकरूप देखा इसभांति हमको शुक भया देख शुकदेव जी का प्रार्थना सबमुनि करनेलगे सबमुनियोंकी प्रार्थना सुनिशुकदेवजी बोलेकि यह शापतौ इसीभांति होगा परन्तु तुम्हारसब के प्रार्थना से यह बर देते हैं कि यहपक्षी सदा ज्ञानयुक्तजातिस्मर पुराणों के तत्व का जानने वाला सर्बशास्त्रके अर्थोंमेंकुशल हो मथुराजी में प्राण त्यागकर ब्रह्मलोकमें प्राप्त होगा हेगोकर्ण जी इसभांति शाप औ बरदान शुकदेवजी के मुखका श्रवणकर मथुरा २ इस शब्द को उच्चारण करता सब भांति दुःख उद्वेग करके युक्त हिमाचलके गुहामें निवासकरनेलगा देवयोग किसी समय शवरक हाथ लगे उसने हमको पिंजरे में रखलिया सो शवर निजस्त्रीके साथहमारी क्रीड़ा कराकरता और हेगोकर्णजी मुनिके प्रसाद से पूर्वजन्म का ज्ञान हमारा नहीं नष्ट हुआइस भांति अपने किये हुये कर्म्मका फल यथोचित भोगि रहाहूं तब तौ इसभांति शुकका वृत्तांत सुनि गोकर्णकहनेलगा किहेबुद्धिमान स्वस्थहो शोकनिवृत्त करो हमतुम्हारे नित्य स्मरणकरने

हारी औ मुक्ति देनेहारी मथुरानामपुरी के निवासी हैं बणिजके लिये इस देशको आये औ इच्छा पूर्वक व्योपारकर फिर मथुरा को जाते हैं वाराहजी कहते हैं कि हे धरणि गोकर्ण बणिक के मुखसे मथुरा शब्दके निकलतेही बड़ा प्रसन्न हो निज आत्मा को गोकर्ण का पुत्रमानि औ निज देहको अर्प्पण कर कुछकहने का बिचार किया कि उसीसयय शयनसे उठि बड़े अभिमानसे भरी शवरी ज्यों बाहर आई उसी समय आसन में बैठ उत्तम स्वरूप गोकर्ण बैश्य को देखा उसके देखतेही शुक कहने लगा कि हे मातः ये उत्तम अतिथि आये हैं इनका बिधि करके प्रीति से पूजन करो ए पूजा करने योग्य हैं इसभांति शुकका मधुर बचनसुनि जबतक कुछसत्कार किया चाहै तबतक शवरभी आय पहुंचा आतेही शवर से भी यही कहाकि हे पितः आज तुम्हारे बड़ भाग्य हैं जो ऐसे महात्मा मथुरा निवासी तुम्हारे अतिथि आयेहैं इसभांति धर्म्मयुक्त शुककी बाणी सुन हर्षयुक्त हो शवर गोकर्णका सबभांति सेवाकर प्रणामकिया और भांति२केमधुर२ फल मधु मांस आदि जो बनके उत्तम पदार्थ थे सो सब भक्ति पूर्वक निवेदन किया औ हाथ जोड़ नम्रहो यह बोला कि आपके हम सेवक हैं जो आज्ञाहो सो करैं इसभांति शवरकी बिनय बाणी सुनि गोकर्ण कहनेलगा कि हे शवर हमको क्या चहिये ईश्वरने सदा यमुना संगमका स्नान औ मथुरा पुरीका निवास दे रक्खाहै परंतु जो कुछ हमको दिया चाहते हो तो यह शुकजो पिंजरेमें है इसेहमको दीजिये हमरे पुत्र नहींहै इसे पुत्रस्थानमें रक्खेंगे इसभांति गोकर्णका बचन सुन शवर कहनेलगा कि हे मित्र हमको यदि सरस्वती औ यमुना के संगम का स्नानलाभ होय तबतो यहशुक तुमको देदेयँ इस शवरके बचन को सुन गोकर्ण बोलाकि सरस्वती औ यमुनाके संगम में जोफल प्राप्त होताहै सो तुमको मालूमहोयतौ कथनकरौ यहसुनि शवरकहने

लगा किहे गोकर्ण इस शुकने जो मथुराका फलओ द्वादशीव्रत का फल और संगमका फल सब भलीभांति हमसे कथन किया है इस करके हमसब जानते हैं और तौ मथुराका फल हमकहां तक बर्णन करसक्ते हैं परन्तु तिर्यक योनिमें हो वा राक्षस हो वा कीटपतंग कुछभी होजिसके निमित्त मथुरामें व्रतकरेउसीकी उत्तमगति होती है और संगमके स्नान करनेसे तौ कैसहू पात कीहोयसो उत्तमपदको प्राप्तहोताहै इसभांतिहमने संगम स्नान का औ गोकर्णेश्वरके दर्शनका फल श्रवणकिया है॥

एकसौ पैंसठकाअध्याय॥

वाराहजी कहतेहैं हे धरणि इसभांति शवर स्त्री पुरुष शुक का चरित्र श्रवण कराय सहित पिंजड़े के शुकको गोकर्ण नाम बैश्यके निवेदन करदिया तबतौ उसेले वहसिचल गोकर्णकछुक दिनमें जाय मथुरामें प्राप्त हो वहशुक निज माता पिताकेअर्पण किया औ सावधानहो सब व्यवहारोंको सँभार मथुरामें निवास करने लगा इसभांति बहुत दिनके रहते २ फिरजब धन क्षीण होगया तबतौ गोकर्ण उसी देशके बणिजको फिर बिचारकिया जिस देशमें शुक प्राप्तहुआथा इसबिचारसे कइक सौदागरों की संमतिले समुद्रके रास्ते जवाहिरियों को रत्नपरीक्षाकेलिये साथ लेकर छःमहीनेके योग्य सब पदार्थोंको नावमेंले उत्तम मुहूर्तमें पिता माताकी आज्ञाले यात्राका बिचारकिया तबतौ निजस्त्रियों कोयह आज्ञादिया किहेप्रिये वृद्ध मातापिताकी सेवासमय २ में औबाटिकाकी सेवा मन्दिरकी सेवा यथायोग्य करना कि किसी भांति कोई क्लेश औनुक़शान न होय इस भांति निज स्त्रियोंको आज्ञादे माता पिताको प्रणामकर देवताका दर्शन कर शुकको साथले मंगलके शब्दोंको श्रवण करता मथुराजी से चल नावमें बैठि यात्राकिया औनाव चलते २ जायसमुद्रमें यहुंची औरजिस

भांति अगाधसमुद्रमें नित्यबड़ेवगसे चलाकरतीथी वैसहीचलती रही हेधरणि भावीबश दैवयोगसे जो उलटा बायु चलनेलगा उसबेगसे नाव आगेकेमार्गसे भ्रष्टहो पीछेकोहटी औ मलाहजो नावके चलानेवालेहैं उन्होंसे न सँभारीगई तौ किधरकी किधर चलीगई इस अवस्थाको देख सबनावके निवासीसहित गोकर्ण हायर करनेलगे औ परस्पर कहनेलगे कि इसनावमें कोईएक ऐसा पापात्माहै कि जिसकेपापसे हमसब मृत्युबश होतेहैं इसी भांति चारोंतरफ़ घूमतीहुई नौकाको चारमहीने व्यतीतभये औ छःमहीनेकी अवधि करके घरसे यात्रा कियाथा सब कहनेलगे कि हाय अब क्याकरैं औ किसभांति जीवनहोय औ वह पापी किस भांति जाना जाय कि जिस एकके बाहर करनेसे सब का प्राण बचै इस बाणी को सुन शोचि बिचारि गोकर्ण बोला किहे भाइयो तुमसब पुण्यात्माहो केवल मैंहीं पापी हूं कि निस्संतान हूं संतान हीन मनुष्य पापी गिने जातेहैं इतना कहि जो साथ पिंजड़ेमें शुकथा उससे गोकर्ण कहने लगा कि हेपुत्र इसबिषम समयमें कुछ तुम्हारी बुद्धिमें आवै सो कथनकरो जिसमें यह सबका संकट छूटै यहसुन शुक कहनेलगा कि हेपिता डरको त्यागिदो मौन होजाव हम तुम्हारे संकटके दूरकरने का उपाय चिन्तन करलियाहै इतना कहि औ पिंजड़ेसे निकल उत्तर दिशा में ध्रुवनाम तारेको पहिंचानि नीच गतिहो उसनावसे उड़ा औ उड़ते २ कई योजनके बाद एक बड़ा ऊंचा पर्व्वतका शिखर दृष्टिमें आया उसे देख बड़े हर्षमें हो उस पर्वतपर गया तौ वहां क्या देखता है कि एक मन्दिर बहुत उत्तम शोभा करके युक्त बिष्णु भगवान्का उस पर्व्वत को शोभित कररहाहै उसे देख प्रसन्नहो यह बिचारनेलगा कि किसीभांति हमारा पिताभीयहां को आजाता तौ उत्तम होता इसी बिचारमें कुछ घड़ी व्यतीत भई कि निज २ हाथोंमें स्वर्णकी थालियोंमें भांति २ की पूजन

सामग्री लिये बहुतसी देवियां वहांआयपहुंची औ आतेही विष्णु भगवान्के तरफ़ देख (नमोनारायणाय) इस शब्दको कहि साष्टांगप्रणामकर उत्तमआसनपर बैठि आनंदपूर्वक नृत्यऔसंगानका प्रारंभकियाऔ भांति २ के बाजे बजनेलगेऔ हेधरणि उसी समय दिव्य भूषण औ वस्त्रों करके शोभित मनोहर जिनके रूप ऐसी अनेक देवियां वहांहीं औरआय प्राप्तभईं सबकी सब बड़ी भक्तिसे नाचिगाय विष्णुभगवान् को रिझाय निज२ स्थानको चली गईं फिर वह शुकक्या देखता है कि देवता के दक्षिण भागमें अनेक जटा के धारण करने वाले पक्षी बहुत बड़ा ऊंचा जिनों का शरीर सो बिराजमान होरहे हैं तिनों के मध्य में वह शुक लीखके तुल्य अत्यन्त लघु दीखता उससमय शुक उस जटायु को देख निज भाषामें शरण २ इस शब्द को बारम्बार पुकारने लगा तबतौशुककी दीनबाणीसुनि आश्वासन करता हुआ बड़ी प्रीतिसे जटायुष कहनेलगा कि हेशुक इस समुद्र के मध्य बड़े २ कराल जीवोंसेबचकरकेकिसभांतिकहांसे आय हौ सो आपना वृत्तांत सत्य २ बर्णन करौ यह जटायुषका बचन सुनि शुक कहने लगा कि हेमहाराज प्रारब्ध बश हमारा पिता नौकामें बैठिबणिजके लिये कई मनुष्यों के साथ आयाहै सो दैवगति बायु बश होनेसे नौका निज मार्गको त्यागि कुपथ आयगई इसबिपतिसे दुःखीहोनिजरक्षाके लियेइसपर्वतमेंआये सो आपसब प्रकार समर्थ हैं दीनऔ मृत्युके मुखमें गिरे जान आपहमारे पिताकी रक्षा करैं जिसमें हमको सुखहोय इस बचन को सुन सब पक्षीबोले कि हेपुत्र डरोमत हमारेसाथचलो नौका के समीप हम तुमको मार्ग बताते हैं हमारे पीठपर बैठि के तुम्हारा पिता सुखपूर्वक यहांको आवैऔर जलजंतुका भय नहीं करना सबहमारे चंचुसे डर हमको देख दूरहोजातहैंइतनाकहि जटायुष शुकके साथनौका के समीपचला औ जायवहांसे गोकर्ण

को निज पीठपर बैठाय लौटि उसी पर्वतपर फिर ल्याय उतारि दिया तबतौ गोकर्ण जटायुष के पीठसे उतरि कमलों करके शोभित उत्तम सरोवरमें स्नानकर संध्यातर्पण आदि नियमोंसे निवृत्तहो बिष्णुमंदिर में आय बिष्णु भगवान्‌की पूजाकर और देवताओंका दर्शनकर शुककी संमतिसे एकांतमें छिपकरके बैठि गया उसीसमयबहुतदेवियोंके यूथ उसीभांति निज २ हाथोंमें पूजा की सामग्री लिये आयपहुंचीं औ आतेही पूजनकरि नाच गान भांति २ के बाजेके साथकर सावधान हो सबसे जो बड़ी थी सो कहनेलगी किजो अभ्यागतदैवयोगसे आवै औमहात्मा होय ब्राह्मणका भक्तहोय उस भूखेको भोजनके लिये अमृत के तुल्य फल औ तृषाशांति करनेके लिये उत्तम मीठा औठंढाजल देनाचाहिये इसलिये गोकर्णको सबदो जिसमें तीनमहीने तक इसे क्षुधा तृषा फिरदुख न देवे जिसमें इसपुण्यात्माका शोक औ मोह सब सहित पापों के दूरहोय यहकहि उत्तमफलका भोजन अमृत तुल्य जलदे देवीबोली कि हे गोकर्ण अब किसीभांतिका भय औ शोक न करो यहस्थान स्वर्गके तुल्यहै इसमें यथासुख निवास करो जबतक तुम्हारे सबकार्य्य सिद्धि होयँ इस भांति गोकर्णसे बचन कहकर सबदेवी निज२ स्थानको चलीगईं उस दिनसे बड़े आनंदमें जिसभांति मथुरामें रहा करता उसीभांति उस पर्बतमें रहनेलगा हे धरणि दैवयोग से गोकर्णकी नावभी बायुने उठाकरके उस भूमिमें डालदिया जहां अनेकभांति रत्नों की पृथिवी तबतौ साथके व्योपारियों ने उस अमोल रत्नको ले इच्छापूर्बक नाव भरलिया औ गोकर्ण का खोज करनेलगे जब गोकर्ण न मिलातबतो सबकेसब दुःखीहो कहनेलगे कि गोकर्ण क्लेशसे वा लज्जासे समुद्रमें डूबि मरा देखो जिसको हम पिता करके जानते औरजो हमारी सबकी रक्षा पुत्रकी तुल्यकरता वह महात्मा कहांगया और हमउसके घरमें लौटिके क्या वृत्तान्त

कहेंगे औरतौ हमारा कौन बल है उसका भाग उसके पिताको देंगे यहबिचारि फिर मथुराजीकी यात्रा किया और हेधरणि उस पर्बत में इसीभांति बड़े शोकको करता गोकर्ण भी कालक्षेप करनेलगा किसीदिन शोकयुक्तहो शुकसे निजपिता माताकेलिये कहनेलगा कि हे शुक किसीभांति मातापिता का वृत्तांत हमको औ हमारा मातापिता को मिलना चाहिये तबतौ शुकबोला कि हेपितः हमपक्षियोंमें छोटे सबभांति असमर्थ हैं नहींतौ आपको यहांसे लेचलते सोतो होतानहीं परन्तुमथुरामेंजाय आपकेमाता पिताको तुम्हारावृत्तांत कहदेंगे औ उन्होंका वृत्तांत आपसेकहेंगे यहहमारी सामर्थ्यहै अबआपमुझे आज्ञादें तोमैं मथुराको गमन करूं यहशुककी बाणीसुन हर्षितहो गोकर्णकहनेलगा किहे पुत्र आनंदसे जावो बिलंब न करो वहांजाय हमारावृत्तांत मातापिता से कह शीघ्रयहां को आवो जिसमें हमारे प्राणरहैं बिना तुम्हारे हम किसभांति जीवेंगे यहगोकर्णका बचनसुन प्रणामकर उसी-समय शुकने मथुराकी यात्रा किया औ चलते २ कुछ काल में जाय मथुरा में पहुंचा पहुंचि गोकर्ण के पिता बसुकर्ण से सारा वृत्तान्त निवेदन कियाउसे सुनि शोकग्रस्तहो उसके मातापिता मृततुल्य मानि वह पुत्रका स्नेह शुक में करनेलगे औ यहबोले कि हे शुक हमारे जीवने के लिये गोकर्णके जोउत्तम २ वृत्तांत हैं सो बर्णनकरो जिसमें हमारे शोकके दिनकटें यह बसुकर्णका बचन सुनि उसकी इच्छा माफिक वह शुकपिंजर में बैठा मीठे२ बचन कहा करता कि इसीसमय ब्योपारी गोकर्णके साथी रत्नों से नाव भरके मथुराजी में आय पहुंचे औ आतेही बसुकर्ण के समीपआय वृत्तांत निवेदनकर गोकर्णका भागबहुत रत्ननिवेदन किया औ बसुकर्ण से आज्ञा लै निज २ घरको चले गये औ निज २ घरमें रहते बसुकर्ण की सेवा निजपिताके तुल्य करते काल व्यतीत करनेलगे॥

एकसौछाछठिकाअध्याय॥

वाराहजी कहते हैं हे धरणि गोकर्ण तौ उसी विष्णुमंदिर के समीप रहतारहा औ इसीभांति स्त्रियोंका नृत्य गान देखता रहता और स्त्रियांभी नित्यअपने समयआय २ विष्णुपूजन नृत्य गानकर गोकर्ण को भी आनंद दियाकरतीं इसीभांति तेरहदिन व्यतीत भये चौदहवें दिन निजसमय पर सब देवियाँ आईंतौ परन्तु अत्यंत दुःखी औ मनमलीन उदासीन बस्त्र जिनके फटे अंगसब भूषण शृंगार से रहित औ शिरकेकेश सब उखड़े जैसे और अंगोंमें जिसभांति बंदर के नखों से नोच खसोट दुर्दशा होतीहै वैसही दुर्दशा उन देवियों की होरही है और देहमेंजिस किसी अंगोंसे रुधिरकी धारा बहिरही है औ रोती हुई बारंबार यही कहती है कि अपुत्र मनुष्यकी स्वर्गमें गतिन हींहोती इस भांति स्त्रियोंकी पीड़ा युक्त बिलापबाणी सुन बड़े संदेह में हो गोकर्ण कहनेलगा कि हे देवियो किस दुःखसे यह तुम्हारा बिलापहै औ किस दुष्टने तुमको सताया सो कथनकरो यहसुनि सबको सब बोलिउठीं कि हेधर्म्मात्मन् हमारे दुःखके बिषय में तुमको प्रश्नकरनाअयोग्यहै सबके दुःखऔ सुखका कारणाईश्वर है अपने २ कियेहुये पाप औ पुण्यको सब भोगतेहैं इस भांति स्त्रियोंका बचन सुन उन्होंके दुःखके निश्चयकेलिये फिरगोकर्ण बड़े बिनय से नम्र हो प्रणामकर हाथजोड़ दीन हो कहनेलगा कि आपने कहातौ सबकुछ परन्तु हमारी बुद्धि ऐसीनहीं है जो समुझि जाय इसलिये जो गुप्तभीहै तथापि आप हमारे से कथन करैं अन्यथा हम पहलेही से अगाध दुःखसागर में डूबे हैं केवल आपही सबका आधार था अब इस तुम्हारे दुःखकोदेखि निराधार हो प्राण त्याग करूंगा यह बात गोकर्ण की सुन उन स्त्रियोंके समूह से एकस्त्री कहनेलगी कि दुःखतो उससे कहना

चाहिये जो उसको दूरकरै अन्यत्र कहना निष्फल होताहै और हे मित्र यदि पूछतेही हौ तौ सावधान हो हमारा वृत्तान्त श्रवण करो इस पृथिवी में जो मुक्तिको देनेहारी मथुरा नाम पुरी रमणीया है तिस पुरीमें अयोध्या पुरीका महाराज चतुरंगिनी सेनाको लिये बड़ी धूमधामसे तीर्थयात्रा के निमित्त आया और स्नान दर्शनसे निवृत्तहो चातुर्मास्य अर्थात् बर्षाकाल श्रीमथुरा जीमें निवासकरना बिचारा सो राजाने जहां डेराकियाथा वहां ही समीप एक बिष्णुमंदिर औ फलपुष्प करके युक्त उत्तम २ वृक्षोंकी बाटिका थी किजिसमें मधुरजल करके पूर्ण अनेक कूप बापी औ तड़ाग बनि रहेहैं औ चारोदिशा में घिराभया प्राकार अति दृढ़ रक्षाके लिये बनाहै उस बगीचेमें राजसेवक आय २ कर निर्भय जो जिसकी इच्छामें आवे उसे नोच खसोटकर देते इसीभांति थोड़ेही दिनमें वो बागबिध्वंसको प्राप्त होगया और रक्षावाले पुरुषों ने निषेधभी किया परन्तु उनका कथनकिसीने न माना औ बिध्वंस करदिया इतना कहकर औ बस्त्रोंसे निज २ मुखोंको ढँपिकर धीरज त्यागि रोदनकरनेलगी इसभांति उन सबका वृत्तान्त औ रोदनसुन गोकर्ण अत्यन्त दुःखसे पीड़ितहो निजमस्तकसे सबोंके चरणोंको प्रणामकर दीनतासे बिनयपूर्वक समझावनेलगा तबतौ थोड़ीदेरमें सावधान सबको देख गोकर्ण कहनेलगा कि यदि हम मथुरामें होते तौ उस बाटिका की ऐसी दुर्दशा न होती हमराजाको किसीरीतिसे निषेध करते ईश्वरकी गति दुस्तरहै जो हम इस अवस्थामें सबभांति असमर्थहैं बाराह जी कहते हैं हे धरणि इसभांति गोकर्णकी बाणी सुनि वो सब की सब चैतन्यहो बड़े प्रसन्नताईके साथ पूछनेलगीं कि हे मित्र आपकौन हौ औ किस भूमिमें तुम्हारा निवासहै औ किसलिये यहांको आयेहौ सो संपूर्ण वृत्तान्त बर्णन करौ यह स्त्रियों का बचन सुन गोकर्ण कहनेलगा कि हे भागमानो हम मथुराके

निवासी जातिके वैश्य गोकर्णनाम बणिजकेलिये आयहैं सोदैव-
बश किसीभांति यहांको पहुंचे उसदिनसे नित्य २ तुम सबको
बस्त्र भूषण आदि शृंगारोंकरके सुशोभित देखते थे अब तुम्हारी
यह दशादेखिके हम अत्यन्त दुःखी होरहेहैं सो अपना वृत्तान्त
यथायोग्य बर्णनकरो यहसुन उन स्त्रियोंमें एक चतुरास्त्री कहने
लगी कि हम सब बाटिकाके पुष्प लता वृक्ष आदि हैं हमारा
पालनसदा हमारेस्वामीकी आज्ञासेहोताथा तबहम सुखी रहती
थीं औ पुष्प फल पल्लव करके शोभित रहतीं सो जबसे राजा
वहां आय निवासलिया तबकेराजाके नौकरोंने क्रम२से हमारा
बिध्वंस करदिया उस पीड़ासे हमदुःखीहो यहबिचार रहीहैं कि
किसकी शरणमें जायँ जो हमारी रक्षाकरै अब हेमित्र हमारे में
पुष्प औ पल्लव तौ रहानहीं केवल वृक्ष औशाखाही शेषहैं इस-
लिये हमसब मूर्च्छित होरही हैं जो उस बाटिकाके मध्यमें ईंट
पत्थर का मंदिरहै सोई यहां रत्नमंदिर होकर दीखता है और
जो वहां बिष्णुभगवान्का पाषाण बिग्रह है सोई साक्षात् स्व-
यंबिष्णु भगवान् बिराजमान हो रहेहैं और जो वहां कूप औ
बापीहै सोई यहां अमृत रस करके पूर्ण भांति २ के कमलों
करके शोभित औ हंसगणोंकरके युक्त निर्म्मल सर बिराजिरहा
है औरजो वहां वृक्षहै वेसब स्वर्णकेहो यहां नारायणके समीप
शोभा देरहे हैं सो हे गोकर्ण उस बगीचेके बिध्वंस होनेसे हम
सब व्यथित औ कुरूप होरही हैं इसभांति हेधरणि स्त्रियों का
बचनसुनि गोकर्ण पूछनेलगा कि हेभागमानोजो मनुष्यबगीचा
औ पुष्प बाटिका कूप बापी देवमंदिर आदिबनातेहैं उनकोक्या
फलहोताहै सो आप बर्णनकरैं यह गोकर्णका बचनसुनि एकस्त्री
कहनेलगी कि हे गोकर्ण द्विजाति जो ब्राह्मण क्षत्रिय औ बैश्य
ये तीनोंबर्ण इन्होंका प्रथमधर्म्म इष्टापूर्त्तहीहै इष्टकरनेसे मनुष्य
स्वर्गको जाताहै औ पूर्त्तसे मुक्तिको प्राप्त होताहै वो बापी कूप

तड़ाग देवमंदिरआदि जीर्णको अर्थात् फुटे टुटेको उद्धार करते हैं अर्थात्नयेकरदेतेहैं वो मनुष्य पूर्त्तनामपुण्यके फलको प्राप्तहोते हैं औ हेगोकर्ण भूमिदान करनेवाला औगोदान देनेवालामनुष्य जिसलोकको जाताहै उसीलोकमें वृक्षलगानेवालाभी प्राप्त होता हैहेगोकर्ण अधिकतो क्या कथनकरैं परन्तु एकवृक्ष पिप्पलका एक निम्बका एक बटका दश पुष्पोंका दो वृक्ष दाड़िमके दोवृक्ष बिजूरानींबूके औ पांच वृक्ष आम्रके जो मनुष्य पृथिवीमें रोपण करताहै वो कैसहू पापीहोय परंतु इस पुण्यके प्रभाव से नरक नहीं देखता अर्थात् उसका स्वर्गही होता है हेगोकर्ण जिसभांति सुपुत्र कुलका उद्धार करता है इसी भांति पुष्प औ फलों करके युक्त वृक्ष निज लगाने वाले स्वामी को नरक से उद्धार करते हैं इस भांति स्त्रियोंकी बाणी सुन गोकर्ण प्रसन्नहो कहनेलगा कि इस अमृतके तुल्य बाणी श्रवण करनेसे मेराचित्त तृप्तनहींहोता औरभी कृपाकरके आप बर्णन करैं यह सुनि स्त्री कहने लगी कि हे गोकर्ण वृक्षरूपीपुत्र औरसुपुत्रोंसे अधिक पुण्यवान्होते हैं निज स्त्रीसे उत्पन्न हुआ पुत्र कोई पुण्यवान् होताहै औ वृक्ष तो सभी पुण्यरूपी होते हैं बिचारकरोकि जिनके काष्ठसे अग्निहोत्र आदि यज्ञहोतेहैं औजिन्होंकी छायामेंपथिक बिश्रामकरसुखपाते हैं औरजिन्होंके आश्रयमें अनेकभांतिके पक्षी पुष्पफलसे निर्बाह करनिवासकरतेहै.औजिन्होंके पत्रपुष्पफल छाल मूल आदि औषधोंमें मनुष्यका उपकार करतेहैं इसलिये वृक्षोंकी पंचयज्ञ सदा होतीरहतीहै औनानाभांतिके गृहकार्य्य जिन्होंसे सुधरताहै और दोबार बर्षमें फलदेते हैं वह मानों निज रोपन करनेवाले माता पिताकेतृप्त होनेकेलिये ब्राह्मण भोजन कराते हैं इसभांतिउत्तम कर्म्म किस पुत्रसे बनि पड़ेगा जोवृक्षोंकी बरोबरी करसकताहै इसभांति वृक्षोंकी महिमाकहिकरके मालतीदुःखसे उसास लेती मूर्च्छित हो पृथिवीमें गिरपड़ी तबतो गोकर्णने ठंढ़ेजलके छांटेसे

फिर सावधान किया तब स्त्री फिरबोली कि हे गोकर्ण तुम निज वृत्तांत फिर कथनकरो यहसुन गोकर्ण बोला कि हेस्त्रियो हमारे घरमें माता पिता वृद्धहोरहेहैं और उत्तम व्रतके धारण करनेवाली चारि स्त्री पतिव्रता हमारे घरमेंहैं औजिस बाटिका औमन्दिरका तुम कथनकरतीहो वो हमाराहीहै हमारे वहांनहोनेसे सबभांति क्लेश तुमको भया अब हम क्याकरैं सबविधि असमर्थ हैं केवल शोकही मात्रका सावकाशहै औरतो क्या करसकतेहैं यहगोकर्ण का बचनसुनि एक स्त्री जो सम्पूर्णोंमें वृद्धाथी वह बोली कि हे गोकर्ण यदि मथुरा चलनेका बिचारहोय तो एकमुहूर्त्तमें तुमको ले चलें देखो तुम्हारे लिये यह बिमान आयाहै अब बहुतसेरत्न भूषण औ उत्तम २ फल लेकर इस ऊपर बैठिके यात्राकरो ईश्वर को प्रणाम करिकै तब तो गोकर्ण मन्दिर में जाय परमेश्वर को प्रणामकर आज्ञाले स्त्रियोंके साथ बिमानमें बैठतेही क्षणमात्रमें जहां राजाने डेरा कररक्खाथा वहांही आय पहुंचा औ आतेही राजाकेसमीप जाय अनेकभांतिके मणि औरत्न औ अनेक भांतिके अपूर्व मधुरफलको निबेदन कर प्रणाम किया तबतो इसे देख राजा बहुत प्रसन्नहो आदर पूर्वक निज आधे आसनपर बैठाया औ कुशल पूंछने लगा तबतो गोकर्ण ने राजासे यह कहा कि हे महाराज इससमय एक घड़ीके वास्ते यहांसे हमारे संग आप बाहर चलें कुछ आश्चर्य्य आपको देखावैंगे यहसुनि राजानिज सेनापतिसे बोलाकि दोघड़ीके लिये हम कहींजातेहैं किसीभांति का उत्पात नहोने पावै सेनाकी रक्षा करना इतना कहि गोकर्ण के साथ होलिया तबतो गोकर्ण निज बिमानके समीपजाय सब वृत्तांत बर्णन करि स्त्रियोंको देखाया सब चरित्र देखि आश्चर्य्यमें हो राजा गोकर्णकी प्रशंसा बारंबार करनेलगा और राजाकोबर देकर स्त्री सब सहित बिमानके स्वर्गको चली गई फिर गोकर्णने निज वृत्तांत सब राजासे यथायोग्य बर्णन किया उसेसुन राजा

प्रसन्नहो गोकर्ण के लिये हाथी घोड़े उत्तम २ वस्त्र औ बहुत से ग्राम दिये बाराहजी कहतेहैं हेधरणि इस भांति पूर्त्तनाम पुण्य का फल हमने बर्णनकिया ॥

एकसौसतसठिकाअध्याय॥

बाराहजी कहते हैं हेधरणि राजासे बिदाहो गोकर्ण मंगल-पूर्बक जाय निज घरमें माता पिताको मिलि प्रणामकर शुक को देखि प्रसन्नहो निजचारो स्त्रियोंको मिला और जो २ मथुरावासी निज इष्ट मित्रथे उन्होंको मिल आनन्दहो निज पुष्पबाटिकामें जाय टुटे फुटेको सँभारि ब्राह्मणोंको बुलाय बड़े धूमधामसे यज्ञ का प्रारम्भ किया जिसयज्ञमें भांति२ के भोजन औ नानाभांति के मधुर पदार्थ इकट्ठेकर सहित चारो स्त्रियों के औ माता पिता के यज्ञ समाप्तकर इच्छापूर्बक ब्राह्मणों को दक्षिणा दे मंगल पूर्बक गाने बजाने वालोंको धन औबस्त्र भूषणसे तृप्त कर बिदा किया और सब मथुरा बासियोंको बुलाय एक २ को छवो रस के भोजनसे तृप्तकर मिलि भेंटि प्रणामकर हाथजोड़ यह कहने लगा कि हे मित्रो मैंतो केवल माता पिताकी पूर्णकृपा औ तपके प्रभावसे औ आप लोगोंके पुण्यसे जीवता लौट आयाहूं इतना कह औशुककी तरफ देखके बड़ेमोहमें युक्तहो रोदन करनेलगा हेमित्रो जिस बाटिकाके नष्ट होनेसे धर्म्म उत्तमगति औ राजासे बहुत पदार्थों का लाभ भयाहै यह सब हमारे पुत्र शुकके बुद्धि पराक्रमका फलहै यह कहि सबको यथा स्थान बिदाकर मथुरा जीमें रहनेलगा औ कुछ काल ब्यतीत होने पर वहांही शुकके नामसे मन्दिर उत्तम औ दृढ़ बनवाय शिवजीका लिंग स्थापन किया जिसका नाम लोकमें प्रसिद्ध शुकेश्वर भया उस प्रतिष्ठा के अन्त में ब्रह्मयज्ञ किया जिस यज्ञ में दो शत ब्राह्मण इच्छा-पूर्बक भोजन औ दानको पाय तृप्तहो आशीर्बादको दे निज २

स्थानको गये औ गोकर्ण साथ शुकके मर करके मुकहो दिव्य लोकमें प्राप्तभया हे धरणि शुकश्वर शिवजीका दर्शन औ संगममें स्नान करनेसे उत्तमगति मनुष्य पाताहै। इसभांति हमने श्रीमथुराजीका माहात्म्य गोकर्णेश्वर शिवका औ सरस्वतीका संगमफल वर्णनकिया जिसके श्रवणसे मनुष्य इस लोकमें धन औ पुत्र आदि सुख परलोक में उत्तम बिमान में बैठि दिव्यलोक को जाताहै॥

एकसौअरसठिका अध्याय॥

श्रीवाराहजी कहते हैं हेधरणि अब और भी कथा पाप के दूर करनेहारी हम वर्णन करते हैं जिसमें मुक्तिका देनेहारा संगम तीर्थका प्रभाव वर्णन है किसीवनमें एक धर्मनिष्ठ उत्तम ब्राह्मण रहाकरता जिसकानाममहाव्रत सो ब्राह्मण जप, तप, हवन, देवपूजन, वेदपाठ आदि उत्तम कर्म्मों करके युक्त बहुत काल उसी वनमें व्यतीतकिया किसीदिन उस महाव्रत ब्राह्मण के मनमें यह आया कि इस शरीरको उत्तम २ तीर्थोंमें धोना चाहिये यह विचारि प्रथम मथुरामें आय सूर्य्योदयन नामतीर्थ से स्नानकर प्रदक्षिण का प्रारम्भ करताभया असि कुण्डका स्नानकर दक्षिण कोटिके तीर्थमें स्नानादि कर्म्मोंसे निवृत्तहो उत्तर कोटिके तीर्थोंमें स्नानकिया इसभांति मथुराके सबतीर्थों का स्नानकर पुष्कर नामतीर्थके यात्राका विचारकर जब कुछ दूर चला तबतो किसी शून्यमार्गमें जबगया तो क्यादेखताहै कि बड़े घोर बिकट दर्शनहैं जिनोंके ऐसे भयंकर पांचप्रेतदीखे उन्हों को देख घबराय हृदय से कम्पितहो नेत्रोंको मूंदलिया और कुछ धीरज मनमें लाय वह महाव्रत प्रेतोंसे पूछनेलगा कि आप सब घोर भयंकर मूर्त्ति धारणकिये कौनहौ औ किस पाप के करने से यह भयदेनेवाले स्वरूपको प्राप्तभयेहो कहां

तुम्हारा सबका निवास है यह महाव्रत ब्राह्मणका बचन सुनि प्रेत कहनेलगे कि हे ब्राह्मण क्षुधा तृषा करके पीड़ित निज बुद्धि के फल उदयहोनेसे सब उत्तम कर्म्मोंसे भ्रष्ट बहुतभांति के दुःखको भोगते संसारमेंघूमिरहेहैं नतौपृथिवीमें न आकाश में औ न कहीं दिशाओं में हमको शरण है अब हमारे पांचों का नाम श्रवणकरो पर्य्युषित शूचीमुख शीघ्रग,रोधक,लेखक क्रमसे यह हमारा सबका नामहै इसभांति प्रेतोंका बचनसुनि ब्राह्मण बोला कि प्रेतयोनि तौ दुष्कर्म्म से होती है यह नाम किसभांति तुमको प्राप्त भया इसबचनको सुन प्रेत कहनेलगे कि हमतो सदा स्वादयुक्त उत्तम भोजन करते और ब्राह्मणोंको स्वादहीनऔर ठंढा भोजनदेते इसलिये हमारा नाम पर्य्युषित भया और इसका नाम शूचीमुख इसनिमित्तभयाहै कि भिक्षुक ब्राह्मणों कोअन्नके लिये बुलायके पीछे न देना निराशलौटा-यदेना और यह जो शीघ्रग नामक है सो इस कर्म्मकरनेसे नामपाया कि बड़ेशीघ्र ब्राह्मणोंके समीपजाता औ अनेक भांति मिथ्या बोलि उन्हें आशा देता औ पीछे किसीभांति का उप-कार न करता औ रोधकानाम जो प्रेतहै इसने यहकर्म्मकिया है कि सदा सब ब्राह्मणों को रोकिकै आपहीजो कुछ यजमान से मिलतासो लैलेता औ उत्तम भोजनभी आपही करता इसी से यह रोधन नामपाया और लेखक जो है इसका यह कर्म्म है कि नित्य भूमिमें कुछ लिखाकरता औ मौन भी रहता इसलिये लेखक कहाया और हे ब्राह्मण लेखकनाम प्रेतकी गति मन्द है रोधक नाम प्रेतकी गति नीचे शिरकरके है औ शीघ्रग पंगुगति है शूचीमुखकी गति हाथोंसे है औ पर्य्युषित केवलग्रीवा मात्रहै ओठ औ उदर लम्बेहैं अंडभीबहुत गंभीरहैं अंगसब सूखेहैं हेब्राह्मण इसभांति हमने निजवृत्तांतवर्णन किया और भी जो सुनने कि इच्छा हो सो पूछो यह सुनि ब्राह्मण

कहनेलगा कि हेप्रेत जो २ मनुष्य लोक में जीव हैं उनका भोज हमको विदितहै तुम्हारे सबका क्या आहार है सोकहो हमारे श्रवणकरने की इच्छा है इस बचनको सुनि प्रेतकहने लगे कि हेब्राह्मण जो २ पदार्थ सबजीवोंकरके निंदितहैं और जिसके सुनने से ग्लानि होतीहै वो पदार्थ हमारा भोजन है सो क्रम करके श्रवण करो जो स्त्रियोंकामूत्र, विष्टा, थूक, कफ, शौचका जल यही सब हमारा भोजन है और जो घरपवित्र नहीं रहता उसमें हमनिवासकरतेहैं और जिसघरमें मंत्रबिना यज्ञ होता है औ वलि वैश्वदेव नहींहोता गुरूका पूजन नहीं होता स्त्री जिसघरमें मालिक हैं फूटेपात्र हैं औ उच्छिष्टभूमि रहती है नित्य जिस घरमें कलह होताहै कुपात्रको दानजिस घरमें मिलता है औ विधिहीन कर्म्महोतेहैं वर्णसंकरोंका संघ जहां होताहै औ जिस घरमें निन्दित कर्महोतेहैं इन स्थानोंमें हेब्राह्मण हमारा निवासहै और पात्रहीन का दान हमकोप्राप्त होता है हेब्राह्मण इसभांति हमने निज शरीर के निर्वाह का वृत्तांत वर्णनकिया अब हम इसप्रेतयोनिसे बहुतदुःखी होरहे हैं इसलिये आप कृपाकरके यह कथनकरैं कि किस२ कर्मके करने से प्रेतयोनि दूर होती है यह सुनि ब्राह्मण कहनेलगा कि हेप्रेत जो मनुष्य कृच्छ्रनाम चन्द्रायण व्रत करते हैं श्रद्धा करके उत्तम मधुर भोजन ब्राह्मणों को देते हैं अभ्यागतों की सेवा करते हैं देवता, माता, पिता, औ गुरूआदि पूज्योंकाकुल त्यागि कै जो सेवनकरते हैं औ मनुष्य प्रेत नहीं होते और जो मनुष्य मानमें अपमानमें समरहतेहैं औ शत्रुमित्रको तुल्य समझतेहैं वे प्रेत नहींहोते जो मनुष्य किसी महीनेकी शुक्ल चतुर्थी तिथिको को मंगलबार होनेपर श्राद्ध निज पितरों का करते हैं वेभी प्रेत नहींहोते और जिन्होंने क्रोध, काम, लोभ मोह, तृष्णा आदि दुर्गुणों को जीतिलियाहै क्षमा, दया शील

संतोष में जो सदा निरतहैं वेभी प्रेतनहींहोते और जो सदा दरिद्र सत्पात्र को दानदेते हैं औ शुक्लपक्ष कृष्णपक्षमें दोनों एकादशी सप्तमी औ चतुर्दशी का व्रत करते हैं वेभी प्रेतनहीं होते और जो गौ को ब्राह्मणको तीर्थको पर्वतको औ नदियों की नित्य प्रातःकाल उठि प्रणाम करते हैं वेभी प्रेतनहीं होते इसभांति धर्मयुक्त ब्राह्मण का बचनसुन प्रेत कहनेलगा कि हेमहात्मा जिन कर्म्मों से प्रेतनहीं होता औ तो आपने वर्णन किया अब कृपा करके येभी कहैं कि किस कर्म्मसे मनुष्यप्रेत होताहै तब ब्राह्मण बोला कि हे प्रेत जो ब्राह्मण शूद्रका अन्न भोजनकर प्राण त्यागकरै औ प्रेत होता है औ पाषण्डी नग्न कापालिक आदि धर्म्म विरुद्ध निन्द्यमनुष्यों के साथ भोजन करनेसे इकट्ठे बैठनेसे बातचीत करनेसे स्पर्श करनेसे मनुष्य प्रेतहोता है और जो मनुष्य पाषंड मार्गमें स्थित हैं मद्यपान करते हैं औ पर स्त्री गामी हैं वे भी प्रेत होते हैं और जो अप्रोक्षितमांसअर्थात् बलि विधान रहित जो पशु मारे जाते हैं उनकी मांस खातेहैं वे भी मरिकरके होते हैं और जोदेवताका धन ब्राह्मण का धन गुरूका धन चोरवृत्ति से वा हठकरिके ग्रहण करते है औ कन्यादान देकर फिर नहीं देते वेभी प्रेत होते हैं और माता,पिता, बहिनि, स्त्री, पुत्र,इनकोजोनिरपराध त्याग करते हैं वे भी मरणे परप्रेत होते हैं और जो मनुष्य ब्राह्मण विद्याको सांग पढ़के योग्य को त्याग करतेहैं अयोग्य को यज्ञ कराते है और जो ब्राह्मण होकर शूद्रका सेवाकरतेहैं वेभी मरकरके प्रेत होतेहै औ हे प्रेत जिसने ब्राह्मण का वध-गौका वधकिया होम जो कृतघ्नहोय पंच महा पातकजिसने किया होय वे सब मरकरके प्रेतयोनि पाते है और जोगुरु के आज्ञाको भंग किया होय औ उपदेश करनेवाले को नमाने अर्थात् इनके बचनमें नटिकेऔर जो नास्तिकोंसेपतितोंसे दान

लेय वे सब पुरुष पातकी होतेहैं मरनेसे प्रेतयोनि पाते हैं इस भांति ब्राह्मण के मुखसे धर्म्म विवेक युक्त वाणी सुनिप्रेत बोला कि हे भगवन् जिनोंका कर्म्म आपने कथन किया है इन पापियों कामी कभी गति होती है अर्थात् इन मूढ़ोंके पापछूटने का उपाय किसी भांति कही है यह सुनि ब्राह्मण कहनेलगा कि हे प्रेत जोधर्म्म से बिमुख, मूढ़ दया औ दान करकेवर्ज्जित हैं उनकी और कहीं नीगति दीखती नहीं केवल मथुरा जी मे संगमतीर्थ के बिना यदि संगम तीर्थमें श्रवण नक्षत्र करके युक्त भाद्रमास के द्वादशीका में स्नान कर पितरों का तर्पण कर बामन भगवान् का दर्शन करके हवन ब्राह्मण भोजन स्वर्ण, चांदी, वस्त्र, छत्र, पादुका आदिजो दान करते हैं वेकिसी भांति प्रेत योनिमें नहींजाते सब पापों से मुक्त हो उत्तम विमान मे बैठि स्वर्गलोक को जाते हैं और हे प्रेतजिस किसीने संगमतीर्थ में स्नान किया औ सबपापोंसे मुक्तहो वैकुंठनिवासी होताहै और एभी हमने शास्त्रमें सुनाहै कि जो संगम तीर्थका स्मरण वा नामोच्चारण करता है उस्को गंगा स्नान का तुल्य फल होता है और जो इस संगम महात्म्य को प्रेत होके श्रवणकरै औ प्रेत त्वको त्यागि उत्तम बिमान में बैठि विष्णु लोकको जाता है यह ब्राह्मण महात्माका बचनसुनिप्रेत कहने लगे कि हे ब्राह्मणोत्तम हमारे कल्याण के लिये कोई बिधि पूर्वक ऐसा व्रत उपदेश करो कि जिस्के करणेसे हम इसअधर्म प्रेत योनि से मुक्तहोउत्तम गतिको प्राप्तहोंय यहसुनि ब्राह्मण कहनेलगा कि हे प्रेत इस्की विधि जिसप्रकार पुराण में वर्णन कियाहै सो श्रवण करो किसी समय मांधातानाम सूर्य्यवंशी राजानिज कुलके पूज्य पुरोहित वशिष्ठजीसे यह प्रश्न किया कि हे ब्रह्मन् किस पुण्य कर्म्मकरनेसे जीव प्रेतयोनि से मुक्त हो उत्तम गतिको प्राप्तहोताहै सो आपवर्णनकरैं यह राजाका

प्रश्न सुनि वशिष्ठजी कहने लगेकि हे राजन् जोमनुष्य श्रवण नक्षत्र युक्त भाद्रपद के द्वादशीकोस्नान तर्प्पण श्राद्ध दानहवन आदि उत्तम कर्म्मकरते हैं वो सब एक २ लक्ष गुण को प्राप्त होता है और यदि उस समय मथुरामिलै तो संगम में स्नान कर श्रीबामन भगवानको पूजि जो कलशदानकरतेहैं हे राजन् उनको जो फल प्राप्त होता है सो श्रवणकरो कि कपिला गौ को उत्तम पर्वमें हेमशृंगी रौप्यखुरीताम्रपृष्टी मौक्तिक पुच्छी औ सवत्सा जो वेदबिद ब्राह्मणको देनेसे पुण्यहोताहै औपुण्य संगमके स्नान मात्र सेहोता है औ श्रवण द्वादशी व्रतकरनेसे मनुष्य कोप्रेत वा राक्षसहोने का भयनहीं रहता अंतमें चौदह इंद्र जितने काल राज्यकरते हैं उतना काल वहपुरुषस्वर्गवास करताहै फिर स्वर्गसे भ्रष्ट होने पर भूमिमें वेदविद पूर्वजन्म का स्मरण करनेमेंसमर्थ धनकरकेयुक्तब्राह्मणहोताहैऔब्राह्मण हो ज्ञानयोग साधन कर अंतमें मुक्ति को प्राप्त होता है औ उसी द्वादसीको करवा अन्नसे पूर्णकर रत्न स्वर्ण से युक्तकरि औ उपानत् अर्थात् जूते पादुका छत्र आदिजो दान करता है औ होम करके ब्राह्मणोंको उत्तम भोजन देताहै सहितदक्षिणा के सो प्रेत नहीं होता हे धरणि इस द्वादशी के पूजनकी यह रीतिहै कि स्नान कर गोमयसे भूमिका लेपनकर पूजाकी सामग्री संपादन कर विष्णुकी मूर्तिस्वर्णकी वा शालग्रामको घट पर स्थापित कर सावधान हो इन मंत्रोंसे पूजाकरै प्रथमहाथमें पुष्पले इसमंत्रसे आवाहनकरे॥ ओंआगच्छवरदानात्वं श्रीपते मदनुग्रहात्। सर्वगोऽपिनिजांशेन स्थानमेतदलंकुरु॥ आवाहन कर इसमंत्रसे प्रणामकरैमंत्रः॥ ओंयस्त्वंनक्षत्ररूपेण द्वादश्यां नभसिस्थितः। तन्नक्षत्रपतिम्वन्दे मनोवांछितसिद्धये॥ इसमंत्र से प्रणामकरि तीर्थजलसे स्नान करावै मंत्रः॥ओंनमःकमलनाभायकमलालयकेशवाकमूर्त्तेसर्वतोऽव्यापि नारायणनमोस्तुते॥

इस मंत्रसे स्नानकराय वस्त्र भूषणादिक निवेदनकरै मंत्रः॥ ओं सर्वव्यापिजगद्योने नमःसर्वमयाच्युत । श्रवणद्वादशीयोगे पूजांगृहणीष्वकेशव॥ सबभूषणवस्त्र समर्प्पणकर इसमंत्रसे धूप देयमंत्रः॥ओंधूपोयंदेवदेवेशशंखचक्रगदाधर। अच्युतानंतगोविन्द वासुदेवनमोऽस्तुते ॥ धूपदेइसमंत्रसे दीपदेय॥ ओं तेजसासर्व लोकाश्च निर्वृतास्सन्तुमेऽव्यय । त्वंहिसर्वगतंतेजो जनार्द्दन नमोऽस्तुते॥ इसमंत्रसेदीपदेनैवेद्यदेवैमंत्रः॥ओंअदितेगर्भवासाय वैरोचनिशमायच। त्रिभिःक्रमैर्जितालोकावामनायनमोस्तुते॥इस मंत्रसे नैवेद्य निवेदनकर अर्घ्यदेवै मंत्रः॥ओं देवानांसंभवस्त्वंहि योगिनांपरमागतिः।जलशायिन्जगद्योनेअर्घ्यम्मेप्रतिगृह्यतां ॥ इसमंत्रसेअर्घदे संस्कार करे अग्नि में इस मंत्रसे आहुतिदेय मंत्रः॥ ओं हव्यभुक्कव्यकर्त्तात्वं होताहव्यस्त्वमेवच । सर्व-मूर्त्तेजगद्योनेनमस्तकेशवायचस्वाहा॥ इसमंत्रसे अष्टोत्तरसहस्र आहुति दे दक्षिणा समर्प्पण करै मंत्रः ॥ ओं हिरण्मयान्नन्दे-वेश जलवस्त्रमयोभवान् । उपानक्छत्रदानेन प्रीतोभवजनार्द्दन॥ इस मंत्रसे दक्षिणा दै हाथ जोड़ नम्रहो स्तुति करै मंत्रः॥ ओं पर्ज्यन्योसलिलंसूर्य्यः वरुणंकेशवःशिवः । अग्निर्वैश्रवणोदेवः पापंहरतुमेऽव्ययः॥इसमंत्रसेस्तुतिकरनमस्कारकरैमंत्रः॥ओंअन्नं प्रजापतिर्विष्णु रुद्रेन्द्रचन्द्रभास्कराः।अन्नंत्वष्टायमोऽग्निश्चपापं हरतुमेऽव्ययः॥इसमंत्रसे प्रणामकर करकाकोदानकरै मंत्रः॥ओं वामनोवुद्धिदाताचद्रव्यस्थोवामनस्स्वयम्।वामनस्तारकोभूम्यां वामनायनमोस्तुते॥ इसमंत्रको पढ़ि यजमान करका को देवै ब्राह्मण दानलेतेसमय यहमंत्र पढ़ै मंत्रः ॥ ओं वामनःप्रतिगृह्-णाति वामनोमेप्रयच्छति । वामनस्तारकोभाभ्यां वामनायनमो नमः ॥ इसमंत्र को पढ़ि ब्राह्मण ग्रहणकरै फिरि विधानपूर्वक यजमान गोदान करै मंत्रः ॥ ओंकपिलागेषुतिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश।दत्वाकामदुघालोका भवंतिसफलान्नृणाम् ॥ इसमंत्र

से गोदान करि विसर्ज्जनकरै मंत्रः॥ ॐ ममपापक्षिदेतुभ्यं देवगर्भसुपूजित। मयाविसर्ज्जितोदेव स्थानमेतदलंकुरु॥ इसमंत्रसे विसर्ज्जनकर सबसामग्री आचार्य्य को निवेदन करै वाराहजी कहतेहैं हे धरणि महातपाब्राह्मण प्रेतसे कहनेलगा कि हे प्रेत इसभांति द्वादशी का व्रत जो मनुष्य करते हैं भाद्र मास में उनका वांछितफल सिद्धि होताहै औ सब पापों से मुक्त हो उत्तमगतिको प्राप्तहोतेहैं और हे प्रेत जो मनुष्य यमुना सरस्वती संगमतीर्थमें स्नान तर्पण श्राद्धऔगोदानादि अनेक विधिकादान करतेहैं उस एक गुण पुण्य का शतगुण फल उसतीर्थ के प्रभावसेहोताहै औरहमभी इससंगमतीर्थका सेवन भक्तिपूर्वक विधिसे बहुतकालकियाहै इसलियेतुमसबजो पापमूर्त्तिहो सो हम को नहीं बाधाकरसकते भाद्रमहीने में श्रवण नक्षत्र सहित द्वादशी व्रतकरने से सब पाप दूरहोतेहैं हे प्रेत हमने यह प्रभाव साक्षात् देखाहै वाराहजी कहतेहैं हे धरणि इसभांति महातपा ब्राह्मण के कहतेहीआकाशमें नगारे आदि बाजे बजनेलगे औ पुष्पवृष्टि होनेलगी औ प्रेतोंके लिये विमान उत्तम पुरुषों करके युक्त प्राप्त भये औ देवदूत कहने लगे कि हे प्रेतो यहहमारा बचन श्रवण करो किइस महातपा ब्राह्मण के मुखसे पुण्यकथा श्रवण करनेसे तुम्हारा सबका प्रेतशरीर छुटगया इसलिये उत्तमों के साथसंभाषण करना भी उत्तम होताहै इतना कहि उन प्रेतों को विमानमें बैठाय सबके देखतेही स्वर्गलोक को लेगये वाराहजी कहते हैं हे धरणि इस भांति तीर्थ औ व्रतका प्रभाव हमने वर्णन किया किसिसके पुण्यचरित्र सुनने से प्रेत मुक्ति हो उत्तम-गतिकोप्राप्तभये तिसके साक्षात्सेवन करनेसे मुक्ति क्यों न होगी हे धरणि इस कथाको जो मनुष्य श्रवण करैं भक्तिसेम पठन करैं औ सब पापों से मुक्तहो उत्तमगति को पावतेहैं

औरपिशाच संज्ञक जो लोक प्रसिद्ध उत्तमतीर्थहै जिसके यश श्रवण करणे से मनुष्य प्रेत योनि से मुक्त होताहै॥

एकसौउनहत्तरकाअध्याय॥

श्रीवाराहजीकहतेहैं हेधरणिअबकृष्ण गंगातीर्थ माहात्म्य बर्णन करतेहैं सो श्रवण करो जिसतीर्थमेंश्रीव्यासजी महाराज नित्यस्नान करतेहैं सोतीर्थजिस्का कृष्ण गंगानाम है सोसोम तीर्थ औ बैकुण्ठतीर्थकेमध्यमेंहै जहां श्रीव्यासमुनिनेबहुतकाल तपकियाहै औ जिस कृष्णगंगातीर्थ के सेवनकरने केलियेसदा देश २ केमुनिआया करते औ अनेक भांतिकासंदेहशास्त्रपुराण स्मृति आदिका पूंछि२ निस्संदेहहोते औरकालञ्जरनामशिवजी का दर्शनकर कृष्णगंगाकास्नानसफल करते वहांहीं व्यासजी नेसबसंशको त्यागि पक्षाहारीहोबारहवर्षतपकिया पक्षाहारी उसे कहतेहैं जो पूर्णिमाको औअमावाश्या को भोजन करै और सब तिथियों को व्रत करै इसभांति कृष्ण गंगापर बारहबर्ष तप करके बदरीबन में तपकरने कोगये वहां जाय उत्तम तपकर सिद्धिकोप्राप्तभये हेधरणि जिस कृष्णगंगा के प्रभाव को सुमंतुमुनि व्यासजी के शिष्य निजनेत्रों सेदेखाहै सोकथा हम बर्णन करतेहैं सावधानहो श्रवणकरो हे धरणि पांचाल देशकारहने वाला वसुनाम ब्राह्मण किसी समय दुर्भिक्ष होने से क्षुधा करके पीडित निजस्त्री को साथले दक्षिण दिशाको चला कुछदूरजाय शिवनदीके दक्षिणतीर संवर नाम ब्राह्मणों करके शोभित ग्रामथा वहांजाय निवासकर ब्रह्मवृत्ति करने लगा वहां कुछकाल व्यतीत होनेसे पांचपुत्र औ दो कन्या उस वसुनामक ब्राह्मण के उत्पन्नभई तब तो समय देखिपुत्रों का औ कन्यावों का विवाह यथायोग्य कर कालबश होगया तबतौ उस ब्राह्मणकी कन्या कहीं पुराण कीकथामेंसुनाथाकि

मथुरा में अर्द्धचंद्रनामक तीर्थमें अस्थि प्रक्षेप करने से मुक्ति होतीहै यहस्मरणकरि मथुरा की यात्रा करनेको किसीसमय उसदेशके यात्री चले तबनिजपिताका अस्थि लेकर वसुब्राह्मण की कन्या भी चली परन्तु वह ब्राह्मणकन्या बालरंडाथी औ मनुष्य लोकके सबस्त्रियों में एकही सुंदरी कि जिस्का स्वरूप देखिकै मनुष्यकी तौ कथा कौन देवता भी मोहितहोजाते इसी से उस्कानाम लोकविख्यात तिलोत्तमा था कि जिसके देहमें एक तिलमात्रभी कहीं शोभारहित होय वहतिलोत्तमा जब मथुरा में आई तब निजपिताके अस्थि को तो अर्द्धचंद्रतीर्थ में छोड़ि औ पिण्डदानकर भक्तिपूर्वकतीर्थमें स्नान करती निवास करने लगी तबतौ किसीदिन भावीवश उसे वेश्यावों ने देख औ देखतेही मोहित हो उसे इकल्ली जानि निजमाया बशकर वेश्या बनाय जाय कान्यकुब्ज देश का राजा वहां तीर्थबास करताथा उसेमिलाया फिरतो वह तिलोत्तमास्वच्छंद चारिणी वेश्या सर्वत्र जाय वित्तोपार्जन करने लगी औरगान वाद्य नृत्य आदि वेश्यावोके उद्यम में ऐसी प्रवीण भई कि जिसका नाम वेश्याके कर्म्म में प्रथमगिनाजाता इसीभांति वहां निर्वाह करती रहने लगी॥

एकसौसप्तत्तरकाअध्याय॥

बाराहजी कहते हैं हे धरणि प्रथम वसु ब्राह्मणके पांचपुत्र नो कह आये हैं उनोंमें सबसे छोटा जो पुत्रथा सो व्योपारियों के साथ कुछ उद्यमके लिये बहुतसाधनले सब के साथ चल अनेक भांतिके देशों को देखता आय मथुरा में पहुंचा औ मथुरा के तीर्थोंमें स्नानकर देवतावोंका दर्शनकरवनिज के लिये निवास किया वहां कुछ दिनके रहने से बहुत धन इकट्ठे होगया तबतौ धन होनेसे भोग करनेमें प्रवृत्तहो वेश्या

भोग के लिये जबचाहा तब वाहीतिलोत्तमा भाग्य वश मिली किसी देव मंदिरमें गान कररहीथी उसेदेखि मोहितहो दूती भेजि बहुतसा धन दे उसे स्वाधीन कर निजघरमें दोनों बड़े आनन्द में रहनेलगे औदिन२अनेकभांति के बस्त्र भूषणचंदन सुगंध द्रव्य आदिकों से औ पुष्पमाला आदिभोगके उत्तम पदार्थों से सुखपूर्वक कालक्षेप करनेलगे इसीभांति भोग बिलासमें जब छह महीने व्यतीतभये तब एकदिन कृष्णगंगा में स्नानकरने के लिये आया तौ व्यासजी के शिष्यसुमंतुमुनि ने देखा कि उस ब्राह्मण का सबदेह कृमि करके पूण हारहा है औ स्नान करतेही औ सब कीड़े रोममार्गहो निकल कृष्ण गंगामें लोपहाजाते यहदेखि आश्चर्यमानि मुनि उसब्राह्मण से कहनेलगे कि यहकौन मनुष्यह औ किसकापुत्रहै देखोबिचारसे यहबड़ापापीहै जो नित्यइसकदेहसेस्नानसमयमें कीड़े असंख्य गिड़तेहैं औ तीर्थकेप्रभावसे नित्य निवृत्त होजातेहैं यह बिचारि किसीदिन सुमंतुजीने पूंछाकि अरेभैयातू कौनहै क्या जातिहै औ पिता माता तुमारा कौनहै यहांदिनरात्रि क्या कामकरताहै सो ठीक२हमसे कहिसुनावोयहसुमंतुजीकाबचनसुनि ब्राह्मण बोला कि हेमुनीश्वर हमपांचालदशीब्राह्मणहैं दक्षिणदश से बणिजव्यापारकेलिये श्रीमथुराजीमेंआयेहैं यहां दूकानकरते हैं औ अपने घरमें रात्रिव्यतीत कर नित्य प्रातःकाल कृष्ण गंगा तीर्थ में स्नानकरते हैं औ त्रिगरत्तेश्वर नाम शिवजीका दर्शनकर कालंजर का दर्शन कर घरमें जाय भोजनसे निवृत्तहो निजव्यवहार में प्रवृत्त होतेहैं यह ब्राह्मण का बचनसुनि सुमंतुजी कहनेलगे कि हे ब्राह्मण नित्य यह क्या आश्चय दखत हैं कि स्नान के समय इतने कीड़े तुम्हारे देहसे गिरते हैं कि जिनका कुछ ठिकाना नहीं औ स्नानकरतेही सब कीड़े नष्ट होजातेहैं तुम्हारा देह निर्मल होजाताहै इसलिये कोईगुप्त

में उग्र पाप करतेहो जिस पापका यह चिन्ह नित्य दीखता है जो इस तीर्थ के प्रभाव से स्नान करतेही निवृत्त होजाता है कालंजर के स्पर्श करने से कैसहू पातकी होय वहशुद्धदेह होजाता है इसलिये विचारिकै जो कुछ पाप गुप्त व प्रकट तुमसे बनता है सो प्रकट कथन करो क्योंकि इस तीर्थ का माहात्म्य जानके तुम्हारे हितके लिये हम पूछते हैं इसभांति तीनों काल के जानने वाले सुमंतुमुनि के बचनको सुनि ब्राह्मण चुपहो वहांसे चलागया कुछभी उत्तर न दिया औ घरमेंजाय दिन ब्यतीत कर रात्रि में एकांतहो निज स्त्री जो थी तिलोत्तमा बेश्या उससे पूछनेलगा कि हेप्रिये तुम किस देश की हौ औ किसकी कन्या हौ सब अपना वृत्तांत हमसे कहि सुनाओ यहां कितने दिनों से तुम रहतीहौ इसभांति जब ब्राह्मण ने पूछा तबतो उसने कुछ उत्तर न दिया फिर कुछुक देरमें ब्राह्मण कहनेलगा कि जो हमने पूछा उसका उत्तर तुमने कुछ न दिया इस उत्तर दिये बिना हम अन्न जल न करेंगे इसभांति ब्राह्मण की प्रतिज्ञा को देखि तिलोत्तमा सब वृत्तांत आदिही से कथन करना प्रारम्भ किया कि हे प्रिय यदि आप हमारा वृत्तांत पूछतेही हौ तो सावधान हो श्रवण करो श्रीगंगाजीके उत्तर किनारे पांचालनाम नगर तिसमें हमारा पिता माता निवास करताथा दुर्भिक्षके क्लेशसे वहांसे निकलकर जाय दक्षिणदिशा में नर्म्मदा के दक्षिण तट ब्राह्मणों के ग्राम में निवास लिया वहां रहते २ पांच पुत्र औ सबसे छोटी एकमेंभाग्यहीन कन्या उत्पन्न भई जब मेरे पिता ने बिवाह किया तो थोरेही दिन व्यतीत होनेसे मैं तो विधवा हुई औ मेरा पिता भी कालबश होगया तब मथुरा के स्नानकरनेको वहांसेयात्री बहुतआनेलगे उन्हीं सब के साथ पिताका अस्थि ले मैं भी यहां आई आय कृष्णगंगामें अस्थिक्षेपकर देवब्राह्मणकी सेवाकरती तीर्थस्नान

करती निवास करनेलगी भाग्यबश कुछ दिन बीतने से वेश्या वों का संग भया उन्होंकेसंगसे यह हमारी दशाभई इसभांति हम अभागिनी का दोनों कुल नाश करने वाला वृत्तांत है मैं पतित होगई कि जिस अधर्म कर्म करनेसे पति के कुलमें औ पिताकेकुलमें इक्कीश पुरुषों का अधोगति भया इस भांति उस ब्राह्मणसे निज वृत्तांत कहि तिलोत्तमा व्याकुलहो रोदन कर ने लगी इसभांति अपने किये अधर्मको चिंतनकर औ उत्त म कुलका जन्म समझि धीरज को त्यागि ऊंचेस्वर से रोदन करनलगी तब तौ उसका रोदन सुन सब स्त्री इकट्ठी हो आश्वासनकरनेलगीं किहेतिलोत्तमे क्योंरोदन करतीहैक्याक्लेश भया बाराहजी कहतेहैं हेधरणि तिलोत्तमाका बचनबज्रकेतुल्य पांचाल्य ब्राह्मणसुनिकै मूर्छितहो पृथ्वीमेंगिरा तबतोसबस्त्रियां ब्राह्मण के चारोंदिशामेंहो आश्चर्य्यमानि सबपूछनेलगीं किसी भांति उस्की मूर्छाजगीतो सबउस्के क्लेशकाकारण पूछनेलगीं तबतो उसब्राह्मणने सबवृत्तांतअपना औतिलोत्तमाका आदिसे कहिसुनाया औनिजचित्तमें अगम्यागमनका महापातक समुझि प्रायश्चित्तकरबेके बिचारमेंहो संसारसे बिरक्तहो यहकहनेलगा कि जो ब्राह्मणबधकरतेहैं औमद्यपानकरतेहैं गुरुस्त्रीगमनकरतेहैं उनकेलिये शास्त्रविहित यहीप्रायश्चित्तहै कि अग्निमेंभस्महोना देखोमाताको गुरूकास्त्रीको भगिनीको पुत्रबधूको कन्याकोऔ पिताकी भगिनीको अगम्याकहतेहैं इनोकगमनकरनेसे अग्निमें शरीर भस्मकरदेनेसे मनुष्य पबित्रहोताहै ब्राह्मणतो तिलोत्तमा को निज छोटीभगिनी समुझ इसभांति पश्चात्तापमें हुआ औ तिलोत्तमाभी अपनासगाभाई उसब्राह्मणकोजानि शोकसव्याकुल होनिष्यापहोनेकेलिये निजमरणा बिचारि जो उस्के पासधनधा-न्यबस्त्र भूषणरत्न आदिपदार्थथे व सबब्राह्मणोंकोदे केबलशरीर मात्रशेषरख जायकालंजरका दर्शनकर कृष्णगंगा के किनारे

चितावनाय अग्निकोप्रज्वलितकर अपनेपापके दूरकरनेलियेस्ना
नकरशिवजीका दर्शनकर प्रणामकर चितामेंप्रवेशकरना बिचारा
औरइसीभांतिब्राह्मणभीसर्वस्व दानकरगंगामेंस्नानकर शिवजी
कोप्रणामकरचितापज्वलितकर प्रवेश करना चाहाउससमय ईशा
वास्पउपनिषदकाजपकरताहुआजायसुमंतु मुनिकेसमीप प्रणाम
करकहनेलगा किहेभगवन्जाआप गुप्तपापपूछतेथेसोमेरेसे अग-
म्यागमनरूप पापहुआहै देखोहेप्रभो यहउत्तम मथुरापुरी इसमें
मनुष्य यथाशक्ति पुण्यकरताहै हमऐसे अधर्म्मी औ कुलनाशक
किसहोदराभगिनीसे बहुत कालगमनकिया जो आपनेदिव्य
दृष्टिसेदेखिकै मेरेदेहसेगिरते कृमिवतायेथे सोसबयथार्थहै मेरे
ऐसेहीकर्म्महैं जिससेनित्यमेरे देहसेकृमि बहुतसेगिडतेहैं कृष्ण
गंगाके प्रभावसेनित्य २ देहनिर्म्मलहोजाती सो सबसत्यहैमेरे
से अगम्यागमन पातकहोगया इसपापके दूरकरनेकेलिये अब
देहत्याग करूंगा अबआपकेचरणोंका प्रणामकरताहूं आपमु-
झेआज्ञादेवै इसभांति निजपापको सुमंतुजीसे निबेदनकर बहुत
साघृतचितामें छोंडिजो उसनेचितामें प्रवेशकरना बिचारा उसी
समय आकाशबाणीभई कि हे ब्राह्मण तुमदोनों एसासाहस
नकरो किसलिये भस्महोतेहो तुमतोनिष्यापहो फिर किसलिये
मरणबिचारतेहो यहबिचारकरो कि जिसभूमिमें श्री कृष्णजीने
जन्मलिया औनानाभांतिकी क्रीडाकरीऔश्रीकृष्णजीके चरणक-
मलसे यहपृथ्वी चिन्हितहोगई अबयह स्थान ब्रह्मसम है यह
जो कुछकिसीसे पापबनिपड़े तौतीर्थस्नानकरनेसे निवृत्तहोता
औरभूमिमेंपापकरनेसे वहपापतीर्थ स्नानकरनेसे निवृत्तहोताहै
औतीर्थका कियाहुवा पाप वज्रलेप होता है जिसभांति गंगा
सागर संगमके स्नान करनेसे मनुष्यकी ब्रह्महत्या दूरहोतीहै
इसीभांति कृष्णगंगाके स्नानसे सबभांति के पातक निवृत्त
होतेहैं औरकेसहू पापहोय इनपांच तीर्थके स्नानसे शीघ्रनिवृत्त

होतेहैं जैसे एकादशीको विश्रांति तीर्थका स्नान द्वादशीको शूकर क्षेत्रका स्नान त्रयोदशीको नैमिषाररायमें चक्रतीर्थ का स्नान चतुर्दशीको प्रयाग त्रिवेणीका स्नान औपूर्णिमामें पुष्करक्षेत्र का स्नान जोमनुष्य करतेहैं वे सब पापोंसे मुक्तहो उत्तम गतिको प्राप्त होतेहैं औरयेपांचोतीर्थ न बनिपड़ें औसबका इकट्ठेफल लिया चाहे तो मथुरामेंही विश्रांतितीर्थ सरस्वती संगम असिकुंड कालंजर औ कृष्णगंगा इनपांचो तीर्थके स्नान करनेसे मनुष्यज्ञात अज्ञात दानोंभांतिके पापोंसे निवृत्तिहो उत्तमगतिको प्राप्त होताहै सुमंतुजी कहतेहैं हे ब्राह्मण मथुराके सबतीर्थोंसे अधिक इन पांचतीर्थोंका माहात्म्य धरणीसे वराहजी भगवान् ने वारंवार कहाहै जोसाक्षात् परमेश्वर चराचरके स्वामीयज्ञ मूर्ति मथुरामें निवास करतेहैं उनको नियमसे तीनिदिन दीप दान जो करतेहैंऔसब पापोंसे मुक्तहो श्वेतद्वीपको प्राप्तहोतेहैं औरहे ब्राह्मण द्वादशीको जो कालिंजरमें स्नानकर यथाशक्ति दान करताहै औ उत्तम विमानमें बैठिविष्णुलोकमें प्राप्तहोताहै वाराहजी कहतेहैं हे धरणि इसभांति सुमंतुजीकीवाणीसुननम्र हो हाथ जोड़ पांचाल ब्राह्मण कहनेलगा कि हे भगवन् आप हमारेगुरूहैं औपिताहैं अबकौनसी आज्ञामुझेहोतीहै मैं अग्नि में प्रवेशकरूं कितीर्थ सेवनकरूं जिस्में मेरा कल्याणहोय औ मैंपापके भयसे छुटूं सो कृपाकरके आपकहैं अथवा त्रिरात्रव्रत कृच्छ्रव्रत चांद्रायण प्राजापति आदिव्रतोंमें जिस किसीकेकरने से मेराभोक्षहोय सो आपउपदेशकरैं यह ब्राह्मण कावचनसुनि सुमंतुजीकहनेलगेहेब्राह्मणजोकुछ आकाशवाणीभइहै वोसत्यहै मित्थ्यामतिमानो औरहमने तो प्रत्यक्षतुमारे शरीरमें कृमिरूप पातकदेखाहै वोहोपातक स्नान करनेस नित्यही निवृत्तिहोता थाऔनिर्म्मलहोजातेथे अबयोनहींविश्वासकरते इसलिये तुम सर्वथानिष्पापहो औरयह जो पापिनि तुम्हारीबहिनिहै सोभा

पापमुक्तहो सतीधर्म्मको धारणकिया अब इसकोभी उत्तमगति होगी इसमें संशयनहींहैं वाराहजीकहतेहैं हेधरणि इसभांतिके प्रभावकरकेयुक्त तीर्थमथुरामेंहै कृष्णगंगाओकालिंजरओशूकर इन तीर्थोंका माहात्म्य हमने वर्णनकिया हेधरणि जो मनुष्य इसतीर्थमहात्म्यको श्रद्धासेस्मरण पठनवाश्रवणकरतेहैं ओसब पापोंसे मुक्तहो उत्तम गतिको प्राप्तहोतेहैं उनमनुष्योंका सात जन्मका कियाभयापापसब शीघ्रनिवृत्तहोताहै और शतगोदान के पुण्यको प्राप्तहोताहै अंतमेंवह मनुष्य मुक्तिभागीहोताहै॥

एकसौइकहत्तरवांअध्याय॥

वाराहजी कहतेहैं हे धरणि अब औरएकबड़ीविचित्र कथा बर्णनकरतेहैं सोसावधानहो श्रवणकरो किसीसमय द्वारकापुरी में सुखपूर्वक स्त्रीपुत्र भृत्यमित्रके साथ आनंदपूर्वक विराजमान श्रीकृष्णचंद्रको जानि नारदमुनि आय प्राप्तभये उनेदेखिश्री कृष्णजी अभ्युत्थानदे पाद्यअर्घ आचमन मधुपर्क आदिपदार्थों से पूजनकर प्रीति से प्रणामकरि निजसिंहासन परबैठे तब नारदजी ने कहा कि हे कृष्णजी आप एकांत होवें तो हम को कुछकथन करना है इसनारदजी के बचन को सुनिएकांत हो मुनिजी से हाथजोड़ कहनेलगे कि अब मैं सावधान एकांतहूं क्या आज्ञा होती है सो करूं यह श्रीकृष्णजी का बचनसुन नारदजी कहनेलगे की हेमहाराज आपकापुत्र सांव-नामजोहै युवा औस्वरूपवान देखनेलायक स्त्रीजनोंकामनहर-नेवाला इसकी अबजहां तहांयह ख्यातिप्रसिद्ध होरहीहै कि सब आपका अंतःपुर इसकेवशीभूत होरहीहैं यहकथाब्रह्मलोक मेंप्रसिद्धहोगई इसलियेयहविचार करनाचाहिये कि जिसमनुष्य की सत्कीर्तिलोकमें प्रसिद्धहोय औउत्तम पुरुषगिना जाताहै औस्वर्गमें बासपाताहै जिसकी दुष्कीर्तिलोकमें प्रसिद्धहोय वह

अधम कहाताहै अंतमें नरकगामीहोताहै इसलिये आपकेउत्तम औनिर्म्मल कीर्तिमेंसांवकलंक लगाताहै सोआप इसभांतिइन्हों की परीक्षालेवें कि एकांतमें निजसोरहहज़ाररानियोंको बुलाय जुदे २ आसनपर बैठाय उनके मध्यसांवको बैठारिये तबसबों का क्षोभ आपकोबिदित होगा यहसुनि नारदजीका बचनमानि उसीभांति सबस्त्रियोंके सहित सांवको बुलायन्यारे२ बैठायसब के मध्यमें सांवकोबैठायातबतौदोनोंहाथजोड़ सांवजीकहनेलगे किहेप्रभो आपने किसलिये बुलायाहै सो आज्ञादीजिये इसी समय सांवका मनोहर रूप दखि श्रीकृष्णजीके देखतेही सब स्त्रियां मोहविवश कामसे विह्वल होगईं इस अपूर्व अवस्था को देखि श्रीकृष्णजीने यहकहा कि हे स्त्रियो यहांसे उठि २ अपने २ स्थानको जाव यह आज्ञापाय सबस्त्री निज२ स्थानको चलीगईं औ सांव वहांही कांपता हुआ हाथजोड़े बैठारहा औ श्रीकृष्णजीकोसहित नारदके देखिके लज्जित हो पृथिवी में देखनेलगा तबतौ श्रीकृष्ण जीने नारदजी से स्त्रीका चंचलता स्वभाव औ पापका कारण कहने लगे कि हे नारदजी स्त्रियोंको एकांतसमय न मिलने से फुरसति न मिलनेसे औजारपुरुष के न मिलने से पतिव्रतात्व होताहै अर्थात् इन सबोंके नहोनेसे स्त्री पतिव्रता होतीहै और स्त्रियोंका सब कालमें यही स्वभाव होताहै कि उत्तम पुरुषको देख विह्वल हो शीघ्र स्खलित हो जातीहैं और हे नारदजी यहसांव स्वरूपवान् तेजस्वी औ सब भांति धर्म्मगुणोंकरके युक्तहै स्त्रियोंके क्षोभमें सांवका कुछदोष नहीं केवल इसके स्वरूपको देख स्त्रियों ने निजजाति स्वभाव चंचलता प्रकट कियाहै इस श्रीकृष्णजीके वचनको सुनि सांव के लिये शापदेने के निमित्त युक्तिपूर्वक नारदजी यह कहनेलगे कि महाराज आपने कहा सातोठीकहै परन्तु विनादो चक्र रथ नहीं चलसकता इसीभांति बिना दोनोंके स्नेह होनेसे स्त्रियोंका

बीर्य्य कदापि नहीं निकल सकता देखो प्रद्युम्न जीके देखनेसे सबस्त्रियां लज्जितमात्र होतीहैं औ सांवके दृष्टिसे स्खलितहोती हैं यदि सांवका स्त्रियोंके साथ अंतरंग मैत्री न होती तौवीर्य्यपात इन्होंकाकभी नहोता देखिये आपके प्रत्यक्षसांवकेदृष्टिपात होतेही सबकीसब कामातुर हो ऐसी बिकलभईं कि आपकाभय भी कुछनरहा बीर्य्य त्याग करदिया इसलिये इसका उपाय कीजिये जिसमें आपको किसीभांतिकादुर्यशनहोयहमबारंबार मुनियोंमें आपका यह अयश सुनिके असहमानिके आयेहैं अब आप इस सांव पापी का त्यागकीजिये जिसने आपकी स्त्रियों को भ्रष्ट किया इतना कहि नारदजी तौ चुपहोगये वाराहजी कहते हैं हे धरणि इसभांति नारद जी का वचन सुनि क्रोध करि श्रीकृष्णजीने सांवको शापदिया कि हेदुष्ट आजसे कुरूप होजा यह श्रीकृष्णजीके कहतेही सांवतौ कुष्टरोगकरके युक्त होगये औ सांव के शरीर से रुधिर औ मज्जा गल २ करके गिड़ने लगी तबतौ सांव उसक्लेशसे अत्यंत पीड़ितहो बिनय पूर्वक श्री कृष्णजीसे प्रार्थना करनेलगा तब उसकी विनयसुन श्रीकृष्णजी ने कहा कि इसके मालिकनारदजी महाराजहैं उन्हींकी कृपा से यह क्लेश निवृत्तहोगा यहसुनि जाय नारद जी के समीप नम्र हो निजदुःख निवेदन किया उसे सुन नारदजी ने कहा कि हे सांवतुम सूर्य भगवान् का आराधन करौ जब सूर्यके उदय का समय होय तब वेदोपनिषत वाक्य को पढ़ि २ नमस्कार करौ जिसके करनेसे यह क्लेश छूटै यह नारद जीका वचन सुनि सांव कहनेलगा कि हे भगवन् जो पुरुष अगम्यागमन पापकरके युक्त होय उसके स्तुति करनेसे परमेश्वर किसभांति प्रसन्न होंग यहसुनि नारदजा बोले कि हे सांव भविष्यपुराण इस तुम्हारे संबंध से होगा जिसको ब्रह्मलोक में ब्राह्मणों के आगे हम सदा पढ़ेंगे औ सुमंतु नाम मुनि

मनुष्यलोक में मनुके प्रति कथन करैंगे यह सुनि सांवजी बोले कि हे प्रभो इस दुःख से पीड़ितमांस पिंडके तुल्य हम होरहे हैं इस पीड़ाकरके युक्त उदयाचल पर्वतमें हम किसभांति जाय सकतेहैं देखिये महाराज कि मैं सबभांति निष्पाप था परंतु आपकीआज्ञा से यह दुःख प्राप्त भया यह सांव के वचन का सुनि नारद जी कहने लगे कि जो फल मनुष्यको उदयाचल में सूर्य्यके आराधनसे होताहै हे सांव वोही फलमथुरामें वट-सूर्य्य नामक स्थान में होताहै और मध्याह्नमेंसायंकाल में सूर्य्य भगवान्सदा मथुरा में निवासकरते हैं इसलिये हे सांव जी जो मनुष्य वेद मंत्रोंसे मथुरामें नियम पूर्वक सूर्य्यभगवान् का आराधन करताहै वो सबप्रकार के क्लेशों से निवृत्त होके सुख पाताहै सो हेसांव तुम मथुरामें जाय कृष्णगंगामें स्नान कर विधिपूर्वक सूर्य्य का आराधनकरो जिसके करनेसे शीघ्र आरोग्यहोगे इसभांति नारदजी का वचन सुनि औ श्रीकृष्ण जीकी आज्ञा ले सांव आय मथुराजीमेंसूर्य्यका आराधन करने लगे इसप्रकार नारदजीके कहे माफ़िकआराधन करतेही थोड़े से दिनमेंसूर्य्य भगवान् प्रसन्नहोमनुष्यका रूपधारणकरआय कहनेलगे किहेसांवजो इच्छा होसो वरमांगो हे सांवजोतुमने वेदवाक्यों करकेयुक्तपचाश श्लोकसेहमारीस्तुतिकियाहै उससे हम बहुत प्रसन्नभये इतनाकहि सूर्य्य भगवान् निजकरकमल से सांवका सम्पूर्णदेहज्योंं स्पर्शकियाउसी समयसब क्लेशों से मुक्तहो सांव दिव्य देह होगया देखने से मानों दूसरा सूर्य्य-ही है इसप्रकार कृष्णगंगा के तटपर मध्याह्न समय में सूर्य्यभगवान् सांवकोवरदिया औ उसीसमय अन्तर्द्धानहोगये उससमय जो २ कुछ संदेह सांवजीने पूंछा वह सबसूर्य्यजी ने भलीभांति उत्तरदिया वह प्रश्नोत्तर रूप संवाद भविष्य नामक पुराण कहाया औ उसी का नामांतर आदित्यपुराण

भी हुआ तिसपीछे सांवजीने श्रीमथुराजी में सूर्य्यजीकाउत्तम मन्दिर बनवाय मूर्त्ति स्थापन किया फिर जाय उदयाचल में और अस्ताचल में सूर्य्यभगवान्को स्थापित किया इसीभांति सांवपुर नामक नगर बसाय के उसमें सूर्य्य भगवान् की प्रतिष्ठा किया और जिसभांति सूर्य्यजी ने उपदेश कियाथा उसीभांति रथयात्रा आदि पर्वोत्सव का प्रबन्ध करदिया वाराहजी कहते हैं हेधरणि माघमासकी सप्तमी को प्रतिवर्ष सांवपुरमें रथयात्रोत्सव होनेलगा इसभांति सूर्य्यकी भक्ति में तत्पर हो सांव इसलोक में अनेक भोगोंको भोगि अन्त में सूर्य्यमण्डलका भेदन कर परमपदको प्राप्तभया हे धरणि यह सांवके शाप निमित्त उत्तमकथा हमने वर्णनकिया कि जिसके श्रवणकरने से मनुष्य अनेक महापातकों से मुक्तहो उत्तम-गतिको प्राप्त होतेहैं॥

एकसौबहत्तरकाअध्याय॥

वाराहजी कहते हैं हेधरणि पहिले जिसभांति दशरथ के पुत्र शत्रुघ्न लवणासुरका बधकर मथुरा बसायाहै औ ब्राह्मणों के ऊपर अनुग्रहकर मार्गशीर्ष महीनेकीद्वादशीका व्रत सबको उपदेशकिया हेधरणि उस द्वादशीव्रतको जो नियमसे करताहै वोसब पापोंसे मुक्तहोताहै इसभांतिसबमथुराबासियोंकोउपदेश कर लवणासुरके बध करनेके हर्षमें हो अयोध्या में जाय सब वृत्तांत श्रीरामचन्द्रजीसे निवेदन किया उससुन हर्षसे शत्रुघ्न को निज हृदयमें प्रेम से लगाय आशीर्वाददे बड़ी धूमधाम से बहुत सेना साथले मथुरा में पहुंचे और एकादशी का व्रतकर विश्रांतिघाट में स्नानकर सहित कुटुम्ब के बड़ा उत्सव किया रात्रि जागरण समाप्तकर ब्राह्मणों को भोजन कराय दक्षिणा दे बिदाकर कुछ दिन निवासकर फिर अयोध्या को चलेआये

हेधरणि इसीभांति जो अगहन महीने में जाय मथुरामें एकादशीव्रत कर विश्रामतीर्थ में स्नान करता है वो सब भांति ईश्वर को प्रिय होता है औ उसके सबकाम सिद्ध होते हैं ॥

एकसौतिहत्तरकाअध्याय॥

सूतजी कहते हैं हेशौनक इसभांति वाराहजीका वचन सुन धरणी कहनेलगी कि हे भगवन् जो २ पदार्थ वैष्णवों के लिये वर्ज्जित हैं औ जो २ पदार्थ आपके पूजनमें अपराध गिनेजाते हैं सो आप वर्णनकरैं जिन कर्म्मों के करने से निरपराध भी मनुष्य सापराध गिनेजाते हैं वो कर्म्म कौनहैं सो आप वर्णन करैं इसभांति धरणीकी विनयवाणीसुनवाराहजी कहनेलगे कि हेधरणि जो पूंछतीहौ सो सावधानहो श्रवणकरो जो पापात्मा पुरुषहैं उनकी की भई पूजा हम नहीं ग्रहणकरते वो कौन हैं प्रथम तौ दन्तधावन न करना और दूसरा राजाका अन्न खानेवाला तीसरा मैथुन करके स्नान जिसने न कियाहो चौथा सब का स्पर्शकरनेवाला पांचवां विष्टा त्यागकर जिसने स्नान नहींकिया छठां रजस्वला स्त्रीका स्पर्शकरनेवाला सांतवां सूत की अर्थात् जिस स्त्रीके संतान हुआहो उसको दशदिनके मध्य में स्पर्श करने वाला आठवां जैन साधुका संगकरनेवाला नीच के साथ बातचीत करनेवाला अत्यंत कोप करके युक्त खल खानेवाला नीलवस्त्र रक्तवस्त्र मलिनवस्त्र के धारणकरनेवाला गुरू के वाक्यको भंग करनेवाला पतित के अन्नको भक्षण करनेवाला अभक्ष्य भक्षण करनेवाला जैसे लसन प्याज आदि चौराईका शाक औ बहेड़ा परान्नकलेना देवतास्थानमें भोजन करना देवस्थान में जूता पहिनके घूमना इसीभांति निषिद्ध पुष्पों करके देवपूजन करना औ देव निर्म्माल्य बिनादूरकिये पूजा का प्रारम्भ करना अँधेरे में पूजा करना दीपबिना देव

का प्रबोधनकरना मद्यपान करना हेधरणि ये सब जो गिनाये हैं इन्हों की अपराध संज्ञा है इन्हों के करने से मनुष्य ईश्वर से सदा विमुख रहता है अर्थात् उसे परमेश्वर किसीकाल में नहीं प्राप्त होता और दूर से बिष्णुमूर्त्ति को नमस्कार करने से राक्षसी पूजा होती है यदि किसीसे एक अपराध बनिपड़ै तो एक रात्रि दो रात्रि वा तीनि रात्रि त्रिकालस्नान औ पंचगव्य के पानकरनेसे पवित्र हो पूजा के योग्य होता है और जिसने नीलवस्त्र धारण कियाहो वहनिजशुद्धिके लिये गोमय निज देह में लेपकर प्राजापत्यनाम व्रत करनेसे पवित्र होता है और हेधरणि श्रीगुरूके क्रोधहोजानेसे मनुष्य दोचान्द्रायण व्रत करने से पवित्र होता है औ एक चान्द्रायण व्रतकरने से पतितका अन्नखानेवाला पवित्रहोताहै और अभक्ष्यभक्षणकरने वाला मनुष्य एकचान्द्रायण एक प्राजापत्य व्रत कर गोदान देनेसे पवित्रहोता है जो मनुष्य पैर में जूता पहिनकर देवमन्दिर में जाता है वो पंचगव्य पानकरने से औ पांचदिन के व्रत करनेसे पवित्र होता है और बिनापुष्पके देवता का पूजन न करनाचाहिये और निर्म्माल्य दूरकिये बिना जो देवपूजन करते हैं उनको पंचामृत से देवता को स्नान कराय के पीछे और पूजा करना योग्यहै और जिसने मद्यपान कियाहोय वह चार चान्द्रायणव्रत कर बारहबर्ष प्राजापत्य व्रतकर अंत में तीन गोदान देनेसे पवित्र होताहै और जो नीचोंके साथ बात चीत करताहै उस अपराध में एक बार पंचामृत पान करनेसे मनुष्य पवित्र होताहै इसभांति वाराहजी धरणीसे कहि फिर कहनेलगे कि हेधरणि यहअत्यंत गुप्तपदार्थ हमनेकथनकिया अब क्या सुना चाहती हो सो हम बर्णनकरैं इसभांति वाराह जी का वचन सुन धरणी मूर्च्छित होगई फिर कुछुक देर में सावधान हो कहनेलगी कि हेभगवन् जितने अपराध ईश्वर

विषय में आपने वर्णन किया है वेतो छूटना मुस्किल दीखतेहैं औ अपराधका पायश्चित्त होना कठिन है इसलिये कोई सुगम उपाय आप वर्णन करैं जिसके करने से मनुष्य सब पापोंसे मुक्त हो आपके प्रीतिपात्र हों यह सुनि श्रीवाराहजी कहनेलगे कि हेधरणि जो मनुष्यअपराधीहो सो वर्षमेंएकबेर जायहमारे प्यारे क्षेत्र सूकरतीर्थमें स्नान औ व्रत करनेसे पवित्र होताहै इसी भांति श्रीमथुरा जी में व्रत औस्नान करनेसे मनुष्य सब अपराधोंसे मुक्तहो पवित्र होता है हे धरणि मथुरा औ सूकर क्षेत्रयेदोनों अति उत्तमहैं वर्षमें एकबारभी किसीभांति इन्होंमें व्रत औ स्नान होजाय तो हज़ारों जन्मके अपराध से मनुष्य मुक्तहो उत्तमगति को प्राप्तहोताहै यहसुनि धरणी कहनेलगी कि हेभगवन् मथुरा औ सूकर ये दोनों तीर्थ आपको प्रियहैं परन्तु आपयेभी कहैं कि इन दोनों में कौन अधिकहै तब तौ वाराहजी कहनेलगे कि हेधरणि समुद्र से समुद्र तक पृथिवी में जितने तीर्थ हैं उन सबों में शास्त्रने कुब्जाम्रक नामतीर्थकी प्रशंसा किया है तिस कुब्जाम्रक से कोटिगुण अधिक सूकर नाम तीर्थहै जिसमें मार्गमास की शुक्ल द्वादशी को स्नान करनेसे मनुष्य जीवन्मुक्त होताहै और जो पुराणोंमें गंगासागर तीर्थका माहात्म्य कथन किया है इससे भी गुप्त औअधिक पुण्यवाली मथुरापुरी है कि जिसमें आधीघड़ी निवास करने स मनुष्य मुक्त होताहै तिस मथुरामें भी सबतीर्थों से उत्तम विश्रांति नामक तीर्थहै जिन मनुष्यों को निज आत्मा पवित्र करनाहो सो मथुरामें वा सूकरक्षत्रमें वा कुब्जाम्रक में जाय स्नान व्रत कर पवित्र हों इससे अधिक पृथिवीमें दूसरातीर्थ हमारे विचार में नहीं है जोगति योगसाधन करने से होतीहै औ सांख्यके ज्ञानसे होतीहै वो गति इन तीर्थोंके स्नान मात्र से होती है हे धरणि सब तीर्थों का सार मथुरा औ देव-

ताओंमेंसार पदार्थ केशवभगवान् इन दोनोंते परे कुछनहींहै ॥

एकसौचौहत्तरिकाअध्याय॥

वाराहजी कहतेहैं हे धरणि अबपितरोंके तृप्त होनेवाली कथा वर्णनकरतेहैं सो सावधानहो श्रवण करो हेधरणि मथुरा पुरीका रहनेवाला बड़ा पुण्यात्मा शूरवीर दानी औ यशी राजा चंद्रसेन नाम हुआ तिसराजा के कुलशील करके युक्त दोसौ रानीथीं तिनरानियों में एक रानी कुलशील करके युक्त सुरूपा पतिव्रता बड़ेवीर राजा की कन्या चंद्रप्रभा नाम भई तिस चंद्रप्रभा रानी के सैकड़ोंदासीथीं उन्होंमें एक प्रभावती नाम दासीथी उस दासीकोदासी शूद्री एक जिसकानामविरूप निधना सो विरूपनिधना सदा मद्यपान औ मांसभक्षण में प्रीति रखती इसी भांति उस विरूपनिधना के खोटे आचरण से सैकड़ों पीढ़ीके पितरसब स्वर्गसे भ्रष्ट हो नरकमें जायपड़े किसी समय हे धरणि उस विरूपनिधना दासी का पतिबहुत मनुष्योंके साथ स्नान करने के लिये ध्रुवनामक तीर्थ में आय प्राप्त भया औ वहांही ध्रुवतीर्थ में एक त्रिकालज्ञ नाम ऋषि छठें २ दिनमें आहार करनेवाले निवास करते थे औ सदामौन हो परमेश्वरका आराधन किया करते सो त्रिकालज्ञ क्या चरित्र देखते हैं कि जब एकपहर दिन और सूर्य अस्त होने कोथा तब जिन जिन ने स्नान किया औ निज निज पितरोंका तर्पण औ पिण्डदान किया उनके सबपितर विमानमें बैठि २ देवलोक को गये और त्रिकालज्ञ वहां ध्रुवतीर्थ में क्यादेखता है कि अनेक भांति के उत्तम रूप धारण किये बड़े हर्ष करके युक्त निज २ संतानोंको आशीर्बाद देते स्वर्ग को जाय रहे हैं औ किसी के पितर वहां बड़े क्रोध से निज २ संतान वालोंको शापदेरहेहैं जिन्होंकीतीर्थमें पिंडदान औ तिलतर्पण

नहीं प्राप्त भया निराश हो क्षुधा करके पीड़ित चले जाते हैं इस भांति पितरों के चरित्रको देख फिर त्रिकालज्ञ मुनि क्या देखता है कि उसी ध्रुवतीर्थके समीप निर्जन स्थान में एक पुरुष बहुत दुर्बल जिसके दोनों नेत्र क्षुधा की पीड़ा से भीतर घुसिरहे हैं औ उदर पीठ दोनों एकसाहोरहीहै केवलजिसकी देहमें चर्म्म औ अस्थिही शेष है ऐसा पुरुष सबभांति जर्जर कांपता भया औ जिसकेचारांओर बहुतसे मक्खीमच्छर लिपिट रहे हैं ऐसेक्लेश को प्राप्त मनुष्य को देख त्रिकालज्ञ मुनि पूंछने लगे कि आप इस दुर्दशा को भोगते मच्छरों करके पीड़ित कौनहैं औयहां निरुद्यमक्यों बैठे हैं और स्थानमें क्यों नहीं जाते इस अपने वृत्तान्त को हमसे ठीक २ वर्णन करो हम इस तीर्थमें नित्यकर्म्म करतेहैं सो तुम्हारे विलक्षण दुःख को देख हममोहित होरहेहैं इसलिये शीघ्र निज वृत्तांत वर्णन करो जो कुछ हमारे से बनि पड़ैगा सो हम तुम्हारा सहाय करेंगे यह त्रिकालज्ञमुनिका वचनसुनि वह मनुष्य कहनेलगा कि हे ऋषीश्वर यहां हमारा मुख्य प्रयोजन तौ यही है कि जिन्हांके पुत्र इस ध्रुवतीर्थमें श्राद्ध औ तर्प्पण विधिपूर्वक किया है उनके पितर निज २ पुत्रों को आशीर्वाद देते उत्तम विमान में बैठे सुखसे चले जाते हैं हम निज सन्तान के हस्त से श्राद्ध पाया नहीं इसलिये क्षुधा तृषा करके पीड़ित नरक भोगि रहेहैं आशारूप पाशमें बँधे सैकडोंवर्ष से यहांरहते हैं परंतु योनिसंकर दोषकरके हम क्लेशभागी होरहे हैं अबयहां से चलभीनहीं सकते जिन्होंने निज पुत्र पौत्रों करके श्राद्ध को प्राप्त भये हैं वे सबभांति समर्थ हो चले गये हम इतने बल-हीन हो रहे हैं कि चलना तौ कौन कहै हिलाभी नहीं जाता देखो हे ऋषीश्वर आपके देखतेही राजा चंद्रसेनके पितरबल पुष्टि करके युक्त बड़े हर्षमें हो स्वर्गको गये और जो ब्राह्मण

वैश्य शूद्र आदि राजाके साथआयेथे उन्होंके श्राद्ध तर्प्पणकर ने से उनकेभी पितर तृप्तहो २ आशीर्वाद दे २ स्वर्गकोगये औरभी जो २ हीन जातिथे उनकेभी पितरतृप्तहो निजलोक में प्राप्त भये इसभांति उस पितर की बाणीसुन त्रिकालज्ञ ऋषि पूछनेलगा किहेमित्र क्यातुम्हारे संततिनहाहैं जो इतने दुःखी होरहेहौ अथवा जो कुछ उपाय हमारे लायक होय सो कहौ हम तुम्हारा उपकार करैंगे यदि हमारे करनेके योग्यहोगा तबतौ वह पितर कहनेलगा कि हे त्रिकालज्ञ यदि हमारे संतति होती तौ यह क्लेश हम क्यों भोगते जो हमारे शरीर में चारों ओरसे मच्छर लिपिटरहेहैं यही संतानक्षीण होने का लक्षणहै परंतु एक संतानकानाम इस राजा चन्द्रसेन के नगर में हमाराहै जो सेवा करनेवाली विरूपनिधना नाम प्रभावती रानी की दासी है सोई हमारे सन्ततिके सूत्र मेंहै जिसकी आशापाशमें बँधे हम यहां निवास कररहेहैं कि कभी हमकोश्राद्धतर्प्पणसेयह तृप्त करैगी औ हम सुखपावेंगे परंतु आजतक इसअधर्म्म की मूर्ति ने हमारे निमित्त कुछ सत्कर्म न किया इसलिये हम निज प्रारब्ध वशसे निराश होरहे हैं इसभांति हे धरणि उस पितरके मुखसे दुःख की वाणी सुन त्रिकालज्ञऋषि मोहमें युक्तहो कहनेलगा कि हेपितर उसदुष्ट योनिकेपिंडदान करनेसे तुमकिसभांति प्रसन्नहोगे और किस भांतिके पिंडदान करने से औ किसविधिसे पुत्रवाले पितरों के तुल्यतृप्तहोगे इसप्रकार त्रिकालज्ञका बचनसुन पछिताय कर पितर कहनेलगा कि हे त्रिकालज्ञ पूर्व जन्मके कर्म्म से स्वर्ग औनरक मनुष्य भोगकरताहैजिन्होंके पुत्रहैं वेउत्तमकर्म्म करने से स्वर्गवास पाते हैं कि जिन्होंके लिये उत्तम२ दिनोंमें श्राद्ध तर्प्पण औ नित्य नैमित्तिक सत्कर्म भया करतेहैं वेही स्वर्गवासी होते हैं और किस भांति स्वर्ग्गको जाय सकताहै

इसलिये पुत्र विना पितरों को दूसरी गति नहींहै पितर सब पितृलोक में निज२बंश जिस दिशामेंहै उसदिशामें मुख्यकरके यही कहते हैं कोई ऐसा हमारे कुलमें होय जो तीर्थमें नदी में तटाकमें झरनेमें वा कूपमें अथवा निजघरमें मीठा औ ठंढा नल सहित तिलके हमकोदेय जिसमें हम तृप्ति को प्राप्तहों और यदि नदी में जाय जानुमात्र जलमें चांदी के पात्रोंसे तर्प्पणकरै तौ हमारी अनंत तृप्तिहोय हे त्रिकालज्ञ जोमनुष्य जानुमात्र जलमें चांदीकेपात्र से हाथमेंकुश औ तिलले निज गोत्रकोउच्चारणकरता पितृपितामहआदिकोंकानाम उच्चारण करता ब्राह्मणको शर्म्मा क्षत्रियको वर्म्मा वैश्यको गुप्त शब्द औ शूद्रको दास शब्द उच्चारण करता सहितस्त्रियां के जो तर्प्पण करताहै उस पितरकी अनंततृप्ति होतीहै उसतर्प्पण की यहरीतिहै कि एक२ अंजलीप्रथमदेवताओं को दो२अंजली ऋषियों को औ तीन३ अंजली पितरों को देना चाहिये इस क्रमसे तर्प्पण कर पीछे तृप्यध्वं इसशब्दको उच्चारणकरना योग्यहै प्रतिनामोंके अंतमें और आयांतुनःपितर इस वेदमंत्रसे पितरोंकाआवाहनकर पितामाता पितामहपितामही वृद्धप्रपिता महवृद्धप्रपितामही इन्होंकोदे फिरगोत्र नाम उच्चारणकरता मातामह मातामही प्रमातामह प्रमातामही वृद्धप्रमातामह वृद्धप्रमातामही इन्हों को मधुवाताऋता इस वेदमंत्रको पढ़ि तर्प्पणकरै फिरनमोवःपितरो इसमंत्रकोपढ़ प्रणामकर श्राद्धके विधानसे सबोंको क्रम करके पिंडदान करे इसभांति आसन पाद्य अर्घ अन्नसंकल्प पिंडदान अवनेजन आदि कर्म्म सब वेदमंत्रों से करै आवाहन में द्वितीया विभक्ति पूजन कर्म्ममें चतुर्थी विभक्ति औ आशीर्वाद में प्रथमा विभक्ति उच्चारण करना चाहिये इसभांति सुशील पुत्र निज पितरोंके प्रीत्यर्थ करै इसभांति पुण्य दिनमें यदि जल मात्रभी दे तो पितरों को

अक्षयतृप्ति होतीहै औश्राद्धकरनेसेतौ पितर बहुतहर्षको प्राप्त होतेहैं इतनाकहकर वोपितर कहनेलगा कि हे त्रिकालज्ञ जो आपने पूछा सो हमने वर्णन किया अब पूर्व कर्म्मके फलसे नरक निवास करनेकेलियेजातेहैं इतना पितरके मुखका बचन सुन त्रिकालज्ञ कहनेलगा कि हेपितर इसतीर्थ में जो२ पितर आये बहुत सावधान हो निजपुत्र पौत्रों के किये श्राद्ध तर्प्पण को अंगीकारकर मौनहोकरनिज२स्थानकोगयेऔरकईनिराश होकर चले गये इसका कारण ठीक२ हमसे कथन करो यह सुनि पितर बोला कि हे त्रिकालज्ञ इन पितरोंके निराश होने का कारण श्रवणकरो जो दान देशकाल औ पात्रहीन होताहै उस दानको आसुर कहतेहैं वहनिष्फल होताहै औ अपात्रको देनेसे फल तौ कहीं रहापाप तौहोताहीहै औश्राद्ध दुष्ट मनुष्य के देखने से नष्ट होजाताहै और जो श्राद्धतिलकुश औमंत्रहीन होय उसकाभी आसुर नामहै इसआसुरश्राद्ध को श्रीवामनजी ने बलिको दियाहै इसीभांति रावण नाम राक्षसको सहित कुटुंबके जब श्रीरामचंद्रजीने वधकिया औ सीताप्राप्त भई तब सीताने श्रीरामचंद्रजीसे यह प्रार्थना किया कि रावण के कैद में हमको घोरदुःख हुआ जिसका अंतनहीं परंतु उस विषम समय मेंत्रिजटा राक्षसीने हमारी बड़ी सहायताकिया इस-लिये इसेकुछवरदेना आपका उचितहै यहसीताजीकी वाणी सुन श्री रामचंद्र प्रसन्न होकर बोले कि जो मनुष्य अपवित्र रहतेहैं औ बिनामंत्रके श्राद्धहोताहै और जो क्रोधयुक्त होकर दानदेतेहैं औ फुटेकांशके पात्रमें भोजनकरतेहैं वो सब त्रिजटा को प्राप्तहोयँ इसलिये आसुर कर्म्म निष्फल होताहै औरभी कारणहै सो श्रवण करो किसी समय शिवजी वासुकी नाग से प्रसन्नहो कहनेलगे कि हेवासुके जो व्रतकरके उद्यापननहीं करते औ यज्ञके सफल होनेको भूयसी दक्षिणा नहींदेते औ

मिथ्या प्रतिज्ञा देवता औ ब्राह्मणकेसमीप जो करतेहैं वेदहीन ब्राह्मणको जो श्राद्धमेंभोजन कराते हैं औरजिस वस्त्र के साथ स्त्रीसंग करतेहैं उसीवस्त्र सहित जो स्नान करते हैं और जो शिष्य ज्ञानदाता गुरूको नमूहोके प्रणाम नहीं करता वहसब हे नागराज तुमका हमनेदिया इसीवास्ते हेत्रिकालज्ञ जीवाहै श्राद्धहो वा दानहो वा यज्ञहो जो विधिहीनहोताहै सोजिसके लिये होताहै उसकीतौ तृप्ति नहींहोती औकियाहुआ कर्म्मसब निष्फलहोताहै इसीनिमित्त इसतीर्थमें जिन्होंने श्राद्धादि कर्म्म विधिपूर्वक न पाया वो मौनहोके चलेगये मौनइसलियेहोगये कि फिर कभी विधिपूर्वक होगी तो हम तृप्तहोंगे उनके मौन होनेका यहीकारणहै इसभांति पितरका वचन सुनि त्रिकालज्ञ कहनेलगा कि हेपितर छठे २ दिन हमभोजनकरते हैं वह छठा दिनआजहै परंतुवेतुम्हारेतृप्तभये हमनहीं भोजनकरसकते इस वास्तेतुमस्थिरहो जबतक हम तुम्हारे लिये कुछ यत्न करें और हमारायह नेमथाकि रात्रिदिनमें कभी इसतीर्थकोनत्यागकरेंगे परंतु तुम्हारा क्लेश देखके अवनियम त्यागि उसविरूपनिधना दासीके समीपजातेहैं उसको यहांल्याय औउसकेहाथसेविधि-पूर्वकश्राद्धकराय तुमको तृप्तकर सावधानहोपश्चात्हम भोजन करंगे इसभांति पितरसे कहि त्रिकालज्ञ मुनि वहां जाय पहुंचे जहांवह दासीरहतीथी जबजायराजाके समीपपहुंचे तबतौ राजा बड़े आदर से उठिके पाद्य अर्घ आचमनीय मधुपर्क गोदान आदि दे कहनेलगा कि हम आज धन्य भये आपने बड़ीकृपा किया जो निजचरणकमलसे इसस्थानकोपवित्रकिया अब आप कृपाकरके जिसलिये आये हैं सो आज्ञा दें हमको सफल करें यह राजा चन्द्रसेनकी विनयवाणी सुनि प्रसन्नहो त्रिकालज्ञ कहनेलगा कि हेराजन् हमारे आगमन का कारण आप सुनि के उसी रीतिसे कीजिये जिसमें हमारी प्रसन्नता होय कारण

यह है कि जो आपकी रानी चंद्रप्रभाहै उसकी दासी विरूप-निधना नाम जोहै उसके पितर ध्रुव तीर्थमें सबतरहसे क्लेशित होरहेहैं इसलिये उसदासी को बुलाय आज्ञा दीजिये जो निज कुलके उद्धारके लिये श्राद्धकरि निजपितरों को स्वर्गवास देवे इसभांति त्रिकालज्ञ का वचन सुनि उसीसमय राजा चन्द्रसेन ने आज्ञा दे निज रानी चंद्रप्रभा को बुलाया राजाकी आज्ञा को सुनतेही आय हाथजोड़ रानी ऋषिको प्रणामकर प्रार्थनापूर्वक विनय करनेलगी कि हे भगवन् आपने मुझ दासी को किस-लिये बुलाया है सो आज्ञादेवें यहसुनि त्रिकालज्ञ ने सबवृत्तांत कहि सुनाया उसे सुन रानीने निज सेवकों को आज्ञादी कि जाय विरूपनिधना दासीको यहां ले आवो यहसुनि राजसेवक जाय उस दासी के घर पहुँचे तो क्या देखते हैं कि खूब मद्य पान औ मांस भक्षण कर मदसे विकल शय्याके ऊपर किसी पुरुष के साथ लिपटी पड़ीहै उसे इसभांति देखि सावधानकर हाथ पकड़ किसीभांति वहांलेआये जहां राजा रानी औ त्रिका-लज्ञऋषि बैठे थे तब तो उसे ऋषिजीने मदिरा से मत्त देखि कहनेलगे कि हेभाग्यवान् तूने कभी निज पितरोंके लिये कुछ सत्कर्म्म किया है यह ऋषिजीका बचन सुनि विरूपनिधना कहनेलगी कि श्रीमहाराज मैं कभी तर्पण श्राद्धदान ब्राह्मण-भोजन भूलेसे भी नहीं किया अब आपजोआज्ञादें सो मैंकरूंगी यह दासी का वचन सुनि त्रिकालज्ञजी ने सारा ध्रुवतीर्थ का वृत्तांत कहिसुनाया उसे सुनि आश्चर्य मानि पछतानेलगी तबतो चंद्रप्रभा रानी ने उसे समझाय बहुत साधन दे बहुते मनुष्योंके साथ सहित रानीके राजाजाय ध्रुवतीर्थमें विधिपूर्वक विरूपनिधना दासीसे पिण्डदान औ तर्पणकरायबहुतेब्राह्मणों का भोजन कराय औ अनेकभांति के दानको दिया उस दान के देतेही उसका पितर यातो मरनेके तुल्यमहादुर्ब्बलमच्छरों

करके घिररहा था औ बोलिभी न सकता यातो उसदासी के पिण्डदान देतेही दिव्य स्वरूप धारणकर उत्तम २ वस्त्र भूषणों करके शोभित अप्सराओं करके सेवाको प्राप्त स्वर्ग को जाते समय यह कहनेलगा कि हेमनुष्यो यह हमारावचन सावधान हो सुनो संसार में जितने तीर्थ पर्वत औ नदी हैं अथवा जो उत्तम २ पृथिवी में सर हैं कुरुक्षेत्र गया नैमिषारण्य आदिजो पितरों के तृप्तहोने के लिये पुण्य भूमि है उन सबों से उत्तम औ श्रेष्ठ आश्विन महीने के कृष्ण पक्षमें मथुरामण्डल में ध्रुव क्षेत्रहै जिसके स्नान तर्पण श्राद्धआदि सत्कर्मकरनेसे पितरों की मुक्ति होती है और बहुत कथनकरनेसे क्याहैप्रत्यक्ष देखते हैं कि हम सब क्लेशोंसे मुक्तहो उत्तमबिमान में बैठि देवलोक को जातेहैंइतनाकहिदासीकापितर त्रिकालज्ञजीसेकहनेलगा कि हेऋषीश्वर आपकीकृपासे यहघोरक्लेश हमारानिवृत्तहुआ अब हम देवगतिको जातेहैं हेराजन् हेरानी औदासी तुम सब सदा प्रसन्नरहो हमतुम्हारे इसपुण्यसेदेवगतिकोप्राप्तहोतेहैं इतना कहि त्रिकालज्ञऋषिको प्रणामकर आनंद पूर्वक स्वर्गकोपधारा वाराहजी कहतेहैं हे धरणि तबतौ राजा चंद्रसेन तीर्थकामाहात्म्यसुनि औ दासीके पितरोंकी उत्तम गति देखि मथुरामें जाय राज्य करनेलगा हेधरणि इस भांति मथुराका माहात्म्य हमने वर्णन किया जिसकेस्मरण करनेसे पूर्वजन्म का पातक दूर होताहै इस महात्म्यको जोपुरुष ब्राह्मणोंके समीप पाठकरै उनके पितर गया पिंडदान देनेके तुल्य तृप्तहोतेहैं हे धरणि यहकथा मूढ़ दुरात्मा कृतघ्न शठ आदि नीचोंको न सुनना चाहिये जो मनुष्य श्रद्धावान् हरिभक्त देव पितरके सेवनकरने वालेहों उनके श्रवण करने योग्यहै यह माहात्म्य सब धर्मों से सब तीर्थोंसे सबज्ञानोंसे उत्तमहै सो हमने वर्णन किया सूतजी कहतेहैं हे शौनक इसभांति श्रीवाराह ज़ीका वचन सुनि

धरणी विस्मित हो प्रतिमास्थापनका विधान पूछने लगी
इतिश्रीमथुरामाहात्म्यसमाप्तभया ॥

एकसौपचहत्तरकाअध्याय॥

सूतजीकहतेहैं हेशौनक इसभांतिअपूर्व मथुरामाहात्म्यसुनि बड़े विस्मयमें युक्तहो धरणी कहनेलगी कि हे भगवन् आपने ऐसी अपूर्व औ विचित्र कथा वर्णनकिया किजिसके श्रवण से हमारे अनेकभांतिके संदेह निवृत्तभये अब आप कृपाकरके यहसंदेह निवृत्त कीजिये कि आप सर्वव्यापी अजर अमर साक्षात्नारायणहैं सो काष्ठ पाषाण मट्टी ताम्र कांश्य चांदी सोना पित्तल आदि पदार्थ के मूर्त्ति में किसरीति से निवास करतेहौ इसभांति धरणीका बचन सुनि वाराहजी कहनेलगे कि हेधरणी जिस किसी पदार्थकी प्रतिमा सबलक्षणों करके युक्तबनावे कि जिसके देखनेसे मन प्रसन्नहोजाय तिसप्रतिमाको शास्त्रविधान से प्रतिष्ठाकरै हेधरणि प्रथम काष्ठमूर्त्तिकी प्रतिष्ठाका माहात्म्य श्रवणकरो मधूक नाम काष्ठकोले अर्थात् महुआका काष्ठ ले शुभमुहूर्त्तमें भलीभांति उत्तममूर्त्ति बनवाय बिधानसे प्रतिष्ठा करावे भक्तिपूर्वक स्नान चंदन वस्त्र माला पुष्प धूप दीप नैवेद्य दक्षिणा आदि अनेक प्रकारसे पूजनकर प्राणायाम करके हाथमें पुष्पले इसमंत्रका उच्चारण करै (ओं योसौभवांस्तिष्ठति सर्वलोके योगप्रधानः करुणाकरोहि। ससंभ्रमं लोकगतःप्रतीतः काष्ठेषुतिष्ठाखिललोकपाल) इसमंत्र को पढ़ि पुष्पांजलि मूर्त्तिमें दे प्रदक्षिणाकर कामक्रोधवर्जितहो वहांअखंडदीप स्थापितकर नमोनारायणाय इसमंत्र को सावधानहो जपकरै जप करके हाथजोड़ इसमंत्र को पढ़ै मंत्रः (योऽसौभवान्सर्वगति पूर्वीरगतिःप्रभुस्त्वेवससिह्यमोघा । अनेनमंत्रेणच लोकनाथसं स्थापितस्तिष्ठसुवासुदेव) इसमंत्रसे साष्टांग दंडवत्कर भक्ति

पूर्वक ब्राह्मणों का भोजन कराय अभ्यागतों का भोजन करावै हे धरणि इसभांति मधूक काष्ठकी प्रतिमाकी स्थापनरीति हमने वर्णनकिया इसभांति जो काष्ठकी प्रतिमा स्थापन करताहै वो मनुष्य सब पापोंसे मुक्तहो हमारेलोकको जाताहै ॥

एकसौचौहत्तरिकाअध्याय॥

वराहजीभगवान् कहतेहैं हेधरणि अबहम शिलामूर्त्ति के प्रतिष्ठा की विधि वर्णनकरतेहैं सो सावधानहोश्रवणकरो उत्तम शिला दृढ़ औ सुन्दर देखिकै जो मूर्त्ति बनानेवाले हैं उन को बुलाय धनसे तृप्तकर उनको शिलादै बनानेकी आज्ञा देय जब वह मूर्त्ति उत्तमतासे मनोहर बनजाय तबउसे वेदपाठीब्राह्मण औ वैष्णवों को बुलाय स्थान को पवित्रकर विधान पूर्वक पांच कलश को स्थापनकर विष्णुमंत्र से हवन करै फिर औषधियों के जलसे मूर्त्ति को स्नान कराय अधिवासन करावे फिरदही भात की वलिदे नमोनारायणाय इस मंत्रका जपकर हाथजोड़ इस मंत्रका उच्चारण करै मंत्रः ॥ ओंयोसौभवान्सर्वजनप्रवीरः समोग्नितेजःमहतिप्रधानः। योऽसौभवान्तिष्ठतिसर्वरूपमाया बलंसर्वजगत्स्वरूपम् ॥ इसमंत्रसे प्रार्थनाकरमूर्त्तिको पंचगव्य से स्नानकराय गान औ वाद्यपूर्वक सामवेदके मंत्रोंसे हमको स्थापित करै हेधरणि सामवेदके मंत्र जहां पढ़ेजातेहैं वहां हम शीघ्रही आतेहैं इसभांति मूर्त्ति कास्थापनकर इसमंत्रसे आवाहनकरै ॥ ओं आगच्छहेदेवसमंत्रयुक्तःपञ्चेन्द्रियैःषड्भिरथप्रधानः ॥ एतेषुभूतेषुचसंविधाताआवाहितोतिष्ठचलोकनाथ ॥ इस मंत्रसे आवाहन कर द्वादशाक्षर वासुदेव मंत्रसे घृत तिलसहत धानकी खीलें इनपदार्थों का हवनकरै फिर प्रातःकाल विधिपूर्वक स्नान संध्या से निवृत्त हो मूर्त्ति में गंधलेपन इसमंत्र से करै मंत्रः ॥ योऽसौभवान्लक्षणलक्षितश्चलक्ष्म्यासमेतःसतत

पुराणः। अत्रप्रसादेषुसमिद्धतेजा प्रवेशमायाहिनमोनमस्ते॥ इस मंत्रसे प्रार्थनाकर मूर्त्ति के अंगों में उबटना लगाय पंचगव्य से स्नानकराय उष्ण जलसे स्नान करावे फिर चन्दन केसर कपूर आदि मिलाके मूर्त्ति के अंगोंमें लेपनकरै फिर इस मंत्र को पढ़ै मंत्रः॥ योऽसौभवान्सर्वजगत्प्रधानःसंपूजितोब्रह्म बृहस्पतिभ्याम् ॥ प्रवंदितःकारणमंत्रयुक्तःसुस्वागतंतिष्ठसुलोकनाथ ॥ इस मंत्रको पढ़ि चन्दन पुष्प माला बस्त्रआदि अर्प्पणकरै इसमंत्रसे मंत्रः॥ वस्त्राणिदेवेशगृहाणतानिमयासुभक्त्यारचितानियानि। इमानिसंधारयविश्वमूर्त्ते प्रसीदमह्यञ्चनमोनमस्ते ॥इसमंत्रसेवस्त्र अर्प्पणकरधूप देय मंत्रः॥ ओंअसावनादिःपुरुषःपुराणो नारायणःसर्वजगत्प्रधानः। गंधंचमाल्यानिचधूपदीपौगृहाणदेवेशनमोनमस्ते॥ इस मंत्र से पूजनकर अनेक भांतिके व्यंजनभक्ष्य भोज्य लेह्यपेय इन चारो पदार्थोंको सुवर्णचांदी के पात्रोंमेंधर भोग लगाय गंगाजल से आचमन दे तांबूल निवेदन कर हाथ जोड़ इसमंत्र को पढ़ै ॥ ओंकरोतुशांतिर्भगवान्लोकनाथः राज्ञस्सराष्ट्रस्यचब्राह्मणानाम् । बालेषवृद्धेषगवांगणेषु कन्यासुशांतिश्चपतिव्रतासु॥ रोगाविनश्यंतुचसर्वतश्च कृषीबलानांचकृषिःसदास्यात् । सुभिक्षयुक्ताश्चसदाहिलोकाकालेसुवृष्टि र्भवितात्वशांतिः॥ हे धरणि इसभांति विधि पूर्वक पूजन कर ब्राह्मणका भोजन करावै फिर दीन अंध पंगुलेआदि भिक्षुक जो किसी अर्थ उसयज्ञ में आये हैं उनको भोजन वस्त्रदक्षिणा आदिसे प्रसन्नकर आशीर्वादले आप निज कुटुम्ब के साथ भोजनकरै वाराहजी कहतेहैं हेधरणि इसविधान से जो मनुष्य हमारा स्थापनकरतेहैं जितनेमनुष्यकी देहमेंरोम होतेहैंउतनेहीवर्ष हमारेलोकमें निवासकरतेहैंऔरजिसमनुष्यने अभिमान त्यागिकै भूमिमेंहमारा स्थापनकिया वो मनुष्यनिज इक्कीशकुलका उद्धारकिया हेधरणि इसभांति पाषाण मूर्त्तिका

स्थापनहमनेधर्मकीरक्षावास्तेऔभक्तोंकेसुखकेलियेवर्णनकिया॥

एकसौसतहत्तरकाअध्याय॥

वाराहजी कहतेहैं हेधरणि भक्तोंके पूजन करनेके लिये हम मृत्तिकाकीमूर्त्तिमेंभी निवास करतेहैं उस मृत्तिकाकी मूर्त्तिका पूजन करना चाहिये जो खण्डितनहो औ फटीनहोय हे धरणि इसभांतिकी प्रतिमा बनानाचाहिये जो मनोहर होय कि जिसके देखनेसे मन प्रसन्न होजाय उसमूर्त्तिकोजिस २ कामनाके लिये पूजन करै सो २ कामना हम मृत्तिका मूर्त्तिके पूजन करनेसे सब पूर्णकरतेहैं और पूजन करनेवाला पुरुष इसलोकमें अनेकभांति के सुखको भोगि अन्तमें हमारे लोकमें प्राप्तहोताहै हे धरणि जो मनुष्य सबकालमें सावधानहो हमारा ध्यान करतेहैं उनके पूजन करनेसे औ जपकरनेसे क्याहै उनके सब मनोरथ हम सदा पूर्ण करतेहैं हे धरणि मृत्तिकाकीमूर्त्ति को श्रवण नक्षत्रमें अधिवासन कराना चाहिये और पहिले जिस विधानसे स्थापन कहिआयेहैं उसी विधानसे मंत्रपूर्वक स्थापन करै चन्दन मिलाकर पंचगव्यसे इसमंत्रको पढ़िकर हमारी मूर्त्तिका स्नानकरावै मंत्रः ॥ ओं योऽसौभवान्सर्वजगत्प्रकर्त्ता यस्यप्रसादेनभवंति लोकः।सत्वंकुरुष्वाच्युतमत्प्रसादं संतिष्ठअर्च्चासुचमृण्मयीषु॥ इसमंत्रको पढ़ि स्थापनकर पहले कही रीति सां चार कलश पंचपल्लव करकेयुक्त जलसे पूर्ण स्थापितकर उस मूर्त्तिका इस मंत्रको पढ़ अभिषेककरे मंत्रः ॥ ओं वरुणःसमुद्रस्यपतिःसदा त्वंसंपूजितोह्यात्मगतिप्रपन्नः । एतज्जलेनैव ममाभिषेकं प्राप्तं वरिष्ठंहि सऊर्ध्ववाहुः॥ अग्निश्चभूमिश्चरसश्चवायुर्योमेति यस्मात्प्रभवंतिसर्वे । तमीश्वरंसर्वगुणावभासंसर्वाश्रयंतंसततं नमस्ते॥ इनदोनों मंत्रोंसेहमारीमूर्त्तिकाअभिषेककर स्नानवस्त्र चन्दन पुष्प माला धूप दीप औ नैवेद्य आदि पदार्थोंसे हमारा

पूजनकर अनेकभांतिके शृंगारकर हमारी मूर्त्तिके आगे हाथ जोड़ यह मंत्रपढ़ै मंत्रः॥ ॐपीतेनवस्त्रेणसदाप्रसन्नो यस्मिन्प्रसन्नेतुजगत्प्रसन्नम् । गृह्णन्तुवस्त्रंसुमुखः प्रसन्नो देवःसदापातु भवस्यबंधात् ॥ इसमंत्रको पढ़ फिर धूप आरती कर पापणद आचमनदे यहमंत्रपढ़ै॥ ॐशांतिर्भवतुदेवानांब्रह्मक्षत्रविशांतथा । शांतिर्भवतुवृद्धानां बालानां शान्तिरुत्तमा ॥ देवोवर्षतुपर्ज्जन्यः पृथिवीशस्यपूरिता। धर्म्मैरमंतुराजानोलोकाश्चसुखिनाभृशम् ॥ इसमंत्रसे प्रार्थनाकर वैष्णवोंका पूजनकर ब्राह्मणोंका पूजनकरै फिरब्राह्मणोंको इच्छाभोजन कराय दक्षिणादे पीछेजो कोई उस यज्ञमें दीन अंध पंगु बाल वृद्ध आयेहों उन्होंका प्रीतिसे यथाशक्ति सत्कार पूजनकर सबके पश्चात् श्रीगुरूको अनेकभांति के वस्त्र भूषण दक्षिणाकरके प्रसन्नकर आशीर्वादले हेधरणि जिसभांति गुरूकेपूजनसे हमप्रसन्न होतेहैं वहप्रसन्नता हमारी किसी भांति नहीं होती यदि बड़े परिश्रम करनेसे राजा प्रसन्न होताहै तो हाथी घोड़ा ग्राम आदिपदार्थ देताहै औहम प्रसन्नहोके लोकमें अनेक भांतिके सुख औअन्तमें मोक्षदेतेहैं हे धरणि इस विधान से जो मनुष्य हमारा स्थापन करतेहैंउनकी एकसौ तीनपीढ़ी हमारे लोकमेंप्राप्तहोतीहैं और उसमूर्त्तिको स्नानकराते जितने जलविन्दु पृथिवीमें पड़ते हैं उनकेपितर उतनेही हज़ारवर्ष हमारेलोकमें निवास करतेहैं हेधरणि इसभांति हमने मृत्तिका मूर्त्तिका स्थापन विधान वर्णन किया अब औरभी वर्णन करते हैं सो सावधान हो श्रवण करो ॥

एकसौ अठहत्तरका अध्याय॥

हेधरणि ताम्रकी प्रतिमा सुन्दरी प्रकाशमान मनोहरा बनवायकरऔ उत्तमदृढ़रमणीय मंदिर बनवाय कर सब स्थापन सामग्री इकट्ठे कर चित्रानक्षत्रमेंमूर्त्तिका अधिवासनरात्रिमेंकराय

पीछेपंचगव्य औ सुगंध जलसे स्नान कराय यहमंत्रपढ़ैमंत्रः॥ ऊं योऽसौभवांतिष्ठसिसाक्षिभूतःसताघ्रकेतिष्ठसिनेत्रभूतः। आगच्छ मूर्त्तौसहपंचभूतैः मयाचपालैःसहविश्वधाम ॥ इसमंत्रसे रात्रिके समय अधिवासनकराय प्रातःकालसूर्य्य उदयहोनेपर वेदमंत्रों को पढ़तेब्राह्मणस्नान करावें फिर सुगन्ध पदार्थोंकरकेयुक्त श्री गंगाजलले इसमंत्रकोपढ़ताहमकोस्नानकरावे मंत्रः॥ ऊंयोऽसौ भवान्सर्ववरःप्रभुश्च मायावलोयोगवलप्रधानः । आगच्छशीघ्र ञ्चममप्रियायसतिष्ठताघ्रेष्वपिलोकनाथ॥ज्वलनपवनपावनभाव न तपनश्चसनस्वयंतिष्ठभगवन्पुरुषोत्तम। इसमंत्र को पढ़ताहुआ हमारी मूर्त्ति कोमन्दिरके भीतरलजाय उत्तममनोहर सिंहासन पर भक्ति पूर्वक बैठावे औ इसमंत्र को पढ़े मंत्रः ॥ ऊंआकाशप्र काशजगत्प्रकाशविज्ञानमयानन्दमय त्रैलोक्यनाथात्रागच्छइह संतिष्ठतुभवान्पुरुषोत्तमनमोनमः॥ हेधरणि इसमंत्रसे स्थापन कर शुक्लवस्त्रको ले इसमंत्रको पढ़ै मंत्रः ॥ ऊंशुद्धस्त्वमात्मा पुरुषःपुराणोजगत्सुतत्वंसुरलोकनाथ । वस्त्राणिगृह्णीष्वमम प्रियायनमोऽस्तुतस्मैपुरुषोत्तमाय ॥ इसमंत्रकोपढ़िउत्तमवस्त्रोंसे हमारीमूर्त्ति को भूषितकर विविधभांतिके पूजनकोकरै गंध पुष्प माला औ भांति भांतिके अलंकार अर्प्पणकर धूप आरती कर इस मंत्रसे विधिपूर्वक नैवेद्य अर्प्पणकरै मंत्रः ॥ ऊंचतुर्विधं तेनैवेद्यंमयाभक्त्यानिवेदितं । सहलक्ष्म्याचभगवन्गृहाणसफली कुरु॥ इसमंत्रसे नैवेद्यदे औ हाथजोड़नघहो शांतिपाठकरैमंत्रः॥ ऊंशांतिर्भवतुदेवानांविप्राणांशांतिरुत्तमा। शांतिर्भवतुराज्ञांचसरा ष्ट्राणांतथाविशाम्॥बालानांब्रीहिपशूनांगर्भिणीनांचदेहिनां॥शां- तिर्भवतुदेवेशत्वत्प्रसादान्ममाखिला॥इसभांतिशांतिमंत्रको पढ़ि ब्राह्मणोंका गुरूका औ वैष्णवोंका भक्तिपूर्वक पूजनकर भोजन कराय वस्त्रभूषणसे भूषितकर बहुतसीदक्षिणादे विदाकरदीनों को भोजनकराय आपसकुटुंबभोजनकरैहेधरणिजिसयज्ञमें गुरू

नहींसंतुष्टहोता उसयज्ञमेंहमारीतृप्ति नहींहोती इसलिये जिस भांति बनै गुरूको अवश्यसंतुष्टकरै जिसके करनेसे इक्कीश कुल नरकसे निकल वैकुंठबास पातेहैं इसभांति हेधरणितास्रप्रतिमा का विधान वर्णनकिया इसीभांतिऔर प्रतिमाओंकी विधिवर्णन करतेहैं सो सावधानहो श्रवणकरो ॥

एकसैउन्नासीकाअध्याय ॥

हे धरणि विधिपूर्वक मनोहर सब उत्तम लक्षणों करकेयुक्त कांश्यकी प्रतिमा बनवाय मंगलपूर्वक गातेबजाते ज्येष्ठा नक्षत्र में जिस मन्दिरमें स्थापन करनाहोय वहांलेजाय इस मंत्रको पढ़ि अर्घदेय मंत्रः ॥ ओंयोऽसौभवान्सर्वयज्ञेषुपूज्योध्येयोगो प्तविश्वकायोमहात्मा। प्रसन्नात्माभगवान्मेप्रसन्नःसुपूजितस्ति ष्ठतुलोकनाथ ॥ इस मंत्रसे प्रार्थनाकर उत्तर दिशाको मुखकर विधानपूर्वक अर्घदेनेके पश्चात् अधिवासन कराय चार कलश पंचगव्यसे पूरितकर अनेकभांति के सुगन्ध को मिलाय सहत भी मिलाय हमारे स्नानकेलिये स्थापितकरै फिर उत्तमकर्म्म-निष्ठ हमारे दास कलशोंको पकर ओंनमोनारायणाय इस मंत्र को पढ़ यहमंत्र पढ़ैं ॥ ओंआदिर्भगवान्ब्रह्मयुगांतकल्पःसर्वेषुका लेष्वपिकल्पभूतः। एकोभवानस्तिनकश्चिद्वितीयःउपागतस्तिष्ठ सिलोकनाथ।विकारअविकारशकारसकारषकारस्वच्छंदरूपःअ रूपःनमःपुरुषोत्तमाय ॥ इस मंत्रसे चारों कलशों के जलको अभिमंत्रितकर सूर्य्योदयकेपश्चात् विधिपूर्वककलशोंकोलेहमारे समीप स्थापनकर इस मंत्रको पढ़े मंत्रः ॥ ओं नमोनारायणा य ॥ ओं इंद्रोभवांस्त्वंचयमः कुवेरोजलेश्वरः सोमबृहस्पतीच। शुक्रश्शनैश्चरबुधोसहसैंहिकेय केतूरविश्चैवधरात्मजस्त्वम् ॥ तथैवसर्वौषधयाजलानिवायुश्चपृथ्वीचसवायुसारथिः । नागा स्सयक्षाश्चदिशश्चसर्वाःतस्मैनमस्तेपुरुषोत्तमाय ॥ इस मंत्रसे

हमारी प्रार्थनाकर स्नान घरमें ल्याय एकांतमेंवेदमंत्रकोपढ़ता मूर्त्तिको स्नानकरावै मंत्रः ॥ ॐ। सरांसियानीहसमस्तसागरा नद्यश्चतीर्थानिचपुष्कराणि। आयांतुतान्येवतवप्रसादात्शुद्ध्यै मूर्त्तेःपुरुषोत्तमस्य ॥ इस मंत्रसे चारो कलशोंके जलसे स्नान कराय विधिपूर्वक उत्तमसिंहासन पर स्थापितकर चन्दन धूप दीप आदिसे मूर्त्तिकी पूजाकर इस मंत्रसे वस्त्रदे मंत्रः ॥ ॐ। वस्त्राणिदेवेंद्रमयाहृतानिसूक्ष्माणिसौम्यानिसुखावहानि। गात्र स्यसंतुष्टिकराणितुभ्यंगृह्णीष्वदेवेशसुलोकनाथ ॥ वेदोपवेदऋ ग्वेदयजुर्वेदसामवदअथर्ववेदसंस्तुतनमः ॥ इस मंत्रको पढ़ि हमारे चरणोंमें भक्तिपूर्वक प्रणामकर वस्त्र पहिनाय फूलमाला किरीट मुकुट आदिसे भूषित कर विधिपूर्वक नैवेद्य दे श्रीगंगा जलसे आचमन दे शांतिमंत्र पढ़ै ॥ मंत्रः ॥ वेदास्सर्वेब्रह्मचब्राह्म णाश्चगृहास्सर्वेसरितस्सागराश्च। इंद्राद्यष्टौलोकपालाश्चसर्वे पूर्वोक्तायेसर्वशांतिंचकुर्य्युः। आमामयकामदमवाम ॐनमःपुरुषो त्तमायेति ॥ इस मंत्रको पढ़ि भक्तिपूर्वक प्रदक्षिणाकरे पश्चात् स्तोत्र पाठकर प्रणामकर शुद्ध वैष्णव गुरु ब्राह्मणोंका यथाशक्ति पूजाकर उत्तम भोजन कराय दक्षिणादे बिदाकर आप सकुटुंब भोजनकरें हेधरणि इसविधानसे जो हमारी मूर्त्तिको स्थापन करतेहैं वे निजपिता माताके इक्कीश २ पितरोंके साथ हमारे लोकमें निवास पातेहैं। इसभांति हेधरणिहमने कांशकी मूर्त्ति का स्थापन वर्णनकिया॥

एकसौअस्सीका अध्याय॥

अब हेधरणि चांदीके मूर्त्तिकी प्रतिष्ठा वर्णन करतेहैं सो सावधानहो श्रवणकरो चांदीकी प्रतिमा उत्तम मनोहर दोषों से रहित बनवाय मंगलपूर्वक निजघरमेंलाय अर्घपाद्यसे पूजन कर इस मंत्रको पढ़ै मंत्रः ॥ यःसर्वलोकेष्वपिसर्वमर्घ्यं पूज्यश्च

मान्यश्चदिवौकसामपि। उपागतोगृह्णाइदंममार्घ्यंप्रसीदसंतिष्ठसुलोकनाथ ॥ योराजतेयज्ञपतिश्चयज्ञैस्सूर्य्योदयेममकर्म्माग्निहोत्रे॥ इसमंत्रकोपढ़ि अर्घकोदे कर्कराशिके चंद्रमामें श्लेषा नक्षत्रमें विधिपूर्वक अधिवासन कराय चारिकलश चंदन जल करके ओ सर्वौषधी करकेयुक्त आम्रपल्लव भूषितकर इसमंत्रसे अभिमंत्रण करै मंत्रः ॥ उंनमोनारायणाययोसौभवान्सर्वलोकैककर्त्तासर्वाध्यक्षःसर्वरूपैकरूपः । आयातुमूर्त्तौसहितोमयाच धुवादिभिर्लोकपालैश्चपूज्यः ॥नमोऽनंताय ॥ इसमंत्रसे अभिमंत्रितकर प्रातःकाल उठि नित्यकर्म्मसे निवृत्तहो भक्तिपूर्वक घटके जलसे हमारी मूर्त्तिका स्नानकरावै इसमंत्रको पढ़ै मंत्रः उंनमोनारायणाय।गंगादिभ्योनदीभ्यश्चसागरेभ्योमयाहृतम्। स्नानायतेसुरश्रेष्ठकर्पूरावासितंजलम् ॥ इस मंत्रकोपढ़ि स्नान कराय मंदिरमेंले सिंहासनमें स्थापन करै मंत्रः ॥ उंवेद्यैर्वेद्यो वेदविद्भिश्चपूज्योयज्ञात्मकोयज्ञफलप्रदाता। यज्ञार्थत्वामाह्वये देवदेवमूर्त्तावस्यांतिष्ठवैलोकनाथ॥धनयजनरूप्यवर्णंअनंतायनमः॥ इस मंत्रकोपढ़ स्थापनकर पहले कही विधिसे मूर्त्तिका पूजनकरै फिर उत्तम वस्त्रले हमारे प्रणामकर यहमंत्रपढै॥उंनमोनारायणाययोऽसौभवाँश्चंद्ररश्मिप्रकाशःशंखेनकुंदेनसमानवर्णः। क्षीरोज्ज्वलः कौमुदवर्णदेव वस्त्राणिगृह्णीष्वममप्रियार्थम्। वेषः सुवेषः अनंतः अमरः मारणः कारणःसुलभःदुर्ल्लभःश्रेष्ठः सुवर्च्चाइति ॥ इसमंत्र से वस्त्र दे गंध पुष्प धूप दीप दे नैवेद्यदेव॥मंत्रः॥ उंनमोनारायणाय।शाल्यन्नपायसैर्य्युक्तंसितयाचघृतेनच। प्रापणं गृह्यतां देव अनंतपुरुषोत्तम॥ इस मंत्रसे नैवेद्यदे आचमनीयदे शांतिमंत्रपढ़ै॥मंत्रः॥ उंशांतिंकरोतुब्रह्माचरुद्रोविष्णुश्चभास्करः । रात्रिश्चैवतुसंध्येद्वे नक्षत्राणि ग्रहादिशः । अचलचंचलसचलखेचलप्रचलअरविंद प्रभउद्भवश्चेतिनमः॥ इसशांतिमंत्रको पढ़ि वैष्णव गुरू का पूजन कर

ब्राह्मणों का पूजनकर भांति२के भोजन कराय दक्षिणासे संतुष्ट कर आशीर्वादलेदीन अंधेपंगुले आदिजीवोंको संतुष्टकर निज कुटुंबके साथ आपभी भोजन करै हेधरणि इसभांति हमनेचांदीके मूर्त्ति का स्थापन विधान वर्णनकिया जिसके स्थापनकरने से मनुष्य पितामाताके इक्कीश ऊपरशौबंशके साथवैकुंठ वासपाताहै अब सुवर्णकेप्रतिमा का स्थापनविधान वर्णनकरतेहैं सो श्रवणकरो जिसभांति चांदीके प्रतिमाका स्थापनविधान कहि आयेहैं उसीभांति सुवर्णमूर्त्ति भी स्थापनकरना चाहिये औरजो फलकाष्ठकी प्रतिमामें पाषाणकेमूर्त्तिमें तामूमूर्त्ति में कांश्यकीमूर्त्तिमें औचांदीकी मूर्त्तिमें सोईफलहोताहै उसफल से हजारगुण फलसुवर्णकी प्रतिमा स्थापनकरनेसे होताहै औसहस्त्र कुलका उद्धारहोताहै यहवृत्तांतहेधरणिहमने वर्णनकियाअबक्याश्रवण किया चाहतीहो सोवर्णनकरैं इसभांति वाराहभगवान्केमुखारविन्दकी वाणीसुनिधरणी कहनेलगी कि हेभगवन् आपकृपा करके यहकथनकरैं कि सुवर्णादिक मूर्त्तियोंका जो आपनेवर्णन किया उनोमेंवा सालग्राममें किसमें आपसदा निवास करतेहैं और शिवलिंगका पूजा वा सालग्रामका पूजागृहस्थ कितनाकरैं उसकी संख्या आपवर्णनकरैं इसभांति धरणीकी विनयवाणी सुनवाराहजी कहनेलगे कि हेधरणि गृहस्थदो शिवलिंग औ तीनसालग्रामन पूजनकरैं औद्वारकाके दोचक्र दोसूर्य्य तीनगणेश औतीनि देवीकापूजननकरैं और सालग्रामकोसमसंख्यामें दोमूर्त्ति औबिषम संख्यामें तीनिमूर्त्तिन पूजनकरै और हेधरणि चाहै जिसदेवता कि मूर्त्ति पूजै सर्वथा एकही मूर्त्ति कल्याण देनेवाली होतीहै और जोमूर्त्ति अग्निमें भस्महोजाय व किसी भांतिफुटजाय औभीसर्बदा पूजायोग्य नहींहै यदिगृहस्थ इन मूर्त्तियोंका पूजाकरै तो वहकभी सुखनपावै और हेधरणिसालग्रामशिलाचक्र चिन्हकरके युक्तहोतो खंडितफुटीका दोषनहींहै

हेधरणि जो मनुष्य सदाभक्ति पूर्वकसालग्राम की बारहमूर्त्ति का पूजनकरतेहैं उनमनुष्योंके पुण्यका हमकहांतक वर्णनकरैं कि विधिपूर्वक सुवर्णके कमलोंसे दशकल्प बारहकोटिलिंग का जो पूजाकरतेहैं उनको जो फलहोताहै सोफल एक दिवसमें उसपूजन करनेसे प्राप्तहोताहै और जोसालग्रामकी शतसंख्या शिलाका पूजनकरतेहैं उनके पुण्यफलको हमशतवर्षमेंभी नहीं कहिशक्ते और हेधरणि किसी देवताकी मूर्त्ति होय चारोंवर्ण को पूजाकरना उचितहै औमणिकेबनाए जो शिवलिंग हैं उनके पूजनकाभी चारोंवर्ण अधिकारीहैं सालग्रामशिला औनर्मदेश्वर शिवलिंग इनोका पूजातीनही वर्णकोअधिकारहै अर्थात् ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यको यदिसालग्रामको व शिवलिंगकोस्त्री व शूद्रस्पर्शकरलें तो प्रलयपर्य्यंत नरकमें वासपातेहैं यदिस्त्रीको व शूद्र को शिवविष्णु में भक्तिहोतो मूर्त्तिका पूजनकरे औ सालग्राम नर्मदेश्वरकी पूजाजहां होतीहोय वहांजाय दूरखड़ेहो दर्शन मात्रकरलें औ चरणामृतभी लें हेधरणि शिवजीका निर्म्माल्य सदाअभक्ष्यहै चाहैपत्र पुष्पफल जलकुछभीहो परन्तुसालग्राम शिलाकेसाथ सबशिवजीका अर्प्पितपदार्थ पापोंके दूरकरने हाराहोताहै और हेधरणि सुवर्ण सहित सालग्राम शिला जो ब्राह्मणको दानदेताहै उनको सहित पर्वत औबनसमुद्रके पृथ्वी दानदेनेका फलहोताहै और जो कोई सालग्राम शिलाकोमोल करकेदे वा ले वेदोनों नरकगामीहोतेहैंहेधरणिइसभांतिप्रतिमा माहात्म्य औ स्थापनविधि हमने वर्णन किया अबक्या श्रवण किया चाहतीहौ सोकहैं॥

एकसौछब्बासीकाअध्याय॥

सूतजी कहते हैं हे शौनक इस भांति श्रीवाराह जी भगवान् के मुखारविन्द से वचन सुनि हाथजोड़ नमूहो धरणी यह

कहनेलगी कि हे भगवन् आपने कृपाकरके अनेक तीर्थोंके औ क्षेत्रोंके अतिगुप्त वृत्तांत वर्णनकिया अब कृपाकरके यहवर्णन करें कि पितृयज्ञ क्या पदार्थ है और प्रथम इसको किसने प्रवृत्त किया और आप कथा प्रसंग में पहले सोमदत्त नामक राजाका वृत्तांतकथन करआयेहैं सोसोमदत्त सिकारखेलनेको गया फिर उसका क्यावृत्तांतभया सो आपवर्णनकरें यहधरणी की विनयवाणीसुन वाराहजी कहनेलगे कि हेधरणि तुमनेबहुत उत्तमप्रश्न किया परन्तु भारसे व्याकुल होरहीहो इसवास्ते तुमको दिव्यबुद्धि देवेहैं अब सावधानहोसुनो हेधरणि प्रलय होनेके पीछे सबजलमय अंधकार संसार देखहमारे सृष्टिकरने की बुद्धिउत्पन्न भई उससमय में शेषनागरूपी पलंग के ऊपर मायामयी निद्रासे युक्तहुयेर कुछजागते कुछसोते हजारोंयुग व्यतीत होगये तबतौ वैष्णवी मायामें युक्तहोकर बालकरूप धारबट पत्रके ऊपरशयनकरतेरहे और हेधरणिहमएक मूर्त्तिसें कार्य्य वशहोतीनिमूर्त्ति होगये क्रोधसे दैत्योंके संहारकरनेके लियेरुद्र औसृष्टि रचनेकेलिये ब्रह्माहमारी नाभिकमलसे उत्पन्न भये परन्तु हम तीनोंदेवता सब विश्वजलमय देखनिजवैष्णी मायामें निवासकरते पररूपर बहुतकालतक बिहारकरतेरहे फिर निजमायावशहो अक्षयबटके एकपत्र परक्रीडा बालकहो निजहाथोंसे दहनेपैरके अंगूठेको निजमुखमें रखआनन्द रहते औ निजउदरके मध्यमें चराचरकोदेखते हेधरणि इसीभांतिकुछ कालबीतने से बड़वानल अग्निहो निज मुखोंसे जल समूहको भस्मकरनेलगे जबजल बहुत भस्महोगया तबतौ ब्रह्माजीको प्रकटकर औउनको मौनदेखहमने आज्ञादीकी आपमौन क्यों होरहेहो हमारा स्मरणकर देवताअसुर औ मनुष्यको उत्पन्न करौ हेधरणि इसभांति हमारेवचनको सुननिज कमंडलुसेजलले आचमनकर पवित्रहो हमारीआज्ञाके अनुसार सृष्टिरचनाप्रारंभ

किया प्रथम आदित्य वसु रुद्र अश्विनी कुमार औ वायुके गण उत्पन्नकिया फिर ब्राह्मणोंको निजमुखे क्षत्रियोंको भुजासेवैश्यों को जंघासे औशूद्रोंको पैरसे उत्पन्न किया और देवतावोंको सत्वगुणसे मनुष्योंको रजोगुणसे असुरोंको तमोगुणसे उत्पन्न किया हेधरणि देवतावोंकी माताअदितिनामककश्यपकी स्त्रीभई औदैत्योंकी मातादिति भई जिससे सब देवशत्रु उत्पन्न भये येसब उत्पन्नहोहोतपोवीर्य्य करके युक्तसूर्य्य के तुल्यजिनोंका तेज औबल सबविद्यानिधानभये तिनोंकेपुत्र पौत्रसब इसीभांति बड़े२पराक्रम युक्तभयेहेधरणिमनु वंशमेंएकआत्रेयनाम ब्राह्मण जिसका पुत्रतपोनिधान निमिनाम उत्पन्नभया और निमिकापुत्र श्रीमान्नामक तपस्वी भया सो श्रीमान् बहुत कालतक वायु भोजन करके बहुत कालजल पी करके औ सूखे पत्ते खाकर तप करतारहा कभी पंचाग्निता पताकभी एकपैरसे खड़ाहो बाहु को ऊपर उठाय सूर्य्य को देखता तप करतां रहा औ शीतके दिनोंमें जल शयन करना कभी कृच्छ्रनामक व्रत कभी चांद्रायण व्रत औ कभी प्राजापत्य सांतपन आदिकिया करता इसभांति हे धरिण हजारों वर्ष तप करते २ व्यतीत होने से कालवश हो मृत्यु को प्राप्तभया तब तौ श्रीमान् ऋषिका पिता निमि निजपुत्र को मरा जानि शोकयुक्त हो दिनरात्रि सब सुखों को त्यागि क्लेशमें रहनेलगा इसीभांति जब बहुत दिन व्यतीय भये तब तौ माघ मासकी द्वादशी को निमिके मनसे यह विचार उत्पन्न भया कि पुत्रका श्राद्ध करनाचाहिये यहविचारि बहुत मूल फल कंद मांस आदि अनेक भांतिके भक्ष्य पदार्थों को इकट्ठेकर सात ब्राह्मणोंकानिमंत्रले पुत्रका स्मरण कर सहित विधान भक्तिसे ब्राह्मणों का भोजन कराय दक्षिणादे विसर्जन कर दक्षिण दिशामें अग्रभागहैं जिन कुशों का ऐसेबहुत सेकुशभूमिमें बिछाय उसके ऊपर नाम औ गोत्र

को उच्चारण करपिंडदान किया इसभांति निमिनामक मुनिने निजपुत्रकेलिये पिंडदान करशोकमेंमग्नहुआ दिन व्यतीतकर सूर्य्य भगवान्केअस्तहोनेसमय संध्याकर्म्मसे निवृत्तहोएकांत में कुश मृगचर्म्म औ कंबल आदि आसनको बिछाय एकचित्त होनासिकाके अग्रभाग को देखता निजआत्मा काध्यान करने लगा इसभांति हेधरिण समाधि योगसेहमारा ध्यानकर बहुत रात्रिव्यतीत होनेसे फिर पुत्रशोकमें युक्तहो यह कहनेलगा किदेखो यहश्राद्ध आजतक किसीनेकियानहींमैंने मोहवश यह क्याकामकिया जो पिंडदान पुत्र केनिमित्त किया यह बिन बिचार किये मोहवश से सबभया यदियहमेरा कृत्य मुनियों को विदितहोय तो शापदेकर उसीक्षण भस्म करदें औ यदि इस कर्म्मको देवता असुर गंधर्ब पिशाचसर्प्प औ राक्षसजानें तो हमको क्याकहैं हाय हमने वेबिचारे क्याकिया इसीभांति शोच करते २ हेधरिण वह रात्रितो निमिजीकी व्यतीतभई प्रातःकाल उठिस्नान संध्यासेनिवृत्तहो फिरउसी शोकसागर मेंडूबि निज बुद्धिको निंदाकरता कहनेलगा कि देखोलोक में निंदाभीभई औपुत्र का प्राणभी न लाभ भया हमबड़े मूर्खहैं हमारे पढ़ने को योगकरनेको और ज्ञानकोधिक्कारहै जोअनर्थ करके पीछे शोक सागरमेंडूबिरहेहैं पुत्रसे पिताकोस्वर्गहोताहै औ पौत्र सेपितामह को स्वर्ग होताहैहम पुत्रहीन किस भांति स्वर्गमें प्राप्तहोंगे और पुत्रहीन हमारे जीवने को धिक्कारहै इसजीवनेसेमृत्युहोना उत्तमहै इसभांति अनेक ग्लानि करके रोदन कर रहाथा कि उसीसमय नारदजी आय प्राप्त भये तबतो हेधरणि नारदजी को देखि स्वागत पूर्वक प्रणामकर अर्घ्य पाद्यमधुपर्क आदिसे पूजनकर उत्तम आसनपर बैठाय हाथ जोड़ निमिऋषि आगे खड़ाहुआ उसे देखि नारद जी कहनेलगे कि हेनिमे अबशोच को त्यागिदो तुमतो बुद्धिमान्

हो देखो लोकमें किसीके लिये शोक करना उचित नहींहै सब निज २ आयुर्वलके अनुसार जीवतेहैं जब आयुष् समाप्त भई तब श्वासमात्रलेना कठिन है इसलियेमहात्माजन विचारमान होतेहैं जिस विषयमें अपना वश नहींहै उसमें शोक करने से शत्रुही को प्रसन्नता होती है और एभीनहीं देखते कि देवता असुर यक्ष गंधर्व मनुष्य मृग औ पक्षी आदिमें कोई कालके वशन होताहो हे ऋषीश्वर काल सबके शिरपरहै कालवश हुआ मनुष्य किसीभांति प्राप्त नहीं होशकता औ जिसके लिये शोक करो वह मिलभी नहीं शकता तौ शोक करना सर्वथा मूर्खता है हे ऋषीश्वर आपका पुत्र बड़ा महात्माथा औ तपो मूर्तिथा सोश्रीमान्मुनि पूर्णहजारवर्ष तप करके शरीर त्यागि स्वर्गको गया यह सब विचारि के ऐसे महात्मा पुत्रके लिये शोक करना योग्य नहींहै इस भांति नारद जीका वचन सुनि हाथजोड़ निमि कहनेलगा कि हे भगवान् आपके चरणों को मैं प्रणाम कर निज मूर्खताविदित करताहूं जिसलिये मैं बार-म्बार दुःखीहो ऊंची श्वास लेरहाहूं और लज्जित हो रहाहूं अहो भगवन् आपने बडी कृपाकरके मुझे शांतकिया आपके दर्शनसे सबमेरा दुःख दूरभया अबजिसलियेमैंदुःखी होरहाहूं सो आपकृपा करके श्रवणकरैं किमहाराज मैंस्नेह सेव्याकुल हौं पुत्रके निमित्त सातब्राह्मणों को भोजनकराया औदक्षिणा दे विसर्ज्जन कर भूमिमें कुशारख दक्षिणमुखहो जल केसाथ पिंडदान अपसव्य होकर नामगोत्र उच्चारण करके दियाहै सो हे, महात्मन् यहशोक मोह के वशहोने से जो अयोग्य कर्म्म भयासो आपहमको नष्टबुद्धिजानिकै क्षमाकरैं और ऐसा उपदेश देवें कि जिसके करने से यह हमारा पाप दूर होय देखिये कि जो यह कर्म्म हमने कियाहै सो आगेके महात्मा ऋषि मुनि किसी ने नहीं किया इसलिये बारम्बार भय भीत

होरहेहैं किसी भांति आप कृपाकरके यह हमारा भय दूरकरैं यहि भांति निमिका दुःख कावाणी सुन नारदजी कहनेलगे कि हे ऋषीश्वर भय न करीपितरोंके शरणमेंप्राप्तहो जोआपने किया इसमें किसी भांतिका अधर्म्म नहींहै केवल धर्म्महीहै इसभांति नारदजी का बचन सुन प्रसन्नहो निमि पितरों का ध्यान करनेलगा औ यह हाथ जाड़ प्रार्थना करने लगा कि हे पितरो मैंमन बचन कर्म्मसे आपके शरणमें हूँ इसभांति निमि के ध्यान करतेही निमिका पितापितृलोक से आय प्राप्तभया औनिमिको पुत्र शोक से दुःखीदेख सब भांतिसे समझानेलगा औ यहकहा कि हेनिमे जो तुमने पितृ यज्ञका संकल्प कियाहै यह धर्म्म ब्रह्माजीनेपितरोंके लिये स्वयंआज्ञा दियाहै इसलिये यहयज्ञकरनाही योग्यहै वाराहजी कहतेहैं हेधरणि ब्रह्माजीको प्रणामकर नारदजी निमिनामक मुनिसे पितृयज्ञ विधानकहने लगे हेनिमे जिसने जन्मलिया है उसकीमृत्यु अवश्य होतीहै औमरकरके अवश्यधर्म्मराज की आज्ञामाननी होतीहै औरजन्म लेकर जितनेजीवहैं उनोंमें किसीका अमरत्वहोतानहीं अर्थात् मृत्यु नहो इसलिये हेनिमे जिसने जन्मलियाहै औअवश्यमरेगा औमराभया अवश्य जन्मलेगा इसलिये औकर्म्मकरना उचित है किजिसके किये मनुष्यके सबपापोंका प्रायश्चित्तहो औमुक्ति प्राप्तहोय बिचारकरो हेनिमेसात्विक राजसतामस येतीनोंगुण के अनुसार मनुष्य कर्म्मकरतेहैं औउसी भांतिउनकी गतिहोतीहै सोसात्विक कर्म्महोना तौकठिनहै राजस औतामसकर्म्म के करनेसे मनुष्य अल्पायुष् औ अल्पबुद्धि होतेहैं सात्विककर्म्म करनेसे अंतमें मनुष्यप्राण त्यागकरनेसे देवताहोताहैऔराजस कर्म्मसे मनुष्य हाताहै तामस कर्म्म करनेसे राक्षस होताहै औहेनिमे धर्म्मज्ञान वैराग्य औऐश्वर्य्य आदिकर्म्म को सात्विक कहतेहैं क्रूर मिथ्याबोलनेवाला जीवहिंसाकरनेवाला लज्जाहीन

औविषाद करनेवाला कर्म्मतामस कहाता है जिसकेकरने से मनुष्यमरकरके प्रेतयोनिमें प्राप्तहोताहैऔराजसगुणओकहाते हैं कि जिन मनुष्योमें मान अश्रद्धा औ नानाभांति के भोगोंकी इच्छा अपनी प्रसंशा होय और जिनोंमेंएधर्म्महैं सो सात्विक गनेजातेहैं क्षांति दांत ज्ञान श्रद्धा तप ध्यान आदि करने से स्वर्ग वा मोक्ष दूनोंका अधिकारीहोताहै इसलिये हेनिमे निज पुत्रके मरणेका शोक न करो शोककरनेसे बहुत हानि होतीहै शोकसे वुद्धि वलओदेह इनोंकी हानि होतीहै औ इनों के हानि होनेसे लज्जा धृति धर्म्म कीर्त्ति लक्ष्मी नीति स्मृति औ विवेक एसब नष्ट होजातेहैं इस व्यवहारकोमनमें विचारि हेऋषीश्वर पुत्रका शोक त्यागिदो यदिशोक न त्यागकरोगे तो इससे इस लोकमें सबभांति की हानिहोगी अंतमें नरक भागी होगे हेमुनीश्वर जो मनुष्य मरणावस्था को प्राप्तहोय उसकेलिये शोक त्याग के यह करना चाहिये कि प्रथम तो घरसे बाहर कर गोमय से लिपी भई भूमिमें कुशाको बिछाय पवित्र कंबल आदि विस्तर कर उस ऊपर शय्या कराय आगे ब्राह्मणों को बुलाय अन्न भूमि चांदी सुवर्ण औअनेक भांति के रसों कोदान कराय सब दानके पीछे गोदानकरै हेऋषीश्वरपरलोककेलिये गोदान के तुल्यहित पदार्थ दूसरा नहींहै सबदेवता कीमूर्त्ति साक्षात्प्रकट गौहै इनोंके दानदेनेसे मनुष्य के सबपातक दूर होजातेहैं औ स्वर्गवासपाताहै इसभांति गोदानकर वेदकेमहा वाक्य मंत्रों को ऊंचेस्वरसे उस पुरुष के कान में सुनावे जब जानेकिप्राण त्यागहोताहै तवइस मंत्रको ऊंचेश्वरसे पढ़ि मधुपर्कदे संसारसे मोक्षकरावै मंत्रः॥ ओंगृहाणचेममधुपर्कमाद्यं संसारनाशनकरंत्व मृतेनतुल्यं। नारायणेनरचितंभगव त्प्रियार्णादाहेचशांतिकरणं सुरलोकपूज्यम्॥हेधरणिपरलोककेहितके लियेइसमंत्रसे मधुपर्क देनेसे फिरउसजीवका जन्मनहींहोता

उत्तमगतिको प्राप्तहोताहै नारदजीकहतेहैंहेमुनीश्वरजबमधुपर्क देनेवादिजानें कि अबप्राण छुटिगया तबउसेस्नानकराय उत्तम सुगंधघीतेल आदिउसशवके देहमेंलेपन भलीभांतिकर दक्षिण दिशाको उसकाशिरकर फिरस्नान करावै इसमंत्रकोपढ़ि मंत्रः॥ ओंगयादीनिचतीर्थानियेचपुण्याःशिलोच्चयाः। कुरुक्षेत्रंचगंगाच्च यमुनाचसरिद्वरा॥ कौशिकीचपयोष्णीचसर्वपापप्रणाशिनी। गंडकी भद्रनामाच सरयूबलदातथा॥ वनानिनववाराहंतीर्थंपिंडारकंतथा। पृथिव्यांयानितीर्थानिचत्वारस्सागरास्तथा॥ आयांतुशवमुत्त्यर्थंस्नानेचांतिमसंज्ञके॥ इसमंत्रसेस्नान कराय शुक्लवस्त्र नवीनपहिनाय चंदन औअगरु आदिकाष्टोंकी चिताबनायदक्षिण शिरशवको चितामेंरख औअग्निमें देवताओंका ध्यानकरहाथमें अग्निले भलीभांति प्रज्वलितकरयहमंत्रपढ़ै मंत्रः॥ ओंकृत्वासु दुष्करंकर्म्म जानतावाप्यजानता। मृत्युकालेऽवशंप्राप्यनरः प्रज्वल्वमागतः॥ धर्म्माधर्म्मसमायुक्तो लोभमोहसमावृतः। दहे यंसर्वगात्राणिदिव्यलोकायगच्छतु॥ इसमंत्रकोपढ़िजलतीभई अग्निकोहाथमेंलेचिताकाप्रदक्षिणाकर शवकेशिरस्थानमेंलगाय देय नारदजी कहतेहैं किहेमुनीश्वर यहशवका संस्कारहमने चारोंवर्णकेलिये वर्णनकिया इसभांति शवको भस्मकरसहित वस्त्रोंके स्नानकर तिलसहित जलमृतक नामको उच्चारणकर अंजलीदे भूमिमें पिंडदानकरे उससमयसे अशौचहोताहै उस अशौचवाला मनुष्यदेवकर्म्मकरनेका अधिकारी नहींरहता इस लिये अशौचवालेको देवकर्म्म न करनाचाहिये॥

एकसौबयासीकाअध्याय॥

इसभांतिधरणी श्रीवाराह भगवानके मुखारविंदकी बाणी सुनहर्षितहो हाथजोड़ कहनेलगी किहेभगवन् आप इसअशौच कर्म्मका विधान विस्तारकरके वर्णनकरें यहधरणीकी विनय

भी इसी रीति से करना चाहिये परं तु मंत्रों के बिना मंत्रयज्ञ शूद्रको अयोग्यहै इसभांति महाब्राह्मण को तृप्तिपूर्वक भोजन कराय पश्चात्जोजोभोजनतयारहोयसोसोइकट्ठे किसीपात्रमें कर दक्षिण मुखहो प्रेतका नाम गोत्र उच्चारण कर संकल्प करके बाहर कहींएकांत भूमिमें श्वदेय पीछे ब्राह्मणोंका भोजन करावे औ प्रेतके निमित्त एकबर्ष नित्य जो उसप्रेतकेलिये ब्राह्मण भोजनकरे उसे बहुत प्रसन्नसे प्रीति पूर्वक अनेक रसके भोजनोंको करावे इस करनेके बिना उसघरमेंअग्नि वा देवता कोई नहीं ग्रहण करते बिना प्रेतकेतृप्तिहोनेसे यह बिचारके प्रेतके लिये हेधरणि अवश्य करनाचाहिये ब्राह्मणक्षत्रिय वैश्य शूद्रचारोंवर्ण में जो प्रेत कर्म्म नहीं करताउसका देव कर्म्मसब नष्टहोजाताहै इसलिये प्रेतके निमित्त ब्राह्मणको भोजन कराय जलदे दक्षिणा को दे बिसर्ज्जन करै पश्चात् जिसभूमि में उस कर्म्म कोकिया होयउस भूमिका पूजनकर इस मंत्र से प्रार्थना करै मंत्रःॐनमो नमोमेदिनिलोकमातः उर्व्यैमहाशैलशिलाधारायै। नमोनमोधारिणिलोकधात्रिजगत्प्रतिष्ठेवसुधेनमोऽस्तुते॥ इस मंत्र से प्रणाम कर घरमेंआय कुटुंब के साथ निवासकर वर्ष व्यतीत होनेके दिन ब्राह्मण का बुलाय भक्ति से प्रणाम करशय्या आसन अंजनअनेक भांतिके वस्त्र औ भूषणदे थोड़ी देर विश्राम कर उत्तम गौ सहित बच्छे के मँगाय सहित वस्त्रके पुच्छ को ताम्रपात्र में कर कुशा औ जलके साथ तिल सहित संकल्प कर उसी ब्राह्मणको देय पीछे शर्करा औ गोधूमचूर्ण घृत के साथ मिलाय कर पिपीलिकाकासमूह जहां होय वहांदेय इसके करने से प्रेत यमराजके लोकमें सुखपाताहै ाह जी कहतेहैं हे धरणि नारद जीने निमि ऋषिसे जब ति प्रेत यज्ञका विधान वर्णन किया तबतो निमि सावा अपने को धन्यमानता भयाऔर नारदजीनेयहभीकहा

कि हे पुत्र निमिजो तुमने निजप्रेतपुत्रके निमित्त श्राद्धकियाहै यहआजसेचारौ वर्ण के मनुष्य सब करैंगे औ तुमको इसकरने से इच्छालोक प्राप्तहोगा तुम शिवलोक विष्णु लोक ब्रह्मलोक आदिलोकोंमेंजहांइच्छाकरोगे इस कर्म्मके प्रतापसेवहांहीं प्राप्त होंगे और हे निमि प्रेतके लिये दान आदिसबकर्म्मतो नित्य करना चाहिये जबतक वर्ष न पूरा होय यदि नित्य न बने तो तीसरे मास में सातवें मासमें नवयें मासमें तो अवश्य करना चाहिये औ ग्यारहवें मासके व्यतीत होनेसे वार्षिक करना चाहिये उस क्रिया में प्रेत का आवाहन कर पवित्रहो पक्कान्न संकल्पकर श्राद्ध करै इसभांति ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तो मंत्र विधिसे औ शूद्र मंत्रहीन श्राद्ध करै इसरीतिसे कर्म्म करने से एक वर्षके अनंतर वहजीव प्रेतभाव सेमुक्तहो निजपिता पितामह वृद्धप्रपितामह के पंक्तिमें मिल पितर होजाताहै वाराहजी भगवान् कहतेहैं हे धरणि पिता माता पुत्र पुत्रबधू स्त्री आदि जितने संबंधी कुटुंबहैं ये सब जगत स्वप्नके तुल्यहैं देखोप्राण त्यागहोने से थोड़ी देर रोदनकर पीछे सब संतोष करलेतेहैं यह स्नेहरूप बंधनमें जोबँधिरहाहै वह स्नेह क्षणमात्रमें छुटि जाताहै देखो विचारकरनेसे कौनकिसकी माता कौनपिताकौन स्त्री कौनपुत्र किसकाहै केवलस्नेहही कारणहै यहस्नेहयुग २ से चलाआयाहै इसलिये निजस्नेह समझकै मृत मनुष्यों का संस्कार करनाचाहिये हेधरणि जोस्नेहनहोयतो अनेकों जन्म इसजीवके होतेहैं इसमें नित्य२ माता पितापुत्रस्त्री आदिअनेक कुटुंबकासंबंधहोतहीहैकिस२ कास्नेह रखनाइसलियेस्नेहमान कै मृत पुरुषका प्रेतसंस्कार अवश्य करनाचाहिये कि जिस संस्कारकरने सेप्रेतभावसे मुक्तहो केपितृगतिको प्राप्त होताहै हे धरणि महीने २ केअमावस को पितृतर्प्पण तिलके साथ करना चाहिये औपितरों के तृप्तिकेलिये ब्राह्मण भोजन कराना

चाहिये जिस करनेसे पितरोंकी अनंत तृप्तिहोती है नारदजी कहते हैं हे अत्रि पुत्रनिमें इसभांति चारौ वर्णके कल्याण के लिये हमने वर्णन किया इतना सुन निमिनाम ऋषीश्वर निस्सं देह हो अपने को धर्म्म निष्ठमानि नारदजी को प्रणामकर अंतर्द्धान प्राप्तभया औ नारदजीभीनिमिको अंतर्द्धान देखआनंद पूर्वक स्वर्गको इंद्रकेसमीप चलेगये वाराहजी कहतेहैं हेधरणि इसभांति हमने श्राद्धकी उत्पत्ति वर्णन किया॥

एकसौतिरासीकाअध्याय॥

सूतजीकहतेहैंहेशौनक इसभांति श्रीवाराहजीके मुखारविंद कीवाणीसुनि हाथजोड़ नम्रहो धरणीकहनेलगी कि हेभगवन आपने चारौ वर्णके ऊपर अनुग्रह करके श्राद्धविधान औ शौचा शौच वर्णन किया अबहेभगवन्स्त्रीस्वभावसे एक संदेह उत्पन्न भयाहै सो आप कृपाकरके निवृत्त करै संदेहयहहै जोप्रेत अन्न अत्यंत निंद्यहै उसकेभोजन करनेसेब्राह्मण पतितअवश्य होजातेहैं तौ फिर किस भांति उनकी पवित्रता होतीहै यदि आपही पतित भये तोकिसभांति देनेवाले का कल्याणकरैंगे इसभांति धरणी की विनय वाणीको सुनि मेघगंभी रवाणीसे वाराहजी कहनेलगे कि हेधरणि बहुत उत्तम प्रश्नतुमने किया अब सावधानहो श्रवण करो कि जिसभांति प्रेतान्न भोजन करके फिर ब्राह्मण पवित्रहो दाताके शुभकरनेवाले होतेहैं हे धरणि जो ब्राह्मण प्रेतान्न भोजनकरै वह निजशरीरके पवित्र होनेके लिये भोजन करने के दूसरेदिन आठ पहर व्रतकरै प्रातःसंध्या कर्म्मसे निवृत्तहो तिल औघीका हवन करसमुद्र गामिनी नदीमेंजाय स्नानकर मधुपर्कके साथ पंचगव्य पान कर हाथमेंताम्र पात्रले अघमर्षण मंत्र पढ़िनदीसे जललेनिज घरमें आय सब जगह पवित्र कर निजशाखाके गृह्य देवताबों

को अग्निमें आवाहनकर तिल घृत काहवनकर भूति बलिदे ब्राह्मणोंको उत्तम भोजन कराय दक्षिणादे सब पापोंके हरने हारी उत्तम गौकादानकरै हेधरणि इसभांति करनेसे वहप्रेत का अन्नभोजन करनेवाला ब्राह्मण पवित्र हो सब कर्म्मों का अधिकारी होताहै औरयदि प्रेतान्न खायकर निजशुद्धहोनेको प्रायश्चित्त न करै औ उसके प्राणछुटिजायँ तौ एककल्प वह नरक में बासपाताहै औ अंतमेंराक्षसयोनिमें जन्मले एक हज़ार वर्ष राक्षसहोपश्चात् शुद्धहोताहै इसलिये दाता औभोक्तादोनों के सुखके लिये जरूर प्रायश्चित्त करनाचाहिये हेधरणि जिस ब्राह्मणने हाथीघोड़ेरथ औगौकादानलिया होय वह प्रायश्चित्त करनेसेपवित्र होताहैजोब्राह्मणज्ञानयुक्तहोनित्यवेद पाठकरतेहैं वहआपभी पवित्रहै औ दान देनेवालेको भीपवित्र करतेहैं इसलिये हे धरणि देवकर्म्ममेंपितृकर्म्म में सदा परीक्षा ले ब्राह्मण का मानसदा करना अपमान कभी न करना चाहिये हे धरणि ब्राह्मणदेव पितृकर्म्ममें ऐसा चाहिये जो वेदको पढ़ा होय षट् कर्म्म करताहोय सत्य शील दया संतोष क्षमा औ पवित्र युक्त होय जीव हिंसासे रहितहोय ऐसा ब्राह्मण देव औ पितृकर्म्म के योग्यहोताहै ऐसेहीब्राह्मणको दानदेना योग्यहै औ इन्हींको देनेसे दाता अनंतफलको प्राप्तहोताहै औ कियाभया सबकर्म्म सफलहोताहै औरकुंड अथवा गोलमें जो दिया दानहै वह सब निष्फल होताहै कुंड उसे कहतेहैं कि जिसका पिताबनारहै औ अन्यके वीर्य्यसे उत्पन्नहोयपिताकेमरने बादि जो उत्पन्नहोतेहैं उनका नाम गोलहै इनदोनों को देखने से पितर निराश हो श्राद्धको त्यागिके नरकमें पड़तेहैं औ देवकर्म्मभी इनके देखने से भ्रष्ट जाताहै इसलिये कुंड गोलदोनोंदेव पितृकर्म्मोंके अनधिकारीहैं इसलिये परीक्षाकरकेदान देनाचाहिये जिसमेंकिया हुआकर्म्म निष्फल न होय इसविषयमेंहमएक इतिहास वर्णन

करतेहैं हे धरणि सो सावधानहोके श्रवणकरो कोईधर्म्मात्मा राजा मनुवंशका उत्पन्न मेधातिथि नामक अवंतीपुरीमें राज किया करता तिसराजा का पुरोहित आत्रेय गोत्रमें उत्पन्नचंद्र शर्म्मानाम ब्राह्मण वेद वादमें निपुणहुआ सो राजा मेधातिथि नित्य२ब्राह्मणों को सौ गोदान किया करता इसभांति बहुत काल व्यतीत होनेसे बैशाख महीनेमें पिताके क्षयाहदिन श्राद्ध के लिये ब्राह्मणोंको निमंत्रण लेबुलायाजबब्राह्मण सब आयेतब राजा मेधातिथि बड़ीनम्रतासे प्रणामकरसबको बैठायनिजगुरू की आज्ञासेश्राद्धका प्रारंभकिया औ विधिपूर्वक श्राद्धमेंपिंडदान करश्राद्धके संकल्पकिये अन्नकोब्राह्मणोंकोदियाऔभोजनकराय दक्षिणादेबिदाकिया वाराहजीकहतेहैं हेधरणि उसीश्राद्धकेदोष से राजामेधातिथिके पितरस्वर्ग भोगसे भ्रष्टहोबड़ेकांटेहैं जिस बनमें वहांजाय क्षुधा औ तृषाकरके पीड़ित हाय २ शब्दको उच्चारणकरते क्लेशभोगनेलगे इसभांति बहुतदिन बीतनेसे किसीसमय राजामेधातिथि उसीजंगलमें आखटकेलिये बहुते सिपाहियोंकेसाथगया वहांजायक्या देखताहै कि कांटेकेवृक्षोंमें मनुष्यकईटँगेहुये हाय२कररोदनकरते झूलरहेहैं उनकोदेख दयासे पीड़ितहो राजामेधातिथि कहनेलगा कि आपकौनहो औ किसलिये इस निर्जनबनमें कँटीलेवृक्षमें टँगेझूलरहे हो किस कर्म्मकेफलसेयहदुःख आपसबको प्राप्तहुवाहै औ यहघोरदुःख किसनेदियाहै सोआपकहिसुनावो यहदयायुक्तवाणी राजामेधातिथिकीसुनिपितर कहनेलगेकिहमसब राजामेधातिथिकेपितर हैं किसीकर्म्म दोषसे नरकको जानेमेंप्रवृत्त होरहेहैं इसभांति हेधरणिनिज पितरोंकी वज्रसमान वाणीसुनि निजपितरोंको शांतकरताहुवा कहनेलगा कि हे पितरो वहमेधातिथि हमीहैं जिसके आपपितरहो परंतुयह हमआपसबके क्लेशकामूलनहीं जानते कि किसलिये आपसब यहदुःख भोगिरहेहो औ क्यों

नरक जायाचाहतेहैं। यदिहमारे श्रवणयोग्यहोय तौकहिसुनावो हमतौनिजविचारसे अपनेसमझमें कोईऐसापातकभी नहींकिया कि जिससे आपको यहदुःख भोगनापड़ा देखोदैवकी गतिबड़ी दुस्तरहै कि जो हम अच्छे२विद्वानोंके आज्ञानुसार नित्यदान देवकर्म्म औ पितरकर्म्मकभी लोपनहींकरते संक्रांति व्यतीपात गजच्छाया क्षयाहतिथि कन्यागत सूर्य्यमें अपरपक्ष श्राद्ध एकोद्दिष्टश्राद्धगयाश्राद्धऔतीर्थोंमें तीर्थश्राद्धयथाशक्तिदानब्राह्मण भोजन आदिसे कभी कर्म्मका लोपनहीं करते तथापि हमारे पितरोंकीयहदुर्दशा होरहीहै इसलियेदैवगतिप्रबलहै इसभांति हेधरणि राजामेधातिथि पछतायदुखीहो निजसाथ जो मंत्री औ पुरोहितथे उन्होंसेहाथजोड़ पूछनेलगा कि आपसब मेरेकर्म्मों केसाक्षीहौ कोईकर्म्म विधिहीन मैंनेनहीं किया धर्म्मशास्त्रानुसार जोआपलोगोंने जिस विधिसेजिस समय आज्ञादियासोई श्रद्धासे मैंनेसबकिया तथापि तुम्हारेसबके देखतेही पितर सब हाय२कर नरकमेंगिड़नेको तयारहोरहेहैं इसविषयमें हमको क्याकरना उचितहै सोआपसब मुझेउपदेशकरैं जिसमें पितरों का दुःखदूरहोय औमेराचित्त सावधानहोय वाराहजी कहतेहैं हे धरणि इसभांति राजा मेधातिथि का वचन सुनिविस्मित हो राजपुरोहित कहनेलगाकि महाराज मेरीबुद्धिमें तौइसप्रश्नका उत्तर कुछ सूझतानहीं क्योंकि आपकी धर्म्मनिष्ठा औपितरोंका संताप देखके बुद्धिव्यामोहको प्राप्तहोतीहै तथापि एकविचार यहउत्पन्नहोताहै कि आपनिजपितरोंसे इसदुःकामूलपूछियेजो येआज्ञादेसोकियाजायगा यहपुरोहितकी वाणीसुननिश्चयकर हाथजोड़ नम्रहोपितरोंसे राजामेधातिथि कहनेलगाकिहेपितरो मेरेकोतौ आपकीवाणीसुनबड़ात्रासहुआ इसलिये मैंतोइसघोर क्लेशकोदेखदुःखसमुद्रमें डूबिरहाहूं जब आपही मेराहाथ पकड़ इसक्लेशसे बाहरकरोगे तभी मेरा कल्याणहोगा अबइससंशय

सागरसे पारकरनेवाली आपहीकी वाणीरूपनौका होगी आप मेरेपितरहैं औमैंआपका संतानहूं यदिमेरेसेकिसीकर्म्ममेंप्रमाद रूपी अनर्थहुआ होय औजिसभांतिअनर्थकीशांतिहोय सो मुझे मूढ़ जानि दया करकेउपदेशकरैं वाराहजीकहतेहैंहेधरणि तबतौ निजसंतान मेधातिथि राजाकावचनसुनप्रसन्नहोपितरकहनेलगे किहेपुत्रतुम्हारेधर्म्मनिष्ठा औसत्कर्म्मसे हमसब बहुत सुखसे बहुतकाल स्वर्गमेंवासकिया परंतुपिछले वैशाखमासमेंजोतुमने एकाद्दिष्टश्राद्धकियाहैउसमेंएकब्राह्मणजो पितृब्राह्मणोंमेंथाउसके पूजन औभोजनदान आदिसेयहहमाराअधापातहुआअर्थात्स्वर्ग सेभ्रष्टहोनरककोजातेहैं तुम्हारापहलाकियाहुआसबकर्म्मविध्वंसहोगया इसवचनको सुनमेधातिथिकहनेलगा कि हेपितरउस ब्राह्मणमेंक्यादोषथा किजिसके एकबार भोजनसे सबसारेजन्म का सुकृतनष्टहुआ सो आप वर्णनकरैं यह राजा का वचन सुनि पितरकहनेलगे कि हेपुत्रमेधातिथि उस ब्राह्मणमें और तौ सब गुण उत्तमथे परंतुनिजपिताके वीर्य्यसे न उत्पन्नहोनेसेऔ पति केजीवतेही उसकीमाता पुंश्चली अन्यपुरुष सुंदरवैश्य जातिका उससे कामातुरहो गर्भधारणकिया उसीगर्भसेयह उत्पन्नभया इसलिये उस वर्ण संकरकेदान औ भोजनसे हम इस दुर्दशाको प्राप्तभये हेपुत्रश्राद्धमें कुंडगोल दोनोंनिंद्यहैं जोइनदोनोंमें कोई अग्रपूजाकोप्राप्तहोय अर्थात्पितृब्राह्मणमेंवामातृब्राह्मणमेंनिमंत्रितहोय अथवा विश्वेदेव ब्राह्मणमें होय तौ जब उनके पैरका प्रक्षालन जलपृथिवीमेंपड़ा औउन्होंनेनेत्रसे श्राद्धको देखा उसी समय सबपदार्थ उच्छिष्ट होजाताहै औ पितर शाप देके चले जातेहैं और यदि उसने पितृयज्ञमें भोजनकिया तौ पितरस्वर्ग से भ्रष्टहोनरकवासपातेहैं जैसेहमसबइतनाकह पितरमौनहोगये तबतौ राजा मेधातिथि हाथजोड़ नम्र हो कहनेलगा कि हेभगवन् बड़ा अधर्म्मभया परंतु अब जिसभांति कल्याण होय

औआपनरकसेबचैं सोमुझे आज्ञादेवें यहसुनपितर कहनेलगे कि हेराजन् अबयहांसे जायहमारेलिये गया श्राद्धकर अक्षयवटके नीचे पिंडदानकरतौ हमनरकवाससेछुट उत्तमगतिको प्राप्तहोयँ इतनाकहि पितर तो अंतर्द्धानभये औ राजामेधातिथि विस्मितहो निजघरमेंआय तयारीकर जायगयामेंपहुंचि श्राद्धकरनिजपितरों को तृप्तकिया तबतौ हेधरणि राजाकेपितर प्रकटहो बडे आनन्दसे उत्तम विमानमेंबैठ आशीर्वाददे स्वर्गको गये इसभांति हमने श्राद्धका वृत्तांत वर्णनकिया हेधरणि श्राद्धमें अवश्यपात्र अपात्रका विचारकरना चाहिये॥

एकसौ चौरासीकाअध्याय॥

इसभांति हेशौनकजी वाराहजीके मुखका वचनसुनि संदेहमेंयुक्तहो हाथजोड़ नम्रहो धरणी पूंछनेलगी कि हेभगवन् आपने कृपाकरके श्राद्धकाविधान वर्णनकिया श्रीमहाराज यज्ञ कितनो भांतिकीहैं औब्राह्मण पितृ यज्ञके लियेकिस भांति के चहिये सो आपवर्णन करैं इसभांति धरणी की विनय वाणी सुनि वाराहजी कहनेलगे कि हेधरणि बहुतउत्तम प्रष्ण तुमने कियाहै अब हम वर्णन करतेहैं सो सावधान हो श्रवणकरो हे धरणिजबपितृपक्षहोयअथवा अमावास्याको मघानक्षत्रहोयतब बुद्धिमान् पितृयज्ञअवश्य करतेहैं औरकोई उत्तमपुण्यकालप्राप्त होनेपर ब्रह्मयज्ञकरतेहैं कोईअग्निमुखमेंदेव यज्ञकरते हैं और कोई भूत यज्ञकरतेहैं कोईगृहस्थमेंमनुष्ययज्ञकरते हैं इनयज्ञोंमें हेधरणि दोयज्ञप्रधानहैं प्रथम पितृयज्ञ दूसराहेवयज्ञतिनदोनों यज्ञोंमें पितृयज्ञवर्णन करतेहैं हेधरणि अग्निमुखदेवपितर दोनों हैं हव्यको स्वाहाकारसेजो अग्निमुखमेंदेताहै उसे देवतागृहण करतेहैं औकव्यको स्वधाकारसेजोअग्निमुखमेंवेदमंत्रसेब्राह्मण देतेहैं उसेपितर ग्रहणकरतेहैं इसलिये हेधरणि उत्तर अग्नि

औ दक्षिणअग्नि येदोनोंहमारेही नामहैं औ सबयज्ञोंमें आहवनीयनाम अग्निहमीहैं और हेधरणि पावक औपवमान ये हमारेहीनामहैं औरसब देवयज्ञोंमें औ पितृयज्ञोंमें ब्रह्मचारी ब्राह्मणको अधिकारी करनाचाहिये अथवा वानप्रस्थ भी उत्तम है औदोनोंनहोंतौयतीकोग्रहण करनाचाहिये अबजिन्होंकोश्राद्धमें भोजन करानाचाहिये औजिन्होंकोवर्ज्जित करनाचाहियेसो वर्णनकरतेहैं हेधरणि उत्तमब्राह्मण तौ वेहीहै जोगृहस्थीहै सबभांति संतुष्टहै क्षमाशीलहै जिनकोइंद्रीवश्यहै उदासीनहै सत्यवादी सत्यप्रतिज्ञ है वेदपाठीहै अग्निसेवन करताहै वेद विद्यायुक्तहै जिन्होंकोमीठाभोजनप्रियहै औरोगहीनहै हेधरणि ऐसे ब्राह्मणोंको श्राद्धमें भोजन कराना चाहिये प्रथम अग्नि में हवनकर पीछे ब्राह्मणको भोजन करावे औ श्राद्धको शूद्र कुत्ता सूकर औकुक्कुट न देखेंइन्होंकीदृष्टिपड़नेसे श्राद्धभ्रष्ट होजातीहै औरजोमनुष्य पापीहै पंक्तिसेबाहरहैपतितहै औयज्ञोपवीतनहीं हुआ ब्राह्मणहोके सेवावृत्ति करतेहैं औ जिन्हों को भक्ष्याभक्ष्य कानियमनहींहै हेधरणिइन्होंकाश्राद्धमें दर्शनभी नकरनाचाहिये भोजन करानेकी तौ कौन वार्त्ता उक्तलक्षणके ब्राह्मणश्राद्ध को यदिदेखलें तौ वहश्राद्ध राक्षसोंकेलिये होतीहै हेधरणि जिस समयमें वामनरूपधार इंद्रकेउपकार करनेकेलिये वलिराजा से जाय तीनिपदभूमिको मांगदानले सारीपृथ्वी औस्वर्ग दो पगसे नापि इंद्रकोदिया औतीसरेपदमें वलिकादेह मापि लिया उससमय प्रार्थनापूर्वक वलिने निजनिर्वाहकेलिये प्रार्थनाकिया किहेभगवन् आपनेसहित देहकेराज्य सिगरालेलिया अब मेरी प्राणरक्षा किसरीतिसे होगी तबतौ हेधरणि हमनेयह वरदिया किजोदेवयज्ञ वा पितरयज्ञ विधिश्रद्धा ब्राह्मण औमंत्र हीनहोय उसकेस्वामी तुमहौ इसलिये हेधरणि परीक्षाके विना सबकर्म भ्रष्टहोजाताहै और श्राद्धमें यहरीतिहै कि ब्राह्मणोंकी भलीभांति

परीक्षाले गुप्तस्थानमें जहांकिसी अयोग्यकी दृष्टिनपड़े वहां लेजाय प्रीतिसे ब्राह्मणको भोजनकराय उत्तम२वस्त्र औभूषणों सेभूषितकर दक्षिणासे तृप्तकर पश्चात् उसी तृप्तभये पूजित ब्राह्मणकेसमीप कुशाबिछाय वेदमंत्रोंसे पिता पितामह प्रपितामह इनकाक्रम से अपसव्यहो आवाहनकर सहिततिल औजल के पिंडदे भक्तिपूर्वक प्रणामकर गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य औ तांबूल आदिसे पूजनकर हाथजोड़ प्रणामकर विसर्ज्जन कर भूमिको इनमंत्रोंसेप्रणामकरै। ओंधरायैनमः। ओंवैष्णव्यैनमः। ओंकाशिप्यैनमः। ओंअजायैनमः। इसभांतिप्रणामकर औपूजित ब्राह्मणोंको दक्षिणादे बिदाकरै पीछेआपसकुटुंबदीन अन्धेवधिर को भोजनकराय भोजनकरै इसभांति करनेसे पितृयज्ञ सफल होतीहै हेधरणि निर्गुण परमात्मा शरीरमें प्रकटहो जीवनामसे प्रसिद्ध कहाताहै उस जीवमें राजस तामस सात्विक इनतीनों काअंशहै वोतीनों अंशहमारे स्वरूपहैं उसके तृप्त होनेकेलिये परंपरासेपितृदेव मनुष्ययज्ञहोतीहै विधिसहित होनेसेहमारी तृप्तिहोतीहै औउसीयज्ञको विघ्न करनेके लिये देवता असुर गंधर्व यक्ष राक्षस सर्प येसब हमारीआज्ञासे वायुरूपहोदेखतेहैं यदि यज्ञकासब अंगपूर्णभयातो सबदेवता प्रसन्नहो आयुषविद्या कीर्त्ति बल तेज धन पुत्र पशु औस्त्रीदे स्वर्गको चलेजातेहैं यदि यज्ञमेंविधिहीन भयातो सबविध्वंसकरतेहैं इसलियेविचारपूर्वक विवेकी जन सदा पितृ यज्ञकर सबसुख शरीरके भोगि अंतमें स्वर्गजातेहैं औइसभांतिश्राद्धकरनेसे प्रेतभावसेले यावत् अधम योनिहै उससे मुक्तहो उत्तमगतिको प्राप्तहोतेहैं। इसहेतु नरक रूपी समुद्रसे पारकरनेकेलिये यहश्राद्धरूपीनौका हमनेबनाया है हेधरणि सबकालमें गृहस्थके घरमें पितर औ देवता आतेहैं निज२समयमेंपूजनपानेसेप्रसन्नहो आशीर्वाददेतेहैं जिससेकरने वालापुरुष उत्तमगतिको प्राप्तहोताहै हे धरणि श्राद्धकरनेवाले

पुरुषसात्विकगतिको प्राप्तहोतेहैं औ येभी बातहम कहतेहैं कि जोज्ञानहीनशठ कृतघ्ननिजमूर्खतासे श्राद्धनहींकरताउनकेपितर निराशहो शापदेनरक वासकरतेहैं जिसशापसे मनुष्यअल्पायुष संतानहीन अंगभंग रोगीआदिहोतेहैं और जो पितृयज्ञकरतेहैं उनके पुत्रपौत्रकभी नहीं क शपाते हेधरणि और कहांतकवर्णन करैं अमावास्याके दिनपुत्रके स्नानसमयमें पितर आतेहैं यदि विधिसे तर्पणभया तौ आशीर्बाद देस्वर्गको जातेहैं यदितर्पण न भयातौस्नानोच्छिष्ट वस्त्रकेजलको पानकरके शापदेनरकको जातेहैं इसलिये तामूकेपात्रको हाथमेंले कुश तिलकेसाथ तर्पण करै तौ अक्षयतृप्त होकेपितर आशीर्वाददेतेहैं और पितृकर्म्म करानेवाले ब्राह्मणको जो दक्षिणादीजातीहै वो पितरोंके तृप्तहोने के लियेहोतीहै और हेधरणि नरकभयदूर करनेहारा नीलवृष जो देताहै औउसवृषके पूंछके जलसे तर्पणहोताहै उसजलसे पितर साठहज़ार बर्षतृप्तहो निजसंतानको आशीर्बाददेतेहैं और हेधरणिनील वृषनिजशृंगोंसे भूमिसे जितनीमट्टी खोदता है उतनेही उसके पितरनरकबाधासे निवृत्तहो चंद्रलोकमें प्राप्त होतेहैं औक्षुधा तृषाकेदुःखसे मुक्तहोकासठि हज़ारवर्ष चंद्रलोक में रहतेहैं हेधरणि पुत्रपौत्रकरके युक्तजोगृहस्थहैं उनकेलियेयह धर्म्महमने बर्णनकिया औजितनेभांति के सबोधजीवहैं वोसब गृहस्थके आश्रितहैं इसलिये सबधर्म्मका मूलगृहस्थहै औहेधरणिमहीने२में प्रतिअमावास्याको जो श्राद्धकरतेहैं उनमनुष्यों को और यज्ञकरनेसे बहुतवेद पढ़नेसे व्रतकरनेसे तीर्थस्नानकरनेसे अग्निहोत्र करनेसे दानदेनेसे क्याप्रयोजनहै करैतौ उत्तम है न करै तौ पापभागी भीनहींहोते इसलिये सबभांति गृहस्थ धर्म्ममेंश्राद्धही प्रधानहै औहेधरणि पितरोंकी उत्पत्तिब्रह्माविष्णु औ शिव के शरीरसेहै इसीभांति मातामह आदि देवता रूपहैं परन्तु हमारीमाया करके मोहित पितरको देवतानहीं जानते

इस निमित्त पितरों के लिये हेधरणि अग्निमें न देनाचाहिये केवल ब्राह्मणके मुखसेही प्रसन्नहोतेहैं प्रथम हेधरणि जबश्री ब्रह्माजीने श्राद्धभागपितरों के लिये कल्पना किया तबश्राद्धसे तृप्तहोपितर अजीर्णवाधासेपीडितहो सोमकेसमीपजायपहुँचि निजदुःख निवेदन किया उससुनि आदरपूर्वक सबका सत्कार करसोम कहनेलगे कि हेदेवताओ किसक्लेशसे तुम पीडितहो औकिससे तुम्हारी उत्पत्तिहै सो कथन करौ यहसुनि देवगण कहनेलगे किजो आपपूछतेहौ सो सावधान हो श्रवणकरो हमतीनों हेसोम ब्रह्मा विष्णु महादेव से उत्पन्नहैं औश्राद्धके अधिकारीहैं सो श्राद्धके अन्नसे तृप्तहो अजीर्ण दोषसे क्लेशित होरहेहैं अब आपयह हमारादुःख दूरकरैं यहसुनि सोमकहने लगा कि हे देवतो घबड़ावो न तुम्हारे तीनोंकेसाथ चौथेहमहैं जिसभांति तुम्हारा कल्याण होगा उसभांति करैंगे हमको तुम निजसखा करकै जानो इतना कहि देवताओंको साथले सोम ब्रह्म लोकमें जाय सुमेरु के शिखरमें प्राप्तभयेऔवहां ऋषिगण औदेवगणों करके सेवित श्रीब्रह्माजीको देखि साष्टांगप्रणाम कर सबदुःख कहसुनाया औयहभी कहाकि हमसबआपकाशरण में आयेहैं जिसभांति हमारा अजीर्ण दोषदूर होय सो कीजिये इससोमकीवाणी सुनि औ देवताओं को दुःखीदेखि दयायुक्तहो ब्रह्माजी ईश्वरका ध्यान करनेलगे तबतो ध्यानकरतेही प्रकट हो ईश्वरने दर्शन दिया ईश्वरको देखि नमस्कारकर देवताओं कादुःख कहिसुनायाउससुनि ईश्वर ध्यानकर विस्मितहोब्रह्मासे कहनेलगे कि हे ब्रह्मन् येसब हमारे तुम्हारे औविष्णुके अंशसे हैं औहमने श्राद्धकाभाग इनकेलिये दियाहै सोपितृयज्ञमें तृप्त होनेसे अजीर्ण होगया इसनिमित्त सहित सोमके तुम्हारे शरण मेंआयेहैं इन्होंका अजीर्ण जबतक दूर न होगा तबतक इनको सुखनहींहोगा इसलियेहेब्रह्मन् अबयहनिश्चयकरो कि शांडिल्य

ऋषिके पुत्रबड़े प्रतापी जिनकानाम अग्निहै उनकाभागपहले देनेसे इन देवताओंका अजीर्ण निवृत्तहोगा औसुखपावेंगे इस निमित्त आजसे श्राद्धमें प्रथम भोजन अग्निका होना चाहिये यहईश्वरकी कृपायुक्तवाणी कोसुन ब्रह्माजीने ज्यों अग्निका ध्यानकिया उसीसमय अग्नि प्रकटरूप ते जोमयहो वहांआय पहुँचे उन्हेंदेख प्रसन्नहो मधुरबचनसे ब्रह्माजी यह कहनेलगे किहेअग्ने आजसे श्राद्धमें प्रथम तुम्हारा भागहोगापश्चात्सोम आदिभागको प्राप्तहोंगेयहब्रह्माकावचनसुनि प्रसन्नसे अंगीकार कर सहित सोमके सब देवताविदाहो प्रणामकरनिज२ स्थान को गये वाराहजीकहतेहैं हेधरणि उसदिनसेश्राद्धपिंडमें प्रथम भाग अग्निको दियाजाताहै ब्राह्मणको भोजन कराय पृथ्वीमें कुश बिछायकर दक्षिणदिशाको मुखकर मंत्रसे प्रथमपिंडब्रह्मा काअंशदेनाचाहिये औ वहपिताको प्राप्तहोता है दूसराअंशरुद्रके नाम से देनाचाहिये वहपितामहकोप्राप्तहोताहै औतीसरापिंड विष्णुजीका अंशहै जोवृद्ध प्रपितामह को तृप्तकरता है हेधरणि बिधानसे मंत्रोंकेसाथ जोमनुष्य श्राद्धकरतेहैं उनके पितर संतुष्टहोकर आशीर्वाददेतेहैं अबहेधरणिपंक्तिहीन ब्राह्मणोंकेलक्षण वर्णनकरतेहैं सोश्रवणकरो पहिलेनपुंसक चित्रकार पशुपाल बकरी भेड़ रखनेवालाकुनखी श्यामदंतोंका पुरुष नेत्रसेकाणा भयंकर मूर्तिनाचने गानेवाला नकल करनेवालावेदविक्रय करने वाला पुरोहित वृत्ति वणिज वृत्ति राजसेवक वर्णसंकर पतित संस्कारहीन शूद्रसेवक गणक ग्रामयाचक अस्त्र धारनेवाला लोनआदि रसोंका बेचनेवाला वैश्यवृत्ति चोरवृत्ति लेखकरंगों से वस्त्ररंगनेवाला शिलावृत्ति पाखंडी और बहुत वृत्तिकरनेवाला येसबब्राह्मणश्राद्धके अधिकारीनहींहैं औरजोरस्तेचलिके आयेहों तेल गोरस जीविकावाले मांसविक्रयवाले औरजो निंद्यकर्म्म करनेवाले हैं वेजीवते राक्षसहैं हेधरणि इनका दर्शन श्राद्धमें न

होनाचाहिये इन पंक्तिहीन ब्राह्मणोंके दर्शन से पितर छःमहीने दुःखीरहते हैं यदिश्राद्धमें इन्होंका दर्शनहोजाय तौ सबसामग्री श्राद्ध की दूरकर सूर्य्यदर्शन कर घृतसे अष्टोत्तरशत आहुति दे दूसरीबार श्राद्ध करै और फिर ब्राह्मणका भोजनकरावे और हे धरणि जोप्रेतान्न खायाहोय उसेश्राद्धमें कभीनिमंत्रण न करना चाहिये उनको यह प्रायश्चित्त है कि माघमासकी द्वादशीको घी युक्त खीर ब्राह्मण को भोजन कराय सहित बछरा की कपिला गौ दानकरनेसे प्रेतान्नखानेवाला पुरुष पवित्रहोता है और हे धरणि श्राद्धका करनेवाला पुरुष श्राद्धके दिन ब्रह्मचर्य्य करै औ दंतधावन न करै अमावास्या को भी दातून न करनाचाहिये जो अज्ञानसे दातूनकरै उसेपितर औ देवके बधकरनेका पातकहोता है अमावास्याके दिन प्रातःकाल क्षौर कराय स्नानकर पवित्र औ शुक्लवस्त्र धारण कर एकांत भूमि में जाय विधान से श्राद्ध करै ब्राह्मणका भोजनकरावै पीछे रक्षोघ्ननाममंत्रकोपढ़ि कुशाबिछाय पिंडदानकरै फिर विधिपूर्वक पिण्डकोपूजि ब्राह्मणको दक्षिणादे सफल बर ले प्रणामकर पृथिवीको प्रणामकर पितरोंका विसर्ज्जनकर प्रथमपिण्ड आप भोजनकरै दूसरा पिंड निज स्त्री को देय तीसरा पिण्ड जलमें छोड़ दे इस भांति पितर प्रसन्न हो दीर्घआयुष धन धान्य पुत्र पौत्रआदि सब देतेहैं मंत्रहीन क्रिया हीन जो श्राद्ध करते हैं उस श्राद्ध का फल राजा बलिको होता है हेधरणि इसभांति श्राद्ध की उत्पत्ति औ दान औ विधान सब वर्णनकियाअब क्या सुनने की इच्छाहै सो हमवर्णनकरैं॥

एकसौपचासीका अध्याय॥

श्रीसूतजी कहते हैं हेशौनक इसभांति अनेकप्रकारके धर्म्म को सुनके धरणी नम्रहो हाथ जोड़ विनयपूर्वक यह कहनेलगी कि हे भगवन् आपके मुखारबिंद से अनेकभांति के धर्म्मों को

सुनिकै बहुत चित्त आनन्द भया परन्तु नईवार्ता सुनने से चित्त सन्तुष्ट नहीं होता इसलिये हमारे ऊपर कृपाकर गुप्तभी होय सो प्रकट कथन करो हे भगवन् मधुपर्क कौन सा पदार्थ है और किस भांति उत्पन्न भया कौन कौन इसका अधिकारी है यह विनय वाणी सुन वाराह जी कहनेलगे कि हे धरणि जिस भांति मधुपर्क उत्पन्न भया है सो सब श्रवण करो जिस समय प्रलय होगई तब हम औ ब्रह्मा औ रुद्र ये तीनों शेषरहे और उपाधि सबलयको प्राप्तभई उस समय हमारे दहिने अङ्ग से सुन्दर रूपको धारण किये निज शोभासे दिशाओंको प्रकाश करता कीर्त्ति लक्ष्मी औ दया की मानों दूसरी मूर्त्ति ही धारण किये एक पुरुष उत्पन्न भया उसे देखि ब्रह्माजी हमसे पूंछने लगे कि हे भगवन् हम तीनोंमें यह चौथापुरुष कौनहै सो आप कृपाकरके स्फुट कथनकरें इसभांति हे धरणि ब्रह्माजीकी बाणी सुनि हमनेकहा कि हे ब्रह्मन् यहपुरुष सबकर्म्मों को सांग पूर्ण करनेवाला मधुपर्क नाम भक्तों का मुक्तिदेने हारा है और इसे हमने उत्पन्न कियाहै इसहमारे बचनको सुनि रुद्रजी कहनेलगे कि हे विष्णो आपने बहुत उत्तमकिया जो इसे उत्पन्नकिया इस रुद्रकी बाणी सुनि ब्रह्माजी बोले कि हे विष्णो इस मधुपर्क से क्या प्रयोजनहै सो आप वर्णनकरें यह सुनि हमबोले कि हे ब्रह्मन् मधुपर्ककेउत्पन्न होनेका कारण और इसके देनेसे जो फल होताहै सो औ हमारे पूजनमें मधुपर्क देनेसे जोफल होताहै सो हम वर्णन करतेहैं सावधानहो श्रवणकरो और जिसभांति मधुपर्क देनेसे उत्तम दिव्यगति प्राप्तहोतीहै सो श्रवणकरो हे ब्रह्मन् पूजन के समय सब पूजन सामग्री से अधिक प्यारा मधुपर्क है जिसके निवेदन करने से हम परमपद देते हैं उसे इस रीतिसे निवेदन करना चाहिये कि उत्तम पात्रमें मधुपर्ककोरख यहमंत्र उच्चारण करै मंत्रः॥ ओंएषोहिदेवभगवँस्तवगात्रसूतः संसार

मोक्षणकरोमधुपर्कनामा। भक्त्यामयायं प्रतिपादितोऽथ गृहाण देवेशनमोनमस्ते॥ इस मंत्रसे निवेदन करनेसे हम बहुत प्रसन्नहोतेहैं अब जिस पदार्थको मधुपर्क कहतेहैं सो श्रवणकरो हे धरणि गो घृत दधि औ मधु इन तीनों को समभागले इकट्ठे कर उत्तम पात्रमें हमारे निवेदनकरै इसभांति हमने मधुपर्ककी व्यवस्था वर्णन किया अबक्यासुना चाहतीहो सो वर्णनकरैं॥

एकसौछियासीका अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं हे शौनक इसभांति मधुपर्क की उत्पति औ फल सहित कारणके बाराहजीके मुखारविन्दसे सुनि विस्मित हो नारायणके चरणोंको स्पर्शकर धरणी कहनेलगी कि हे भगवन् अब आप यह कथनकरैं कि आपके पूजनमें सबपूजनके पश्चात् कौन पदार्थ देना चाहिये जो आपको बहुत प्रियहोय सो वर्णन कीजिये यह सुनि बाराहजी कहनेलगे कि हे धरणि बहुत उत्तम प्रश्न तुमने कियाहै जिसके श्रवण करने से संसार का भय निवृत्त होताहै हे धरणि हमारे पूजनकरके अन्तमें निज कुटुम्बके औ राज्यकी कुशल के लिये शांति मंत्रों का उच्चारण करना चाहिये सब पूजन के अन्त में हाथजोड़ दोनों जानुको पृथिवीमेंकर इसमंत्रको पढ़ै मंत्रः॥ओंनमोनारायणाय॥ ओंनमोनमोवासुदेवत्वंगतिस्त्वंपरायणम्। शरणंत्वांगतोनाथसंसारार्णवतारक। आगतस्त्वंचसुमुखममचित्तेनवैपुनः। दिशःपश्यअधःपश्यव्याधिभ्योरक्षनित्यशः। प्रसीदस्वसराष्ट्रस्यराज्ञःसर्वबलस्यच। गर्भिणीनांचवृद्धानांवीहीणांचगवांतथा। ब्राह्मणानांचसततं शांतिंकुरुशुभंकुरु। अन्नंकुरुसुवृष्टिंचसुभिक्षमभयंतथा। राष्ट्रंप्रवर्द्धतुविभोशांतिर्भवतुनित्यशः। देवानांब्राह्मणानांचभक्तानांकन्यकासुच। पशूनांसर्वभूतानांशांतिर्भवतुनित्यशः। एवंशान्तिंपठित्वातुममकर्म्मपरायणः॥ हे धरणि इस भांति शांतिमंत्र पढ़ि फिर

इसमंत्रकोपढ़ै मंत्रः॥ ओंयोऽसौभवान्सर्वजगत्प्रसूतेयज्ञेषुदेवेषुच कर्म्मसाक्षी। शांतिंभवान्कुर्वतुवासुदेवसंसारमोक्षंचकुरुष्वदेव। एषसिद्धिश्चकीर्त्तिश्चओजसांतुमहौजसां। लाभानांपरमोलाभो गतीनांपरमागतिः॥ हे धरणि हमारे पूजन के अंतमें इन शांति मंत्रों को जो पढ़ता है सो इस लोकमें सुख भोगि अंतमें हमारे शरीरमें लयको प्राप्तहोताहै इसभांति शांतिकोपढ़ि पीछे मधुपर्क्कदेकर यहमंत्रपढ़ै मंत्रः॥ ओंनमोनारायणाय। योऽसौभवान्देववरप्रसूतोयोवैसमर्च्योमधुपर्क्कनामा। आगच्छसंतिष्ठइमेचपात्रे ममापिसंसारविमोक्षणाय। इस मंत्रको पढ़ि ताम्र पात्रमें दधि घृत औ मधु सम भागले हमारे अर्प्पण करै यदि मधु न मिलै तो गुड़मिलाकर देय हे धरणि हमारा अंश दधिहै रुद्रकाअंश सहतहै औ घृत ब्रह्माजीका अंशहै इसलिये मधुपर्क्क सब देवताओंका प्यारा है यदि मधुपर्क्कमें तीनोंपदार्थ न मिलैं तो केवल मंत्रपढ़ि जल मात्रहीसे मधुपर्क्क देनाचाहिये मंत्रः॥ ओंयोऽसौ भवान्नाभिमात्रप्रसूतोयज्ञैश्चमंत्रैस्सरहस्यजप्यैः। सोऽयंमयाते परिकल्पितश्चगृहाणदिव्योमधुपर्क्कनामा॥ हे धरणिजोमनुष्य हमारे कहे विधानसे मधुपर्क्क निवेदन करतेहैं सो सब यज्ञोंके सांगफलको प्राप्तहो हमारे लोकमें प्राप्तहोतेहैं और भी श्रवण करो हे धरणि जिस किसी के प्राणत्यागका समयहोय उसे विधिपूर्वक मधुपर्क्कदेनेसे सबपापोंसे छुटि वो हमारेलोकमें प्राप्त होताहै यदि प्राण निकलने का समयहोय तब हाथ में मधुपर्क्क ले यहमंत्रपढ़ै मंत्रः॥ ओंयोऽसौभवाँस्तिष्ठसिसर्वदेहेनारायणःसर्वजगत्प्रधानः। गृहाणचेमंसुरलोकनाथभक्त्योपनीतंमधुपर्क्कसंज्ञम्॥इसमंत्रको पढ़ि संसार सागरसे पारहोने के लिये मधुपर्क्क देय हे धरणि इसभांति मधुपर्क्क की उत्पत्ति हमने वर्णनकिया इस मधुपर्क्क माहात्म्यको कोई नहींजानता जो पूजन के अंतमें देवताको मधुपर्क्क देतेहैं उनका संसारमें फिर जन्म नहीं होता

औ परम गति को प्राप्त होतेहैं यह मधुपर्क पवित्र औ विमल सबपापोंका हरनेहाराहै इस विधानको उसकेलिये देनाचाहिये जो गुरु भक्त ज्ञानी औ बुद्धिमानहोय और जो मूर्ख औ बिचार हीनहोय उनको कभी इसको न देना हेधरणि जोपुरुष मधुपर्क माहात्म्य श्रद्धासे पढ़ै व ब्राह्मणके मुखसे श्रवणकरै उसके सब दुःख दूरहोते हैं कल्याण औ मङ्गल को प्राप्त होताहै और इस माहात्म्यके पाठ करनेवाला पुरुष धन औ पुत्र युक्तहो भांति २ के संसार सुखको भोगि अंतमें हमारे लोकका आता है॥

एकसौसत्तासीका अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं हे शौनक इसभांति वाराहजीके मुखारविंद से मधुपर्क माहात्म्य औ शांति पाठ माहात्म्य सुनि हाथ जोड़ नम्रहो पृथिवी कहनेलगी कि हे भगवन् अब आप कृपा करके नरकका वर्णन कथनकरैं जिसके श्रवणसे अनेकसंदेह दूरहोयँ यह सुनि वाराहजी कहनेलगे कि हे धरणि जोप्रश्न तुमपूंछती हौ सोई राजानेजनमेजय वैशम्पायन ऋषिसेपूंछा सोसुनोपांडु-बंशी परीक्षितराजा का पुत्र जनमेजय अश्वमेध यज्ञमें ब्राह्मणका बध कर ब्रह्महत्या छोड़ाने के लिये प्रायश्चित्त करने के निमित्त हरिद्वारमें जाय श्रीगङ्गाजीके निकट व्यासजीके शिष्य वैशम्पा-यन मुनिकोदेख ब्रह्मबध चिन्तासे व्याकुलहो हाथजोड़ नम्रहो पूंछनेलगा कि हे भगवन् यह हमारे घोर चिन्ता होरहीहै कि जो मनुष्य इसलोकमें शुभ व अशुभ कर्म्मकरताहै उसेभोगना पड़ताहै इसलिये हे भगवन् जहां अशुभकर्म्म मनुष्य भोगतेहैं सो यमपुरी किस प्रकारकीहै सो आप वर्णनकरैं कितनी दूर है उसका क्या स्वरूपहै औ किसभांति वहां मनुष्य प्राप्त होतेहैं हे भगवन् हमतो किसी भांति यमपुरको नहीं जायँगे सूतजी कहते हैं हे शौनक इस भांति राजाका प्रश्नसुनि बैशम्पायन जी

कहने लगे कि हे राजन् प्रथम समय में जो वृत्तांत भया है सो आप सावधान हो श्रवणकरें जिसके सुनने से धर्म्म औ यशकी वृद्धि होती है औ अनेक भांति के पाप निवृत्त होते हैं हे राजन् पहिले समयमें उद्दालक नाम बड़े धर्म्मात्मा ऋषि भये जिसका पुत्र योगी राजनाचिकेत नामक विख्यात हुआ सो उद्दालक ने किसी कारण निज पुत्र नाचिकेत को यह शाप दिया कि रे दुष्ट बहुत शीघ्र तू यमराजके समीपजाययमपुरको देख तबतोहेराजन् निजपिताकी शापवाणी को सुनि बड़े आदरसे अंगीकार करबड़े तेजस्वी औधर्म्मात्मा नाचिकेतने योग मार्गमेंहो उसीसमय यम-पुर जानेका बिचारकिया औजब जानेलगा तबनम्रहो हाथजोड़ निजपितासे यहकहा किआप सत्यवादी हैं जिसमेंआपका वचन मिथ्या न होय इसलिये मैंधर्म्मराजके समीप जाताहौं औधर्म्म-राजका दर्शनकर शीघ्रही लौटि आपके चरणों का दर्शन करूंगा इसभांति निजपुत्रके मुखका वचनसुनि उद्दालकमुनि मोहवशहो कहनेलगे कि हेपुत्र हमारे वचनको मानियदि तुम यमपुरकोजाते हौ औ शीघ्रआने को कहते हौ तो केवल हमारी बाणीको सत्य करनेकेलिये सो हेपुत्र सत्यकेतुल्य और कुछ नहींहै सत्यसेसूर्य्य प्रकाशकरता है सत्यहीसे वायु बहतेहैं और अग्नि सत्यसे सब पदार्थको भस्मकरते हैं और सत्यहीसे पृथिवी स्थिर होरही है हेपुत्र सत्यसे समुद्र निज मर्य्यादा को नहीं त्यागता और सत्य के वशहो मंत्र सबके कार्य्यों को करते हैं यज्ञ सत्यके आधार है वेद सत्यके आधारहै हे पुत्रइसभांति सब व्यवहार सत्यही के आधीनहैं सत्यकी सहायतासे मनुष्य स्वर्गको प्राप्तहोता है देखो हेपुत्र देवदेव रुद्रभगवान् पूर्वसमय में देवीको गर्भधारण कराया सो तेज देवीने त्यागिदिया परंतु सत्यबल से वह बालक कुमार नाम बड़ा तेजस्वी भया और वड़वामुख में और्वऋषिने अग्नि को छोड़दिया और बिन्ध्यनाम पर्वत सत्यहीसे पृथिवी में शयन

करताहै हेपुत्र सबचराचर सत्यहीके बलसेस्थितहै और गृहस्थ वानप्रस्थ ब्रह्मचर्य्य संन्यस्तआदि आश्रम सत्यहीमें हैं इसलिये हे पुत्र हजार अश्वमेधयज्ञ औ सत्य दोनों तुलामें धर बराबर करने से सत्यही अधिक होताहै इसनिमित्त हेपुत्र निज आत्मा में बिचारकर सत्यकी रक्षा करो इसभांति पिता की बाणी सुन नाचिकेत योगयुक्तहो यम महाराज के स्थानमेंजाय प्राप्तभया॥

एकसौअट्ठासीका अध्याय॥

तबतो हे शौनक नाचिकेत ऋषिको देख यमराजने प्रसन्नहो उत्तम आसनदे पाद्यअर्घसे पूजनकर औ प्रीति पूर्वक यहआज्ञा दिया किहेपुत्र अबशीघ्र तुम निजपिताकेसमीपजावो यहयमराज की बाणीसुन नाचिकेत बड़ेहर्ष में युक्तहो पिताके समीप आय प्रणाम कर खड़ाहुआ तबतो उद्दालकऋषि निज पुत्रको देखि बड़ेहर्षसे उठि हृदयसे लगाय मस्तकको सूंघि बड़ेहर्षसे ऊंचेस्वर से यह कहनेलगे कि हे ऋषिलोगो हमारे पुत्र के योगबल का महा प्रभाव देखो कि यमपुर में जायशीघ्रआया आजहमारे तुल्य भाग्यशाली कोईनहीं है जो निज पुत्रको कुशलयुक्त यमपुर से लौटा देखते हैं इसभांति निज प्रशंसा कर उद्दालक मुनि पुत्रसे पूंछनेलगे कि हेपुत्र यमके स्थानमें किसभांतिगये औ किसी ने तुमको कुछ दंड औ बंधनआदि तौ नहींदिया अथवा किसीभांति की घोरव्याधिने तो तुमको नहींदुःखदिया और वहांक्या अपूर्व तुमने देखा सो वर्णनकरो और प्रेतराज महाराजको तुमने किस भांतिदेखा औ किस कृपादृष्टि से सो सब वृत्तांत हमसे वर्णन करो और वहांके दंड देनेवाले राजसेवक किस भांति तुमको मिले औ वहांसे चलके मार्ग इसलोकका कैसे तुमको प्राप्तभया सो सब वर्णनकरो इसभांति उद्दालकके वचनोंकोसुनि वहांकेसब ऋषियोंके गण औ ब्राह्मणों के गण नाचिकेत का यमपुरसे लौट

के मृत्युलोकमें आना सुनिकै बड़ाआश्चर्य्य मानि निज २ कृत्य को त्यागि नाचिकेत के दर्शनको आय पहुंचे वहांकोई तो बैठे हैं औरकोई खड़े होरहेहैं इसभांति हेराजन्जनमेजय नाचिकेत को देखसब ऋषीश्वर पूंछनेलगे कि हेसत्यव्रत हेगुरुसेवानिरत हे पिताके वचन पालन करनेवाले नाचिकेत तुमधन्यहो जोयमपुर में जाय फिर कुशल पूर्वक निजपिता को आयमिले हेनाचिकेत यमपुरमें जो २ बिशेष तुमने देखाहोय सो २ सबवृत्तांत हमारे सबके सुननेकी इच्छाहै आप वर्णन करैं और हेपुत्र पूंछने से जो गुप्तहोय सो भी कथनकरना उचितहै हेपुत्र यमराजके पुर से ऐसा कौनहै जो जायकर क्षेमसे लौटआवे इसलिये वहांका भय सबी मानतेहैं सो वहां यम किसभांति निजराज्यको पालन करतेहैं औ चित्रगुप्त क्याकरते हैं कालका क्या स्वरूपहै और व्याधि किस भांतिकी है वहांकर्म्मफल जीवोंको किसभांति भोगना पड़ताहै और वहां जायके क्याकरनेसे बाधा निवृत्तिहोती है और यहभी सुननेमें आताहै कि यमराजके दूतजीवोंको क्रोध से बांधते हैं औ तीक्ष्ण शस्त्रसे काटतेहैं इसभांति अनेक क्लेश देतेहैं ऐसे स्थानमें पापीकी कौनगति होतीहै औ पुण्यात्मा किस भांति वहांकी बाधासे मुक्त होतेहैं सोसब वर्णनकरो हेनाचिकेत हमारेसबके पूंछनेसे स्नेह जानिके सबसत्य२ बर्णनकरो ॥

एकसौनवासीका अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं हे शौनक इस भांति ऋषियों का वचन सुन प्रसन्नहो नाचिकेत धर्म्मराजको प्रणामकर सब ऋषियोंकी तरफ देख कहनेलगा कि हेऋषीश्वरो जोवृत्तांत आप सब पूंछतेहैं सो यथाबुद्धि हम बर्णन करतेहैं सो सावधानहो श्रवणकरो हेऋषीश्वरो जो मनुष्य मिथ्या भाषण करतेहैं बालकका बध करते हैं स्त्रीबध करतेहैं ब्राह्मण का बधकरनेवाले शठ कृतघ्न लोलुप पर-

स्त्रीगामी व्रत निन्दक वेद द्रोही शूद्रके यज्ञ करानेवाले मद्यप वीरबध करनेवाले मातृगामी वृद्धपिता माताके त्यागी पतिव्रता स्त्रीके त्यागी गुरुद्रोही दूत कर्म्ममें मिथ्या कथन करनेवाले घर औ क्षेत्र हरण करने वाले जलका सेतु तोड़नेवाले पुत्रहीन निर्दयी पाखंडी सोमविक्रयी स्त्रीजित रसविक्रयकरने वाले झूंठी साक्षी देनेवाले वेद बेंचनेवाले नक्षत्रजीवी चांडालके पढ़ानेवाले सर्वस्त्री गामी कूटतुलावाले पापियोंके संगी संग्राममें जाय भागनेवाले परधन परस्त्री हरण करनेवाले राजाके बधकरनेवाले पापीके सहाय देनेवाले अग्निसे ग्रामादि भस्म करनेवाले देव चिन्हधारी देवताके पूजक तीर्थके दान लेनेवाले मिथ्या नखरोम बढ़ानेवाले औ वर्णाश्रमभ्रष्ट सबके दान देनेवाले तीर्थलोप करने वाले हेऋषीश्वरो इन्होंको आदिले हजारों पुरुष और स्त्री यमलोकमें जाय निज२ किये कर्मोंके फलोंको भोगतेहैं सोसबक्रमसे वर्णन करतेहैं हेऋषीश्वरों सावधानहो श्रवणकरो वैशंपायनजी कहते हैं हेराजन् जनमेजय इसभांति नाचिकेत की बाणी सुन सब तपस्वी विस्मितहो कहने लगे कि हे पुत्र जो २ जिस भांति तुमनेदेखा हो सो सब यथार्थ वर्णनकरो जिस स्वरूप से कालजीवोंको लेजाताहै और जिसभांति जीवोंको दंडप्राप्त होता है सो सब कथनकरो और वैतरणी क्या पदार्थहै औ उसकाक्या स्वरूपहै औ रौरव शाल्मलीका क्या स्वरूपहै और जो अनेक कुंभीपाक क्षारकर्दम आदि नानाविधि नरकहैं उनसबका वर्णन करो कि मनुष्य थोड़ सुखके मोहबशहो शास्त्र औ वृद्धका वाक्य त्यागि स्वतंत्रहो अनेक भांतिके दुःखकर्म करनेसे यमपुरमेंजाय अनंत क्लेश भोगतेहैं कि जिसका कुछ पारनहीं हेपुत्र इन सब प्रश्नोंका उत्तर जैसा तुमने देखाहै सो सब कहिसुनावो ॥

एकसौनब्बे का अध्याय॥

वैशम्पायन जी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय इस भांति ऋषियोंका वचन सुनि नाचिकेत सबवृत्तांत प्रारंभ से वर्णनकरने लगे हे ब्राह्मणो जो आपसब पूछते हो सो श्रवण करो श्रीमहाराज धर्म्मराज की राजधानी हजारों योजनकी लंबी चौड़ी है जिसमें जांबूनद नाम सुवर्णके अनेकभांति उत्तम २ मंदिर बनेहैं औ अनेकभांतिके मणियोंकी अटारी जिन मंदिरोंमें शोभा देरही है औ सुवर्णका प्राकार चारों तरफ़ जिसके भीतर कैलासपर्वत के शिखरके तुल्य उत्तम २ मकान बने हैं औ निर्मल जलकरके पूर्णनदी जहां चारोंदिशामें बहिरही हैं औ अनेकभांतिकी बापी कमलोंकरके शोभित औ नानाभांतिकेतड़ाग जहां शोभित होरहे हैं और हेऋषीश्वरो जहां स्त्री औ पुरुष सब भूषणोंकरके भूषित निज २ बाहनोंपर पुरकी शोभाको देरहे हैं और अनेकभांति के वृक्षों में फल पुष्प आय रहे हैं जिन्हों के ऊपर पक्षियों के जोड़े कामकरके मत्त नानाभांतिके शब्दों को बोलिरहेहैं और अनेक भांतिके कमलोंकरके शोभित जलाशय के मध्य हंस जलकुक्कुट कारंडव आदिअनेकभांतिके पक्षियों करके शोभाको प्राप्त मत्स्य आदि नानाभांति के जलजीव विहार कररहे हैं कोई नृत्यकरते कोईसोते कोई भोजनकरते कोई निज२ स्त्रियोंके साथ इच्छापूर्वक विलासकरते इसभांति हे ऋषीश्वरो धर्म्मराज के पुर में अनेक शोभा होरही हैं निज २ कर्म्मोंके बशहो कोई जीवबड़े कोईछोटे हमने देखेहैं कि जिन्हों के स्मरण करने से हमारामन व्याकुल होता है वहअपूर्व वृत्तांत देखनेहीसे बनताहै तथापि जैसा देखा औ सुनाहै सो कथन करतेहैं हेऋषीश्वरो धर्म्मराजके पुरमें सब नदियों में उत्तम पुष्पोदका नाम नदी है जिसके दोनों किनारे इतने वृक्ष हैं कि कहीं वहदीखतीहै औ कहींनहीं दीखती जिस

नदीके दोनों किनारे सुवर्ण की सीढ़ियोंसे शोभित होरहे हैं औ जिसकी बालुका सुवर्णके रंगकी है और जिसका जल शीतल औ सुगन्ध करके युक्त जिसमें नानाभांति के कमल में भ्रमर चारोंओर गुञ्जार कररहे हैं औ जलपक्षियों करके युक्त उसनदी की शोभा देरहेहैं हे ऋषीश्वरो इसभांति सबपापोंके हरनेवाली पुष्पवहा नाम नदी जिसके दोनों किनारे हजारों देव वृक्ष विराजरहेहैं जिनवृक्षोंके कुंजमें युवावस्थाके मदसे माती देवांगनानिजनिज प्रिय पुरुषोंकेसाथ रतिक्रीड़ा करती वारुणी पान करआनंद गान विलासहास आदि नानाविनोदयुक्त क्रीड़ाश्रम युक्तहो जल क्रीड़ा करती हैं इसभांति हजारों स्त्रियों के समूह इच्छापूर्वक कभी जलक्रीड़ा कभी वनक्रीड़ा कभी तीरक्रीड़ा करतीहुई अनेक भांतिके मत्त पक्षियोंके जोड़ाओंकी शोभा देखती निज निज प्रियपुरुषोंको रमावती और पुष्पवहा नदीको शोभा देती आनन्द कर रहीहैं इसभांति हे ऋषीश्वरो धर्मराजके पुर की नदीका वर्णन हमने किया कि जो नदी निज निकटनिवासियोंको ऐसा पालनकरतीहै जैसेमाता निज पुत्रका पालनकरै जिस नदीके मध्य औ दोनों किनारेके वनमें हंसोंके जोड़े हैं औ चकी चका पक्षी विहार कर रहेहैं जिस नदीकी मनोहर शोभा देखनेसे देवताओं को स्वर्ग में नन्दनबनका सुख भूलिगया औ ऋषियोंको तप करना भूलिगया जिसके किनारे विहारमानि काल व्यतीत कररहे हैं और हे ऋषीश्वरो जिसकेकिनारे गन्धर्व विद्याधर किन्नर नाग यक्ष आदि सब निज निज विमान में बैठे निज निज स्त्रियों के साथ विनोद कररहे हैं और उस नदीकी शोभाथोड़े दिनोंमें ठीक २ वर्णन नहीं होसक्ती ॥

एकसौइक्यानवेंका अध्याय ॥

नाचिकेत जी कहतेहैं हे ऋषीश्वरो दश योजन विस्तार औ

बीस योजनके व्यासमें प्राकार अर्थात् शहरपनाहके भीतर हजारों महलोंकरके शोभित मानों निजउँचाईसे आकाशको स्पर्श कररहीहै औ निज शिखरकी शोभा से पुरी प्रकाशित होरही है औ जलयंत्र अनेक भांतिके जहांशोभा देरहेहैं इसभांतिके पूर्व-द्वारमें हे ऋषीश्वरो उन्हीं लोकों का प्रवेश है जो धर्म्मात्मा औ सुकृतीहैं और जो यमपुरमें दक्षिण द्वारहै सो लोहा से विचित्र बनाहै जिसके देखनेसे भय उत्पन्न होताहै इसद्वार में उन्हींका प्रवेश होताहै जो पापात्मा क्रूर छली औ हिंसारत हैं और वह दक्षिणद्वारनहींहै साक्षात् नरक पुरका फाटक है कि जिस में प्रवेश करतेही रौरव कुंभीपाकसे लकर हजारों नरक भोग करने पड़ते हैं और हे ऋषीश्वरो गोपुर नामक जो पश्चिम द्वारहै सो अग्निमय भूमि होनेसे भयदेने वालाहै धर्म्मराजने पापियों के प्रायश्चित्तके लिये बनायाहै उसीकेसमीप सब रत्नोंकरके शोभित बहुत रमणीय तीन योजनकी विस्तृत अद्भुत सभा बनीहै जिस सभामें बैठि धर्म्मराज मनुष्योंके पुण्य औ पापका निर्धार करते हैं इसीलिये उससभाका नाम धर्म्मसभाहै हे ऋषीश्वरो जिस ने जैसा शुभ औ अशुभ कर्म्म कियाहै तिसकाफल लोककेहित के लिये बिचारकर के देते हैं और जिससभा में धर्म्मराज की आज्ञानुसार मनु प्रजापति व्यासजी अत्रिउद्दालकका पुत्रआप-स्तंवबृहस्पति शुक्र गौतम शंख लिखित अंगिरा भृगु पुलस्त्य सबजीवोंके पुलह आदि धर्म्मशास्त्र के आचार्य्य सहितधर्म्मराज केधर्म्म औ अधर्म्म का निर्णय करतेहैं और हे ऋषीश्वरो जिस सभा में सब उत्तम भूषणों करके भूषित निज तेज से सभा को प्रकाश करता ब्रह्मदत्त विराजमान होरहा है एक तरफ़ सारी सभाका तेज और एकतरफ़ केवल ब्रह्मदत्त निजधर्म्मके प्रताप से सारीसभाको शोभा देरहाहै जिसके बांयें औ दहिनेभाग में निज निज प्रकाश से प्रकाश करनेवाले ब्रह्मऋषि सत्यवादी

सब अङ्गोंके साथ छवो शास्त्र औ वेदके अर्थ के ज्ञाता सहित पितरोंके धर्म्मराजको अनेक भांतिकी धर्म्मकी कथा सुनाय रहे हैंऔर निज निज अधिकार में स्थित कोई अनेकभांति के राग कोई नृत्य औ कोई भांति भांति की हास्य कररहे हैं नाचिकेत कहतेहैं हे ऋषीश्वरो उसीसभामें धर्म्मराजके समीप बड़ीदाढ़ी वाला कृष्णवर्ण का पुरुष जिसकी देहमें ऊंचे २ रोम भयानक मुखमें बड़े मोटे लम्बे दाढ़ोंसे बिराजमान औ वामभुजा में लोह का दण्डलिये धर्म्मराजकीआज्ञामें स्थितहै जोआज्ञा शुभाशुभ होतीहै उसीको करके शीघ्र धर्म्मराज को प्रसन्न करताहै जिस का लोक में विदित काल ऐसा नामहै और कालहीके माफ़िक स्वरूप धारणकिये अनेक गणोंकरके युक्त यमराज करके पूजा कीप्राप्त औ सन्मानकोप्राप्त मृत्युनाम जिसका सो अनेक भांति के रूप धारण किये रोगों की साथ लिये धर्म्मराज की आज्ञा में स्थित है हे ऋषीश्वरो जिससे तपस्वी ऋषि मुनि योगी सुर औ असुर सबडरते जिसे नित्यप्रणाम करतेहैं औ नित्य जिस की त्रास से दुःखी होरहे हैं सो मृत्यु नित्य युवावस्थाको प्राप्त जरा मरण वर्ज्जित अतिबली औ पुष्ट गणोंका साथलिये यम-राजकी सेवा को कररहे हैं और हे ऋषीश्वरो ज्वर आदि नाना भांतिके रोग स्त्री औ पुरुषका स्वरूप धारणकिये अनेक भूषणों करके भूषित जिसके आगे औ पाछे काम क्रोध लोभ मोह मद मत्सरता भयानक रूप को धारण किये संसार के भक्षण करने में समर्थ पृथिवी को मानों दो टुकड़ा किया चाहतेहैं ऐसे यम-राजके आगे आज्ञा में हाथ जोड़े खड़े हैं जिसकी चारोंदिशाओं में कूष्माण्ड यातुधान औ राक्षस मांस औ रुधिरही है भोजन जिन्होंका सो विलक्षण रूप धारण किये यमराज महाराज की सेवाकररहे हैं जिन्होंमें किसीके एकपैर किसी के दोपैर किसी के तीनपैर औ किसीके चार हैं इसीभांति एकभुजा दो भुजा तीन

भुजा अनेक भुजा औ भुजाहीन औ जिन्होंके ऊंचे २ कान लम्बे कान चिपटेकान औ किसीके हाथीके तुल्य कर्ण उनमेंकोई मुकुट से ले पैरकी अंगुलीके सब भूषणोंकरके औ अनेक मनोहर २ वस्त्रों करके भूषित पुरुषरूप धारणकिये और कोई स्त्रीरूप धारणकिये मनोहर २ वस्त्र औ भूषणोंकरकेभूषित औ कोईविकट वेषकोधारण किये नग्न हाथोंमें त्रिशूल मुसल चक्रशक्ति तोमर धनुषबाण खड्ग गदा मुद्गर औकुदाल इनअस्त्रोंको धारणकियेहैं और हेऋषीश्वरो किसीके हाथमेंदधि औकिसीकेहाथमें अनेकभांतिकाभोजन और कोईनानाविध भूषण औवस्त्रलिये यमराजकीआज्ञामें खड़ेहैं और कोई हाथीपर कोई घोड़ेपर कोई हंसपर इसभांति ऋषभ शरभ सुदर्शन मोर कुक्कुर चक्रवाकपर औकोई गर्दभपर सवार होरहेहैं इसभांति यमराजके गणयमपुरमें हमने देखाहै हेऋषीश्वरो कोई उज्ज्वल वेष कोई मलिन औ किसीकावस्त्र नवीन औ किसीका वस्त्रमलिन जीर्णहै और कोईबोलतेहैं कोई चुपहैं कोईदयाकरके युक्त औ कोई दयाहीन किसीके हाथोंमें धर्म्म किसीके यश औ किसीक हाथमें कीर्त्ति इसभांतिके गण यमराजकी आज्ञानुसार हाथ जोड़े खड़े हैं हे ऋषीश्वरो यदि इन्होंका पूजन जो ब्राह्मण करतेहैं उनकी हानि कभी नहींहोती इसलिये धर्म्मराजके इन गणोंका पूजन औ स्तुति प्रणाम नित्य करना चाहिये जिस से प्रसन्नहो नित्य कल्याण औ आरोग्य करतेहैं॥

एकसौबानवेका अध्याय॥

नाचिकेत कहताहै कि हे ऋषीश्वरो इस भांतिके प्रेत पुर में जब हम पहुंचे तब बड़ी प्रीति से धर्म्मराज महाराज ने हमको दर्शन दिया औ बड़ेआदरसे उत्तम आसन पर बैठाय पाद्य अर्घ निवेदनकर हमारी बड़ाई करनेलगे उससमय प्रथम तो हमने उनका स्वरूप अतिक्रूर देखा फिर हमारे देखतेही सौम्य रूप

होगये और प्रथम उनकेनेत्र भी बड़ेभयानकथे परन्तु ऐसे सौ-
म्य औ मनोहर होगये मानों साक्षात् कमलही है इस भांतिके
स्वरूप को देख हे ऋषीश्वरो हमारे चित्तको बड़ा आनन्द भया
कि जिनके डरसे चराचरहाथजोड़ नमूहोपूजन औस्तुति करताहै
तिसने जोहमारा पूजनकिया तोइससेअधिक कौन आनन्द होगा
औ उनके प्रसन्न होनेसे मैं अपने को धन्य औ कृतकृत्य माना
औ सावधान हो हाथजोड़ धर्म्मराज महाराज की स्तुति करने
लगा कि हे भगवन् आप पितरोंके स्वामी हैं कृपाकरके मेरीकी
स्तुतिको श्रवणकरें इतनाकह स्तुतिका प्रारम्भ किया ॥ अथ
यमराजस्तुतिः । नाचिकेतउवाच । त्वंचधाताविधाताचश्रद्धेचैव
हिदृश्यसे ॥ पितृणांपरमोदेवश्चतुष्पादनमोऽस्तुते १ कालज्ञ
श्चकृतज्ञश्चसत्यवादीदृढव्रतः ॥ प्रेतनाथमहाभागधर्म्मराजनमो
स्तुते २ कर्त्ताकारयिताचैवभूतभव्यभवत्प्रभो ॥ पावकोमोहनश्चै
वसंक्षेपोविस्तरस्तथा ३ दण्डपाणेविरूपाक्षपाशहस्तनमोऽस्तु
ते ॥ आदित्यसदृशाकारसर्वजीवहरप्रभो ४ कृष्णवर्णदुराधर्ष
तैलरूपनमोऽस्तुते ॥ मार्त्तण्डसदृशश्रीमान्मार्त्तण्डसमतेजसः ५
हव्यकव्यवहस्त्वंहिप्रभविष्णोनमोऽस्तुते ॥ पाताहन्ताबृतीश्रा
द्धीनित्ययुक्तोमहातपाः ६ एकदृग्बहुदृग्भूत्वाकालमृत्योनमोऽस्तु
ते ॥ त्वयाविराजितोलोकःशासितोधर्म्महेतुना ७ प्रत्यक्षन्दृश्यते
देवत्वद्विनानचसिद्धगति ॥ देवानाम्परमोदेवस्तपसांपरमन्तपः ८
जपानाम्परमंजाप्यन्त्वत्तश्चान्योनदृश्यते ॥ ऋषयोवातथाकुद्धा
हतबन्धुसुहृज्जनाः ९ पतिव्रताश्चयानार्य्योदुःखितास्तपसिस्थि
ताः ॥ नत्वांशक्तइहस्थानात्पातनायकदाचन १० तस्मात्त्वंसर्वदे
वेषुएकोधर्म्मभृताम्बरः ॥ कृतज्ञस्सत्यवादीचसर्वभूतहितेरतः ११
इति ॥ वैशम्पायनऋषि कहते हैं हेराजा जनमेजय इस भांति
नाचिकेतजीकेमुखकी दिव्यस्तुतिसुनि धर्मराज प्रसन्नहो कहने
लगे कि हे उद्दालकजीके पुत्र इस तुम्हारी मधुरवाणीकी स्तुति

सुनि हम बहुत प्रसन्न हैं जो तुम्हारी बांछा होय सो बर मांगो आरोग्यहोना मांगो व दीर्घायुष्य इस धर्म्मराजके वचनकोसुन नाचिकेतबोले कि हे भगवन् यदि आप सबकेस्वामी प्रसन्नभये तो यही बर सर्वस्व लाभ भया इसलिये आपसे हम दूसरा बर नहीं चाहते केवल यह बांछा तो अवश्य है कि आपके पुरमें जो जीव शुभ वा अशुभ कर्म्म भोगतेहैं उन्होंकाक्रमसे सबका दर्शन किया चाहतहैं यदिआप बरदेतेहैं तो यही बर दीजिये यह बाणी सुनि यमराजने निज अधिकारी सेवकसे आज्ञादिया कि हे दूत नाचिकेतजीको चित्रगुप्त के समीप लेजाय यह कहौ कि इनको किसीभांतिका क्लेश न होय औ सारी हमारी पुरीका दर्शन करा-देवें इस धर्म्मराजकी आज्ञा को पाय नाचिकेत को साथलेजाय चित्रगुप्तके समीप राजआज्ञा सब निवेदन किया उससुनबड़ी प्रीतिसे चित्रगुप्त ने निज अधिकारी दूतको साथकर सब यम-पुरके देखनेकी आज्ञादी तबतो हेऋषीश्वरो हाथजोड़ आज्ञाको स्वीकारकर हमको साथले जब चलनेलगा तबतो चित्रगुप्त यह बोले कि हे दूत तुम हमारे चित्तके जाननेवाले बुद्धिमान हो औ शक्तिमानहो हमारी आज्ञा से यह ब्राह्मण प्रेतोंके समूह में जाताहै इसकी सब भांति रक्षाकरना जिससे इनको शीत गरमी क्षुधा तृषा दुःख नदेय औसब जगह देखायकै फिरहमारे समीप ल्यावो हे ऋषीश्वरो इसभांति चित्रगुप्तकी आज्ञाले दूत हमको संयमनीपुरीकादर्शनकराने लेचला और उस दूतकेसाथ जब हम चले तो क्या देखते हैं कि कोई कहताहै पकड़ो पकड़ो यह भागने न पावै औ इसेमारो इसेबांधिलो इसेफाड़के दोटुकड़े करदो यह शब्द चारोंओर होरहाहै और कोई बांधेजातेहैं कोईफाड़े जातेहैं कोई लोहके मुंगड़ेसे कूटेजातेहैं किसीके शिर टुकड़े २ होरहे हैं किसी के हाथ औ किसी के पैर जगह २ टुटिरहे हैं इसभांति के लक्षोंजीव जहां हाय २ कर चिल्लाय २ बडेऊंचे स्वरसे रोदन कर

रहे हैं हेऋषीश्वरो घोरअंधकारके युक्त नरक इसभांतिके जीवों से पूर्णहोरहाहै औ नानाभांतिकी दीनवाणीसे भरपूर होरहा है औ कहीं अग्निसे खौलता हुआ तेलका कुंडभरा है कि जिस में अनेकजीव छुटेभये हाय २ करके चुररहेहैं औ कहींघीके कड़ाह में पकरहे हैं कहीं जीवतेही देहका चर्म्म निकाल के लोन और लालमिरच का कुंडभराहुआहै उसमें गेरेजाते हैं और कहींतेल निकालने का जैसा यंत्र जिसका नाम कोल्हू सो बनाहै उसमें छोड़के अंग २ का रस निचोड़ते हैं तिलके माफिक उस कोल्हू यंत्रकी पीड़ासे अंग २ का रुधिर निकलजाता है औ घोरपीडा को प्राप्तहोतेहैं और हेऋषीश्वरो जिसका वैतरणीनाम है सब नरकोंका प्राकाररूपहै जिसका स्वरूप देखने से पापीको पाप कर्म्मका पूरादंड होताहै कि जिसमें कफ रुधिर सड़ामांस और मज्जा येही मलके स्थानमें हैं औ नख केश आदिकोंसे मूत्र औ बिष्टासे पूर्णहै उस नदीमें अनेककोटि पापीजीव डूबते तरते निज कर्म्मका फल भोगिरहे हैं और हेऋषीश्वरो शूलनाम नरक में जीवोंको पैरसे पकड़ चढ़ाय औखेंचि मूर्च्छितकर वैतरणीमें फेंक देतेहैं और कहींबड़े २ फण धारण करनेवाले सर्प्प चारोंओरसे लिपटि जीवोंको डसतेहैं कि जिसके विषस्पर्श होनेसे मूर्च्छा में प्राप्तहो मृतकसमान होजाताहै और कूटशाल्मली नामनरक में जिसमें लोहके बडे २ तीक्ष्ण अग्रवाल कांटेहैं उसमें चढ़ायके खेंचि खारीकीचके कुंडमें पटकेजाते हैं और कोई तीक्ष्णधार के खड्गसे टुकड़े २ कियेजातेहैं कोई शक्तिनामक अस्त्र से भेदन कियेजातेहैं बारंबार हेऋषीश्वरो वहां यहभी हमने देखाहै कि हजारों यातुधानके औ कूष्मांडके गण बड़े २ भयंकररूप धारण किये खड़ेहैं पापीजीव जब उनके समीप गये तबबड़े शीघ्र उठा कर निजदांतोंसे चर्वणकर उसीसमय बिष्टाके रस्ते गिरादेतेहैं और किसीको निजमुखमें छोड़ चर्वणकर गन्नेके माफिक रसको

चूसके थूक देते हैं और कहींरुधिर और मांसके खानेवाले घोर राक्षस देखतेही पापियों के मांस औ रुधिरको खायपीके उनके हाड़ोंको अंधेकूप में छोड़ देतेहैं और कहीं बडे २ बंदरके ऐसे रूपको धारण किये राक्षसजीवों को निज नखोंसे औ दातों से छिन्नभिन्न करदेतेहैं हे ऋषीश्वरो जिसभांति म्लेच्छ कुक्कुट पक्षी को कटकटा शब्द करते भक्षण करताहै उसीभांति उसभूमि में चारोंओर से कटकटा शब्द सुनाता है और जिसभांति आम्र के फलको मनुष्य स्वाद ले २ कर बड़ीप्रीतिसे खाताहै उसीभांति यमपुरमें मनुष्यों को राक्षस स्वाद ले २कर खातेहैं औ चूसि२के दूरपर्वतके ऊपर फेंकदेते हैं फिर दैवयोग से कर्म्मोंकेवश सजीव होतेही उसीभांति बडेशीघ्र पकड़ आम्र फलके माफिक मुखमें दे औ चूसिकै फेंकदेते हैं औ उन पुरुषों के पापों को कह २ वारंबार भक्षणकरतेहैं और किसीपापीके ऊपर बड़े२ पाषाणके टुकड़े छोड़तेहैं कि जिसमें वह उसके पड़तेही चूर्णहोजाय औ यह कह२ के उन्होंके पापोंका स्मरण कराते हैं कि हेदुष्टो जो तुमने धर्म्म को त्याग औ अधर्म्म रतहो अमुक २ पापकियाहै उसकाफल अब भोगकरो और किसी पापीके ऊपर इतनी धूलिकी वर्षाकरतेहैं कि जिसमें वो उसधूलिसे ढपजाय और किसी पापीको मतवाले हाथीके आगे छोड़देतेहैं कि देखतेही वो पैरोंसे उसेपीस देताहै औ किसीको दांतोंके धक्के से भूमिमें घुसेड़ देताहै किसीको चीर के दोटुकड़े करदेता है और हेऋषीश्वरो किसीपापी को पकड़ जलतेभये अग्निके कुंडमें छोड़देते हैं और वो जीव अग्निके ताप करके पीड़ाको प्राप्त ठंढेजलको पुकारते २ मूर्च्छित हो २ गिर पड़तेहैं यदि उनको पानीभी यमदूत देतेहैं तो गलायाभया लोहा उनकेमुखमें छोड़तेहैं जिससे दुःखीहो शरण२ पुकारते हैं औ उन का शरण कोई नहींहोता परस्पर लिपिटि २ दुःखीहो २ क्षुधा तृषा करके व्याकुल हाय२ करते मूर्च्छितहो२ गिर२ करके भस्म

होतेहैं औ हेऋषीश्वरो वो पापीजीव अन्नकीराशि उत्तम२ और ठंढाजल दूरसे तो देखते हैं परन्तु उनको प्राप्त नहींहोता इसी भांति अनेक सुगंधके पदार्थ दही दूध खिचड़ी खीर सहत मद्य मैरेय माध्वीक औ सीधु आदि अनेक भांतिके भोग पदार्थ वहां सब रक्खेहैं परंतु पापात्माओं को दुर्लभ हैं औ पुण्यात्मा तपस्वियों को सत्कारपूर्वक प्राप्तहोते हैं किसीपदार्थके लिये उन को दुःखनहीं होता और हेऋषीश्वरो उसभूमि में हमने येभी देखाहै कि जो तपस्वी महात्मा पुण्यकरनेवाले जाते हैं उनके लिये उत्तम औ सुगंधयुक्त पुष्पोंकी माला औ सबभांतिके वस्त्र औ अनेकभांतिके शृङ्गारभूषण छवोरसके अनेकभोजन रमणीय भूमि औ मनोहरा स्त्री मनोहर वेषको किये सबभांति से सेवा करनेमें तत्पर औ छवो ऋतुके स्वादयुक्त फलआदि उपभोगकी सबसामग्री प्राप्तरहतीहै इसलिये उन महात्माओं को वह भूमि धर्म्मपुरही दिखातीहै केवल पापियों कोही वहदुस्सह दंड प्राप्त होनेसे यमपुरहै हेऋषीश्वरो वेहीसामग्रियोंकोले वेही स्त्रियांपुण्य जीवोंकी सेवाकरतीहैं औ पापियोंको हँस २ करके औ कठोर २ बाणीकेसाथ मार२के कहती हैं कि हेकृतघ्नो हेधूर्त्तो हेलोभियो हे परस्त्रीगामियो हेशापापियो हेदानहीनो हेकृपणों हेपरनिंदाकरने वालो हेनिर्लज्जो हेपापके छिपाने वालो यहसुख तुम्हारे लिये नहींहै तुमतो जोभोगिरहेहो इसीको अधिकसेअधिक भोगोगे और जो तुमनेशास्त्र औ वृद्धोंका वचन त्यागि निजबलसे अंधेहो क्षणमात्रसुखके लिये अधर्म्मकियाहै उसकाफल यहांतो भोगतेहीहो यदिकुछ शेषरहेगा तो मृत्युलोकमें जन्मलेकर अंगहीन धनहीनगुणहीन बंधुहीन भाग्यहीन होकेफिर यहांसेभीअधिक वहांभोगोगे यहभोग जो देखतेहोसो तपस्वी दयावान् धर्म्मात्मा धीरपुरुषोंके लियेहै यहां इनसुखभोगोंको भोगि कुछ पुण्य शेष रहनेमें मृत्युलोकमें उत्तम औधनीकुलमें जन्मपाय रूप औगुण

से युक्तहो नानाभांतिके इच्छाभोगो को भोगि औ उत्तम पवित्र कर्म्मोंको कर अंतमें परमगतिको प्राप्तहोगे ॥

एकसौतिरानबेका अध्याय॥

बैशम्पायनजी कहते हैं हे राजन् जनमेजय नाचिकेत इस वृत्तांत को वर्णनकर कहनेलगा कि हे ऋषीश्वरो इस लोकमेंजो पुण्यात्माहैं सो तो पवित्र औ धनी कुलमें जन्मले सुन्दरस्वरूप औ विद्या करके युक्त सत्कर्म्मीहोते हैं औ पापात्मा नीच औ दरिद्र कुलमें जन्मले कुरूपगुणहीन धर्म्महीन होते हैं और इस लोकमें जोधर्म्मात्माहैं वे धर्म्मराज महाराजकी पुरीमेंजाय निज सुकृत का फल नानाभांति के भोगों को भोगि उत्तम विमान में बैठि दिव्य दिव्य अप्सराओं के साथ आनन्द करतेहैं और जो इसलोकमें पापात्माहैं जीवोंके संताप देनेवालेअधर्म्मी सो यमपुरमें जाय यमदूतोंके वशहो अग्नि से तपीहुई शिला के ऊपर बैठाय तप्ततैलसे स्नानकराये जातेहैं जिसस्नानसे सबअंग भस्म होजाताहै और उस क्लेशसे बचानेवाला कोई नहींहोता हे ऋषीश्वरो उनपापियोंकेमांस खानेकेलिये बड़े बड़े दांतवाले भयानक कुत्ते आय २ चारोंतरफ से लिपिटि कोई पैर औ कोई पीठि कोई शिर आदि अंगों को नोच २ के खातेहैं औ कोई विलक्षणरूप के ऐसे जीव हैं किजिन्हों के मुख सुई के माफिक तीक्ष्ण हैं जिस मुखसे उन अधर्म्मियों के अंगों को नोच २ खातेहैं और हेऋषीश्वरो किसी पापात्मा परस्त्रीगामीके समीप लोहकी जलती हुईस्त्री आय भोगदेने को तयारहोती है कि जिसके स्पर्शकरतेही सब अंग उसीक्षणमें भस्महोजाय और जिसस्त्रीके समीप आतेही वह पुरुष भयभीतहो इधर उधर भागता है औ वह स्त्री उसके पीठ पीछे लगीहुई दौड़ती है औ यह कहती है कि हे पापी कहां भाजके जाताहै हमको देख हम तेरी बहिनहैं तेरे

पुत्रकी स्त्री हैं तेरी मासी हैं हे दुर्बुद्धि तेरे मामा की स्त्री हैं तेरे पिताकी बहिनहैं गुरूकीस्त्री हैं भाईकी स्त्री हैं मित्रकीस्त्री हैं हम राजाकीस्त्री हैं पुरोहितकीस्त्री हैं अबक्यों नहीं पहचानता हमारे धर्मकोभ्रष्टकरके हमसे भजिके यहांसे रसातलतक नहीं बचैगा हेमूर्ख अबहमसे क्यों भागताहै हेनिर्लज्ज जब हमतेरे से हाथ जोड़ प्रार्थना करतीरहीं कि हमारे धर्म्म को न बिगाड़ो तबतो समझानहीं अबकहां भागताहै तबतो तैंनेहम को घेरा अबहम तुमको घेरतीहैं इसभांति जिस२ स्त्रीका भोग कियाहै वही रूप धारलोहमयी जलतीहुई स्त्री पिछले कर्म्मोंको कहि२ दौड़ती है और अनेकभांतिके पाप निज २ रूपको धारण कर करनेवाले पुरुषको स्मरण कराय घेर २के कहते हैं कि प्रथम तो अनर्थ करनेसे डरेनहीं अबक्यों भागतेहो हमतुम्हारेकिये अमुक २पाप कर्म्महैं इसभांति निजनाम कहि२लोहके मुद्गरोंसे मार२के दुःख देतेहैं जिसभांति पशुओं को गोपदंड देते हैं और हेऋषीश्वरो व्याघ्रसिंह गर्दभ शृगालआदि रूपोंको धारणकर कर्म्म रूपी राक्षस निजकरने वाले पुरुषको त्रासदेते हैं कहीं तो पापीजनों को कोठरीमें बैठाय जहरके धूमसे व्याकुलकरते हैं कहीं अग्नि की ज्वाला में पटकते हैं कहींबडे चोंचवाले गीधपक्षीसे उनका मांसनोचातेहैं औ कहीं तरवारिके तुल्य तीक्ष्ण पत्तके तालबन में ले छोड़देते हैं जहां छोड़तेही टुकड़े२हो गिरजाताहै और हे ऋषीश्वरो असितालबन नरकके द्वारमें बड़े२ भयानक यमदूत खडे हैं जो पापियों के प्राप्तहोतेही पकड़ २ लालनेत्रों से क्रोध कर २ कहतेहैं कि हेपाप करनेवाले दुष्टो जिसबलके भरोसे धर्म्म को भंगकर अधर्म्म कियाहै वहबल अबकहां है उसी की शरणमें जावो अबहमारे बशहोयहां इच्छा पूर्वक दंडदे शुद्धकर मनुष्य लोकको भेजेंगे वहांनीचकुलमें दरिद्रोंके घर रोगिनीस्त्री में जन्मपावोगे औ भोग दुर्लभ होगा सदा दुर्गतिरूपी अग्निकी

ज्वालामें भस्महोगे इतनाकहि बड़ी २ चोंचवाले काक औ गृध्र पक्षियोंके आगे खड्गसे टुकड़े २ कर उनका मांस छोड़ते हैं और किसीको बड़े विषधर सर्पके आगे करदेतेहैं कि जबसर्प उसको स्पर्श किया उसीसमय विषज्वालासे उनकादेह भस्महोजाताहै और हेऋषीश्वरो किसी पापीकी देहका चर्म्म उखेड़के चींटियों के आगे रखदेतेहैं कि जिसके चारोंओरचींटीलिपटिके मांस औ रुधिरको काटि २ के खाती हैं औ जिस यमपुर में कूप तड़ाग औ नदियां अनेक रुधिर मांस पूति कफ कृमि नख औ केशसे पूर्ण होरहीहैं जिसमें पापकरनेवाले रात्रिदिन उसीमें बहते डूबते उसीके भीतर क्लेश सहते हैं औ कहीं पापियों के ऊपर हाड़ की वर्षाकभी रुधिरकी वर्षाकभी अग्निसे खौलते जलकीवर्षा होतीहै जिस क्लेशसे व्याकुलहो सांसलेनेकी सावधानीनहीं रहतीकहीं बांधेजाते हैं कहीं रोकेजातेहैं कहीं काटेजातेहैं औकहींमुसलोंसेकूटे जाते हैं इसभांति हाहाकार करते यमपुरमें निज कर्म्मों कोभोग करते हैं औ निज२ कर्म्मों को स्मरण कर २ व्याकुल होतेहैं ॥

एकसौचौरानबेका अध्याय॥

नाचिकेतजी कहते हैं हेऋषीश्वरो जो यमालयमें तप्त महातप्त रौरव महारौरव नाम नरकहैं औ सप्त ताल कालसूत्र अंधकार महांधकार ये आठ बडे २ घोरपाप करनेवालों के लिये नरकहैं इन्होंके क्लेशका यहवृत्तांतहै कि पहलेसे दूसरेमें द्विगुण तीसरेमें त्रिगुण चौथेमें चतुर्गुण पांचयेंमें पंचगुण छठेमें षष्ठगुण सातवें में सप्तगुण आठवें में अष्टगुण जीवोंके लिये दंड दियाजताहै जबशरीर त्यागहोताहै तबयमदूत आयकेपापीको यातना शरीरमें कर गलेमें फांसीडालि लोहके दंडोंसे मारते यमपुर को लेजाते हैं उससमयमें बिनापुण्यके कोई उपाय क्लेश दूरकरनेका दूसरा नहीं है जिससे थोड़ा भी सुखहोय औ जिन विषयों से

मनुष्य सुखको प्राप्तहोताहै तिन्होंका सुखक्षणमात्रहीमें भंगहो-ताहै जैसे शब्दका सुखकानोंको स्पर्शका सुखचर्म्मको रूपविषय का सुख नेत्रको रसकासुख जिह्वाको गंधका सुख नासिका को प्राप्तहोताहै इन्हींसुखोंके लेशमें बंधाजीव शरीर त्याग करनेसे जिसइंद्रीके वशहो दुर्व्यसनमें आयुषको बिताया है हेऋषीश्वरो उसी इंद्रियको यमपुरमें दंडमिलताहै औ क्षुधा तृषाकरके व्या-कुल क्षणमात्र भी चैनको नहीं प्राप्तहोता देखने में उत्तमनिर्म्मल औ ठंढेजलके बडे२ सरकमलों करके शोभित औ अनेक पक्षियों करके युक्त भरेहैं परन्तु पापियोंके स्पर्श करतेही वेहीसर अत्यंत तपायेहुये होजाते हैं और क्षुधाके दुःखसे यदि किसी भांति का भोजनभी मिला स्पर्श करतेही कृमियों करके युक्तजिसमें दुर्गंध आय रहीहै औ सड़ेमांसके तुल्यहो के उनको प्राप्तहोताहै और हेऋषीश्वरो यमपुरमें पापीलोक ऊपर सूर्य्यकी तापहोने से औ नीच तप्तबालूके होने से घबड़ाय व्याकुलहो जब पुकार करतेहैं किहम जलते हैं दयाकरके हमें ठंढेजलमें छोड़ो तबतौ बडेतीक्ष्ण अस्त्रों से उनकी देहका चर्म्म उखेड़ मांसके पिंडको खारी जलके कुंडमें छोड़देते हैं जहां गिरतेही मूर्च्छा प्राप्त होती है औ बड़े २ बिषम जलजीव उसे निगलके बिष्टाके रास्ते निकाल देतेहैं औ उनको उदरसे निकलतेही फिर सजीवहो ज्यों सावधान होना चाहा त्योंही फिरवही दंडहोताहै इसीभांति करीषगर्त्त औकुंभी-पाकनाम नरकमें इसीभांति पापियों की दुर्दशा होतीहै और हे ऋषीश्वरो असिपत्रबन शृंगाटकबन औ तप्तबालुक नाम नरक में अनेक भांतिकी दुर्दशा होतीहै कहीं टुकड़े२ काटिके कुत्ते औ गृधको खिलाये जाते हैं कहीं कोल्हू यंत्रमें पेरने से जिस भांति तिलका तेल जुदा और खल जुदा होताहै इसीभांति उनजीवों के मांसखल होजातेहैं औ रुधिर तेलके माफिक न्याराहोजाता है और श्याम औ सबल दोकुत्ते ऐसे दुःखके देनेवाले हैं कि जो

उनके नेत्रों के आगे आया उसकी दुर्दशाकर नोच २ खाते हैं औरउनके दांतोंका स्पर्श होतेही मानों सर्प्प वृश्चिक के डसने सेभी अधिक पीड़ा प्राप्त होतीहै और बज्रके तुल्य कांटों करके युक्त शाल्मली नाम वृक्ष में यमदूत पापियों को धरि के खैंचते हैं उसी समय उनके अंग सब जुदे जुदे होजातेहैं और हेऋषीश्वरो यमपुरसे जब पापीको शीतपीड़ा देती है तो बरफके कुण्ड में पटकतेहैं औ गरमीके दुःखमें गरमजलके कुण्डमें लेकेछोड़ते हैं और दैवयोग से जो २ अंग पापियोंके काटे जाते सो २ अङ्ग क्षणमात्र में फिर ज्योंकेत्यों तयार होजाते हैं और हे ऋषीश्वरो वैतरणी नाम नदी जो है जिसमें सर्प चारोंदिशामें विनोद कररहे हैं और अग्नि के ज्वाला के तुल्य लहरी जिसमें उठि रहीहैं और शतयोजनतक तप्तबालुका जिसके दोनों किनारे हैं उसकेमध्य जब पापीको लेकर छोड़देतेहैं तो उसी समय देखते ही मूर्च्छित हो के गिरपड़ता है और पचाश योजन की चौड़ी क्षारोदा नामनदी इसीभांति पापियोंके दण्डदेनेको बर्त्तमान है जोपांचयोजन गहरीहै जिसमें कीचड़ औ दलदला इतनाहै कि जिसका कुछ प्रमाण नहीं और चर्म्म हाड़ सड़ीमांस इसीका कीचहैतिसमेंकोई डूबतेहैं औकोई क्लेशपायके तरतेहैं यदिकिसी भांति उसनदीसे पारहो किनारे गये तो वहां विषयुक्त वज्र के समान दंतवाले मूसा अनेक चारोंओर से लिपिटि के मांस औ चर्म्म खाकर हाड़मात्र छोड़ देतेहैं जब वायुलगी तो फिर मांस चर्म्म उत्पन्न होजाताहै इसीभांति कई कालतक नित्य रात्रि के मूषक खाते औ दिनके फिर ज्योंका त्यों सबअंग पूरा होजाता है और हे ऋषीश्वरो उस स्थान से तीन योजन दक्षिण सन्ध्या समयके आकाश तुल्य स्वरूप धारणकिये दशयोजन की छाया करके युक्त बटवृक्ष है जिसका नाम यमचुल्ही है औ तीन योजन गहरीहै जिसमें नित्य धूमसे अन्धकार बनारहता है औ अग्नि

से प्रज्वलित रहतीहै जिसमें यमकेदूत पापियोंके करोड़ों गण को ले २ छोड़देते हैं एकमास पर्य्यंत उसचुल्ही में चारों ओर घूमि २ निज कर्म्मके फलको भोग करता भस्म होता है जिसके भीतर जीवों के पकजानेसे बहि २ करके चरबी औ मेदसे शकुनिका नामनदी उत्पन्नभईहै उसचुल्ही के चारोंदिशा को घेरके भरपूर होरहीहै उसनदीसे जो किसीभांति पारभया तो सात गर्त्त अर्थात् कुण्ड ऐसे अगाध गहरे मल औ मूत्रसे पूर्ण हैं उन में लेजाय यमकिङ्कर पापियोंको पटकतेहैं निजकिये पापकेफल रूप क्लशको वहांपापी भोगते हैं और उन सात कुण्डों के आगे दश शूलकुण्डहैं जिसमें पड़तेही रोम २ शूलसे बिंधिजाता है फिर तेरह कुण्ड कुम्भीपाकके हैं जिसमें यमदूत बड़े निर्दयी पापी जीवोंको शूलमें छेदि २ सूखेकुण्डोंके अग्निकुण्डमें छोड़ि के भूनतेहैं एक २ कुण्ड में दश २ दिन अग्निसे बाहर निकलने नहींदेते इसीभांति तेरहों कुण्डमें भूनतेहैं जब उन अग्नि कुण्डों के क्लेश को भोगिके निवृत्तहुआ तो वहां से तीन योजन दक्षिण दिशामें यमनदीहै जिसमेंतपताभया लाखका रसभराहै औ एथिवी वहांकी ताम्रकीहै जिसके नीचे अग्नि जलि रही है उसमें यमदूत ले पापीको पटकते हैं वहां भस्म होनेपर बाहर निकाल देते हैं हेऋषीश्वरो जब कुछ बिश्रामलिया तबतो अति शीतल जल से पूर्णहरे गहरे बनके भीतर बापी में छोड़देते हैं वहां पापियों के लिये यमराजकी बहिन उत्तम २ भोजन औ मधुरजल देती है औ वहां तीनरात्रि निवास होता है तिसके अनन्तर एक पाषाण के सौयोजन ऊंचे गलग्रह नाम पर्वतमें लेकर यमदूत पापीको बैठायदेतेहैं वहां अग्निसे तपेहुये जलकी अखण्डधारा दिन रात्रि पापियोंके ऊपर पड़तीहै वहांभी यम की भगिनी दयायुक्तहो भक्ष्यभोज्य देतीहै वहां भी तीन रात्रि निवासकर यमदूत भृङ्गारक नाम बनमें लेजाते हैं वहां भ्रमर

नाम कीट मच्छर औ डंसे पापियों को लिपिटि चारोंओर से काटतेहैं और ऊपरसे मांस औ रुधिरकी वर्षा होतीहै उसक्लेशको भोगि आगे पापी को यमदूत माया बनमें लेजातेहैं वहां निज पुत्र स्त्री माता पिता आदि प्रिय कुटुम्बकेमध्यमें लोहके मुंगरेसे औ लोहके सोंटेसे भलीभांति कूटते औ पीटतेहैं हे ऋषीश्वरो यह कहतेहैं कि रे दुष्ट इन्हीं कुटुम्बोंकेलिये तैंने साराजन्म धर्म को छोड़ अनेक अधर्म्म किया अब ये सब तेरी दुर्दशा देखते हैं औ रक्षा क्यों नहीं करते इस भांति कहि कहि सब कुटुम्ब के देखतेही भलीभांति दण्ड देतेहैं उससमय जब पापियोंके ऊपर कोड़े लट्ठीमुंगरे मुष्टिप्रहार औविषधर सर्पोंसेदंशन आदि नानाविध क्लेश देतेहैं तो यह निजप्यारे कुटुम्बके लोगों को पुकार २ रोताहै औ मूर्च्छाको प्राप्त होताहै इसीभांति हे ऋषीश्वरो निज कियेहुये पाप कर्म्मके फलको क्रम २ से यमपुरमें परबश होकर भोगताहै और सब यातनाभोगि अन्तमें वृक्षयोनि में उत्पन्नहो बहुत कालरहि अन्तमें पशुयोनि में जन्म पावा है इस भांति हजारों बर्ष में सब भांति के उत्तम औ अधम पशुओं के योनि दुःख को भोगि अन्तमें प्रस्वेदकेजीव बस्त्रमें रहनेवाली योनि में बहुतकाल रहताहै फिर पक्षीयोनिमें जन्म पाताहै सबजाति के पक्षियोंकी योनिमें दुःखभोगि गौकी योनिमें जन्मले बहुत काल दुःख़ भोगताहै उसे भोगि मनुष्य योनिमें चांडाल के घर जन्म पाताहै उसे भोगि शूद्रहो क्रमसेवैश्य क्षत्रियहो अन्तमें ब्राह्मण कुलमें जन्म लेता है और हे ऋषीश्वरो ब्राह्मण होनेपर भी पूर्व कर्म्मके अनुसार कुष्टी काना बहरा लूला लंगड़ा सर्वमांस खानेवाला मद्यपीने वाला मुख दुर्गंध युक्त औ काले दांत काले औ फटे नखवाला मनुष्य होताहै सो हे ऋषीश्वरो जिसने पूर्वजन्म में राजबध ब्राह्मणबध गोबध मातृबध पितृबध आदि घोरपाप कियेहैं उन्हींके अङ्गोंमें कहेभये लक्षण जन्मलेतेही से दीखते हैं

और सारा जन्म अन्नके औ वस्त्रके दुःख से पूराहोता है नाना-रोग से शरीरसुख नहीं पाता और ऐसे अधर्मियों पर जो दया करते हैं वेभी उन्हींके पापों से थोड़े कालमें क्लेशित होजाते हैं इसलिये पापियों के सम्बन्ध से सदा अलग रहनाचाहिये॥

एकसौपंचानबेका अध्याय॥

सूतजी कहते हैं हे शौनक इसभांति यमपुरका वृत्तान्त कहि नाचिकेत कहनेलगे कि हे ऋषीश्वरो औरभी यमपुरका एक अद्भुत वृत्तान्त वर्णन करतेहैं सो श्रवणकरो कि जिससमय हम यमपुर में गये उसीसमय बहुते यमदूत पापियों के दण्डदेने से थकित हो ढीलेसे जाय चित्रगुप्त के समीप हाथजोड़ कहनेलगे कि हे भगवन् मृत्युलोकके पापियों को दण्ड देते २ हमकोबड़ा श्रम हुआ अब इसलिये और दूतोंको भेजना चाहिये औ हमको दूसरे कार्य्यके लिये आज्ञाहोय सोकरैं हेमहाराज जबतक हम सावधान न होयँ तबतक यह कार्य्य औरोंसे लीजिये यह दूतों का बचन सुनि बड़े क्रोधमें युक्तहो उसांसभर चारोंदिशामेंदेखने लगे उस समय थोड़ीदूर में क्रूरस्वरूप धारण किये एक पुरुष बैठा था उसकी तरफ ज्योंदेखात्योंहीं चित्रगुप्त के मनका अभिप्राय समझके बड़े क्रोध से हाथजोड़ निज गणों के साथ अस्त्र धारणकर उनदूतोंके मारनेमें प्रवृत्तभया उससमय हे ऋषीश्वरो यमदूतों के साथ उस मन्देहनाम राक्षसका घोरयुद्ध होनेलगा तबतो सब दूत इकट्ठेहोके हाथजोड़ चित्रगुप्त से प्रार्थना करने लगे कि हे महाराज जो थकेहों औ भूखेहों अथवा रोगसे पीड़ित हों उनकेलिये विचारवान् धर्म्मात्मा इसभांति क्रोधनहीं करते इस भांति दूत सब पुकार रहेथे कि मन्देहके गणोंने चारोंदिशा से दूतोंको घेरकर फेर मारना प्रारम्भकिया उससमय परस्पर निज निज अस्त्रोंके प्रहारसे मुक्कोंसे दांतोंसे औ नखोंसे नामको

पुकारि २ बड़ा युद्धकिया उससमय ईर्षाबश हो परस्पर क्रोध से एक एकको छिन्न भिन्नकरडाला तब तो हे ऋषीश्वरो यमदूतमन्देह नामक राक्षसोंके गणोंसे हारके निजमायासे अंधकार को रचिअंतर्द्धानहो ज्वरकीशरणमें जायप्राप्तभये और हाथजोड़ नमूहो यह कहनेलगे कि हे भगवन् चित्रगुप्तकी आज्ञासे मंदेह राक्षस हमारे सबको मार २ के क्लेश देरहेहैं सो इन्होंकेभयसे पीड़ितहो आपकी शरणमें आयेहैं आप शरणागतजानके हमारी रक्षाकरैं यह यमदूतों की दीनबाणी सुन दयायुक्त हो क्रोधकर बड़ेप्रबल औभयंकर निजगणों को आज्ञा दिया कि जायके मंदेह राक्षसोंको समझाय के यमदूतोंके साथ युद्धका विश्राम करायदो या उनको दण्डदो यह निजस्वामी ज्वरका वचन सुनि बड़ेवेग सेजाय राक्षसोंके गणको मारपीट समझाय युद्धसे निवृत्तकिया तब दोनों सावधान हो निज २ स्थान को गये औ ज्वर भी इस वृत्तांतको सुनि सावधानहो यम महाराज के समीपगया उस दशाको देख यमराज ज्वरसे पूंछनेलगे कि आपकेनेत्र क्यों ललोहे होरहे हैं औ मुखमें पसीने के विंदु आये हैं क्याकहीं संग्राम तो किसीसे नहीं भया और तुम्हारे साथ संग्राममें खड़े होनेकी किसको सामर्थ्य है क्योंकि तुमइकल्लेही चराचर लोक कोशिक्षा देसक्तेहो हेज्वर तुम्हारे सहायहोनेसे मृत्युकेसाथ सब लोकका प्रलयहम करतेहैं इसलिये निजवृत्तान्तको कहिसुनावो इस भांति यमराजका बचनसुनि आदिहीसे ज्वरने सबवृत्तान्त कहि सुनाया उसे सुन यमराजने कहा कि जोभया सो ठीक है अब यहांसे जाय युद्धका बिश्रामकरो जो राक्षसोंके समूह साठ कोटि संग्राममें मारेगयेहैं वेसब अजर औ अमरहो निजस्थान को जायँ इतनाकहि दूतों को बुलाय चित्रगुप्त के साथ मिलाय परस्पर मैत्री करायदिया तबतो यमदूत पहलेके माफिक हाथ जोड़ चित्रगुप्तसे कहनेलगे किहम आपके आज्ञाकारीहैं जोआज्ञा

दोगे सो सब वैसही होगा यहकहि दूत वहां से आय यमराज औ मृत्युको प्रार्थना कर निज अपराधोंकी क्षमाकरानेलगे॥

एकसौछानबेका अध्याय॥

नाचिकेत कहते हैं हे ऋषीश्वरो और भी एक वृत्तांत अद्भुत वर्णन करते हैं सो सावधानहो श्रवणकरो जिससमय यमदूतोंने यमराज औ मृत्युकी प्रार्थना किया उसीसमय यमराजकीआज्ञासे चित्रगुप्तने दूतोंको बुलायके आज्ञादिया कि जिनपापियों को आज तक अनेक भांतिके दण्डदिये गयेहैं उनके कर्म्मों का विचार करके अब फिर इसभांति दण्डदो कि जो जिसदण्डका अधिकारी हो जो श्यामदंत है आचारभ्रष्ट पापात्मा निर्दयी घृणाहीन भक्ष्याभक्ष्य करनेवाले कुत्ताके बधकरनेवाले पिता का बध माताकाबध औ गोबध करनेवाले पापियोंको घोरशाल्मली नाम वृक्षके कांटों में धर खैंच अंग २ को विदारण कर तपे भये तेलके कड़ाहमें पकाय फिर सहतके कड़ाहमें पकावो वहां से निकाल जलते पानीके कुण्डमें पटको फिर तपे तामके खल में छोड़के भलीभांति पीसो खलसे निकालके अग्निकुण्डमेंछोड़ो हे दूतो इसभांति इन पापियोंकोदण्डदे शुद्धकर मनुष्यकी योनि में डार ऋणसे पीड़ितकर सन्तानहीनकरो और हेदूतो जिन्हों ने किसीकी शय्या औ वस्त्रका हरणकिया है औ अग्निसेघरोंको जलाया है उनको शीघ्र वैतरणी में छोड़दो औ जिन्होंने तीर्थों की निंदा वा अनादर कियाहै उनको औ जिन्होंने झूंठी साक्षी किसी बातकी दीहै जो मिथ्या दोष लगाय के चुगुली करते हैं अथवा किसी बार्तामें झूंठी कहके सांचे मनुष्योंका कार्य बिगाड़ा है उन्होंके कानोंमें औ नेत्रोंमें जलता हुआ लोहका कील इस भांति ठोंको जिससे दोनों कर्ण औ नेत्र किसी प्रयोजन के लायक न रहैं औ जन्मांतरमें अंधे औ बधिरकरो और जो ग्राम

के पुरोहित हैं पाखंडी हैं बिनाज्ञान पितृदेव यज्ञकरातेहैं उन्हें दृढ़ बंधनसे बांध भूखे औ प्यासेसदा रहने दो औ जन्मांतर में दरिद्रीकर शूद्रोंके सेवक बनावो हेदूतो जिसने मिथ्या साखी कहीहो उस दुष्टकी जिह्वा बड़ी शीघ्रतासे काटलो औ अगले जन्ममें गूंगा करदो जिससे बहुत काल बोलनेका सुख न पावे और हे दूतो जिसने गम्य अगम्य स्त्री का बिचार नहीं किया कामवश हो मैथुनकिया है उनके लिंगको काटके खारीके कुंडमें छोड़के फिर अग्नि में छोड़िदो और जिसने लोभवश हो निज हिस्सेदारोंको मारके सबका भाग ले लियाहै उन्होंके अंगों को तिल २ काटके कुत्तोंको खिलादो और जिसने सुवर्णकी चोरी कियाहै औ कृतघ्नहै उनको ब्रह्मघातियोंके बराबर दण्ड दो उन के मांसको औ चर्म्मको निकाल हड्डीको तोड़ खारी में मिलाय अग्निके कुंडमें छोड़दो औ उनदुष्टोंको निन्दकों को व्याघ्र सिंह आदि जीवोंकेलिये भोजनकोदो और जिन्होंने ऋणलेकर दिया नहींउनके रोमरोम में बड़ेतीक्ष्ण लोहके कांटेठोंकदो औ अग्नि में पचाय खारीजलके कुंडमें लेपटको औजिसनेपशुओंका पालन करके जल औ चारा नहींदिया उस पापीको और जिसने दान नहीं दिया व्रतनहीं किया सदावेदको बेंच २ धनइकट्ठा कियाहै और जिसने जलपीनेके समय किसी जीवको विघ्न किया है व अन्नहरण भोजन समय में कियाहै इन्होंको भलीभांति लोहके मुसलसे कूटिकूटि क्षार कुंडमें छोड़ो फिर कोड़ोंसे मार २ उनके चर्म्मको निकालकर लोहके जलते कड़ाह में पटको भोजनके लिये अन्न औ जलनहीं देना और जिसने विश्वास देकर किसी को माराहोय उन्हें शीघ्र अग्निके कुंडमें छोड़ो और ब्राह्मणका अंश जिसने हरणकियाहोय उसको भी अग्निमें छोड़िके पकावो और कईहज़ार बर्षअग्नि के बाहर न होनेपावे यदिवहां शुद्ध होजाय तो कीट औ पक्षीकी योनिमें छोड़दो उसयोनि भोगकरने

के अनन्तर हज़ारों बर्षके बाद चाण्डाल औ॰बधिकके कुल में जन्मदो और हेदूतो जिन्होंने राजाका बधकियाहो ब्राह्मण बध कियाहो सुवर्णकी चोरीकियाहो मद्यपान कियाहो उन पापियों को दण्डसे शुद्धकर क्षयरोगसेयुक्तकरो और गोबध करनेवालेको कूटशाल्मली नरकमें लेजाय दण्डदो फिर पूतिके कुंडमें क्लेशको दो यदि चतुर्थांश हत्याका प्रायश्चित्त भोगनारहै तब मृगयोनि में जन्मदो जिसमें जहां रहे वहां कभी सावधान नहो और जो पिताका बधकरने वालाहै उसे शतबर्ष पर्य्यंत हमारे बड़े २ कुत्ते नोच २ कर खायँ फिरतेलके कड़ाहमें धीरे २ पकावो इस भांति पवित्र कर मनुष्य गर्भ में जन्म पाय औ गर्भही में बारम्बार मृत्यु को प्राप्तहो इसभांति दशबार गर्भ में मरिके फिर जन्मले उदररोग औ क्षयरोग दोनों से पीड़ित मनुष्य आयुर्बल भोगे और हे दूतो जिसने मित्रों से विश्वासघात कियाहो उसे लोहके कोल्हू में छोड़के तिलके माफिक पेरो फिर दोसौ वर्ष अग्निके मध्यमें राखो फिरकुत्तेकी योनिमें जन्मदो उसजन्ममें भी रोगसे कभी सावधान न होय और हेदूतो जिसने ब्राह्मण का धन हर लियाहोय व लोन की चोरीकियाहोय उसे पांचसौ बर्ष पर्य्यंत विष्टा का कृमिकरदो फिर उसे बाजनामक मांसखाने वाला पक्षी बनावो फिर जंगलीहिंस्र जानवर जिसे भेड़िया कहते हैं सो बनावो और जिसने किसी के घर को अग्नि से भस्मकिया होय उसे अग्निको प्रज्वलित करके उसमें छोड़दो उससे पवित्र होनेपर जंगलमें मृगा बनादो फिर मनुष्ययोनिमें ठगजाति कर अनेक जीवोंके मारने में युक्तकरो और जिसने किसीका धनहर लियाहो उसे कुंभीपाक नरकमें गिरावो उसके अंतमें गर्दभ की योनिमें जन्मदो फिर बिष्ठाखाने वाला ग्रामशूकर बनावो इस भांति दशजन्मतक अनेकभांतिकी दुर्दशाको भोगकर मनुष्ययोनि में चौरवृत्तिसे औ ठग डांकुओं की वृत्तिसे क्लेश भोगता उत्तम

मनुष्योंमें निंदाको प्राप्तहोय और हेदूतो जो पूर्वजन्ममें ठगवृत्ति से मनुष्योंको निर्जनस्थानमें बिषदेकर वा फांसीदेकर मारडालें उनका अग्निकुंडमें ले नीचेशिर ऊपर पैरकर लटकायके अग्नि ज्वाला में भस्मकरो इस भांति सौबर्ष तक क्लेशदेकर अंत में शूकर योनिमें जन्मदे सातजन्म उसीयोनिमें क्लेशदे मनुष्ययोनि जन्मदो जो झूंठी साक्षीदेनेसे मनुष्यों में निंदितहो अनादरहोने के दोषसे रात्रिदिन संतापपावे जिससे कहीं बैठनेकी जगह न मिले जिधरजाय वहांहीं धिक्कार से माराजाय औ जो मिथ्या बोलनेवाले औ क्षेत्रहरनेवाले पापीहैं इनको एकलक्षबर्ष जलते तेलके कड़ाहमें रख अंतमें पक्षीकी योनिमें जन्मदो जिसमें शत बर्ष पक्षीयोनिका क्लेशभोगि अंतमें भिक्षावृत्तिवाले मनुष्यकेघरमें जन्मदो जो यावज्जीव अन्न औ बस्त्रके दुःखमें व्यतीतहोय इस भांति मनुष्ययोनिमें जन्मले२ कभीपंगुला कभीअंधा कभीबहिरा कभीमूक कभीकाणा औ कभी क्षयरोगयुक्तहो बारंबार क्लेशको पावे हजारों जन्मतक सुखका लेशभी न प्राप्तहोय भूमिकाहरने वाला और हेदूतो भूमिहरनेवाले मनुष्यको प्रथम तो एककोटि बर्ष यमयातनाके भोगमें रक्खो जिस२ भांति जितने दंडदेने के स्थानहैं उनमें बारंबार दंडदो फिरबिलारकी योनिमें जन्म ले मनुष्यकी योनिमें जन्मपाय पक्षियों का मारनेवाला बधिकहोय बारंबार बधिकयोनिसे निवृत्त न होनेदो और बधिकोंको नरकमें लेजाय तीक्ष्ण तुंडनाम गृध्रोंसे उनकीदेहको विदीर्ण करावो फिर कुक्कुटके घरजन्मदो तिसके अनंतर मशकका जन्मपावे फिरडसे का जन्मदो इसभांति हजारों जन्म भोगकरनेके अनंतर मनुष्य जन्म पावे और हेदू तो जिसने शूकरका बध वा महिषका बध कियाहोय उसे नरकमें लेजाय बड़ेतीक्ष्ण शृङ्गवाले महिषों से प्रण हरणकर महिष का जन्मदो उसके भोग करने के अनंतर शूकरका जन्मपावे तिसके बादि कुक्कुटका जन्म फिर शशा का

जन्म भोगि जंबुक का जन्मपाय अनेक जीवों का मांस भक्षण कर मनुष्यों में व्याध के घर जन्मपावे हे दूतो जिन्होंने निज उच्छिष्ट अर्थात् जूंठा अपने बड़े श्रेष्ठ को दिया है उसपापी को तीनसौ वर्षतक अग्निके मध्यमें रक्खो पाछे शूद्रके घरमें जन्म पावे जिसमें साराजन्म जूंठा खाते खाते व्यतीत होय और जो स्त्री उत्तम कुलकी निजधर्म्मको औ निज पतिको त्यागि और पुरुषको जाय प्राप्त होतीहै उस दुष्टा व्यभिचारिणीको तपे भये लोहके सातपुरुषोंसे भोगकरावो जिससे उसके अधर्म्म करने का फल उसे मालूमहाय इस भांति सातों जलते भये लोहके पुरुष दिन रात्रि उसस्त्रीके साथ बारबार मैथुनकरें जिससे उसकी देह भस्महोय इसीभांति एकहजार बर्ष बीतनेपर कुतियाका जन्म पावे जिसके पतियों का ठिकाना न रहै बाद दशजन्म शूकरी का पावे अन्तमें मनुष्यजन्मपायभाग्यहीन वेश्याहो बारम्बार क्लेशको भोगै और हे दूतो जिसने अनेक सेवकोंको वृद्धहानेपर भोजन औ वस्त्र देनेके कारण त्यागिदियाहै उसे रौरव नाम घोरनरक मेंलेजाय सबभांति क्लेशको दो इसभांति एकहजार बर्ष उसदुष्ट को क्लेशदे चोरकर्म्म वाले मनुष्यके घरमें जन्मदो उसेभोग सर्प योनिमें जन्मपावै उसेभोगि नपुंसकका जन्मपाय अन्तमें शूकर हो मेढ़ाकाजन्म भोगि फिर हाथीका घोड़ेका कुतेका गिद्दड़का शूकरका औ बगुलेका इसभांति हजारों बर्ष इनजीवों का जन्म दुःखभोगि मनुष्य गर्भमेंजा पांचबार गर्भहीमें मृतकहो फिरपांच बार जन्मले पांचवर्षकी अवस्थामें मृत्युको प्राप्तहो फिर तीनबार युवावस्थामें अपमृत्युको प्राप्तहो यशहीन लोकमेंनिन्दित होय॥

एकसौसत्तानबेका अध्याय॥

नाचिकेत कहते हैं हे ऋषीश्वरो और पापियों के लिये जो चित्रगुप्तने आज्ञादीहै सोभी श्रवण करो चित्रगुप्त कहते हैं कि

हेदूतो जोमनुष्य शील औ नियम करके हीनहैं सम्पूर्ण जन्ममें पापही कर्म्म कियाहै औ पापियोंकेसङ्गमें निजआयुर्बल व्यतीत कियाहै और राजद्रोही गुरुद्रोही इन अधर्म्मियों को और जो विश्वास किसीका नहीं करते सबसे शङ्काही करतेहैं औ जीवों की हिंसामें प्रसन्न रहतेहैं और खेतीका अनर्थकरतेहैं और किसी जीव के अण्डकोष को दूरकर नपुंसक बनाते हैं और घरों को अग्निसे जलानेवाले और पाखण्डी इन अधर्म्मियोंको असंख्य वर्ष घोरनरकमेंले नानाभांतिके क्लेशकोदो जब निज पापकेफल को भोगिलेवे तो मनुष्यके जन्ममें अनेकभांतिके रोगोंसे पीड़ित करो जिससे अल्पायुष होके शीघ्र मृत्युवशहोवे किसीकी मृत्यु गर्भही मेंहो और किसी की जन्मलेने बादि किसी की रोग से किसीकी अस्त्रसे किसीकी बिषसे किसीकी जलसे औ किसीकी व्याघ्र सिंह आदि से मृत्युहो और जन्मलेने से माता पिता और मित्रआदि किसीकासुख न प्राप्तहोय इन पापियोंको और जिसने बिषदेकर जीवोंका प्राण हरणकियाहै नगरोंको अग्नि देकर भस्म किया है गर्भपातन किया है और शूली देनेवाला चुगुल औ मिथ्या दोष देनेवाले गौ हाथी गधा ऊंट औ महिष इन आदि जीवोंके मांस चर्म्म बेचनेवाले पापियोंको नरकमें ले पूरा दण्डदो जिससे फिर इसभांति का पाप न करें जब नरक भोगिलवें तो मनुष्य जन्ममें लूले लंगड़े अंगभंग दरिद्रीहो बारम्बार दुःखको प्राप्तहों यदि सब अंगभी होयँ तोभी निज पाप के उदयहोने से राजकोपसे नासिकाछेद कर्णछेद औ हाथ पग छेदन होनेसे अङ्गभङ्गहोकर जीवे और यावज्जीव उनपापियों को क्लेशही में बीते बारम्बार मानसी दुःख शरीरका दुःखकभी न दूरहोय ऐसेपापी नेत्रहीन कर्णहीन हस्तहीन पगहीन औ शिरकी पीड़ा उदरपीड़ा नखपीड़ा नेत्रपीड़ा आदि घोरक्लेश में सदा युक्तरहैं कोई कुबड़े लँगड़े जलोदर रोग करके पीड़ित

कुष्ट श्वेतकुष्ट कामी क्रोधी नपुंसक प्रमेही पिलहीवाले नानाभांति के रोगोंसेपीड़ित सदारक्खो जिन्होंने बचनसे चारभांतिकेपाप कियेहैं प्रथम हास्यमें मिथ्या दूसरा चित्तमेंमिथ्या तीसरा गुप्त मिथ्या औ चौथा प्रकटमिथ्या भाषण करनेवाले मनुष्योंके चित्त को पीड़ाके देनेवाले स्नेहियों के स्नेह भंगकराने वाले मर्मभेदी बचन कहनेवाले और जिन्होंको किसीके गुण की प्रशंसा सुनने में दुःख होताहोय इन दुष्टोंको लेजाय सूचीमुख नरक में छोंड़ो वहां बहुतकाल दंडदे शुद्धकर पक्षियोंकी जातिमें जन्म दो यदि सब पक्षियोंकी जातिमें जन्मले क्लेश भोगिलेवें तो जंगली मनुष्य के घरमें जन्मदो जिसजन्म पानेसे योग्य अयोग्य का ज्ञान न रहै और लोकमें आदरभी न पावें और हेदूतो जो पहले जन्म में सबमनुष्यों के साथ बैरकिया है उनक्लेश देनेवालों को और राजाके नौकर होकर जोजबरदस्ती निजलोभके लियेजीवों को निरपराध दंडदेते हैं गरीबों को अनेक भांति के दुःख देकर उनके पशु औधन लेलेतेहैं और जो चांदीमें सुवर्ण में दूसरीधातु मिलाय कर खोंटाकरदेते हैं और किसीका धनरखके हरलेतेहैं इनपापियों को घोरनरकमें लेजाय नानाभांतिके क्लेशसे पीड़ित कर पापक्षीणहोने से मनुष्य जन्म में गर्भ से लेकर जन्मभर क्लेशहीमें रक्खो और हाथ पगसे हीन नेत्र से हीन बातरोग करके पीड़ित करो और स्त्रीकासुख किसीसमय न प्राप्तहोय यदि स्त्रीभी प्राप्तहोय तौ कलह करनेवाली महादुष्टा तत्रापि संततिही न सदा राखो और हेदूतो राजदूतो को तो सबभांति के दण्ड से पीड़ित कर गुणहीन बहुकुटुम्बवाले घरमें जन्म दो जहां सबके बीचनिरादर सबकुटुंबका उच्छिष्ट भोजन प्राप्तहोय औ जिसराजसेवकने गरीबोंको पीड़ा निरपराध दियाहोय उन को पशुओंके पालक बनादो जिसमें साराजन्म पशुओंके साथ व्यतीतहोवे और जिसने पूर्व जन्ममें और किसीकी स्त्रीकोघरमें

रखलिया होय और वर्णसंकर सृष्टि के करनेवाले कुलधर्म्म के नष्टकरनेवाले और शील संतोष पवित्रता आदिगुणों करके युक्त मनुष्योंका धर्म्म जोजबरदस्ती अधर्म्मका उपदेश करके छोड़ाय देते हैं इन पापियों को बहुतकाल नरक में उग्रदण्डदो फिर मनुष्यों में चांडाल योनिमें जन्मदे अनेक भांतिके दुःख करके युक्तकरो और हेदूतो जिन पुरुषोंने किसी जाति की स्त्रियों के मैथुन करने में विवेक नहीं किया हो सदावेश्याही के संगमें अवस्था व्यतीत किया हो जिसने मद्यबनाने वाले की स्त्रीका भोगकिया हो अथवा स्त्रियों के कमाये धनसे शरीरका पालन कियाहो रात्रिदिन स्त्रीके बिना दूसरे पदार्थ में जिसकाचित्त न लगाहोय उनपापियों को नरक में लेजाय घोर दण्डसे शुद्धकर कृमिभक्ष नाम नरक में छोंड़दो फिर अग्निके कुंडमें बारम्बार भस्मकर क्षारनदी में डुबायदो इस भांति हमारी आज्ञानुसार सब पापियोंको बराबर दण्डदो॥

एकसौअट्ठानबेका अध्याय॥

नाचिकेत कहते हैं हे ऋषीश्वरो उसी समय चित्रगुप्त की आज्ञा औरभी हमने श्रवणकिया है सो सावधानहो श्रवणकरो चित्रगुप्त पापियों को देखि २ के एक एकसे यह कहतेहैं कि इसपापीको क्यों लायेहो इसका पापनिवृत्त नहीं भया लेजाय दण्डदो क्योंरे अधर्मी जायपापका फलभोग अरे तू लज्जित सा नीचे क्यों देखता है अभी बहुतकाल नरक भोगना पड़ैगा औ इसको जहांसे लेआयेहो वहां हीं को लेजाव और इस पापीको थोड़ादण्ड क्यों देतेहो बड़े दण्ड देने लायक है हे दुष्ट तू क्या कहताहै कि हमारा इसस्त्रीके साथ बिवाह भयाहै अब उसझूंठे कहनेका फलभोग और क्योंरे अधर्म्मी तू मनुष्यों में ऊर्ध्वरेता ब्रह्मचारी कह २ के पतिव्रता स्त्रियों का धर्म्मलियाहै सो नरक

बासकर और हे अधर्म्मी तपस्वीका रूपधार स्त्रियोंको शिष्य कर कन्याशब्द कह २ उनके रक्षाकरनेवालों को छल २ स्त्रियों का गुप्त में धर्म्म नष्टकिया अब उसका फल कुम्भीपाक का भोगकरना पड़ैगा और क्योंरेपापी क्या कहता है कि यहस्त्री पतिव्रताहै इसे मैं निजभगिनीके तुल्य जानताहूं क्यातू कहता है कि मैं बालकहूं अभीतक संसार सुखका मुझे ज्ञाननहीं है अरेनीच क्या कहता है कि हम जलशयन करते हैं तपस्वी हैं फलाहार करतेहैं व ऊर्ध्वबाहुहैं हमको अधर्म्म न लगावो इस भांति कहि २ लोकमें स्त्रियोंका धर्म्म नष्टकियाहै अरे शीघ्र तू सर्प्पके योनिमें जा अरेपापी तू व्याघ्र हो जन्मले अरेपापी तू बिच्छूहो तू जलमें ग्राहजन्मले तू कृमिहो अरे तू रोगीहो तेरे अतीसार होय तू भोजनके अन्तमें छर्दिरोग युक्त हो तुझे कर्ण से किसीका शब्द न सुनपड़े तू दुष्टहै जा नामरोगसे मृत्यु को प्राप्तहो दुष्टतू सदा ज्वररोगसे पीड़ाको प्राप्तहो अरे तू जलमें मकरहो तेरे सबअंग बातरोगसे युक्तहों तू जन्मले सदा पागल होकर व्यतीतकर औ तेरेको सदा मृगीरोग पीड़ादेवे तू पैरों से पंगुलारह तेरे जलोदरनाम रोगहोय और यहपापी पेटभर अन्नकभी न पावे जिसमें सदा भूखेमरै हेपापियो जाय नरक में निज २ किये कर्म्मका फलभोगो इसभांति चित्रगुप्त एक २ पापीको देखि देखि धर्म्मराज की आज्ञाको सुनाय २ नरक के लेजानेकी आज्ञादेतेहैं और किसीको एकदिन किसीको दो दिन किसीको मास किसीको बर्ष और किसीको युग औ किसीको कल्पभर नरकभोगने दो इसभांति निज २ पाप के अनुसार दण्डदो कमज्यादा किसीको नहो और इन पापियोंके दण्डदेने में आलस्य व दया किसीके लिये नकरना हे दूतो इन्होंकी दीन बाणीको नहीं सुनना और ब्राह्मणोंके समीप ऋषियों के समीप औ पतिव्रतास्त्रीके समीप नहीं जाना इनको यातनाघर में लाने

को हमारी आज्ञा नहीं है हे ऋषीश्वरो इस भांति चित्रगुप्तकी आज्ञा दूतोंके लिये श्रवणकर फिर जब चलनेका विचारकिया उससमय जो२ निजदूतोंसे चित्रगुप्तजीने कहासो श्रवणकरो॥

एकसौनिन्नानबेका अध्याय॥

नाचिकेतऋषि कहते हैं हे ऋषीश्वरो फिर चित्रगुप्त कहने लगे कि हे दूतो इनपापियों में इसको भयदो औ इसको स्वर्ग में लेजावो इसेकीट बनायदो इसे रीछबनावो इसे छोड़दो इस को हाथीबनायदो इसे परमगतिको प्राप्तकरो इसे इसके पिता पितामह आदिके समीप भेजिदो और यहजो क्लेशसे रोदनकर रहाहै इसेनरकमें लेजायपटको और इसपापीके अंगोंको करोत नामक अस्त्रसे दोटुकड़ेकर रौरवमेंछोड़ो जिससे यह घोरजीवों के भोजनमें प्राप्तहोय और इनपापियोंने पाप भोगिलिया इन को बहुत शीघ्र छोड़दो और येजो आगेखड़े हैं इन्हों ने धर्म्मको विपत्तिमें औ संपत्तिमें भलीभांति रक्षाकियाहै इसलिये नरकके योग्यनहींहै इनकोशीघ्र स्वर्गको लेजाव और इसजीवको धन संपन्न उत्तमकुलमें लेजाय जन्मदो जहां किसीभांतिका क्लेश न मिलै और इसने संग्राममें शत्रुओं के सन्मुख शरीरत्याग किया है ब्राह्मण औगौकी रक्षाकेलिये इसलिये इसे इंद्रकेसमीप अमरावतीपुरीको शीघ्रलेजावो वहां विमानमें बैठि सबभांतिके सुख को भोगकर्त्ता अप्सराओं करके सेवाको प्राप्त एककल्प निवास कर एथिवीमें जन्मले अखण्डराज्यभोगि दानधर्म युक्तहो अंतमें विष्णु भगवान्के स्मरण करनेसे मुक्तहो परमधामकोजाय और हेदूतो इसने इतना पुण्यकियाहै कि जिसका कुछ ठिकानानहीं इसलियेबहुतशीघ्रइसे अनेक भांतिके सुगंध पदार्थोंसे औभूषणों से भूषितकर चामर औ छत्रसे पूजित बड़े सत्कारपूर्वक तुरही औनकारे बजाते उत्तम विमान में बैठाय इसे इन्द्र के ऊपरले

स्थापितकरो जिसमें इसे अनन्तसुख प्राप्तहोय औइसके आगमनको हेदूतो इन्द्र देखरहाहै इसके पुण्यसे तीनोंलोक प्रकाशित होरहाहै इसलिये यहांका रहना ठीकनहींहै बहुतशीघ्र स्वर्गमें पहुंचावो जाय स्वर्गमें तबतक निवास करै जबतक इसके पुण्य कालश मनुष्यलोकमें रहै अंतमें मनुष्यलोक में सार्वभौम महाराजके घर उत्तम स्वरूप औगुण करकेयुक्त उत्पन्न हो आरोग्य सबका प्यारा बहुतकाल राज्यकर औ अनेकयज्ञकर स्वर्गवास को प्राप्तहोय चित्रगुप्त कहतेहैं हेदूतो इसने पुण्यभूमिमें रत्न का दान कियाहै इसलिये विमान में बैठाय दिव्यरूप धारण कराय अश्विनीकुमार के समीप लेजाव और इस पुण्यात्मा ने बहुत यज्ञकियाहै और बड़ीभक्तिसे ब्राह्मणोंको दानदियाहै औ फल कुछ नहींचाहा इसलिये इसे विष्णुलोकमें शीघ्र पहुंचावो और इसमहात्माने बड़ी दूधवाली गौवें बछरावोंके साथ स्वर्णशृङ्गी रौप्यखुरी सुवर्णमाला औ वस्त्रसे भूषित उत्तम तपस्वी वेदविद ब्राह्मणों को अनेक बार दियाहै इसपुण्य से शीघ्र इसे उत्तमविमानमें बैठाय रुद्रलोकमें लेजाव वहां कोटिकल्प निवास कर अंतमें ऋषियों के कुलमें जन्महो औ विधिपूर्व्वक तपकर शिवलोक को प्राप्तहोय जिसमें फिरि मनुष्यलोक में जन्म न होय और हेदूतो इस धर्म्मात्मा को पितृलोक में लेजाव वहां बहुतकाल सुखपूर्व्वक निजपितरोंके समीप निवासकरे औ इस महात्माने पृथिवीका दान उत्तम ब्राह्मण को दिया इसपुण्य से इसे ब्रह्मलोकमें लेजाव ॥

छोसौका अध्याय ॥

नाचिकेतजी कहतेहैं हे ऋषीश्वरो और भी जो चित्रगुप्तजी के मुखसे सुनाहै सोभी सावधान हो श्रवण करो हे दूतो इस पुण्यात्माने यावज्जीव अभ्यागतों का सेवन कियाहै औ दयायुक्त

हो सबको एकभांतिका अन्नबड़ी प्रीतिसे भोजन करायाहै आप सबको भोजन करायके अंतमें सदा भोजन कियाहै इसे बहुत शीघ्रछोड़ो हम सहितकाल औमृत्युके इसकी पूजाकिया चाहतेहैं इसवास्ते उत्तम सुवर्णका सिंहासन ल्यावो औ गंधर्वोंको आज्ञादो कि इसके उत्तम यशका गानकरें और इसलोकमें जो कुछ उत्तम पदार्थहोय और इच्छाकरे सो सब हाजिरकरो और जितना धन औ रत्नचाहै सो सबदो औ जबतक स्वर्गसे विमान आवे तबतक हमारे समीप बराबर आसनपर सुखपूर्व्वक बैठै इसकेसमीप पापी न आनेपावे और इसकेपुण्यसे जितने इसके पितरहैं उत्तम औ अधमगतिको प्राप्त उनको और जिसपापी को यहचाहै उसे निजसाथले स्वर्गकोजाय औ स्वर्गमें जितने काल पृथिवी औ समुद्ररहै उतनेदिन देवतोंके साथ स्वर्गवास करै अंतमें मनुष्यलोकमें आय उत्तम कुलमें जन्मले सबभांति के सुखको प्राप्तहो धर्म्मनिष्ठलोकमें प्रतिष्ठाको प्राप्तहोय और हेदूतो जिसने उपानत् अर्थात् जूता छतुरी औ जलपात्र दिया होय उसको आदरपूर्वक हमारी सभामें लेआवो औ चारिमहापद्मनामकनिधिका स्वामीकरदो बहुतकाल इसप्रतिष्ठाको भोगि अंतमें अत्यंत धनिक के कुलमें सुन्दर रूप करके युक्त जन्मले उत्तम मनोहरण करनेवाली स्त्री के सुखको और भांति २ के रसोंका भोग करता आरोग्य यावज्जीव सुखपूर्वक दानपुण्य करता मृत्युलोकमें आनन्दकर अंतमें स्वर्गकोजाय अखंडसुख भोगै और हेदूतो इस धर्म्मात्माके समीप गोरससे भरे हजार घटलावो इच्छापूर्वक जिसेचाहै उसेदेवे औ आप भी खायकर पीछे उत्तमलोकमें जाय वहां उत्तम स्त्रियोंकरके सेवाको प्राप्त देवरूप धारणकर बहुतकाल गोलोकमें निवासकरै यहकहकर चित्रगुप्त कहनेलगे कि हे दूतो लोकमें गोरसके बराबर उत्तम औ पवित्र दूसरा पदार्थ नहीं है जिसके दहीसे तौ सब देवता

तृप्तहोतेहैं औ दुग्धसे शिवजी तृप्त होतेहैं घीसे अग्नितृप्त होते हैं खीरसे ब्रह्माजी तृप्तहोते हैं और एकत्रकर पंचगव्य बनायकर पानकरनेसे सबपापोंसेछुट अश्वमेधके फलको जिसके पान करनेवाला मनुष्य प्राप्त होताहै इसलिये विचार करनेसे लोकमें सब पदार्थोंसे उत्तम औ पवित्र गौकेतुल्य दूसरा पदार्थ नहींहै कि जिसके दांतोंमें देवताओं के गणका निवासहै जिह्वा में सरस्वतीका निवास खुरकेमध्य गंधर्बोंकानिवास खुरकेअग्र-भागमें सर्प्पोंकानिवास नसोंमें साध्यनामक देवगणकानिवास नेत्रोंमें चन्द्रमा औ सूर्य्यकानिवास ककुत्में अर्थात् कंधाकीपिंडी में नक्षत्रोंका निवास पुच्छमें धर्म्मकानिवास गुदामें तीर्थों का निवास मूत्र में गंगा का निवास रोमों में नानाद्वीप करके युक्त पृथिवी का निवास चारोंस्तनों में चारोंसमुद्रका निवास रोमके छिद्रों में ऋषियोंका निवास औ गोमय में साक्षात् लक्ष्मीका निवास चर्म्ममें विद्याकानिवास और धैर्य्यधृति शांतिपुष्टि वृद्धि स्मृति मेधा लज्जाकीर्त्ति विद्या क्षांति मति सन्नति औ परमा-शक्तिआदि गण गौके समीप चलते फिरते उठते बैठते सदा समीप रहतेहैं औ जितने देवताओंके गणहैं सोसब गौके आगे पीछे औ अंगों २ में आठोयाम निवासकरतेहैं इसलिये जहां गौ रहतीहै वहांहीं धर्म्मके साथ लक्ष्मी निवास करतीहै हे दूतो विचार करनेसे गौवोंकेतुल्य दूसरा पदार्थ नहींहै जितने तीनों लोकमें उत्तम औ पवित्र पदार्थहैं उनसबोंका इकट्ठा होकर गौ की मूर्त्ति जानना चाहिये इसभांति हे ऋषीश्वरो चित्रगुप्त के मुखकी धर्म्मयुक्त बाणीसुन औसारे यमपुरका चरित्रदेखि फिर यमराज के समीप आयपहुंचे॥

दोसौएकका अध्याय॥

नाचिकेतऋषि कहतेहैं कि हे ऋषीश्वरो और भी यमपुरका

एकवृत्तांत वर्णन करतेहैं जो कलहके प्यारे नारदजीसे चित्रभानु ने वर्णन किया है जिसभांति राजा जनकजी दिव्यभोग को प्राप्तभये सो सब आदिसे वर्णनकरतेहैं सावधानहो श्रवण करो हे ऋषीश्वरो जिस समय मैं हम सब यमपुरमें घूमि फिर यमराजके समीप जाय पहुंचे उसी समय नारदमुनि भी आय कर प्राप्तभये उनको देख यमराज बड़े हर्षमें युक्तहो उठिके स्वागतशब्द का उच्चारणकर औ पाद्यअर्घसे पूजि उत्तम सुवर्ण के आसनपर बैठार हाथजोरि विनयपूर्व्वक यह कहनेलगे किहे ऋषीश्वर आज हमारे अहोभाग्यहैं कि जो साक्षात् तपोमूर्त्ति ब्रह्माजीकेपुत्रका दर्शनभया हेमुनीश्वर आप सर्वज्ञ औ सर्वदर्शी हैं सब धर्म्मके जाननेवाले गंधर्वविद्या के आचार्य्य औ त्रिकालज्ञहैं इसलिये आपके दर्शन से मैं पवित्र भया औ आपके चरणरजसे यहपुरी पवित्र औ धन्यभई हे मुनीश्वर अब कृपा करके जिस प्रयोजन के लिये जिस बिचार से आपने इसभूमि कोकृतार्थ कियाहै सो सबनिस्संदेह कथनकरें कि जिसके करने से हम लोक सेवक कृतार्थहो जन्मलेने का फलपावें आपकी आज्ञासे मुझ सेवकको तीनोंलोक में कोई पदार्थ दुर्ल्लभ नहींहै जो न होसकै इसभांति हे ऋषीश्वरो धर्म्मराज की बाणीसुनि नारदजी कहनेलगे कि हे धर्म्मराज आप इस संसार की रक्षा करनेवाले औ दंडके दाताहैं सबके प्रभुहैं इसलिये इसप्रकार का बचन कहना उचितहीहै तथापि यह संशय आप हमारा दूरकरें कि जीवकौनसे कर्म्मकरनेसे अमरहोताहै कौनसादान धर्म्म तप अथवा व्रतआदि किस सत्कर्म्मकरनेसे निर्भयहो इस लोकमें अखंड लक्ष्मी का सुखभोगि उत्तम कीर्त्ति करके भूषित उत्तमगतिको प्राप्तहोताहै और किसकर्म्म के करनेसे पापियों के समूह करके सेवित नरक का भय दूरहोताहै सो कृपाकरके आप वर्णन करें यह नारदजी का प्रश्णसुनि बड़े हर्षसे युक्तहो

यमराज कहनेलगे कि हे मुनीश्वर आप सर्वज्ञहो कौनसा पदार्थ है जो आपनहीं जानते तथापि महात्माओं की आज्ञा को पालन करना सब धर्म्मकामूलहै इसलिये सब प्रश्ण यथायोग्य वर्णन करतेहैं सो सावधानहो श्रवण कीजिये हे नारदजी नित्य जो अग्निहोत्र करतेहैं वे कन्यादान करनेवाले भूमिके दाता रणमें सन्मुख प्राणत्याग करनेवाले शूरबीर दानी वेदपाठी पतिव्रता स्त्रीसत्यबचनके कथनवाले स्वामीसे जो छलनहींकरते जो जीवों की हिंसा नहींकरते ब्रह्मचारी ब्राह्मणके सेवक निज बिवाहिता स्त्रीगामी परस्त्रीत्यागी सबजीवोंपर दयाकरनेवाले ज्ञानवान् औ संसारसे उदासीन हे ऋषीश्वर हाय२ शब्दकरके पूरित घोर नरकमें ये सबनहींआते और अन्नदानदेनेवाले मातापिताके सेवक और तिल स्वर्ण गो पृथिवी छत्र जूता जलपात्र औ अभय जो क्लेशित जीवोंको देते हैं हे नारदजी वे हमारेलोकको नहीं आते और जो चातुर्म्मास्य नामक व्रत करते हैं अग्नि होत्र करते हैं गुरुकी आज्ञा पालन करते हैं मौन रहते हैं ब्राह्मणों को विद्या पढ़ाते हैं और किसीका अनर्थ नहीं बिचारते येसब हे नारदजी हमारेलोकमें नहींआते और जो मनुष्य पर्वमें स्त्री संगनहीं करते वेभी हमारे लोकको नहींआते नाचिकेतकहतेहैं हेऋषीश्वरो इस भांति यमराज के बचन को सुनि नारदजी फिर पूंछनेलगे कि हेधर्म्मराज कौन से दानकरने से स्वर्ग प्राप्त होताहै सो आप बर्णनकरें और किसदान वा शुभकर्मकरनेसे उत्तमकुलमें जन्म सुंदर मनोहररूप औ धनधान्य करके सबभांतिका सुखप्राप्त होताहै सो आप हमसे बर्णनकरें यह नारदजीका वचन सुनि यमराज कहनेलगे कि हेनारदजी जो प्रश्नतुमने पूंछाहै सो बिस्तार पूर्वक कहनेसे तो बहुतकालमेंभी नहीं कहसकते इसलिये कुछ संक्षेपसे बर्णन करतेहैं सो सावधानहो श्रवण करो हेनारदजी तपकरनेसे भोग यश औ आयुर्बल प्राप्तहोताहै और

तपकरने से ज्ञान आरोग्य उत्तमस्वरूप सुखसंपत्ति औ स्वर्ग आदि जो२ वांछाहो सो २ सबपदार्थ प्राप्तहोताहै मौनसे आज्ञा सिद्धहोतीहै ब्रह्मचर्य्य करने से मनुष्य दीर्घ आयुर्बल पाता है और जीवहिंसा त्यागनेसे उत्तमरूप प्राप्तहोताहै दीक्षासे उत्तम कुलमें जन्म होताहै हेनारदजी जो फल मूल खायकर तपकरते हैं वे राजा होतेहैं पत्तेभोजन करने से स्वर्गबास होता है दुग्ध पानकरके तपकरनेसे भी स्वर्ग होताहै गुरुसेवा औ पितरों की श्राद्ध करनेसे संतान सुख होताहै और उत्तमकालमें दीक्षालेने से गौकी वृद्धिहोतीहै औ जो तृणकी शय्यापर नित्यशयनकरते त्रिकाल स्नान करते फलसे वा जलमात्र से शरीरका निर्बाह करते वे जिसलोक जाने की इच्छा करते वहांको प्राप्त होते हैं और रसोंके त्याग करनेसे अर्थात् लोन खटाई मीठा कटुक आदि जिह्वाके स्वाद देनेवाले रसों के त्याग करने से सौभाग्यवृद्धि होतीहै और हेनारदजी मांसके त्याग करने से संतानकी आयु-र्बल बढ़तीहै औ चंदन पुष्प आदि सुगंध पदार्थोंके त्याग करने से धनवान् होता है और अन्नदान देने से जन्मान्तर में बुद्धि-मान होताहै और हेनारदजी छतुरी देनेसे उत्तम औ मनोहर पुष्टघर प्राप्तहोताहै जूता देनेसे वाहन वस्त्रभूषण देनेसे सुन्दर स्वरूप औ धनपुत्र करके भांति२ का सुख प्राप्त होताहै और हे नारदजी पानीके देनेसे मनुष्य जन्मांतरमें सदा तृप्त औप्रसन्न रहताहै औ मधुर अन्नके दानसे इच्छाभोग युक्त होताहै और हे नारदजी जो मनुष्य सुगंध पुष्पवाले वृक्षका वा उत्तम सुगंध-युक्त मधुर फलवाले वृक्षोंका दान देताहै वो जन्मान्तर में स्त्री पुत्र आदि सब कुटुंबके साथ सब सुखकरके सहित मनुष्यों का प्रिय होताहै और वस्त्रदेनेसे वस्त्र अन्नदेनेसे अन्न रसके दानसे रस सुगंधके दानसे सुगंध गृहके दानदेनेसे गृह गोदान देनेसे सबभांतिके रस शय्यादान देनेसे शय्या आदि सब पदार्थ जन्म

लेतेही बेपरिश्रम प्राप्त होते हैं हाथी घोड़ा रथबैल भैंस आदि जो पदार्थ ब्राह्मणके लिये देवे सो सबउसे दूसरे जन्ममें आकस्मात् प्राप्त होता है और हेऋषीश्वरो घृतदान देने से तेजस्वी सुकुमार पुरुष होताहै तैलदानसे शरीरचिकना होताहै दीपदान करनेसे प्रकाशमान सहत दानदेनेसे सबरसों करके युक्त होता है और ब्राह्मणोंको खीरभोजन देनेसे जन्मांतर में मनुष्य पुष्ट शरीर होताहै और फलदान करनेसे पुत्रवान् होताहै पुष्पदान से सौभाग्यवृद्धि होतीहै औरथदान करनेसे बिमान प्राप्तहोता है पिंजसदान से भी विमान मिलता है औ हे ऋषीश्वर अभय दान करनेसे सब संसारके मनोरथ सिद्ध होतेहैं ॥

दोसौदोका अध्याय ॥

नाचिकेत कहतेहैं हेऋषीश्वरो इसीसमय नारदके देखतेही आकाशमें बिमानोंपर बिराजमान सब भूषणोंकरके भूषितअनेक पुण्यजीव निजकिये उत्तम कर्म्म के फलको भोग करते निज २ स्त्रियोंके साथ चलेजाते देख यमराज चुपहो उदासीनहो क्रोधयुक्त होगये इसभांति यमराजका स्वरूप देखि नारदजी कहने लगे कि हेधर्म्मराज इससमय में आप उदासीन क्यों होगये और किसलिये क्रोधयुक्तहो ऊंचे श्वास लेरहेहो किसकी ईर्ष्या से अथवा भयसे युक्त होगये सो सत्य२ कथनकरो इसभांति नारदजीके बचनको सुनि निज हृदयके वृत्तांतको कहनेलगे कि हेऋषीश्वर जिसलिये हम उदासीन होरहेहैं सो वृत्तांतश्रवण करो जो जायाबर औ उंछवृत्तिके ब्राह्मणहैं और जोविद्याके अभ्यास में रात्रिदिन युक्त रहते हैं किसी की निन्दा नहीं करते अतिथिकी सेवा करते हैं और इन्द्रियजितहैं येसब हेनारद जी अभिमानसे भरे उत्तम२ चंदनआदि सुगंध पदार्थों करके युक्त औ मनोहर भूषण बस्त्रसे भूषित निज२ स्त्रियोंके साथ बिमान

में बैठे हमारे शिरपर चले जातेहैं और हमारा भयऔ मृत्यु का भय दोनों उनको कुछनहीं कर सकता इतना कहि नारदजी से फिर मृत्यु की तरफ देखयमराज कहनेलगे कि हे मृत्योतुम क्यों चुपके होरहेहो किसने तुम्हारा पराक्रम छीनिलिया और हम यही जानतेहैं कि केवल धर्म्महीन पापी जीवोंके लिये तुम्हारा पुरुषार्थहै और तपके बलकरके जो सिद्ध होरहेहैं उन्होंका तुम कुछ नहीं करसक्ते और तौ क्या करना परन्तु हमारे शिरके ऊपर निज २ बिमानों में बैठे चले जाते हैं इनके रोंकनेको भी सामर्थ्य तुमको नहींहै इसलिये हमबहुत क्लेशित होरहेहैं नाचिकेत कहतेहैं हेऋषीश्वरो इसभांति यमराज मृत्यु से कहरहे थे कि बड़ी धूमधामसे बिमानमें बैठी पतिव्रतास्त्री निजपतिके अंक में कि जिसके आगे तुरही औ नक्कारे बाजते हैं सो यमराजकी इस उदासीन दशाको देख बिमानके ऊपरसे कहनेलगी कि हे महाराज धर्म्मराज आप सबधर्म्म के जानने वाले महात्मा हौ इसभांति ईर्ष्या तपस्वियों में औ ब्राह्मणों में न करना चाहिये हे बीर इनतपस्वियोंका बल माहात्म्य और प्रताप अचिंत्यहै इस लिये ईर्ष्या त्यागि इन्होंकी प्रीति पूर्वक पूजा करो ये ब्राह्मण वेदके पार गामीहैं औ इन्होंने संसारके सुखको तुच्छ समझिके सबको त्यागि बड़ा तप किया है इसलिये विवेकी होके आपको इनकी सत्कार पूर्बक पूजा करनी चाहिये क्योंकि तुम शुभ औ अशुभ कर्म्मके ज्ञाताहो आकाशमार्गमें ये सब चले जातेहैं इन के साथ क्रोध वा ईर्ष्या करना अनुचितहैयह धर्म्मराजसे कहिके पतिव्रता जब वहांसे आगे को चलने लगी तबतौ बड़े हर्ष से ईर्ष्या त्यागि भक्ति पूर्बक उसका पूजनकर नमस्कार किया नाचिकेत कहतेहैं हेऋषीश्वरो इसवृत्तांतको देख नारदजी यमराजसे पूंछनेलगे कि हेराजन् यह कौनहै जिसका तुमने पूजन किया औ तुमको उपदेश करके चलीगई इसके जाननेको हमारा

चित्त बहुत चाहताहै इसलिये सब वृत्तांत आप बर्णन करैं इस बचनका सुनि यमराज कहनेलगे कि हेनारदजी जिसलिये हम ने इसका पूजन कियाहै सो सबवृत्तांत सावधानहो श्रवणकरो पहलेसतयुगमें बड़ेतेजस्वी सत्यप्रतिज्ञा वाले राजा निमिनामक हुये तिनकेपुत्र मिथिनामक उत्पन्न भये जिसका दूसरानाम लोकमें प्रसिद्ध जनकभी हुआ तिस राजाजनकके रूपशील औ गुण करके युक्त रूपवतीनाम रानीथी सो रानी पतिकी भक्ति करनेवाली पतिव्रता सदा पतिकी आज्ञा में रहती औ राजा मिथिभी उस रूपवती रानीके साथ सबप्रजाको पुत्रके तुल्य पालनकरता धर्म्मसे बहुतकाल पृथिवीमें राज्य करतारहा कि जिसके राज्यमें प्रजाको किसीभांतिकी शरीरमें अथवा मन में कुछ पीड़ानहीं होती औ अकालमें किसी की मृत्यु वा रोग कुछ नहींहोता इसभांति बहुतदिन बीतने से किसीसमय राजामिथि की राज्यमें वर्षा नहोनेसे जलकेबिना पृथिवी पीड़ित होगई उस प्रजाकी पीड़ाको देख रानी रूपवती बड़ी दुःखितहो हाथ जोड़ राजासे बड़ी मीठी बाणीसे कहने लगी कि हेमहाराज आपकी राज्यमें सब प्रजा सुखी होरहीहै आपके धर्म्म सहित पालन करने से रोग शोक भय पीड़ा अग्नि चोर आदि दंड किसीको नहींहै अवर्षा न होनेसे आप दयाकरके सब प्रजाओं के लिये जो कुछ घरमें अन्न औ धनथा सो तो देदिया अब आपके लिये भोजनमात्र का भी ठिकाना नहीं है और तो कौनकहै कि इतना धनहीन होरहीहूं कि शाकमात्रभी नहीं मँगाय सक्ती और घर में वस्त्र भूषण औ गौ भैंस आदि कुछ नहींहैं कि जिसे बिक्रयकर के निर्बाह करूं इस बिषयमें जो कुछ आप मेरे लायकआज्ञादेवें सो करूं इसभांति निज रानीकी बिनय बाणी सुनि राजाजनक कहने लगा कि हे प्रिये इससमय चित्तको दुःखी न करो इस तुम्हारी दीनवाणीको सुन हमकोक्लेश होताहै इसलिये अबयह

उपाय बिचारमें आताहै कि कुदाल से खेत करना चाहिये यदि इस बिषय में तुम्हारी सम्मति होय कि जिस के करने से यह दुर्भिक्षकी पीड़ा दूरहोय औ सुखसे अन्न मिले यह सुनि रानी बोली कि हे महाराज आपकी आज्ञामें हजारों सेवक हैं उनको क्योंनहीं आज्ञाहोती जो सबकाम करलें यह सुनि राजा बोला कि हेप्रिये हैतौ सबकुछ तथापि इस दुर्भिक्षके क्लेशसे सब पीड़ित होरहे हैं अब किसीको कुछ कहना उचित नहीं है सब क्षुधा से ब्याकुलहैं अब यह बिचार करना चाहिये कि थोड़ा लोहाहोय तो उसका कुदाल बनवावें और खेत करनेकी भूमि देखना चाहिये जहां अन्नबोजने से बहुत उत्पन्नहोय इसभांति राजा मिथि की बाणी सुनतेही रानी अत्यंत प्रसन्नहो खेत लायक भूमि राजा के साथ खोजनेलगी खोजते२ कोईभूमि खेतके योग्य कंटकोंसे पूर्णदेख राजाबोला कि हे प्रिये यह भूमि क्षेत्रके योग्य है इस-लिये यहां हम कुदालसे कांटोंकोकाट औ उनके जड़ोंकोखोदके बीज बीजने लायक बनातेहैं इतना कह राजा तो क्षेत्र को शुद्ध करनेलगा तब तो रानीबोली कि हे महाराज आप तो परिश्रम निज हाथोंसे करतेहो परन्तु हम परिश्रमके बिनाहीं तृषाकरके पीड़ित होरहीहैं औ समीप कहींजल दीखता नहीं यदिहमारी तृषा दूरकरनेको यहांजल नहींहै तोखेतमेंअन्न किसभांति उत्पन्न होगा इसभांति शोच बिचार करतेही हे नारदजी मध्याह्न का समयहोनेसे सूर्य्य भगवान्का तेज अतिप्रचण्डभया कि जिसके होनेसे निहायत पिपासासेपीड़ित रानी बिकलहो पानी २ पुका-रती राजाकी तरफ देखती मूर्च्छितहो गिरपड़ी तबतो उसे देख राजा असमर्थ कुछ न करस का यमराज़ कहते हैं हे ऋषीश्वर नारदजी उससमय रानी रूपवतीने क्रोधयुक्त बिकलहो ज्योंहीं सूर्य्यकी तरफ दृष्टिकिया त्योंही आकाशको छोड़ि सूर्य्यभगवान् पृथ्वीमें गिरपड़े तबतो हे नारदजी सूर्य्य भगवान् को पृथ्वी में

देख राजामिथि हाथजोड़के कहनेलगा कि हे भगवन् आपनिज मण्डल को त्यागकर यहां क्यों आयेहो औ सबसंसारकाप्रकाश करनेवालातेज आपका क्याभया इसभांति राजाके प्रश्नकोसुनि सूर्य्य भगवान् कहनेलगे कि हे राजन् इस तुम्हारीरानी पतिव्रताकी क्रोधदृष्टिसे हम शक्तिहीन होके पृथ्वीमें पतित भयेहैं हे राजा इस रूपवती रानीकी बराबर तीनोंलोकमें दूसरीस्त्री नहीं है कि जिसके क्रोध करनेसे हमभी शक्तिहीन होगये हे राजन् इस रानी ने सदा तुम्हारी सेवा करने से औ तुम्हारी इच्छा के अनुसार हित करनेसे सब जीति लिया हे राजन् तुम धन्य हौ जिसके ऐसी पतिव्रता स्त्रीहै अब जिसउद्यममें आप लगरहेहो सोकरो बहुतशीघ्र सफलहोगा इतनाकहिसूर्य्यभगवान्ने निज तेजसे जलपूर्णपात्र औ छतुरी औ पैरोंकी रक्षाकेलिये जूता इन सबपदार्थोंको उत्पन्नकर बड़ीप्रीतिसे राजा को दे यहबोलेकि हे राजन्यहजल रानीकोदो जिससे यहसावधान होय औछत्रकी छायाकरनेसे हमारेतेजकी बाधा न होय औजूता पगोंमेंपहिन लेनेसे कण्टकआदि कठोर पदार्थोंसे पीड़ा न होय यहसूर्य्य की वाणी सुनि राजा ने जलसे ज्यों छांटे दिये उसी समय जलके स्पर्श होतेही सावधानहो मूर्च्छा त्यागि रानी बोली कि हे महाराज यहठण्ढा औ मीठा जलकेसाथ छतुरी औ जूताकिसने दियाहै यहआप वर्णनकरें इसभांति हे नारदजी यह रानी रूपवतीका वचनसुनि राजामिथि कहनेलगा कि हे प्रिये येजो तुम्हारे समीप खड़ेहैं सूर्य्यभगवान् सो तुमको क्लेशितदेखि दया करके आकाशसे आय यहसब पदार्थ तुम्हारे सुखकेवास्ते दिया है इसभांति निजपतिराजा जनकके मुखकीबाणी सुनिबोली कि हे महाराज इससमय सूर्य्य भगवान्की प्रीतिकेलिये क्याकरना उचितहै सो आपइनके मनका वृत्तांतजानिके हमसे कथनकरैं इसभांति निजरानी रूपवतीके मनकावृत्तांत जानि राजा मिथि

हाथजोड़नमूहो सूर्य्य भगवानसे निजरानी की प्रार्थना निवेदन किया उसे सुनि सूर्य्यनारायण यहबोले कि आजसे स्त्रियोंके लिये हम अभयनाम बरदेतेहैं कि जोस्त्रीइसभांति पतिव्रताहोगी उसकीरक्षा हमसदा करेंगे यहसूर्य्यका बचनसुनि राजामिथिने प्रसन्नहो सबवृत्तांतरानी रूपवतीसे निबेदन किया उसेसुनि प्रसन्नहोरानी यहबोली कि हेमहाराज जो मनुष्य पृथ्वीमें जल-पात्र छतुरी औजूताका दानकरें वे यमपुरको नदेखें उनको आप अभयदेवें यहरानीकी प्रार्थनासुनि तथास्तु कहि सूर्य्यभगवान् तो निजमंडलको चलेगये औ रानीनिजपतिकी सेवामें प्रवृत्तभई यमराज कहतेहैं कि हेनारदजी यहवृत्तांत पतिव्रतास्त्रीका हम स्मरणकरके सदापूजन औनमस्कार करतेहैं॥

दोसौतीनका अध्याय॥

नारदजी कहतेहैं कि हेधर्म्मराज किसतप करनेसे स्त्रियोंको उत्तमगति प्राप्तहोतीहै केवल पतिव्रताही धर्म्महै कि और भी सो आपबर्णनकरैं इसभांति नारदजीकाबचनसुनि यमराज कहने लगे कि हेनारदजी जो तुमने पूंछाहै उसमें कुछनियम तपआदि नहींहै और न उपबासब्रत आदिकुछहै इसव्यवस्थामें जो कुछ धर्म्म है सो आप श्रवणकरें जो स्त्रीपतिके शयनकरने के अनंतर निद्राकरतीहै औ पतिके प्रथम निद्राको त्यागिके उठखड़ी होतीहै औ पतिको भोजन करायकर आप भोजनकरतीहै और पतिके मौनहोने से मौन रहतीहै बैठनेसे बैठतीहै खड़े होनेसे खड़ीहोतीहै निजपतिकी तरफ मन औ बुद्धिकोदिये आठोपहर उसके नेत्रोंको देखाकरतीहै कि कौनसी आज्ञादेतेहैं इसभांति पतिकी आज्ञाकी प्रत्याशामें रात्रिदिन लगीरहतीहै औ पतिके क्रोध करनेको डराकरतीहै यदि उसे पति दंडभीदे औ दुर्वचन आदि गालीभीदेवे तथापि उत्तर नहींदेती औ सब बड़ेहर्षसे

सहकर आज्ञा पालन करतीहै और हे नारदजी जो स्त्री पतिके बिना दूसरे किसी देवताको नहींजानती जिसके चित्तसे केवल निजपतिहीका निवास औ चिन्तनहै औ रात्रिदिन पतिकेहित को चाहती सुखमें अथवा दुःखमें कभी कम ज्यादा नहीं रहती एकभांति आज्ञामें रहतीहै औ निजचित्त में यह बिचार करती की यह मेरापति सबकुछहै इसकेसमान दूसरा संसारमें माता पिता भाई कुटुम्ब ईश्वर औ मनुष्य कोई नहींहै जो कुछ मेरा सर्वस्वहै सो पतिहीहै इसकी कृपासे सबभांति हमारा कल्याण होगा इसकेबिना और कोईमेरीगति नहींहै यहबिचारि सबकी तरफसे चित्तको खैंचि हाथजोड़नम्रहो जोस्त्री निजपतिका ध्यान करती औ पतिके शोचमें काल व्यतीतकरती संसारमें सुखदेने के पदार्थ नृत्य गान भूषण वस्त्र शृङ्गार गंध पुष्पमाला औ छवों रसके नानापदार्थ भोजन आदि सबोंकी तरफसे चित्तको खैंचि जो निजपतिही के चिन्तन में लगीरहती है हेनारद जो स्त्री सोते जागते उठते बैठते स्नान भोजनआदि सब संसारके व्यवहारोंको करते केवल पतिहीकी चिंता स्मरण करतीहै उसका नाम पतिव्रताहै उसस्त्रीको हम सदाडरतेहैं औ हाथजोड़ नम्र हो उसे प्रणाम करतेहैं वह स्त्री हमारे पुरको कभी नहींआती औ उसे मृत्युकाभय भी नहींहोता वह स्त्री सनातन ब्रह्मपदको अर्थात् मोक्षको प्राप्तहोतीहै औ उसने सबको जीतिलिया उसे किसी का भयनहीं और हे नारदजी जो स्त्री सूर्य्य उदयहोनेसे प्रथम उठके घरको झाड़के सफा करदेतीहै मलिन नहींरखती उसस्त्रीके घरकोलक्ष्मी कभीनहीं त्यागकरती इसभांति हेनारद जी पतिव्रता स्त्रीका गुप्तलक्षण हमने वर्णनकिया कि जिसके श्रवण करनेसे सबपातक दूरहोतेहैं औ उत्तमगति होतीहै॥



दोसौचारका अध्याय॥

नाचिकेतजी कहते हैं कि हे ऋषीश्वरो इसभांति नारदजी यमराज के मुखसे पतिव्रता स्त्रीका माहात्म्य सुनि हर्षमेंयुक्तहो कहनेलगे कि हे राजन् आपने बड़ी उत्तम कथा वर्णन किया कि जिससे निर्म्मल स्त्री की प्रशंसा सूर्य्य भगवान् के मुखसे वर्णित हुईहै अब आप यह वर्णनकरैं कि जो मनुष्य शरीरको क्लेश देकर अनेक भांतिका तप करते हैं औ मनसेभली भांति पाप औ पुण्य को जानते हैं पाप करनेकी स्वप्नमें भी इच्छा नहीं रखते वेद औ धर्म्मशास्त्रकोभलीरीतिसेजानते हैं हे राजन् ऐसे महात्माओंसे भी कोई न कोईपाप बनजाताहै कि जिसके हो जानेसे सब पुण्य एक तरफ रही पापका फल नरक भोगना पड़ता है औ लोकमेंमहामूर्ख कर्म्महीन पापात्मा अविवेकी ऐसे अधर्मों सेभी दैवगति ऐसी पुण्य बनजाती है कि जिसके होने से सब पापभयसे छुटि उत्तमगति को प्राप्त होते हैं इस संदेह में हे राजन् हमारा चित्त व्याकुल होरहाहै सो निज बचनसे हम को निस्संदेह कीजिये इस बचनकोसुनि यमराज कहनेलगे कि हे नारदजी हे तपोधन जिस संदेहको आप पूछते हो सो सावधान होकर श्रवणकरो हे मुने इसलोकमें हमारे बिचारसे कोई करनेवाला वा करानेवाला शुभ औ अशुभका नहीं है और जिसमें यह शुभ औ अशुभ कर्म्म टिकाहैजोइस कर्म्मको करता है औ जो कर्म्मका साक्षी है यह सब निर्णय पूर्वक जो हमने मुनियोंकी सभामें ब्रह्माजीके मुखारबिन्दसे सुनाहै सोबर्णनकरतेहैं हे नारदजी जो मनुष्य शुभ वा अशुभकर्म्म करताहै उसका फल वोही भोग करता है इसलिये क्लेश में डूबेभये निजआत्मा के उद्धार करनेको आपही समर्थ हैं और दूसरा कोईनहीं है कि जो आत्माका कल्याण करसकै इसलिये हे नारदजी आत्माका

शत्रु औ मित्र आत्माही है दूसरा नहींहै पूर्व कर्म्म के अनुसार सुख वा दुःख जो कुछ निश्चय होगया वोही भोगना पड़ता है चाहै सैकड़ों योनिमें जन्मलेवे परन्तु बिनाकिये कर्म्मके भोगसे छुट्टीनहींमिलती यह कथन जो प्रसिद्ध है कि जगत् मिथ्याभ्रम में भूलिके भ्रमि रहाहै सो केवल कथनमात्रही है इस में यथार्थ यह है कि निज २ कर्म्मके बश हुआ २ मनुष्यउसके फलकेभोग में ऊंची नीची योनि में प्राप्तहो नानाविधि क्लेश भोगते हैं उसी कर्म्मके अनुसार मनुष्यकी बुद्धि ऊंचे नीचे कर्म्मोंमें प्रवृत्त होती है शुभ कर्म्मसे सुख औ अशुभ कर्म्म से दुःख भोगता है यदि शुभकर्म्म किया तो पाप निवृत्त होनेकी बुद्धि उत्पन्न होती है इसी भांति अशुभ करने से सुख बिध्वंसकरनेवालीबुद्धि उत्पन्न होतीहै इसीसे अशुभ कर्म्मका अन्तफल नरक प्राप्तहोता औ शुभ कर्म्मका फल स्वर्ग्ग प्राप्तहोना दीखताहैनतो कोईकिसी को स्वर्ग्ग दे सकै औ न कोई किसी का स्वर्ग्गबास छीनसकै नाचिकेतजी कहते हैं हे ऋषीश्वरो इस भांति यमराजके मुखका बचन सुनि नारदजी फिर पूंछनेलगे कि हे यमराज जो आपने कहा सोतो ठीकहीहैपरन्तु शुभकर्म्म जो अशुभको दूर करसक्ता है तो अशुभके क्षय होनेसे यही बुद्धि उत्पन्न होना चाहिये कि जिस भांति तपआदि सत्कर्म्म करनेसेफिर अशुभगति न होय सो आप वर्णनकरैं नारदजीके इसप्रश्नको सुनि यमराज कहने लगे कि हे नारदजी यह वृत्तान्त अत्यन्त पवित्र पापके दूर करनेहारा शुभका देनेहारा हम बर्णन करते हैं पाप औ पुण्य के करनेहारे जीवोंको प्रणाम करके और जिसने इस सृष्टि को पहलेरचाहै जिसका आदिमध्य औअंतनहीं है और जिसको सुर असुर नहींजानते जोसबजीवोंके मध्य आत्माहोके विराजमानहै औसर्बत्र एकतुल्यहै जिसके जाननेसे मनुष्य वेदवेत्ता औज्ञानी कहातेहैं और जो चराचरको यथार्थ जानताहै जिसे ठीक२ कोई

नहींजानता जिसके जाननेसे भवसागरसे पारहो मनुष्य सनातन पदको प्राप्तहोता है उस परमात्माको प्रणामकर वहधर्म्म बर्णन करतेहैं कि जिसके ज्ञानहोनेसे मनुष्य सबभांतिके दुःखों से मुक्तहो उत्तमगतिको प्राप्तहोताहै हे नारद जो मनुष्य अपने देहकेसुख औ दुःखका अनुभवकर संसारमें विचरताहै सो पाप से मुक्त होजाताहै औ जोमनुष्य किसीकी हिंसानहींकरता क्रोध औ तृष्णाकात्याग करताहै उसे क्लेशनहींहोता औरजो सबकाल में सत्यभाषण करताहै उनको पापनहीं लगता और जो मनुष्य संसारके मनोहर पदार्थोंमें चित्तनहींदेता वहसदानिष्पापरहता है और हे नारद जो मनुष्य श्रद्धावान हैं पर द्रव्य में लोभनहीं करते औ किसीकी निन्दानहीं करते सो सबपापोंसे मुक्तहोतेहैं और जोमनुष्य निश्छलहो गुरूकीसेवा करतेहैं जीवकी हिंसा नहींकरते शीलवानहैं बिचारवानहैं बिवेकयुक्त हैं निंद्यकर्मों से डरते हैं जोशुद्धचित्त होकर तीर्थयात्रा करते हैंसदापापोंसे डरते रहते हैं औ प्रातःकाल उठि निजगुरू औ इष्टका स्मरण कर ब्राह्मण औ गौका दर्शन करते हैं वे पापों से लिप्त नहींहोते नाचिकेतजी कहते हैं हे ऋषीश्वरो इसभांति यमराजका बचन सुनि नारदजीकहनेलगे कि हेराजन् जोकुछ कृपाकरके जीवों के लिये कल्याणमार्ग आपने बर्णन किया सो श्रवण करने से हमारा अनेकभांतिका संशय दूरभया अबथोड़ीसीसंशयऔरहै सोभी सुनिके कृपापूर्वक निजवाक्यों के उपदेशसे दूरकीजिये अबआप सुगमरीतिसे यहकथनकरैं कि जिससे पापदूरहोय और जो आपने प्रथमयोगसाधन वर्णनकिया कि जिसके करने से पापदूरहों सोथोड़ीबुद्धिके मनुष्योंको दुस्साध्यहै इसलिये पापके दूरकरनेका कोईसुखउपायवर्णनकीजिये जिसमेंआत्मा काकल्याणहोय इसभांतिनारदजीका प्रश्नसुनि प्रसन्नहो धर्म्मराज कहनेलगे कि हेनारद जिसभांति धर्म्मकाउपदेश ब्रह्माजी

ने हमकोकिया है सोब्रह्माजीको प्रणामकरके हमबर्णन करतेहैं जिसके करनेसे लोककापातक दूरहोय औ कल्याण होय महात्माओंकी आज्ञाका कैवल्यनाम है क्योंकि जिसकेकरनेसे मुक्ति प्राप्त होतीहै हे नारदजी शास्त्र औवृद्धकी आज्ञाको श्रद्धा औ विश्वास करके माननेसे जीवोंके सबकार्य्य सिद्धहोतेहैं औ अंतमें मुक्तिहोतीहै जो मनुष्यशुद्धचित्त होकर शिशुमारचक्रको नित्य२ प्रणामकरताहै उसकेसबपाप निवृत्तहोतेहैं और शिशुमारचक्र के मध्य जोचन्द्रमाकादर्शन करताहै वो पुरुष महापातकांसे छूटि उत्तमगति को प्राप्तहोताहै इसीभांति शिशुमारचक्र में स्थित ललाटस्थानके नक्षत्रकंठस्थान के ग्रहनक्षत्र औ हृदय स्थानके ग्रह नक्षत्र तारागणोंका सावधानहो बिचारपूर्वक दर्शनकरनेसे मनुष्य पापमुक्त होताहै और जो शिशुमारचक्र के उदरमेंस्थित नक्षत्रोंका दर्शन करताहै वह मन बचनकृत पापसे मुक्तहोताहै जो मनुष्य सूर्यनारायण को शिशुमारचक्र के पुच्छमें वा कंठमें टिका ध्यानकर दर्शन करताहै वह सबपापोंस मुक्त होताहै हे नारदजी जो मनुष्य वृहस्पति चन्द्रमा औ शुक्रआदि ग्रहोंको ध्यानकर प्रदक्षिणाकरताहै वह सबपापोंसे मुक्तहोताहै जो साथ चन्द्रमाके नवोग्रह का ध्यान औ प्रदक्षिणा करता है वह शरद ऋतुके चन्द्रमाके तुल्य निर्म्मल होताहै और हेनारदजी चाहै कैसहू पापीहोय शतप्राणायाम करने से पापमुक्त होताहै और वामनपुरुषके दर्शनकरनेसे औ शूकरको जलसेबाहरनिकलनेके समय देखनेसे मनुष्य निष्पापहोताहै और नित्य २ प्राणायाम करनेसे सबपापोंसे छुटि उत्तमगतिको प्राप्तहोताहै ॥

दोसौपांचका अध्याय ॥

नाचिकेतजी कहतेहैं हेऋषीश्वरो इसभांति धर्म्मयुक्त लोकहित धर्म्मराजका बचनसुनि बहुत प्रसन्नहो नारदजी यहकहने

लगे कि हे महाराज आपने कृपाकरके ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इन तीनोंवर्ण के निष्पापहोने के लिये शिशुमारचक्र का दर्शन औ प्राणायाम वर्णनकिया अब चौथावर्ण शूद्र जोहै जिसेब्राह्मणों ने वेदविमुखकर रक्खाहै उसकेकल्याणकेलिये कोईउपाय आप कथनकरें कि जिसके करनेसे वो पापोंसे मुक्तहो उत्तमगतिको प्राप्तहोय इसभांति नारदजीका लोकहित बचनसुनि यमराज कहनेलगे कि हे नारदजी जो अत्यंतहित औ पवित्र पदार्थ औ जिसकेकरनेकाचारोंवर्णकोयोग्यहै सोबर्णनकरतेहैं जिससेशीघ्र पाप दूरिहोताहै हे नारदजी इस पृथिवी में सब पवित्रों का शिरोमणि औ देवताओंकी देवतागौहै जिसकी भक्तिपूर्वक सेवा करनेसे कैसहू पातकीहोय सो उत्तमगतिको प्राप्त होताहै औ जिसगौकी पंचगव्यपानकरनेसे मनुष्य पंचमहापातकों से छुटि जाताहै हे नारदजी जिसगौके पुच्छके जलमस्तक पड़नेसे पृथिवीके सब तीर्थोंकास्नान फलहोताहै जो मनुष्य रोहिणीनक्षत्र में गोपुच्छ जलसे स्नान करताहै सो सारेजन्म के पापोंसेमुक्त होताहै और जो मनुष्य गौकेस्तनसे निकलती दूधकीधाराको निजशिरमें धारण करताहै सो सब पापोंसे मुक्तहो उत्तमगति को प्राप्तहोताहै और प्रातःकालउठि भक्तिसे जो गऊकोप्रणाम करताहै सो पापोंसे छुटिजाताहै और गोदधि औ अक्षतको ले सूर्य्यभगवन्का उदयकालमें जो पूजाकरताहै उसके तीनिजन्म का पाप दूरहोताहै हे नारदजी तिस पूजा करनेवाले मनुष्य के ऊपर प्रसन्नहो सूर्य्यभगवान् पापकोदूरकर शुभफलको देतेहैं और जो मनुष्य यवका चावल औ गोदधि तामके पात्रमें रख पूर्णिमातिथिको ब्राह्मणको देताहै सो इसदानके प्रभावसे सब जन्मके पापोंसे मुक्तहोताहै हेनारदजीजोअरुंधती ध्रुव औ सप्त ऋषियोंका पूजनकर हाथजोड़ प्रणामकर यव तंदुल औ दधि का दान ब्राह्मणकोदेताहै उसी क्षण उसके सब पाप दूर होते हैं

और जो मनुष्य नित्य प्रातःकाल उठिके भक्तिपूर्वक हाथ जोड़ि ब्राह्मणको प्रणामकरते हैं वो उसीसमय निष्पाप होते हैं और जो मनुष्य विषुवत् नाम सक्रान्ति के दिन ब्राह्मण को गोदुग्ध देते हैं उनके सब जन्म का पाप उसी क्षण दूरहोता है और पूर्वदिशा में अग्रकर कुशाबिछाय उसके ऊपर उत्तम वृषभके दानकरनेसे सब पापदूरहोतेहैं औ पूर्वदिशाकी बहनेवाली नदी मेंजाय विधिपूर्व्वक जो अभिषेक करते हैं वे पापोंसे मुक्तहोतेहैं हे नारदजी दक्षिणावर्त्त शंखमें तीर्थजलकोलेकर निज शिरके ऊपर अघमर्षण मंत्रपढ़ धारालेनेसे मनुष्य सबपापोंसे मुक्तहोताहै और जोमनुष्य पश्चिमवाहिनी नदीमेंजाय नाभिमात्र जलमें खड़ेहो काले तिलोंकेसाथ सातअंजली जलदेते हैं वे पापोंसे मुक्तहोते हैं और तीन प्राणायाम करनेसे ब्रह्मचारी सारे जन्मके पापोंसे मुक्त होताहै औ व्यतीपातमेंजोमनुष्यकमलके पत्रसे जलले तीनिबार स्नान करताहै सो पापों से मुक्त होताहै अब हे नारदजी अति-गुप्त पदार्थ पाप दूरकरनेकेलिये वर्णन करतेहैं सो सावधान हो श्रवणकरो कार्त्तिकमासकी शुक्लएकादशी जिसकानाम प्रबोधिनी है वो साक्षात् विष्णुभगवान्की दूसरीमूर्त्तिहै भुक्तिमुक्ति दोनों पदार्थोंके देनेमें समर्थहै औ मनुष्यलोकमें जीवों के कल्याण के लिये जिसका अवतारहै उस एकादशीकेदिन जो मनुष्य विष्णु भक्तिकरके युक्त व्रतकरताहै उनमनुष्योंका अनेकजन्मका किया पाप दूरहोताहै हेनारदजी इसीएकादशी के लिये वाराहनारा-यणसे धरणीने प्रश्नकियाथा कि हे भगवन् इसघोर कलियुग में घोरकर्म्म के करनेवाले मनुष्य ब्राह्मणों के धन हरनेवाले ब्राह्मण की हिंसा में निरत क्रूर गुरुद्रोही देवद्रोही मित्रद्रोही स्वामीद्रोही परस्त्रीगामी परधन हरणमें चतुर अभक्ष्यके भक्षण करनेवाले वेद औ ब्राह्मण के निन्दक पाखण्डी मर्य्यादाहीन नास्तिक अयोग्यदान ग्रहणकरनेवाले औ अगम्यास्त्रीके गमन

करनेमें चतुर ऐसे मनुष्यों को हे भगवन् किसभांति उत्तमगति प्राप्तहोय औ इनकापाप कैसे दूरहोय यह कृपाकरके आपवर्णन करैं यह धरणीकी विनयवाणी सुनि वाराहभगवान् कहनेलगे कि हे धरणि लोक के हितकेलिय जो तुमने प्रष्ण कियाहै सो बहुत उत्तमहै अब इसप्रष्णका उत्तर अत्यंत गुप्तबात कहतेहैं सो सावधानहो श्रवणकरो हेधरणि जिन २ पापियोंका तुमने वर्णनकियाहै उनके उद्धारकेलिये हमने एकपदार्थ ऐसाबनाया है कि जिससे ये सब निष्पापहो उत्तमगतिको प्राप्तहों सो यह पदार्थहै कि जिसका नाम बोधिनी एकादशीहै जिसके व्रतमात्र करनेसे मनुष्य पाप औ पुण्य दोनोंसेमुक्तहो परमपदको प्राप्त होताहै इसके बिना कोई दूसरा उपाय पाप दूरकरने का औ मुक्तहोनेका नहींहै हेधरणि शुक्लपक्ष की एकादशी भक्तिकी देने हारीहै औ कृष्णा मुक्तिदाताहै इसलिये मासकी दोनोंएकादशी व्रतकरना चाहिये हेधरणि यदि विष्णुके लोकको मनुष्य जाने की इच्छा करता होय औ मन बचन कर्म्म से कियाहुआ पाप दूर कियाचाहै तौ एकादशी का व्रतकरै इसलिये सर्वथा एकादशीतिथि में भोजन न करना चाहिये हेधरणि दोनोंहाथ ऊंचे कर बड़े ऊंचेस्वर से पुकारतेहैं कि यदि हे मनुष्यो निज किये पापोंसे बच बैकुंठबास किया चाहतेहो तो हरिवासर में भोजन नहींकरना और शंखसे जलनहीं पानकरना मत्स्य औ शूकर का वधनहींकरना औ दोनों एकादशी को अन्नत्याग करना चाहिये हे धरणि जो मनुष्य दोनों एकादशी को अन्ननहीं त्याग करते उनको ब्राह्मण वध करनेवाले के तुल्य मद्यपानकरने के तुल्य सुवर्ण की चोरी करने के तुल्य गुरुस्त्री के गमन करने के तुल्य पातकहोताहै हेधरणि जिसने एकादशीको अन्नभोजनकिया उस पापीने इससे अधिक क्या पाप करनेको छोड़ा अर्थात् सब पाप करचुका और जो एकादशी व्रतकरने में असमर्थहै सो दिनभर

बृतकरके रात्रिका भोजनकरै औ कुछ यथा सामर्थ्य ब्राह्मणको दानदेवे और जिसने दान औ बृत दोनों नहींकिया सो तीन कालमेंभी उत्तमगतिको नहींप्राप्तहोता और हेधरणि जो मनुष्य सब महीनेकी एकादशी बृतकरनेमें असमर्थहो सो प्रबोधिनीका बृतकर बड़ीभक्तिसे विधिपूर्वक विष्णुका पूजन करनेसे अनंत फलको प्राप्तहोताहै और यदिभाग्यबश प्रबोधिनीको पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रहोय वा उत्तराभाद्रपद होय तौ अत्यंत दुर्लभहै इस योग में केशवभगवान् की पूजाकरने से साधारण एकादशी से कोटिगुण अधिक पुण्यहोताहै और हेधरणि जिसभांति प्रबोधिनी अनंत फलको देतीहै उसीभांति हरिशयनी एकादशी भी पुण्यकी देनेवाली है इन दोनों का एकतुल्य प्रभाव है शयनी आषाढ़मासकी बोधिनी कार्त्तिकमासकी औ इसीभांतिपरिवर्त्तनी भाद्रमास की इनतीनों एकादशियों का जो बृतकर विष्णुपूजन करतेहैं वो मनुष्य सबपापोंसे मुक्तहो निर्म्मलहोकर उत्तमगति को जातेहैं इसलिये अवश्य इनतीनोंका व्रत करनाचाहिये यदि कोई उत्तमगति के जाने की वांछाकरै हे धरणि यदि भाग्यबश चंद्रवार औ उत्तराभाद्रपद नक्षत्र कार्त्तिक की शुक्ल एकादशी को होय वा भौमवार होय तौ इसविधान से व्रत औ विष्णु पूजन करनाचाहिये कि व्रतके दिन प्रातःकाल स्नानकर वेदी बनाय जलपूर्ण कुंभ स्थापित कर पंचरत्न औ पंचपल्लव से पूर्णकर तिसके ऊपर घृतपूर्णपात्रधर चारमासेसुवर्ण का मत्स्य बनवाय घीके मध्यरख प्राण प्रतिष्ठाकर पंचामृत से स्नानकराय केसरि चंदनसे लिप्तकर पीताम्बर वस्त्र के जोड़ेसे आच्छादितकर सब भांतिके भूषणोंसे भूषितकर छतुरी औ उपानत् भी अर्प्पण कर कमलोंसे दशबार इननामोंका उच्चारण करके पुष्पांजलिदेवे ॥ ओंमत्स्यायनमः। ओंकूर्म्मायनमः। ओंवाराहायनमः। ओंनारसिंहायनमः। ओवामनायनमः। ओंरामचन्द्रायनमः। ओंपरशुरामाय

नमः। ओंकृष्णायनमः। ओंबुद्धायनमः। ओंकल्किनेनमः॥ इन दशों मंत्रोंसेदशअवतारका पूजनकर पुष्प धूप दीप औ भांति २ के नैवेद्यअर्प्पण कर वस्त्र भूषण यथा शक्ति निवेदनकर रात्रिका विष्णु भगवान् को बोधन करावै औ जागरण कर प्रातःकाल विमल जलसे स्नानकर संध्या तर्प्पण से निवृत्तहो विधिपूर्वक विष्णुपूजनकर नैवेद्यदे अंत में हाथजोड़ इसमंत्रसे प्रणामकरै॥ ओंजगदादिर्जगद्रूपोजगदादिरनादिमान्। जगदादिर्जगद्योनेप्रीयताम्मेजनार्द्दन॥ वाराहजी कहते हैं हेधरणि इसभांति प्रार्थना कर हवन गोदान शय्यादान आदि यथा शक्तिकर ब्राह्मण का भोजन कराय आप सकुटुम्ब भोजन कर व्रत समाप्तकर सब सामग्री सहित मूर्त्ति को वेदविद ब्राह्मणको दे आशीर्वाद लेय इसरीतिसे जो मनुष्य एकादशी व्रतकरतेहैं उनके पुण्यका कथन कहांतक कहसक्तेहैं तथापि किञ्चिन्मात्र कहते हैं सो श्रवणकरो हेधरणि व्रत करनेवाला मनुष्य हमारे तुल्य उत्तम रूपधारण कर दिव्यभूषण वस्त्रकरके शोभित चंद्र औ सूर्य्यकेतुल्य प्रकाशमान सेवकों करके सेवा को प्राप्त उत्तम विमान में बैठि हमारे लोकमें आताहै औ हजार कल्प हमारे लोकमें निवासकर अंत में बहुत आयुषकरके युक्त औ आरोग्य सातोद्वीपका राजा सात कल्पतक होताहै और हेधरणि इसपुण्य एकादशी माहात्म्य के श्रवण करनेसे ब्रह्मवध मद्यपान स्वर्णस्त्येय गुरुस्त्रीभोग आदि महापातक दूरहोतेहैं और जो मनुष्य विधान से व्रत करताहै उसके स्पर्शकरनेसे बड़े २ पापी पवित्रहोतेहैं और हेधरणि इस एकादशी माहात्म्य के पाठकरनेसे दुःस्वप्न का भय दूरहोताहै और जो मनुष्य नारायण वासुदेव अनंत अच्युत इननामों को भक्ति श्रद्धायुक्त प्रेमसे उच्चारण करते हैं वो सब पापोंसे मुक्तहो हमारेलोक में प्राप्त होतेहैं हे धरणि कई जन्मतक शिवजी के आराधन करनेसे जब मनुष्य निष्पाप होताहै तब उसके हृदय

में विष्णुभक्ति होतीहै जिसकेहोनेसे मनुष्य मुक्तहोताहै हेधरणि ज्ञानकी इच्छाकरनेवाला मनुष्य निष्कपटहो शिवजीका आराधन करै जिस आराधन के प्रभावसे विष्णुभक्त होताहै जिसके दर्शनसे चांडाल भी उत्तमगतिकोप्राप्त होताहै यमराज कहतेहैं हे नारद यह जानिकै बिचारवान् वेदके मार्गसे वा आगम के मार्गसे विष्णुपूजनकर संसार सागरसे पारहो कैवल्यको प्राप्त होय हे नारदजी इसभांति वाराह भगवान् के मुखारविन्द का बचन सुनि निश्चयकर धरणी श्री विष्णुभगवान् की भक्तिकर विष्णुभगवानमें लयकोप्राप्तभई इसलिये बुद्धिमान् किसीभांति निजचित्त को सावधान कर विष्णुभक्ति युक्तहो विष्णुलोक को प्राप्तहोय हे नारदजी जो मनुष्य विधान से एकादशी का व्रत करते हैं वे परमपद को प्राप्त होते हैं इसभांति हे नारदजी जो तुमने प्रष्णकिया सो यथायोग्य सब जैसा हमने वृद्धोंसे सुना औ देखा सो वर्णन किया॥

दोसौछःका अध्याय॥

नाचिकेत कहतेहैं हे ऋषीश्वरो इस भांति यमराज का धर्म्म युक्त बचन सुनि नारद जी कहने लगे कि हे धर्म्मराज आप के मुखारविन्दसे यह धर्म्मसंहिता श्रवणकर हम बहुत प्रसन्नभये औ आपकी पूजा सत्कार करनेसे अत्यंत आनन्दभया अब आप आनन्दसे निश्चल राज्यकीजिये यहांसे इच्छापूर्वक यात्राकरते हैं सो जानिये इतना कहि तपके तेज से आकाश को प्रकाशित करते जहांको इच्छाभई वहांको चलेगये हे ऋषीश्वरो नारदजी कीयात्रा करने के अनन्तर धर्म्मराज हमारी तरफ देख मनोहर वाक्यसे आनन्दको देते यह कहनेलगे कि हे पुत्र यहां का सब चरित्र देखचुके अबतुमको घरजानाचाहिये जिसमें तुम्हारेपिता आदि कुटुम्बको आनन्द होय इतना कहि औ यथाविधि हमरा

पूजन कर प्रीतिसे बिदाकिया तबतो वहांसे यमराजको प्रणाम कर बड़ेआनन्दसे हम यहां पहुंचे इस भांति हे ऋषीश्वरो जिस भांति यमपुरकोगये औ जो २ देखा औ सुना सो २ सबआदि से वर्णन किया बैशम्पायन ऋषि कहते हैं हे राजन् जनमेजय इसभांति नाचिकेतका बचन सुनि सब तपस्वी बड़ेहर्षमें युक्तहो बड़ी प्रीतिसे एवमस्तु कहि २ जो २ वहां आये थे उनमें कोई जायावर कोई वानप्रस्थ कोई शालीन कोई शिलोंछ कोई अपाक-पाची कोई फलाहारी कोईमौन कोई जलशायी कोईऊर्ध्वशायी कोई मृगचारी कोई पंचाग्नितपी कोई पत्राहारी कोईजलाहारी औ कोई शाकाहारी ये सब ऋषि इस विचित्र कथा को सुन २ विस्मितहो निश्चय मानि२ धर्म्ममें बुद्धिको सावधानकर निज२ नियममें स्थितहो नाचिकेत औ उद्दालकमुनिसे बिदाहो निज२ हृदयमें परमेश्वरका चिन्तन करते निज २ आश्रमको गये बैश-म्पायन ऋषि कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय यह धर्म्म कथा हमने आपसे वर्णनकिया जिसके श्रवणसे विष्णुमें भक्ति होती है जो इसकथाको सुने व सुनावे उसके सब मनोरथ पूरे होयँ औ विष्णुका प्याराहोय॥

दोसौसातका अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं हे शौनक अब सावधानहो शिवचरित्र वर्णन करतेहैं सो श्रवणकरो जिस के सुनने से अनेक जन्म के पातक दूरिहोते हैं पहिले समयमें तारकामय संग्राममें जब देवताओंने दानवों का संहार किया इंद्र निज अधिकार को सावधानहो करनेलगे औ चराचर तीनोंलोक आनंदकोकरनेलगा उससमय हे शौनक सनत्कुमार ऋषि मणियों करके शोभित हैं शिखर जिसका ऐसेसुमेरु पर्वतमेंजाय ब्रह्माजीको निज कमलके ऊपर विराजमान देखि हाथजोड़ साष्टांग प्रणामकर नमूहो बिनय

पूर्वक पूंछनेलगे कि हेभगवन् आपजगत्की उत्पत्ति करनेवालेहैं सर्वज्ञहैं यहसंदेह मेरादूरकरें कि शिवजीकानाम उत्तर गोकर्ण दक्षिण गोकर्ण औ शृंगेश्वर किसभांति भया औ जहां इनतीनों लिंगका निवासहै उस क्षेत्रका कितना प्रमाणहै औ कौन २ से उस भूमिमेंतीर्थहैं सोआप वर्णनकीजिये जिसमें संदेह दूरहोय औ कैसे उसभूमिमें शिवजीने मृगा का रूप धारण किया औ आपलोग उनको किसभांति प्राप्त भये सोभी वर्णन करें और शिवजीने मृगाका स्वरूप किसलिये धारणकिया सोसब वृत्तांत यथायोग्य आप वर्णन करें इसभांति सनत्कुमारजी के प्रश्नको सुन प्रसन्नहो ब्रह्माजी कहनेलगे कि हे पुत्र जो यहप्रश्न तुमने कियाहै सो बहुत उत्तम औ गुप्तहै तथापि तुम्हारी प्रीतिसे हम वर्णन करतेहैं हे पुत्र पर्वतराज मन्दराचलके उत्तर किनारे मुंजवान् नाम एक पर्वतहैं जिसकी शोभा नन्दनबनसे भी अधिकहै कि जिस पर्वतकी शिला हीरक नाम औ स्फटिक नाम पाषाण है औ जिसमें मूंगेकेरंगके छोटे २ कङ्करहैं और जहां नीलमणि के गुहा बिराजमान होरहेहैं जिन गुहोंकेमध्यसे अमृतके तुल्य जलके झरने बाहरको निकल रहेहैं और चारों दिशामें चित्रबिचित्र पुष्पोंकी लता वृक्षोंमें लिपिटि रहीहैं और जिस के चारों ओर भांतिर्के वृक्ष छवोंऋतुके फल पुष्पको धारणकिये पर्वत कीशोभा देरहेहैं जिनवृक्षों की शाखाओंपर भ्रमर कोकिल मयूर आदिमधुरशब्दबोलनेवालेपक्षियोंकेजोड़े भांतिर्केशब्द उच्चारण कररहेहैं जिसकी मनोहरशोभाको देखिकेगन्धर्व औअप्सराओं के गण रात्रि दिन बिहार करते हैं और जिस पर्वतमें बड़े २ जलाशय सबभांतिके कमलों करके युक्त औ जल पक्षी जिस में अनेक भांतिके जहां तहां क्रीड़ा करते हैं औ जिस जलके मध्य अनेक भांतिके जलचर बिनोद कररहेहैं और कहीं बनके मध्य मृगोंके गण कहीं बनगजोंके यूथ शोभादेरहेहैं और कहींपर्वत

की गुहामें मुनियों के गण ध्यान योग समाधि देवपूजा हवन तर्पण पितृश्राद्ध औ पुण्यकथा आदि निज २ स्थानमें कररहेहैं और कहीं यक्ष कहीं किंपुरुष कहीं गन्धर्व कहीं किन्नरोंके गण विचरि रहेहैं ब्रह्माजी कहतेहैं हेपुत्र इस भांतिकी शोभा करके युक्त मुंजवान् पर्बतमें सदा स्थाणु नाम शिवजी निवास करतेहैं सोभक्तों के दयाकरने वाले भगवान् शिव पार्बतीजी के साथ स्वामिकार्त्तिक औ गणेशआदि गणोंकरके युक्त वहां विराजमान हो रहेथे कि देवदेव के दर्शन औ सेवा करने के लिये देवताओं केगण निज २ स्थानसेचले हे पुत्र उसीसमय शिलाद मुनि के पुत्र नन्दीनाम मुनि बहुतकालसे वहां उग्रतप करके युक्त शिव जीका आराधन कररहेथे ग्रीष्म ऋतुमें पंचाग्नि तापना शिशिर ऋतुमें जलशयन औरबर्षा ऋतुमें निराली भूमि में ऊर्ध्ववाहु आकाशदृष्टि होके नानाभांतिके व्रतकरते विधिपूर्बक शिवजी का आराधन करतेरहे इसभांति उग्रतप करते २ जब शरीर शुष्क होके काष्ठके तुल्य होगया औ देहकी नाड़ी सब सूखगईं अत्यंत दुर्बल होनेसे शरीर कृष्णवर्ण होगयाइसभांतिकी अवस्था देखि शिवजी प्रसन्न हो नन्दीजी के समीप आय प्रकटहो कहनेलगे कि हे पुत्र तुमने यम औ नियमसे हमको प्रसन्न करलिया इस-लिये हम तुम्हारे समीप आये हैं औ तुमको दिव्यदृष्टि देते हैं जिस दृष्टि से मुनिलोक हमको देखते हैं जिस रूपके देखने से जन्म औ मृत्युकाभय छुटिजाताहै इतनाकहि निजरूपसे दर्शन दिया जोरूप प्रातःकालके सूर्य्यमण्डल समान तेजोमय अर्द्धचंद्र त्रिनेत्र औ जटा मुकुट करके शोभित हजार मुख हजार भुजा हजार पद हजार नेत्र औ हजार शिर करके विराजमान सिंह चर्म्म नागहार नागभूषण नागयज्ञोपवीत अक्षमाला औ कमं-डलुको धारणकिये इस भांतिका अद्भुत स्वरूप शिवजीका देख नन्दीमुनि रोमांचयुक्तहो हर्ष औ बिस्मय करके युक्त हाथजोड़

नमोहो स्तुति करनेलगे स्तुतिः॥ ओंनमोधात्रेविधात्रेचशंभवेवर दायच॥ जगद्धोक्त्रेत्रिनेत्रायशंकरायशिवायच १ भवायभवगोप्त्रे चमुनयेकृत्तिबाससे॥ नीलकण्ठायभीमायभूतभव्यभवायच२ लंब मानसुकेशायहरिनेत्रायमीढुषे॥ कपर्द्दिनेविशालायमुंजकेशायधी मते ३ शूलिनेपशुपायाथविभवेस्थाणवेतथा॥ गणानांपतयेस्रष्ट्रे संक्षेप्त्रभीषणायच ४ सौम्यायसौम्यतपसेभीमायत्र्यम्बकायच॥ प्रेतावासनिवासायरुद्रायवरदायच ५ कपालमालिनेतस्मैहरि श्मश्रुधरायच॥ भक्तप्रियायसततंनयोऽस्तुपरमात्मने६॥ ब्रह्माजी कहतेहैं हे पुत्र सनत्कुमार इसभांति स्तुति कर बारम्बार नन्दी शिरसे प्रणाम करनेलगा तबतो नन्दी नामक ब्राह्मण को देख शिव जी अत्यन्त प्रसन्न हो यह बोले कि हे नन्दिन् हे महामुने तुम्हारे तप करनेसे औ स्तुति करनेसे हम बहुत प्रसन्नहैं जो २ इच्छाहोय सो २ बरमांगो हे बिप्रेन्द्र हमारे प्रसन्न होने से तीनों लोकमें कोई पदार्थ दुर्लभ नहींहै जो पदार्थ देवताओंको भी दुर्लभहै सोदेंगे प्रभुहोना व अमरहोना व इन्द्रहोना व और लोकपालहोना व ब्रह्माहोना व मुक्ति अथवा आठों अणिमादिक ऐश्वर्य्य व गणोंका स्वामी होना जो कुछ तुम्हारे मनकी बांछा होय सो सब इससमय तुमको हमारीकृपासे सुलभहै अब शीघ्र जो कुछमांगनाहै सो मांगो इसभांति कृपायुक्त शिवजीकाबचन सुनि बहुत प्रसन्नहो नन्दी हाथजोड़ यह कहनेलगे कि हे भगवन् मैंतो न प्रभुत्व चाहताहूं न देवहोना न इन्द्रहोना न ब्रह्माहोना न और कोई लोकपालहोना औ मुक्तिभी नहीं चाहता हे प्रभो न गाणपत्य चाहताहूं औ न अष्ट ऐश्वर्य्य हे शंकर आपके प्रसन्न होनेसे यह मेरी बांछाहै कि जिसभांतिका भक्त आप का आजतक कोई न हुआहोय सोभक्ति मुझदास पर कृपाकरके दो और येभी अनुग्रहहोनी चाहियेकि मेरीभक्तिकरनेमें किसीभांति का बिघ्न न होय औ कोटिरुद्र जप करने में हे शङ्कर मेरीभक्ति

कभी कुण्ठित न होय यहीबर चाहताहूं ब्रह्माजी कहते हैं हे सनत्कुमारजी इसभांति नन्दीमुनिकी प्रार्थनासुनि शिवजी प्रसन्न हो हँस करके बड़ी मधुरताके साथ कहनेलगे कि हे सुव्रत इस तुम्हारेतपसे हमप्रसन्नहैं उठो तुमने शुद्धचित्तहो भक्तिसे हमारा उत्तम आराधन किया हे तपोधन अब यहतप तुम्हारा पूर्णभया जो हमारे समीप तुमने पूर्ण हजार बर्ष में यम नियमयुक्त होके तीनकोटि रुद्रका जपकिया इसभांति हे नन्दिन् पहले समय में देवता ऋषि मुनि औ असुर किसीने नहींकिया कि जिसके तप करने से तीनोंलोक प्रकाशित होजायँ अब तुम्हारे देखने को इन्द्रादिक देवताओंको साथलिये ब्रह्मा औ विष्णुआतेहैं सोशीघ्र बरदानलो औ हम गुप्तहुआ चाहते हैं इतना कहि शिवजी बर देने लगे कि हे मुने आज से तुम्हारा स्वरूप हमारे तुल्य होय अक्षय अव्यय औ अतर्क्य होय सुर औ असुरों करके तुम्हारा दिव्य तेज औ शरीर सदा बनारहै जिसभांतिहमारारूप जटाजूट करके शोभित त्रिनेत्र अर्द्धचन्द्र भूषित मस्तक डमरू औ त्रिशूलधर इसीभांति सुर औ असुरोंकरके पूजित इसी शरीर से जरामरणबर्जित सबगणों में प्रधान औ हमारे पार्षदों में श्रेष्ठ हो और आज से तुम्हारा नाम नन्दीश्वर करके विख्यात होगा हे तपोधन सब ऐश्वर्य्य औ योग सिद्धिकरके युक्तहोनेसे तुमको सबदेवता औ दैत्य हमारी दूसरीमूर्त्ति मानिकै नमस्कार करैंगे और सब देवताओंके कार्य्य करनेवाले तुमहोगे हमारे प्रसादसे हे मुनीश्वर लोककी रक्षाकरनेमें समर्थ होगे और जोफल किसी को हमारे आराधन करनेसे प्राप्तहोताहै सो सबफल मनुष्योंको तुम्हारे आराधन से प्राप्त होगा औ आजसे सर्वत्र हमारे तुल्य तुम्हारा पूजन होगा औ जो तुम्हारा शत्रु होगा वो हमारा शत्रु होगा जो तुम्हारा मित्रहोगा सो हमको प्रियहोगा हमारा औ तुम्हारा हे नन्दिन् कुछभेद नहींहोगा जिसभांति वायु औ

आकाशका भेद नहींहै औ हेगणोंके स्वामी हमारे दक्षिणद्वार में सदा तुम्हारा निवास होय औ तुम दक्षिण भाग में महाकाल वामभागमें हमारे सदा निवास करो और तुम हमारे शिर की रक्षाकरो महाकाल हमारे गणोंकी रक्षाकरें और बज्रकरके दंड करके चक्रकरके अग्नि करके तीनों लोकमें कोई तुमको किसी भांतिकीपीड़ा न देसके और देव दानव गन्धर्व यक्ष राक्षस सर्प आदि सबतुम्हारी आज्ञामें सदारहें और सब हमारेभक्त तुम्हारी सेवाको करें और जिसके ऊपर तुम प्रसन्न उससे हम सदा प्रसन्न जिससे तुम रुष्टहोगे उसके ऊपरसदा हमारा कोपरहैगा हे नन्दिन् तुम्हारे प्रिय औ अधिक अब हमको दूसरा नहीं है ब्रह्माजी कहतेहैं हे सनत्कुमारजी इस भांति अनेक बरदान दे स्पष्ट ऊंचे स्वरसे फिर शिवजी नन्दीसे कहनेलगे कि हे नंदिन् तुम्हारे ऊपर प्रसन्नहो बरदानदेना जानिके इससमय नारायण सहित सब देवता आते हैं औ उनके पाछे यक्ष विद्याधर किन्नर सर्प्प मुनि महात्मा औ तपस्वी आदि सब इकट्ठेहो बरदान के लेनेको आनेचाहतेहैं सोअब इस मुंजवान् पर्वतसे जबतक देवता यहां आवेंनहीं तबतक श्लेष्मातक नाम बनको हमजातेहैं परंतु पूंछनेसे भी किसीके स्नेहवशहो कहना नहीं औ सबका यथायोग्य सत्कार करना हे सनत्कुमार इसभांति शिवजीनंदीश्वरसे कहि औ बरदानदे वहांहीं अंतर्द्धान भये ॥

दोसौआठका अध्याय ॥

ब्रह्माजी कहतेहैं हेसनत्कुमारजो जब वहांसे शिवजी अंतर्द्धान होगये उसीक्षण नंदीश्वरनेतौ चतुर्भुज त्रिनेत्र धारणकर दिव्यरूप धारणकिया औ हाथोंमें त्रिशूल परिघ दंड औ पिनाककरके युक्त मानोंसाक्षात्दूसरेशिवहैं इसभांति का नंदीश्वरके बिलक्षण तेजको देखि संभ्रमको प्राप्तहो सबदेवताओंने आयके यहवृत्तांत

सब इन्द्रसे वर्णनकिया इस नंदीश्वरके अभ्युदय वृत्तांतको सुनि सबदेवताओं के साथइंद्र बड़ी चिंतामें युक्तहो यहकहनेलगे कि यह जो कोई तपस्वी शिवजीसे वरपायाहै सो जरूर तीनोंलोक निजवशमें करैगा इसलिये जबतक हमलोगों को पीड़ा न देय तबतक चलके शिवजीसे मिलके प्रसन्नकर इसकी शांतिकेलिये कोई उपाय पूछना चाहिये यह बिचार ब्रह्माजी के समीप जाय उनको साथले बिष्णु भगवान्को भी साथले सबइकट्ठे हो जहां नंदी विराजमान बरदानसे प्रकाशमान होरहेथे वहांजाय प्राप्त भये तबतो हेसनत्कुमारजी उससमय हम सबको इकट्ठे देखतेही बड़े हर्षसे युक्तहो उठिनंदीश्वर हाथजोड़ मानसी पाद्यार्घदेकर सुस्वागत शब्दका उच्चारणकर यह कहनेलगा कि हेपरमेश्वरो मेराजन्म औ तप सहित जीवनके आज सफलभया जो मैं आज त्रैलोक्यनाथ गुरु हरि भगवान् को देखा आज हम को जन्म लेनेका फल प्राप्तभया आज मैं कृतकृत्य भया औ जो त्रैलोक्य-नाथ शिवजी प्रसन्नहो पार्षदों में मुख्य करके अनेक भांति का बरदिया उस अनुग्रह के फल से आजहम सब देवताओं को नेत्रसे देखा इस भांति नंदी की प्रेमबाणी को सुनि प्रसन्नहो सब देवता कहने लगे कि हे नंदिन् तुम्हारे तपसे प्रसन्नहो शिवजी प्रकट हो बरदान दे कहां को गये सो हमारेभी दर्शन करने की इच्छा है हम शिवजी को कहां देखेंगे सो कथन करो ब्रह्माजी कहतेहैं हे सनत्कुमारजी इसभांति देवताओं का बचन सुनि नन्दीश्वर बोले कि हे देवगण हमारे ऊपर अनुग्रह करके यहांसे नहीं मालूम अन्तर्द्धानहोके कहांको गये सो बिचारमें जैसाआवे वहां उनका खोजकरो सूतजी कहतेहैं कि इसभांति हे शौनकजी ब्रह्मा का बचनसुनि सन्देह युक्तहो सनत्कुमारजी कहनेलगे कि हे पितः शिवजीनेअन्तर्द्धान होतेसमय नन्दीश्वर से क्या आज्ञादिया कि जिससे देवताओंको नन्दीजी ने शिवजी

का ठिकाना न कथनकिया इसबिषय में आपसे कुछगुप्त नहींहै आपसब जानते हैं सो सब हमारे सन्देहके दूरहोनेके लिये कृपा करके बर्णनकरें यह निजपुत्र सनत्कुमारका सन्देहयुक्त बचन सुनि ब्रह्माजी प्रसन्नहो कहनेलगे किहे पुत्र जो शिवजीने नन्दी से कहा कि हमारा ठीक २ पता देवताओंसे न कहना इसका सब वृत्तांत श्रवणकरो जबनन्दीको बरदे औ देवताओं का आगमन जानि अन्तर्द्धान होनेलगे तौ यह बोले कि हे नन्दिन् एकभूमि पर्ब्बत में सिद्धों करके सेवित हिमाचलके पार ऐसीहै कि जिस पुण्यभूमि में सिद्धोंके समूह औ तपस्वियोंके गण सदा निवास करतेहैं और उसीभूमिमें श्लेष्मातक नाम नागराज बहुतकाल से उग्रतपकर हमारा आराधन कररहाहै उसतपस्वीका मनोरथ हमको अवश्यपूराकरनाहै औ वह महात्मा तपकरते २ पापोंसे रहित शुद्ध होरहाहै उसके समीप कोई दूसरा मनुष्य नहीं है केवल जंगली जीवोंके बिना और हे नन्दिन् बहुतदिनके तप करनेसे उसीके नामसे वहभूमि औ पर्ब्बत भी श्लेष्मातक बन नामकरके लोकमें प्रसिद्धहै उसीभूमि में हमको ढूंढ़ते २ देवता मृगरूप देखेंगे औ पकड़नेका यत्नभी करेंगे इसलिये यह वृत्तांत तुम देवताओंसे किसी प्रकार कथन नहीं करना हे सनत्कुमार इतना नन्दीश्वर से कहके शिवजी तो अन्तर्द्धान भये औ उसी समय चारोंदिशाओंको प्रकाशकरते निज २ बाहनोंपर औ बिमानोंपर सबदेवताओंकेगण दिव्य २ भूषण औ वस्त्रकरकेशोभा को देतेआप्राप्तभये प्रथमतोचंद्रमा निजगणोंकेसाथ औ सूर्यग्रह नक्षत्र एकादशरुद्र बारहोसूर्य्य अश्विनीकुमार मुंजवान् पर्ब्बत विश्वेदेव औ साध्य इनसब देवगणों को साथ लियेऐरावतहाथी पर विराजमान इन्द्रआय प्राप्तभये और नारद तुंबुरु विश्वाबसु पराबसु औ हाहा हूहू आदि अनेक गन्धर्बों को सङ्गलिये निज बिमानमें चित्ररथनाम गन्धर्बआया औ अनिल निलधर्म्म सत्य

ध्रुव देवऋषि सिद्ध यक्ष विद्याधर गुह्यक इनसबोंके गण निज २ विमानमें बैठेआय नन्दीश्वरके समीप प्राप्तभये और गन्धकाली घृताची मुग्धा गौरी तिलोत्तमा उर्वशी मेनका रम्भा औ पञ्चस्था आदि स्त्रियोंका गणआय प्राप्तभया और पुलस्त्य अत्रि मरीचि वशिष्ठ भृगु कश्यप पुलह विश्वामित्र गौतम भरद्वाज अग्निवेश्य वृद्धपराशर मार्कंडेय अंगिरा गर्ग सम्वर्त्त क्रतु ऋचीक यमदग्नि भार्गव च्यवनआदि सब ऋषीश्वर हमारी औ विष्णुकीआज्ञासे नन्दीके समीप हे सनत्कुमारजी आय पहुँचे और सिन्धु पुरुष सरयू महानदी ताम्रा अरुणा चन्द्रभागा वितस्ता कौशिकी पुण्या सरस्वती कोका नर्म्मदा बहुदा शतद्रू विपाशा गंडकी गोदावरी वेणी तापी करतोया शीता वीरवती नंदा परनंदा चर्म्मण्वती पर्णाशा देविका प्रभास सोम लोहित त्रपु औगंगासागर आदि नद नदी सर सागरमिलि एकत्रहो नंदीश्वरके समीपआय पहुंचे ब्रह्माजी कहते हैं हे सनत्कुमार इसीभांति जो२ पृथिवीमें पवित्र स्थानक्षेत्र नद नदी सब निज२रूपको धारणकर आयप्राप्तभये औ पर्व्वतों में सुमेरु कैलास गंधमादन हेमकूट निषध विंध्य महेन्द्र सह्य मलय दर्दुर मालयवान् द्रोण श्रीपर्वत अंवष्ट औ पारियात्रआदि सबपर्वतनिज२ बनोंकेसाथ रूपधारणकर नंदीश्वरके समीपआय प्राप्तभयेऔरहेसनत्कुमारजीसबविद्या निज अंगोंकेसाथ औ सांगयज्ञ धर्म्मसत्यदम औस्वर्ग कपिलजीआदि सिद्धेश्वर नंदीश्वरके समीपआय प्राप्तभये औअमृतके पानकरने वाले शेष नारायण हजारफण करके शोभित धृतराष्ट्र किर्म्मीर अंगद अंभोधर अर्बुद न्यर्बुद चक्षुश्रवा विद्युन्मेघ शङ्खवर्च्चा आदि नानाफणों में मणि शोभाकरके विराजमान नंदीश्वरके समीपआय प्राप्तभयेऔरबिनत कंवल अश्वतर एलापत्रकर्कोटक औ धनंजय इत्यादि महाबल करके युक्त नागराजआय प्राप्तभये और हे सनत्कुमारजी उसी स्थानमें निज२रूप धारणकर दिन

रात्रि मास पक्ष तिथि संवत्सर पृथिवी दिशा बिदिशा आयप्राप्त भये इससमाज को देखि शिवकरके प्रेरित वृक्ष उससमय इन सब देवतागणोंके ऊपर वायुकेवेगसे पुष्पोंकी बर्षाकरनेलगे और गंधर्वोने अप्सराओं को साथले नृत्यगानका प्रारंभकिया और उसमुंजवान् पर्वतके सबपक्षी अनेक प्रकारके मधुरस्वर करने लगे औ वायु मंदसुगन्ध शीतल बहनेलगा इसीसमय हे सनत्कुमारजी विष्णुकेसाथ हम नन्दीजी के समीप पहुंचे तब तौ शिवजीके बरदानकरके अद्भुततेजसे विराजमान विष्णुआदि सब देवताओंको एकत्रदेख बहुत प्रसन्नहो हाथजोड़ मानसपूजाकर सबको यथायोग्य प्रणामकर स्वागतबोलि पाद्य अर्घ आसनसे सत्कारकर नमूहो क्रमसे नंदीने सबका पूजन किया और नंदीश्वरजीको देखि आदित्य वसु रुद्र अश्विनी साध्य बिश्वेदेव गंधर्व गुह्यक विश्वावसु परावसु हाहा हूहू नारद औ तुंवुरु आदि सब वासुकी आदि नागों के साथ बड़ी प्रीति औ हर्ष से युक्तहो भांति २ की सामग्रीले नंदीश्वरजीकी पूजाकर भक्ति से शिवजी के तुल्य प्रणाम किया औ इस पूजाको देख सिद्धों के गण अतिहर्षितहो जयशब्दका उच्चारण करनेलगे औ अनेक भांतिके आशीर्वाद को दे प्रसन्नहो देवताओं के साथ नंदीश्वरसे यह कहने लगे कि हे मुने शिवजी तुम्हारे से बहुत प्रसन्नभये औ तुमको अनेकभांतिका वरदानदिया इसलिये हमारा सबकाभी यहवरहै कि तुम्हारीगति कहींक्षीण न होय और सर्वदा सब दुःखों करके रहित शिवजीकी कृपासे सर्वत्र विहारकरो यह प्रीतियुक्त बचन देवताओंका सुनि नंदीनमूहोबोले कि यों आप सबने कृपाकरके आशीर्वाद किया सेा सफलहोय अब यह अनुग्रह आप सबकी चाहतेहैं कि कुछ हमपर आज्ञाहोय सो हमकरें इसभांति नंदी का बचनसुनि इंद्रजीबोले कि हेनंदिन् अब शिवजी कहांहैं सो हमसे वर्णनकरो अब देवदेव श्रीमहादेवजी के दर्शनकरने की

हम सबको वांछा होरहीहै यह इंद्रजीका बचन सुनि नंदीश्वर शिवजीको बाणीका स्मरणकर कहनेलगे कि हे देवेन्द्र जो आप पूछतेहैं सो श्रवणकरो कि इस मुंजवानपर्वतमें हमने बहुतकाल शिवजीका आराधनकिया सो करुणामय प्रसन्नहो हमकोदिव्य वरदे अनुग्रहकर यहां से कुछ आज्ञादे चलेगये उसका स्मरण कर उनकी आज्ञामें टिके भयभीत होरहेहैं सो आपके साथ हम चलके ढूंढ़तेहैं हे इंद्र अबयहांसे शिवजीके खोज करने को चलो हम भी तुम्हारे साथ चलेंगे॥

दोसौ नवका अध्याय॥

ब्रह्माजी कहते हैं हे सनत्कुमार इसभांति नंदीजी का वचन सुनि सबदेवता इंद्रकोसाथले शिवजीके खोजकरनेको मुंजवान् पवत से चलि नंदिकेश्वरजी के साथ स्वर्गलोक ब्रह्मलोक को भलीभांति ढूंढ़िकर नागलोक में जाय देखा वहां न मिलनेसे उदासीनहो थकिके पृथिवीमें आय सब जगे बन पर्वत नदी औ तीर्थोंमें भलीभांति ढूंढ़ि पर्वतोंके शिखर औ गुफाओंको खोजि २ हैरानहो शिवजीके न मिलनेसे भयभीतहो सबदेवता इकट्ठेहो एकाग्रचित्तसे बिचार करनेलगे कि देखो तीनोंलोक भलीभांति खोजकिया परंतु शिवजी न मिले सो अब मन बचन औ कर्म्मसे शिवजीकी चरण शरण मानिनमूहो श्लेष्मातक बनमेंचल ढूंढ़ो वहां अवश्य मिलेंगे यह शोचिबिचारि सब देवता श्लेष्मातक बनमें जाय पहुंचे औ वहांपहुंचि उसबन की अद्भुत शोभा देखि खोजकरना प्रारंभकिया तब तौ ढूंढ़ते २ क्या देखतेहैं कि मृगों के समूहमें एकमृग बिलक्षण औ विचित्ररूप धारणकिये तृण को चररहाहै हेपुत्र सनत्कुमार जिसबनमें वह मृग हम सबने देखा उसबनकी शोभा कहांतक बर्णनकरैं कि जिसमें उत्तम २ औ मनोहर पवित्र ऋषियोंके ध्यानयोग्य अनेककन्दरा विराज-

मान होरहीहैं और कहीं जलकेप्रवाह सुन्दर मीठे स्वादकरके युक्त निर्म्मल बहरहेहैं औ जिस जलके किनारे हरे २ तृण के लोभसे गोपुच्छ महिषआदिजीव जहांतहां विहारकररहेहैं और कहीं कदलीबनके मध्य मृगोंकेसमूह निर्भय किन्नरोंका मधुर आलापसुनिकै आनंदको प्राप्तहोरहेहैं और पर्वतके नदियों के तट पुलिनमें हंस कारंडव जलकुक्कुट आदि जीव उस भूमिको शोभा देते बिहार कररहेहैं इसभांतिके श्लेष्मातक बनके मध्य दूसरे देवताओंने मृगोंके मध्य मृगरूप शिवजी की क्या विलक्षणतादेखी कि सुवर्णके तुल्य शोभाकरके विराजमान एकशृङ्ग एकपादयुक्त औ जिस मृगकेशरीरमें शुक्लवर्णकेबिन्दु जहां तहां शोभित होरहेहैं औ देखनेसे मनहरनेवाला नेत्र खुर मुख दंत औ शुक्लवर्ण के उदरकरके विराजमान औ रक्तवर्ण मूंगेकेतुल्य मुख जिसका सुन्दर औ पुष्ट अङ्ग २ की शोभा से सब मृगों के गणको शोभित करते मृग को देखि औ उस मृगके थोड़ी दूर अत्यंतसुन्दरी देखनेसे मनके हरलेनेवाली अनेक भांतिके वस्त्र औ भूषण करके भूषित एक कन्या गेंदको खेलती इकल्ली उस बनमें विहार कर रहीहै इस चरित्र को देख हे सनत्कुमार जी सबदेवताओंने एकमुहूर्त्तमौनहो बिचारकर यहनिश्चयकिया कि यह अद्भुत कन्या इकल्ली बनमें शिवजीकी अर्द्धांगी पर्वतराजकी पुत्री मृगरूप शिवजीके समीप बिहररहीहै औ इसभांति विलक्षण मृगका स्वरूप शिवजीहैं यहनिश्चय मनमेंकर सबदेवता उस मृगके पकड़नेको चारोंओरसे दौड़े तो इन्द्रने उस मृग के शृङ्गका अग्रभाग जाय पकड़ा और हे सनत्कुमार उस शृङ्गका बिचलाभाग हमने पकड़लिया औ शृङ्गकामूल विष्णुजीके हाथ में आया तबतो हमारे तीनोंके पकड़तेही तीन टुकड़े होके तीनों के हाथ में टूटके वह शृङ्ग रहगया औ मृग अन्तर्द्धान होगया उसे न देखनेसे हम तीनों इधर उधर देखनेलगे तो आकाशके

मध्यसे यह वाणीभई कि हे देवताओ तुमसब हमको नहीं पाय सक्ते अब शृङ्ग मात्रके लाभ होनेसे संतुष्ट होजाव यदि हमको सहित शरीरके ग्रहण करलेते तो पृथिवीमें चारों चरणसे धर्म्म निवास लेता अब हे देवतो यह शृङ्ग हमारा श्लेष्मातक बन में बहुतकाल रहि लोकका कल्याण करैगा औ यहां अनेक भांति का यज्ञ होगा औ हमारे प्रभाव से यह पुण्यक्षेत्र होगा और आसमुद्र पृथिवी में जितने तीर्थ औ क्षेत्रहैं उनसबों का यहां निवासहोगा और हम हिमवान् पर्वत के तटमें नैपाल नामक देशमें पृथिवीको भेदनकर चारमुख धारणकर सबअङ्गों करके शोभित उत्पन्नहोंगे तब हमारा नाम शरीरेश होगा तहां घोर नागह्रद नाम कुण्डके जलमें निवास करेंगे सब जीवोंपर दया करते दर्शनदेते तीसहज़ारबर्ष निवासहोगा और जबवृष्णिकुल में उत्पन्नहो श्रीकृष्णजी इन्द्रकी सम्मतिसे दैत्योंके बधनिमित्त निज चक्रसे पर्वतको तोड़के दानवोंका संहारकरेंगे तब वहदेश म्लेच्छों करके सेवित होगा अर्थात् दानवों के मारनेके अनन्तर वहां म्लेच्छ निवास करैंगे तिसके कुछकाल बीतनेपर सूर्य्यबंश के क्षत्रिय आय उन म्लेच्छोंका संहारकर उत्तम २ कुल के ब्राह्मणोंको बसावेंगे औ चारोंवर्णका स्थापनकर धर्मयुक्तहो हमारे लिङ्गकी प्रतिष्ठा करेंगे उस लिङ्गको पूजि सब भांतिके सुख को चारोंवर्ण प्राप्तहोंगे शिवजी कहतेहैं कि उस मूर्त्तिका जो मनुष्य दर्शन औ पूजनकरेंगे सो सब पापोंसे मुक्तहो हमारे समीपबास पावेंगे और गङ्गाजीके उत्तर औ आश्विनीमुख नामक्षेत्रके दक्षिण चौदहयोजन भूमिमें जितनाजलहै उसमेंस्नानकरनेसे भागीरथी के स्नान से सौगुण पुण्यहोगा वहां स्नानकरनेवाले विष्णुलोक कोप्राप्तहोंगे और शिवजीकहतेहैं हे देवतोयदि इसभूमिमें कैसहू पापी निवास करेंगे तो अन्तमें इन्द्रके समीप नंदनबनमें बास पावेंगे यह तपोधनों के लिये तप करनेका सिद्ध क्षेत्रहै यहक्षेत्र

हे देवतो प्रभास क्षेत्र से प्रयाग से नैमिषारण्य से पुष्कर से औकुरुक्षेत्रसे भी शतगुण अधिक पवित्रहै और जहां हमारे श्वशुरहिमवान् का निवासहै जिससेगंगाआदिसबपुण्यनदियां उत्पन्न भईहैं इसलिये इसभूमिमें जो २ नदियां सर झरने औ पर्वतहैं वो सबसिद्धोंके सेवायोग्यहैं किजिसभूमिकेमध्य शैलेश्वर होके हमनिवास करतेहैं और हे देवतो सबनदियोंमें श्रेष्ठभागीरथी औवेत्रवतीहै कि जिसके नामलेनेसे औ दर्शनकरनेसे पापी पवित्रहोते हैं और जो इनमेंस्नान करताहै वो तो सातकुलों के साथ पवित्रहो विष्णुलोकमें निवास करता है और जो नित्य स्नानकरके हमारा पूजन करेंगे तिनके ऊपर प्रसन्नहो के हम उनको संसार सागरसे पारकरेंगे और जोहमारे स्नानकेलिये एकघटजल इनदोनों नदियोंसे लेंगे उनको विधिसहित अग्निहोत्र यज्ञकरनेका फल प्राप्तहोगा और इसभूमिमें जोहमनेनिज शृङ्गसे भूमिको खोदि के जलनिकाला है इसकानाम शृङ्गोदक तीर्थहै इस शृङ्गोदकतीर्थ में जो स्नानकरेंगे उनके यावज्जीवका किया पापदूरहोगा औ यहां पंचनद नामक जोतीर्थ है ब्रह्मऋषियों करके सेवित उसमें स्नानमात्र करने से अग्निष्टोम नाम यज्ञकेफलको मनुष्य प्राप्तहोगा और उसपंचनदके साठिहजार धन्वापर वाङ्मती नाम तीर्थ है जिसका दर्शन कृतघ्न पुरुषको नहीं होता जो मनुष्य पवित्र औ सत्यभाषी हैं वही वाङ्मती को प्राप्त होते हैं जिससे उनकी उत्तम गति होती है हे देवतो चाहै कैसहू पापीहोय वाङ्मती के स्नान करने से हमारे समीप आता है और जो वाङ्मती के स्नानकरने वाले हैं उन को राजसूय औ अश्वमेधयज्ञका फल प्राप्तहोना दुर्लभ नहीं है और जहां हमारा निवास है उस की चारो दिशाओं में एक २ योजन रुद्र क्षेत्रनामक भूमि है तहां ईशान दिशा में हजारों नाग गणों के साथ वासु की नाम नागराज सदा निवास

करते हैं सो नागराज इसक्षेत्र के निवासकरने वालों का विघ्न करते हैं इसलिये जो इसक्षेत्रका दर्शन व निवास कियाचाहै सो प्रथम बासुकीका प्रणाम औ पूजनकर पश्चात् हमारादर्शन औ पूजनकरे इसभांति करनेसे निर्बिघ्नयात्रा सफल होगी और हे देवताओ जो इसक्षेत्र में आय भक्तिसे हमारे प्रणाम करैगा वो पृथिवीका राजाहोगा और जो हमारीमूर्त्तिको चन्दन पुष्प माला धूप दीप नैवेद्य आदिसे पूजाकरेंगे सो तुषितनाम देवगणों में जन्मपावेंगे और जो हमारसमीप दीपदान करेंगे सो सूर्य्यलोक में जाय निवासकरेंगे और जो मनुष्य हमारी मूर्त्तिको पंचामृतसे स्नानकराय भलीभांति चन्दन व अक्षत व पुष्प व माला आदिसे पूजि नृत्य व गान व स्तुति आदि करेंगे सो मृत्युमुख संसारसे पारहो कैलास में आय हमारेगण होंगे जो ब्राह्मण श्रद्धापूर्वक व्रत उपवास नियमसे हमारा पूजनकरेंगे सो सबपापों से छुटि साठिहज़ार बर्ष देवलोकमें निवासकर मनुष्यलोकमें उत्तमकुल में जन्मपाय विद्यास्वरूप औ धनकरके युक्तहो बहुतकाल आरोग्य हो सुखभोगेंगे और ब्राह्मण व क्षत्रिय व बैश्य औ शूद्र आदि चारोंबर्णमें कोई हो शैलेश्वरका भक्तिपूर्वक जो उपासना करेगा सो देवलोकमें जाय वहांका सुखभोगि अन्तमें हमारापार्षद होगा इसलिये हे देवताओ शैलेश्वरके तुल्य संसारमें दूसरापदार्थ नहीं है जो पुरुष ब्राह्मणका बधकरने वालाहै औ गुरुका बध व गोबध आदि पातक करके युक्तहै सो हमारे क्षेत्रके दर्शनमात्र करने से पवित्रहो उत्तमगतिको प्राप्तहोगा और इसक्षेत्रके तीर्थ औ देवताओंकी संख्यानहीं है इनमें किसी तीर्थमें स्नानकरै औ किसी देवताका पूजनकरै सो सबपापोंसे मुक्तहो उत्तमगतिको जाताहै क्रोशनामक तीर्थमें हे देवताओ जो स्नान औ पितरोंका तर्पण करताहै सो सबपापोंसे छुटिजाताहै और शैलेश्वरकी दक्षिणदिशा में अनाशकनाम तीर्थका जो दर्शनकरते हैं सो निष्पापहो परम

गतिको प्राप्तहोतेहैं और जो काम औ क्रोधआदि दुर्गुणोंसे मुक्त हो भृगुपात करताहै सो उसीसमय उत्तमविमान में बैठि अप्सराओं करके सेवाको प्राप्त देवलोकको जाताहै शिवजीकहतेहैं हे देवताओ ब्रह्माजीका बनाया भृगुमूल में ब्रह्माद्भेदनामक तीर्थहै जिसमें इंद्रियोंको जीतिके एकबर्ष स्नानकरनेसे निर्म्मलहो जाय ब्रह्मलोकमें निवासकरता है और गोपदके चिन्हकरके युक्त गोरक्षकनाम तीर्थहै जिसके दर्शनमात्रसे मनुष्य एकसहस्र गोदान देनेके फलको प्राप्तहोताहै और गौरीशिर नाम सिद्धगणों करके सेवित जो पर्वतहै जहां आठोंयाम गौरीजी का निवासहै उसके दर्शनकरनेसे सालोक्यनाम मुक्तिहोतीहै और जोमनुष्य वाङ्मती के तटमें निजप्राणोंका त्यागकरतेहैं वे अग्निके तुल्य प्रकाशमान स्वरूपको धारणकर उत्तमबिमानमेंबैठि उमालोकमें जायनिवास करतेहैं और जो पंचनदनाम तीर्थमें स्नानकरतेहैं सो स्नानमात्र हीसे अग्निष्टोमनाम यज्ञके फलको प्राप्त होतेहैं और पंचनदकी उत्तरदिशामें थोड़ीदूर गुह्यकों करके रक्षाको प्राप्त प्रांतकपानीय नामकक्षेत्र है जिसमें एकबर्ष स्नानकरनेसे गुह्यकनाम शिवका गणहोताहै औ गौरीशिरके ईशान दिशामें ब्रह्मोदयनाम तीर्थहै जिसके दर्शन औ स्पर्शकरनेसे मनुष्य फिर मर्त्यलोकमें जन्मनहीं पाता औ उसीसमीप सुंदरिकानाम तीर्थहै जिसके स्नानमात्रसे मनुष्य गन्धर्व लोकमें प्राप्तहोता है और त्रिसंध्यानाम क्षेत्रमें जो ब्राह्मण संध्या करताहै सो सब पापोंसे मुक्तहोता है और वाङमती मणिमती इनदोनों नदियोंका जहांसंगम है उसभूमि में जो रुद्रजपकरता एकदिन औ रात्रि निवासकरताहै सो निज अनेक पुरुषों का उद्धारकर देवलोकको जाताहै और उससंगम में स्नानकर जो निजपितरों को तिलांजलि देताहै उसकेपितर तृप्तहो बिमान में बैठि देवलोकको जातेहैं और जोपुण्य गंगाद्वारके स्नानमें होतीहै उससे दशगुण पुण्य इससंगम के स्नान

में होतीहैं इसलिये हे देवताओ इस वाङ्मती औ मणिमती के संगमका देव यक्ष गंधर्व औ किन्नर सदा सेवन करते हैं इसलिये उसभूमिमें जप पूजा दानआदि कुछ थोड़ाभी बनपड़ै तो अनन्तफल होताहै इसवास्ते यत्न करके करना उचितहै हे देवताओ जहां२ हमनेमृगरूपको धारण कर तृणकोचरते २ भ्रमण कियाहै वहां २ सब पुण्यक्षेत्र जानों और यहजो हमारा शृङ्ग तीन टुकड़े होगया सो तीनोंखण्डका गोकर्णेश्वर नाम पृथिवी में प्रसिद्धहोगा ब्रह्माजी कहतेहैं हे पुत्र सनत्कुमार इस भांति देवताओंसे कहके शिवदेवताके देखतेही उत्तरदिशाकोचलेगये॥

दोसौदशका अध्याय॥

ब्रह्मा कहतेहैं हे सनत्कुमार जी उसस्थान से मृगरूपधारी शिवजी जब चलेगये तब परस्पर मिलिके सहित हमारे सब देवता संमतिकर उस मृगशृङ्ग के तीनों टुकड़ोंको लेले इन्द्र ने निजखंड को स्वर्ग्ग में बिधिपूर्बक स्थापित किया औ हे पुत्र हमने उसीभूमि में जो हमारे पास खंडथा उसे स्थापित किया इनदोनोंखंडोंका गोकर्णनाम लोक में प्रसिद्धभया तिसके अनन्तर बिष्णुजी नेभी निजखंड को देवर्षि ब्रह्मर्षियों के साथ मिलिके लोकको हितके लिये स्थापितकिया जिसका नामलोक में शृङ्गेश्वरभया इसभांति हेपुत्र जहां२ शृंगका खंड स्थापित भया वहां २ शिव जी निज अंशकला करके स्थित भये तबतौ सुर औ असुर के गुरू शिव जी को उग्रतप करके देव दानव गंधर्व सिद्धयक्ष औउरग आयश्लेष्मातक बनमें प्रसन्नकर निज२ बांछा के अनुसार बरदान ले २ निज २ मनोरथ सफल किये इसी भांति हे पुत्र जिस २ ने श्लेष्मातक बनमें तप किया उस २ ने निज २ नामसे लिंगस्थापन औ तीर्थ बनाया इसवृत्तांतके बहुत काल व्यतीतहोनेके अनंतर पुलस्त्यमुनिका

पौत्र रावण निजभाई कुम्भकर्ण औ विभीषण को साथले उग्र तपस्यामेंयुक्तहो शिवजीकी सेवाकर प्रसन्नकिया तब तौ गोकर्णेश्वर शिवप्रसन्नहो वरदानदेने को प्रकट भये उसेदेख रावणने तीनलोक को निज भुजबलसे पराजित करता औ निज बिजय वरमांगा उसवरको शिवजीदे अंतर्द्धानभये तबतो हेसनत्कुमार निजवांछित वरपायके त्रैलोक्य विजयकरनेके लिये उसीसमय प्रारंभकिया पृथिवीको शीघ्रहीजीति निजपुत्र मेघनाद के साथ स्वर्गजीतने को गया वहांजाय बड़ेशीघ्र इंद्रादिक देवताओं को जीति स्वर्गमें निजराज्य स्थिरकर जब वहांसे चलनेलगा तौ हेपुत्र जो मृगशृङ्गके खंडको गोकर्णेश्वर नामसे अमरावतीपुरी में इन्द्रने स्थापितकिया था उसलिंगको उखाड़के लंकामें स्थापित करनेको लेचला कुछ दूर जायकर भूमिमेंरख संध्याकाल देख संध्योपासन करनेलगा औ निज आवश्यक कृत्यसे निवृत्त हो चलने समय में जब शिवलिंगको उठानेलगा तबतौ वज्रके तुल्य वह शिवलिंग किञ्चिन्मात्र जगहसे हिलाभीनहीं उसी भांति वहांहींछोड़ रावण लंकाको चलागया हेपुत्र उसलिंगका दक्षिणगोकर्ण यहनाम प्रसिद्धहुआ इनकी किसीने प्रतिष्ठानहीं किया खुद अपनेआपशिवजी उसभूमिमें लोकको रक्षाकरनेको स्थिरहोगये हेसनत्कुमार यह सबकथा विस्तारसे हमने बर्णन किया उत्तर औ दक्षिण दोनों गोकर्णेश्वर इसभांति प्रसिद्धभये और शृंगेश्वर शैलेश्वरकी भी कथा यथार्थ हमने वर्णनकिया औ क्षेत्रकीमहिमा तीर्थोंकी उत्पत्ति यहसब क्रमसे कहि सुनाया हे पुत्र सनत्कुमार अब क्या सुना चाहतेहो ॥

दोसौग्यारहका अध्याय॥

इसभांति ब्रह्माजीकी बाणीसुनि सनत्कुमार प्रसन्नहो हाथ जोड़ कहनेलगे कि हेभगवन् जो २ हमने प्रश्णकिया उनसब

प्रश्नोंका उत्तर देकर आपने मेरा संदेह दूरकिया जो भगवान् विश्वरूप शिवजीने बन में मृगरूप धारण कर क्रीड़ा किया कि जिसकेशृङ्गसे अत्यंत पुण्यक्षेत्र गोकर्ण औ शैलेश्वर शृंगेश्वर नाम प्रसिद्ध भये अब हे प्रजापते और इसीभांति उत्तम पवित्र औ विलक्षण चरित्र वर्णनकरौ जिसके श्रवण करने से अनेकभांति का भ्रमदूरहोय इसभांति सनत्कुमारके मुखका बचनसुनि ब्रह्मा जी बोले कि हेपुत्र अब और सबतीर्थोंकी उत्पत्ति और महिमा पुलस्त्यजी राजायुधिष्ठिरसे बर्णन करेंगे उसस्थानमेंजाय श्रवण कर सब निश्चयकरलेना हेपुत्र किसीभांतिका संदेहनहीं करना पुलस्त्यमुनि भी वेद औ वेदों के अंगतत्त्व जाननेवाले हमारेही तुल्यहैं उनके मुखसे धर्म्मयुक्त पवित्रकथा सुननेसे सब पापोंसे मुक्तहोंगे यहसुनि सनत्कुमार जी ब्रह्मा को प्रणामकर आज्ञालेशिवजीके दर्शनकरने को कैलासको चलेगये सूतजीकहते हैं कि हे शौनक इसभांति पापके दूरकरनेहारी पुण्यकथा श्रीभगवान् वाराहजीका औ धरणीका सम्वाद वाराह नाम पुराण हमने वर्णनकिया जिसके श्रवणकरनेसे मनुष्य धन्य होताहै यश की वृद्धिहोतीहै कीर्त्तिबढ़तीहै और इसलोक में औ परलोकमें सब कामना सिद्धहोतीहैं यह चरित्र सब मंगलों में उत्तम मंगलरूपहै कल्याणका देनेवालाहै लक्ष्मीके निवासका कारणहै औ शत्रुओं के मध्य विजयका दाताहै इसलिये हे शौनक यह पुराण धन्य यशके बढ़ानेवाला कल्याणका रूप सबपापों का दूरकरने हारा औ सबभांतिके विघ्नोंका शांतिकरनेवालाहै इसलिये इसवाराह पुराणकेश्रवण करनेसे औ पठनकरनेसेमनुष्य सब पापोंसे छुटि इस लोकमें अनेक भांति के सुखको भोगि अंतमें उत्तमगतिको प्राप्तहोताहै सूतजी कहतेहैं हेशौनक इसवाराह औ धरणी का सम्वादरूप वाराहपुराणको भक्तिपूर्वक जोसुनतेहैं औ सुनातेहैं सो सबपापोंसे मुक्तहो परमपद को प्राप्तहो विष्णुभगवान् के

पारेहोते हैं और हेशौनक जो पुण्य प्रभासक्षेत्रके स्नानमें नैमिषारण्यके निवासमें हरिद्वार के स्नानकरनेमें पुष्करके स्नानमें प्रयागत्रिवेणी स्नानमें ब्रह्मतीर्थ सेवनमें औ अमरकंटकके दर्शन में होताहै उसका कोटिगुणफल वाराहपुराणके श्रवणमें प्राप्त होताहै और कपिला गोदान उत्तम वेदवेत्ता ब्राह्मण को देनेसे जो पुण्यहोताहै सो पुण्य वाराहपुराण के एक अध्याय श्रवण से होताहै हेशौनक इस वाराहपुराण का दशअध्याय कथा जो पवित्रहोके श्रवणकरतेहैं उनको अग्निष्ठोम औ अतिरात्रनामक यज्ञका फल प्राप्तहोना कुछ दुर्लभ नहींहै और जो बुद्धिमान् इस पुराणको पवित्रहो नियम से नित्य श्रवण करतेहैं उनको सबयज्ञोंके करनेका फल सबभांतिके दानदेने का फल औ सब तीर्थोंके स्नानका फल प्राप्तहोताहै हेशौनक श्रीवाराह भगवान् का यहबचनहै कि हेधरणि जोमनुष्य इसहमारे माहात्म्यरूप पुराणको भक्ति औ श्रद्धाकरके श्रवणकरेंगे तो पुत्रहीनको पुत्र प्राप्तहोगा औ पुत्रवालेको पौत्रप्राप्तहोगा रोगी जोश्रद्धाकरके सुनै तो वहरोग बाधा से मुक्तहोशीघ्र आरोग्य होगा और हे शौनकजिसके घरमें वाराहपुराण उत्तमअक्षरोंमें लिखाभया सदा पूजाको प्राप्तहोता है उसकेसबकार्य्य को नारायण सदा सिद्ध करतेहैं इसलिये हेशौनक इसवाराहपुराणका पूजन विष्णुपूजन के तुल्यहै यहजानि वाराहपुराणकी पुस्तक को उत्तम सिंहासन में बैठाय चंदन पुष्प माला धूप दीप नैवेद्यसे हमेसा पूजनकरना चाहिये और विष्णुप्रीत्यर्थ पुण्य दिनमें ब्राह्मणों का यथाशक्ति भोजन औ दक्षिणादेना चाहिये हे शौनक जिसके करनेसे उस पूजक के स्थानको लक्ष्मीसहित नारायण कभीनहींत्यागें अर्थात् उसस्थानमें सदाविष्णु भगवान् लक्ष्मीकेसाथ निवासकरें जिन के निवासकरनेसे लाभ जय औ सिद्धि सदा निवासलेती है॥

—※—

दोसौबारहका अध्याय॥

सूतजी कहतेहैं हेशौनक इस वाराहपुराण संहितामें प्रथम संबंध वर्णनकिया फिर आदिकर्म्म वर्णन आदि सृष्टिवर्णन दुर्ज्जय चरित्र द्वीपविभाग श्राद्धकल्प अश्विनीकुमारकी उत्पत्ति गौरीजीकीउत्पत्तिगणेशजीकीउत्पत्तिनागोंकीउत्पत्तिस्वामिकार्त्तिककीउत्पत्ति सूर्य्यकीउत्पत्ति कामोत्पत्ति देवीकीउत्पत्ति कुवेर कीउत्पत्ति धर्मकीउत्पत्ति रुद्रोत्पत्ति सोमोत्पत्ति स्थितिवर्णन व्याधकथा सत्यतपाकीकथा मत्स्यद्वादशी कूर्म्मद्वादशी वाराह द्वादशी नृसिंहद्वादशी वामनद्वादशी परशुरामद्वादशी श्रीराम द्वादशी कृष्णद्वादशी बुद्धद्वादशी कल्कीद्वादशी पद्मनाभद्वादशी धरणीव्रत अगस्त्यव्रत पशुपालकीकथा भर्तृप्राप्तिव्रत शुभव्रत धन्यव्रत कीर्त्तिव्रत सौभाग्यव्रत अविघ्नव्रत शांतिव्रत कामव्रत आरोग्यव्रत पुत्रप्राप्तिव्रत शौर्य्यव्रत सार्वभौमिकव्रत पुरास्तुति शिव विष्णुसंवाद रुद्रगीता प्रकृतिनिर्णय भुवनकोश जंबूद्वीप मर्य्यादा भरतखण्ड सृष्टिविभाग महिष नारदसंवाद शक्तिमाहात्म्य महिषासुरवध रुद्रमाहात्म्य शर्करधेनुदान मधुधेनु श्वेतोपाख्यान तिलधेनु जलधेनु रसधेनु गुड़धेनु दधिधेनु लवणधेनु कर्पासधेनु धान्यधेनु भगवच्छास्त्र लक्षण विष्णुस्तोत्र विष्णुप्रति धरणीके अनेकप्रश्न भागवतलक्षण देवतावोंके कोपका लक्षण विष्णुपूजनमें बत्तीसअपराध नानामंत्र देवोपाकरण विधिभक्ष्य अभक्ष्य निर्णय संध्योपासन वियोगीके गर्भकामोक्ष कोकामुख प्रशंसा भगवत्शास्त्रप्रसंशा गंधपुष्प का माहात्म्य रूपकारण मायाचक्र कुब्जामूकमाहात्म्य वर्णदीक्षाकंकत अंजन औदर्पण का मंत्र राजअन्नभक्षणका प्रायश्चित्तदातुनि नकरनेमेंप्रायश्चित्त शवस्पर्श प्रायश्चित्त मंत्रत्याग प्रायश्चित्त नीलवस्त्रधारणकरने का प्रायश्चित्त क्रोधयुक्त पूजनकरनेमें प्रायश्चित्त रक्तवस्त्रधारण

प्रायश्चित्त अंधकारके पूजनमें प्रायश्चित्त कृष्णवस्त्रधारणप्राय-
श्चित्त अशुद्धवस्त्रधार पूजाकरने में प्रायश्चित्त शूकरमांसभक्षण
प्रायश्चित्त दीपकातेल स्पर्शकरनेमेंप्रायश्चित्त श्मशान जायकर
पूजनकरनेमें प्रायश्चित्त खलखानेका प्रायश्चित्त जूताधारणकिये
देवपूजनकरनेका प्रायश्चित्त भगवत्शास्त्रके आज्ञाउल्लंघन करने
काप्रायश्चित्त शूकरक्षेत्रमाहात्म्यशृगाल औगृध्रकावृत्तांत खंजन
पक्षीकावृत्तांत कोकामुखमाहात्म्य बदरीमहात्म्य गुप्तधर्म्मवर्णन
शालग्राममहिमा सोमेश्वरवर्णन मुक्तिक्षेत्र महिमा त्रिवेणीमाहा
त्म्य गंडकीमाहात्म्य चक्रतीर्थमाहात्म्य हरिक्षेत्रमाहात्म्य देव
ह्रदमाहात्म्य रुद्रक्षेत्रमाहात्म्य गोनिष्क्रमणकामाहात्म्य द्वारका
माहात्म्य अक्रूरआदि पंचतीर्थमाहात्म्य लोहार्गलमाहात्म्य म-
थुराउत्पत्ति वर्णन यमुना तीर्थमाहात्म्य देवारण्यमाहात्म्य चक्र
तीर्थमाहात्म्य कपिलमहिमा गोवर्द्धनमहिमा विश्रांतितीर्थ म-
हिमा गोकर्णमाहात्म्य सरस्वती माहात्म्य यमुनोद्भेदमहिमा
कालंजरकी उत्पत्ति गङ्गोद्भेदमहिमा शांवचरित्र मधूकप्रतिमा
स्थापन शैलप्रतिमा मृत्तिकाप्रतिमा तामप्रतिमा कांश्यप्रतिमा
रौप्यप्रतिमा सुवर्णप्रतिमा इन प्रतिमावोंका स्थापन श्राद्धकी
उत्पत्ति पिंडकासंकल्प पिण्डकीउत्पत्ति पितृयज्ञ निर्णय मधु-
पर्कदानफल संसारचक्र वर्णन पापका फल दुःख औ पुण्यका
फल सुखवर्णन यमदूतचरित्र नरकवर्णन पापियों का नानाविध
चरित्र कर्म्मों का फल वर्णन पापसमूह कथन दूतका भेजना
पापियोंके लेआनेको शुभ औअशुभ वर्णन शुभकर्म्मके फलका
उदयकथन पतिव्रता चरित्र राजानिमि काचरित्र प्रवोधिनी ह
रिशयनी औ परिवर्त्तिनी तीनोंएकादशी का माहात्म्य गोकर्ण
शिवकी उत्पत्ति वर्णन नंदीश्वरको श्रीशिवजी का बरदानहोना
शैलेश्वर शृंगेश्वरका वर्णन इत्यादि नानाभांति की मनोहरकथा
हे शौनक इसपुराणमें वर्णनकीगईहैं कि जिसके श्रवणकरनेसे

कैसहू अधर्म्मी औपापीहोय सोसबपापोंसे मुक्तहो श्रीनारायणके चरण कमल में लीनहोताहै हे शौनकादि ऋषीश्वरो जो २ आपने प्रश्नकिये सो२ क्रमपूर्बक हमनेवर्णनकिया अबकासुनने को इच्छाहै इसभांति सूतजीका बचनसुनि शौनकादिक ऋषीश्वर भगवद्भक्तिमें युक्तहो आनन्दसे परिपूर्ण प्रशंसापूर्बक सूतजीका भलीभांति पूजनकर कथाका बिश्राम करतेभये॥ इतिश्रीमद्वाराह पुराणसंहिताभाषासमाप्ता॥ लेखकपाठकयोर्मंगलदात्रीभूयात्॥

दोहा॥

बिघ्नबिनाशन व्यासहरि बाणीचरणमनाय॥
मतिअनुमित वाराहकी भाषाविशदबनाय १
इच्छा नवलकिशोर की पूरण करबे हेतु॥
माधवद्विज साकेतपुर बासीरची सहेतु २
धर्म्मप्रकाशकसंहिता सुनिपढ़िसज्जनलोक॥
गहैसनातनधर्म्ममग तजिमनभवभयशोक ३
हरिधरणी संबादयह बिलसै धरणीमाहि॥
जबलौ सूरज चन्द्रमा धर्म्मसनातन आहि ४
नववारिधिनिधि भूवरस चैत्रकृष्णविधुवार॥
यहपुराण पूरणभयो सुकृत सनातन सार ५

श्रीमद्भगवतेवाराहमूर्त्तयेनमः॥

श्रीमत्ढूसरबंशावतंस श्रीयुत् मुन्शीनवलकिशोरकारित माधवदत्तशर्माकृत श्रीवाराहपुराणमध्यदेश प्रचलित बर्त्तमानकालभाषासंपूर्णम्॥

शुभमस्तु॥

——※——

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
सुखसागर छापा प॰	सभा विलास	**राग**	ज्ञानमाला
सुदामा चरित्र	युगुल विलास	रागप्रकाश	गोपीचन्द भरतरी
श्री अनुरागरस	तुलसीशब्दार्थ प्रकाश	लावनी	कथा श्री गंगाजी
काव्य	भजनावली	क़ानून सितार नागरी	अवध यात्रा
सूरसागर	प्रेमरत्न	भरतरी गीत	दानलीला व नागली॰
कृष्णसागर	चित्रचन्द्रिका	रीडर नम्बर १	दोहावली व रत्नावली
विश्रामसागर	बारहमासा व॰दे॰प्रकृ॰	रीडर नम्बर २	गोकर्णमाहात्म्य
प्रेमसागर	मनोहर लहरी	**क़िस्सा वग़ैरह**	श्री गोपाल सहस्रनाम
ब्रज विलास बड़ा	गंगा लहरी	नानार्थनौ संग्रहावली	कथा सत्यनारायण स॰
तथा छोटा	यमुना लहरी	ब्रह्मसार	हनुमान बाहुक
कृष्णप्रिया	पियूष लहरी	शिवसिंह सरोज	जनक पच्चीसी
कृष्णबाल लीला	जगद्विनोद	भक्तमाल	हरिहर सगुण निर्गुण
विजयचन्द्रिका	शृंगार बत्तीसी	इन्द्रसभा	पदावली
विजयमुक्तावली	शृंगार लतिका	विक्रम विलास	वनयात्रा
अनेकार्थ	नवीन संग्रह	बैताल पच्चीसी	कायस्थ वर्ण निर्णय
छन्दोर्णव पिंगल	**नाटक**	सिंहासन बत्तीसी	विहार वृन्दावन
रसराज	प्रबोध चन्द्रोदय	पद्मावती खण्ड	समरविहार वृन्दावन
रसवृष्टि व रसचन्द्रोदय	रामाभिषेक	शुक बहत्तरी	कल्पभाष्य
कृष्ण गीतावली	आनन्द रघुनन्दन	बकावली सुमन	लक्ष्मी सरस्वती सम्वाद
नवरत्नभाष्य वृन्दाव॰	भ्रमजालक नाटक	चहार दरवेश	**दरसी**
न विलास	हनूनाटक	क़िस्सा हातम ताई	स्वयम्बोध
सौदागर लीला	**वेदान्त**	क़िस्सा गुल सनोबर	ज्ञानचालीसी
रासलीला	योगवाशिष्ठ	दास्तान अमीर हमज़ा	दोहावली
भूवनेश भूषण	पारसभाग	सहस्र रजनी चरित्र	बालाबोध
शंकर चरित्र सुधा	सांख्य तत्व कौमुदी	राबिन्सन का इतिहास	विद्यार्थी की प्रथम॰
उपदेश चन्द्रिका	केनोपनिषद्	सीता हरण	पुस्तक
मंगल विनोद	ईशावास्य उपनिषद्	सती विलास	किताब जंत्री
सिद्धान्त संग्रह	आनन्दाऽमृत वर्षिणी	क़िस्सा मर्द औरत	गणित कामधेनु
रामविनय शतक	सुन्दर विलास	सांगीत प्रह्लाद	लीलावती
सत्साई मूल	बीजक कबीरदास	**मुतफ़र्क़ात**	पटवारियों की पुस्त॰
सत्सई सटीक		शनिश्चर की कथा	क ४ भाग॰

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
वैद्यक भाषा	कथा यमद्वितीया	भगवद्गीता टी॰ आन-	शिक्षावली
निघण्ट	अपराध भञ्जन स्तोत्र	न्दगिरि स्वामिकृत	शिशुबोध
अमरविनोद	कायस्थ कुल भास्कर	गीत गोविन्द	पत्र हितैषिणी
वैद्य जीवन	कायस्थ धर्म्म निरूपण	कथा सत्यनारायण	पत्र दीपिका
औषधि संग्रह कल्प-	तथा छोटा	परमारथ सार	विद्याचक्र
वल्ली	मथुरासभा	शार्ङ्गधर संहिता	विद्याङ्कुर
अमृतसागर बड़ा	**ज्योतिष**	पाराशरी सटीक	पदार्थ ज्ञानविटप
तथा छोटा		शीघ्रबोध सटीक	भोजप्रबन्धसार
वैद्य मनोत्सव	मुहूर्त्त गणपति	लघुजातक	भाषा लघुव्याकरण
दिल्लगान	मुहूर्त्त चक्र दीपिका	षट्पञ्चाशिका	१ भाग तथा २ भाग
इलाजुल गुर्बा नागरी	मुहूर्त्त चिन्तामणि स॰	सामुद्रिक	भाषा तत्त्वदीपिका
ज्योतिष भाषा	मुहूर्त्त दीपक	गरुड़ पुराण	भाषा चन्द्रोदय
	मुहूर्त्त मार्तण्ड स॰	रामविवाहोत्सव	भूगोल तत्त्व
जातक चन्द्रिका	बृहज्जातक स॰	**सर्रिश्ते तालीम की पुस्तकें संस्कृत**	भूगोल दर्पण
जातका लंकार	जातका लंकार		इतिहास तिमिरनाशक
दैवज्ञा भरण	जातका भरण		१ भा॰ व २ भा॰ ३ भाग
ज्ञान स्वरोदय	होरामकरन्द		अवध देशीय भूगोल
रमलसार	लग्न चन्द्रिका	ऋजुपाठ १ भाग	इंग्लिस्तान का इतिहास
रमल नौरत्न	**संस्कृत उर्दू टीका**	तथा २ भा॰ व ३ भाग	हितोपत्रिका
इन्द्रजाल		धात्वर्णव	बाला भूषण
संस्कृत की पुस्तकें	मनुस्मृति	**नागरी कैथी**	पद्य संग्रह
	विष्णु हारीत		भाषा काव्य संग्रह
लघुकौमुदी	महिम्न स्तोत्र	वर्णमाला कैथी १ भाग	कवित्त रत्नाकर १ भा॰
सिद्धान्त चन्द्रिका	व्रतार्क	तथा २ भाग	तथा २ भाग
भाषा तत्त्व प्रकाश	याज्ञवल्क्य स्मृति	**तथा कैथी फ़ारसी नागरी**	मंगलकोष
पञ्च महायज्ञ	मार्कण्डेय पुराण		अंक प्रकाश
कर्म्म विपाक संहिता	**संस्कृत भाषा टीका**		गणित प्रकाश १ भा॰
निर्णयसिन्धु		हुरूफ़ मुफ़र्दात	तथा २ भा॰ ३ व ४ भा॰
संग्रह शिरोमणि	अमरकोष तीनों काण्ड	अक्षरारम्भ	गणित क्रिया
भगवद्गीता पञ्चरत्न	याज्ञवल्क्य स्मृति	वर्णप्रकाशिका १ भा॰	क्षेत्र प्रकाश
दुर्गापाठ मूल	सन्ध्या पद्धति	तथा २ भाग	क्षेत्रचन्द्रिका १ भा॰ व २ भा॰
तथा सटीक	व्रतार्क	सूरजपुर की कहानी	सकील दायरा
विष्णु भागवत	भगवद्गीता टी॰ ह॰ वं॰ छ॰	धर्म्मसिंह का वृत्तान्त	इत्यादि

